भारत के सबसे ज्यादा बिकने वाले लेखक
वेद प्रकाश शर्मा

डायन 2

डायन 2

वेद प्रकाश शर्मा

भावनाओं के वेग में बहती सुकन्या ने काली की मूर्ति से कहा–"पर तू भी तो शांत खड़ी है मां! वो डायन मेरी बेटी को ले गई और तू शांत खड़ी है! धिक्कार है तुझ पर। अगर तू मेरी बेटी को नहीं बचा सकती तो मैं नहीं मानती कि तूने कभी महिषासुर का वध किया था। अगर तू मेरे सुहाग की रक्षा नहीं कर सकी तो मैं नहीं मानती कि तूने कभी रक्त बीज का संहार किया था। किस काम की मां है तू! किस काम का है ये खड्ग? किस काम का है ये त्रिशूल? और किस काम की है तेरी दुधारी तलवार? ला...मुझे दे दे ये सब कुछ। उस डायन का सिर तेरे कदमों में लाकर न डाल दूं तो मेरा नाम सुकन्या नहीं।"

"ऐसे नहीं मानती माता।" महाराज चंडिकामृत रहस्यमय मुस्कान के साथ बोले–"इसकी सिद्धी करनी पड़ती है।"

"सिद्धी भी करूंगी। ये लो...बैठ गई। मुझे नहीं पता सिद्धी कैसे होती है मगर मैं तब तक यहां से नहीं उठूंगी जब तक ये मुझे अपनी शक्तियां नहीं देगी।"

चंडिकामृत ने हाथ जोड़कर महाकाली से कहा–"इसे कहते हैं हठयोगी। तुम्हें झुकना ही होगा महिषासुर मर्दिनी, वो शक्तियां तुम्हें एक मां की इस रोती-बिलखती आत्मा को सौंपनी ही होंगी जो दुष्टात्माओं को जलाकर भस्म कर सकें। हे विश्व विजयी माते, तू एक मां से नहीं जीत सकती।"

डायन 2

भारत का सबसे ज्यादा बिकने वाला यह लेखक इस बार एक ऐसी मां की कहानी लेकर आया है जिसके पास शरीर नहीं था। जो भावनाओं के भंवर में बह रही थी और जिसे परालौकिक दुनिया की दुष्टात्माओं से टकराना था।

'एक थी डायन'
जरूर देखें

मेरे प्रेरक पाठको,

प्रस्तुत है, डायन का सेकिंड और अंतिम पार्ट–**डायन-2**।

सर्वप्रथम मैं एकता कपूर और विशाल भारद्वाज को धन्यवाद देना चाहूंगा क्योंकि इसमें कोई शक नहीं कि यह कथानक लिखने के लिए मुझे उन्होंने ही प्रेरित किया।

'डायन' से पहले मैंने 176 उपन्यास लिखे और हर बार कोशिश की कि नए विषय पर लिखूं और आप ही के मुताबिक हर बार इस कोशिश में कामयाब भी हुआ मगर इसके बावजूद कभी सुपर नैचुरल पॉवर्स पर नहीं लिखा। कारण बड़ा स्पष्ट था–मेरा खुद का विश्वास कभी सुपर नैचुरल पॉवर्स पर नहीं रहा और जिस दुनिया पर लेखक को विश्वास ही न हो, उस पर लिख कैसे सकता है!

परंतु जैसा कि शायद मैंने पिछले पत्र में भी लिखा–एकता कपूर और विशाल भारद्वाज की बहुचर्चित फिल्म **'एक थी डायन'** के सेट पर मुझे कुछ ऐसे अनुभव हुए कि सुपर नैचुरल पॉवर्स पर नए सिरे से सोचने पर मजबूर हो गया। मुझे लगा कि–जिस दुनिया में हम रहते हैं, उससे अलग भी एक दुनिया है और इस बार मुझे उसी दुनिया पर उपन्यास लिखना चाहिए।

मैं हृदय की गहराईयों से आपको बताना चाहता हूं कि मैंने फैसला कर तो लिया मगर दो कारणों से दिल बहुत सशंकित था। पहला, क्या मैं उस विषय के साथ न्याय कर सकूंगा जिस पर कभी विश्वास नहीं किया? दूसरा, अगर मैंने उपन्यास लिख भी दिया तो क्या मेरे पाठक उसे 'एक्सेप्ट' करेंगे?

जैसा कि आप जानते हैं–रिस्क लेना मेरी फितरत है। और मैंने लिया, यानी **'डायन'** लिखा। लिखने के बाद थोड़ा संतुष्ट हुआ। आत्मविश्वास में वृद्धि हुई क्योंकि मुझे लग रहा था मैं कुछ अलग और रोचक लिख सका हूं। इस कथानक में रोमांच भी पिछले उपन्यासों से कुछ ज्यादा है और ये सच्ची बात है कि इसे लिखते वक्त मैंने इंज्वॉय भी खूब किया लेकिन इस सबके बावजूद अभी एक शंका बाकी थी। यह कि–ये कथानक आपको कैसा लगेगा।

और फिर आए, आपके पत्र, एसएमएस और ई-मेल।

जैसे-जैसे वे आते गए, वैसे-वैसे मेरा दिल खुशियों से झूमता गया क्योंकि आपने 'डायन' को बहुत-बहुत पसंद किया था। एक राइटर की भला इससे बड़ी कमाई और क्या हो सकती है कि उसके पाठक उसे पसंद करें जो उसने लिखा है।

ज्यादातर पाठकों ने लिखा कि मैंने इस अनछुए टॉपिक पर एक शानदार कथानक की शुरुआत की है और अब उन्हें इस बात का इंतजार है कि मैं इस कथानक को किस अंजाम पर पहुंचाता हूं!

अर्थात्–एक और चुनौती सामने थी।

एक बार फिर आपकी उम्मीदों पर खरा उतरने की चुनौती। मुझे नहीं पता कि आप इस बात को समझ पाएंगे या नहीं कि हर किसी के लिए खुद को दूसरों की उम्मीदों पर खरा उतारना इस दुनिया की सबसे बड़ी चुनौती होती है। खासतौर पर उनकी उम्मीदों पर खरा उतारना जो आपसे बहुत प्यार करते हैं और मुझसे तो आपका प्यार चालीस साल से भी ज्यादा पुराना हो गया है।

धड़कते दिल से मैंने एक बार फिर कलम संभाली और **'डायन'** से आगे का यानी **'डायन-2'** का कथानक लिखना शुरु

किया और यकीन मानिए, एक बार लिखना शुरु किया तो लिखता ही चला गया। कलम ने रुकने का नाम ही नहीं लिया। स्वतः ही एक के वाद दूसरा सीन बनता चला गया। सोचने की जरूरत ही नहीं पड़ी। जाने कहां से नए विचार आते चले गए और कलम तभी रुकी जब यह कथानक अपने अंजाम पर पहुंच गया।

यही कारण है कि डायन का सेकिंड पार्ट इतनी जल्दी आपके हाथों में है। आप खुद महसूस कर रहे होंगे कि पहले कभी मेरे किसी उपन्यास का सेकिंड पार्ट आपको इतनी जल्दी पढ़ने को नहीं मिला।

डायन की कहानी जहां से शुरु हुई थी और जहां पहुंची है, यकीन मानिए, लिखने से पहले खुद मुझे भी उम्मीद नहीं थी कि वहां पहुंचेगी। इसे लिखते वक्त मैं खुद भी रहस्य और रोमांच से भरी एक ऐसी तिलिस्मी और अलौकिक दुनिया में पहुंच गया था जो बहुत ही चमकदार थी। लिखने के वाद मैंने पहली वार अपने किसी उपन्यास को प्रकाशन हेतु भेजने से पहले पढ़ा है और अभी तक आश्चर्य कर रहा हूं कि–क्या ये मैंने ही लिखा है? मैंने एक-एक शब्द को खूब इंज्वॉय किया और अब बारी है–आपकी।

क्योंकि महत्वपूर्ण मैं नहीं, आप हैं। जज ही महत्वपूर्ण होता है और आप जानते हैं कि अपने उपन्यासों के संबंध में मैंने आपको हमेशा जज की भूमिका में रखा है। सो, इसे पढ़ते ही मुझे अपनी बेबाक राय से अवगत कराएं।

डायन की लांचिंग–शुरु से ही एकता कपूर की मेरे प्रति बहुत श्रद्धा रही है। शायद इस श्रद्धा का ही कारण रहा कि 3 अप्रैल 2013 को मुंबई के जुहू स्थित नोवोटेल होटल में उन्होंने **'डायन'** की लांचिंग रखी। लांचिंग के मौके पर वे खुद, विशाल भारद्धाज, हुमा कुरेशी और कोंकणा सेन शर्मा विशेष रूप से मौजूद रहीं।

हुमा कुरेशी के रूप में शायद पहली बार देश की इतनी बड़ी अदाकारा ने पूरे प्रेस के सामने किसी उपन्यास का एक सीन पढ़कर सुनाया। जाहिर है कि वह सीन डायन का था।

एकता कपूर ने खुले मंच से जब आपके इस लेखक की तारीफ की तो ये सच है कि मेरे लिए वह बहुत बड़ा 'कांप्लिमेंट' था।

विशाल भारद्धाज ने मेरे कंधे पर हाथ रखकर बड़े गर्व से सारे प्रेस को बताया कि–'हम दोनों मेरठ के रहने वाले हैं।' हम मेरठ के हैं मगर कितना अजीब था कि पहली बार मुंबई में मिले!

एक थी डायन–अब थोड़ा जिक्र 'एक थी डायन' का भी करूंगा क्योंकि मुझे डायन लिखने के लिए उसी की कहानी ने प्रेरित किया। फिर भी, यहां उसकी कहानी का जिक्र नहीं करूंगा मैं क्योंकि उसका जिक्र करना आपके मजे को किरकिरा कर देना होगा। बस एक ही बात कहूंगा कि–सारे भारत में 18 अप्रैल को रिलीज होने वाली **'एक थी डायन'** को जरूर देखें। उसमें आपको उतना ही मजा आएगा जितना मजा मेरे उपन्यास पढ़ने में आता है। उसकी कहानी मुकुल शर्मा की है और स्क्रीन प्ले मुकुल तथा विशाल भारद्धाज ने मिलकर लिखा है। हीरो तो आप जानते ही हैं कि इमरान हाशमी है और हिरोइनें हैं–तीन–कोंकणा सेन, हुमा कुरेशी तथा कल्कि। मेरा दावा है कि फिल्म का अंत देखने से पहले आप यह नहीं जान सकेंगे कि तीनों में से **'डायन'** कौन है।

अपने कत्ल की सुपारी– जी हां, मेरे आगामी नए उपन्यास का यही नाम है। सोचने वाली बात है–कोई भी शख्स भला किसी को अपने कत्ल की सुपारी क्यों देगा? किसी भी वजह से यदि किसी व्यक्ति के मन में खुद को खत्म करने की वात आती है, तब भी वह आत्महत्या का प्रयास करेगा मगर हमारी कहानी के किरदार के सामने ऐसी कोई मजबूरी थी कि उसे अपनी ही हत्या की सुपारी देनी पड़ी। बड़ी अनोखी दास्तान थी उसकी और वह अनोखी दास्तान 'तुलसी पेपर बुक्स' के आगामी सेट में खुद-ब-खुद आप तक पहुंच जाएगी। आपका वही काम होगा जो हमेशा होता है–अर्थात् पूरी बेवाकी से अपनी निष्पक्ष राय मुझ तक पहुंचाना।

अंत में आपके प्यार, विश्वास और आशीर्वाद का आकांक्षी–

डायन 2

इंस्पेक्टर काले खां के साथ जो हुआ, वह उससे पहले शायद ही किसी के साथ हुआ हो। अगर यह लिखा जाए तो जरा भी गलत न होगा कि उसके जेहन के धुर्रे उड़े हुए थे।

वहुत दिमाग घुमाने के वावजूद वह यह नहीं समझ पा रहा था कि ये सब हुआ तो कैसे हुआ?

हुआ ये था कि–

नींद खुलने पर उसने खुद को वहुत ही नर्म और गद्देदार विस्तर पर पाया। कमरे में हल्का उजाला था और बाहर से पक्षियों के चहचहाने की आवाजें आ रही थीं।

जाहिर था कि–सवेरा हो चुका था।

अभी मस्तिष्क ने ठीक से काम करना शुरु भी नहीं किया था कि कानों में चूड़ियों की खनखनाहट पड़ी। पीछे से एक कलाई उसके कंधे से होती हुई गर्दन से आ लिपटी थी।

चूड़ियों से भरी वहुत ही गोरी और गोल कलाई थी वह।

फिर कलाई ने उसे जवरदस्ती अपने जिस्म से सटाया और एक उनींदा-सा नारी स्वर कानों से टकराया–"आज कैसी नींद सोए हो डार्लिंग? मैं सारी रात जगाने की कोशिश करती रही लेकिन तुम टस से मस न हुए। यूं ही करवट लिए सोए हुए हो!"

काले खां के लिए ये आवाज...ये कलाई अजनबी थी।

उसने अपनी पीठ पर किसी नारी के जिस्म के अगले हिस्से को लिपटा महसूस किया था और फिर यह भी महसूस किया कि किसी ने अपने दांतों से वहुत ही रोमांटिक अंदाज में उसके कान की लौ को जीभ से कुरेदा है।

उसने पट्ट्-से आंखें खोल दीं।
चौंका।
कारण!
वह अपने बैडरूम में नहीं था।
उसका बैडरूम इतना शानदार कहां!

उसके बैडरूम की खिड़की से तो झुग्गी-झोंपड़ियां नजर आती हैं जबकि इस वक्त उसकी आंखों के सामने जो खिड़की थी उसके पार एक हरा-भरा लॉन नजर आ रहा था। डालियों पर खिले हुए ओस से नहाए रंग-बिरंगे ताजे फूल नजर आ रहे थे।

वह इस तरह उछलकर खड़ा हुआ जैसे किसी ने अचानक जिस्म से करंटयुक्त नंगा तार स्पर्श करा दिया हो। कमरे के फर्श पर खड़ा वह हैरत से आंखें फाड़े चारों तरफ देख रहा था।

वहां मौजूद एक भी चीज उसकी जानी-पहचानी नहीं थी।

उसके उछलकर खड़े होने ने उस नारी को चौंककर आंखें खोलने पर मजबूर कर दिया जो पल भर पहले तक बिस्तर छोड़ने के जरा भी मूड में न थी और अव वह वहीं लेटी आश्चर्य से काले खां के चेहरे पर मौजूद हैरत के भावों को देख

रही थी।

उसने पूछा—"क्या हुआ आनंद?"

उसकी तरफ देखते काले खां के मुंह से आवाज निकली—"कौन आनंद?" और...अपनी आवाज सुनकर उसका आश्चर्य सभी सीमाएं लांघ गया क्योंकि खुद अपनी आवाज भी उसके लिए अजनबी थी।

अपने मुंह से निकलने वाली वैसी आवाज उसने पहले कभी नहीं सुनी थी। वह उलझन में उलझा था कि नारी की आंखें सुकड़ीं। मुंह से निकला—"मतलब?"

"कौन हो तुम?" यह सवाल करते वक्त काले खां ने एक बार फिर अपने मुंह से निकलने वाली अजनबी आवाज सुनी थी—"और ये कौनसी जगह है?"

"मैं तुम्हारी पत्नी हूं डार्लिंग...अराधना।" उसने कहा—"और इस वक्त हम अपने बेडरूम में हैं।"

"क्या बक रही हो?" आश्चर्य की ज्यादती के कारण काले खां का बुरा हाल था—"तुम मेरी पत्नी कैसे हो सकती हो?"

"वैसे ही, जैसे सब पत्नियां अपने पति की पत्नी होती हैं।" वह बोली—"बाकायदा सात फेरे लिए हैं हमने। ये देखो, मेरे गले में तुम्हारे नाम का मंगलसूत्र है।"

"म-मंगलसूत्र? मगर मैं तो मुसलमान हूं। हमारे यहां सात फेरे नहीं लिए जाते और...तुमने मुझे आनंद क्यों कहा?"

"और क्या कहूं?"

"काले खां।" वह अपने मुंह से निकलने वाली अजनबी आवाज का रहस्य नहीं समझ पा रहा था—"मेरा नाम काले खां है।"

अब, अराधना बिस्तर छोड़ने पर मजबूर हो गई। लगातार काले खां की तरफ देख रही वह अपने नाइट गाऊन की डोरी बांधती हुई बोली—"मैंने क्या किया है आनंद! अगर कोई गलती की भी है तो वह मेरे पेरेंट्स और भाईयों ने की है। मुझसे ऐसा व्यवहार क्यों कर रहे हो तुम? मैंने तो हमेशा तुम्हारा साथ दिया है!"

काले खां को जब यही मालूम नहीं था कि वह कौन है तो भला उसकी बात का अर्थ कैसे समझ सकता था!

वह हैरान ही नहीं बल्कि भौंचक्का भी था।

समझ न पा रहा था कि उसके साथ क्या हो रहा है।

लगा—शायद उसे किसी साजिश में फंसाने की कोशिश की जा रही है। इसी विचार के तहत अचानक झपटा और फिर अगले ही पल उसके दोनों हाथ अराधना की गर्दन पर जमे हुए थे। मुंह से निकली थी अजीब-सी गुर्राहट—"ये कौनसी जगह है? मुझे यहां कौन और क्यों लाया? मुझे आनंद कहकर क्यों पुकार रही हो तुम? क्यों जबरदस्ती मेरी बीवी बनने की कोशिश कर रही हो और तुमने मेरी आवाज कैसे बदल दी? अगर तुमने मेरे सवालों के जवाब नहीं दिए तो मैं तुम्हें मार डालूंगा।"

"य...ये क...क्या प...पागल...पन...है आ...आनंद।" कहने की कोशिश करती अराधना के मुंह से अंततः जोरदार चीख निकली।

ऐसी चीख जो उस बंगले की सभी दीवारों को झनझनाती चली गई थी और फिर, उसके हलक से 'घें-घें' की आवाजें

निकलने लगीं क्योंकि गर्दन पर काले खां के हाथों की पकड़ मजबूत होती चली जा रही थी। चेहरा सुर्ख पड़ गया था। वह छटपटाने लगी थी जबकि काले खां के जबड़े भिंचे हुए थे। जाने कैसा जुनून सवार हो गया था उस पर और फिर, उसी अवस्था में उसकी नजर कमरे में मौजूद बहुत ही शानदार ड्रेसिंग टेबल के आईने पर पड़ी।

आईने में फड़फड़ाती अराधना की पीठ नजर आ रही थी और नजर आ रहा था उसकी गर्दन दबोचे हुए एक युवक।

वह युवक, जिसे वह बिल्कुल नहीं पहचानता था।

मगर यहां...यहां तो वह खुद अराधना की गर्दन दबोचे हुए है। फिर आईने में ऐसा करता कोई और क्यों नजर आ रहा है?

उसने हैरत से आंखें फाड़कर आईने में देखा तो आईने में नजर आ रहा युवक भी ठीक उसी तरह आंखें फाड़कर उसे देखने लगा।

या खुदा...ये क्या हो रहा है?
ये क्या देख रहा हूं मैं?

इन्हीं सवालों में उलझ जाने के कारण अराधना की गर्दन पर उसके हाथों की पकड़ ढीली पड़ गई। अराधना के मुंह से निकली चीख पहले ही बंगले में हंगामा बरपा चुकी थी।

कई लोगों के भागते कदमों की आवाज उभरी थी और फिर कमरे के दरवाजे को तोड़ डालने के-से अंदाज में पीटा जाने लगा था मगर काले खां के कानों तक मानो उनमें से कोई भी आवाज नहीं पहुंच पाई थी। अराधना की गर्दन को छोड़कर हैरत की ज्यादतियों में फंसा वह ड्रेसिंग टेबल की तरफ लपका था।

आईने में मौजूद युवक भी उसकी तरफ लपकता नजर आया।

अब उसे एहसास हुआ कि आईने में कोई और नहीं, वह खुद है। साथ ही जेहन में विचार उभरा—पर मैं ये कैसे हो सकता हूं?

मेरी शक्ल तो नहीं है ये!

क्या हुआ मेरी शक्ल को? ये इतनी ज्यादा कैसे बदल गई? मैं तो काला हूं—इतना गोरा कैसे हो गया? और उम्र? उम्र में भी जमीन आसमान का फर्क है। मेरी उम्र तो चालीस साल है जबकि आईने में नजर आ रहे युवक की उम्र किसी भी तरह पच्चीस से ज्यादा नहीं हो सकती। आश्चर्य की पराकाष्ठा से गुजर रहे काले खां के दोनों हाथ अपने चेहरे पर पहुंच गए और उस क्षण, उसने देखा—वे हाथ भी उसके नहीं थे। काले खां ने बौखलाकर आईने से नजर हटाई और सीधे अपने हाथों की तरफ देखा। हाथ वही थे जो आईने में नजर आ रहे थे मगर उसके हाथ नहीं थे वे।

उसने फिर आईने में देखा।
हे खुदा, मेरी शक्ल को क्या हुआ?
कैसे बदल गई ये? क्या ये मेकअप है?

उसने नाखूनों से गालों को खुरचा। मुंह से पीड़ा भरी कराह निकल गई क्योंकि उसके खुरचने के कारण गालों पर खरोंचें बन गई थीं। वहां खून की लकीरें नजर आने लगीं जो इस बात का द्योतक थीं कि चेहरे पर किसी किस्म का मेकअप नहीं है।

"ये तो...ये तो शक्ल भी मेरी नहीं है।" वह पागलों की तरह बड़बड़ाया और फिर तेजी से अराधना की तरफ पलटकर

बहुत ही खतरनाक लहजे में बोला—"ये सब तुम्हीं ने किया है। कोई बहुत गहरी साजिश है ये। बताओ—तुमने मेरी शक्ल ही नहीं बल्कि पूरा अस्तित्व कैसे बदल डाला?"

निरंतर उसकी तरफ देख रही अराधना के चेहरे पर अब खौफ के भाव नजर आने लगे थे। चाहकर भी वह मुंह से कोई आवाज न निकाल सकी जबकि इस बीच काले खां का ध्यान उस दरवाजे की तरफ चला गया जिसे बाहर की तरफ से निरंतर तोड़ने की कोशिश की जा रही थी, साथ ही गुस्से में डूबी कई आवाजें बार-बार अराधना को उसका नाम लेकर पुकार रही थीं।

"इसका मतलब तू अकेली नहीं है। कुछ और साथी भी हैं तेरे। तुम सबने मिलकर मेरा अस्तित्व बदलने की साजिश रची है मगर मैं ऐसी किसी भी साजिश को कामयाब नहीं होने दूंगा।" कहने के साथ जब खूंखार अंदाज में अराधना की तरफ बढ़ने की कोशिश की तो आतंक की ज्यादती के कारण अराधना का मुकम्मल जिस्म सूखे पत्ते की मानिंद कांप उठा था।

पीछे हटती हुई वह कांपते लहजे में कह उठी—"मेरी समझ में नहीं आ रहा आनंद कि तुम ऐसा क्यों कर रहे हो? समझ क्यों नहीं रहे कि अगर मैंने दरवाजा खोल दिया तो तुम्हें इस हालत में देखकर पता नहीं वे लोग क्या कर बैठेंगे!"

"तेरी जान की कीमत पर शायद कोई कुछ न कर सके।" बड़े ही खूंखार अंदाज में कहने के साथ काले खां का हाथ वहां गया जहां उसका होलेस्टर लटका रहता था मगर वहां कोई होलेस्टर नहीं था। बल्कि वर्दी भी नहीं थी जिस्म पर। इस वक्त उसने महरून कलर का बहुत ही कीमती कपड़े का गाऊन पहना हुआ था।

एक पल के लिए तो अपने पास कोई हथियार न पाकर बौखला ही गया था लेकिन अगले पल अराधना की तरफ झपटा, इरादा एक बार फिर अपने हाथ उसकी गर्दन पर जमा देने का था मगर अराधना ने न केवल खुद को बचाया बल्कि लपककर दरवाजा खोल दिया।

आंधी-तूफान की तरह दो युवक और एक अधेड़ दम्पत्ति कमरे में आए। सबके मुंह से 'क्या हुआ...क्या हुआ' निकल रहा था।

काले खां समझ चुका था कि अगर इस वक्त वह चूका तो गहरे संकट में फंस जाएगा, अतः तेजी से झपटा। एक बार फिर उसके हाथ अराधना की गर्दन पर जम गए। गुर्राया—"किसी ने भी मेरी तरफ बढ़ने की कोशिश की तो मैं इसकी गर्दन दबा दूंगा।"

दोनों युवकों ने एक-दूसरे की तरफ देखा।

उनके चेहरों पर परम आश्चर्य के भाव थे। फिर—

"हरामजादे!" अट्ठाइस वर्षीय हट्टे-कट्टे नौजवान ने कहर बरपा देने वाले अंदाज में कहा था—"हमारे हाथों से यही तो बचाए हुए है तुझे...और तू इसी को मार डालने की धमकी दे रहा है!"

काले खां की समझ में उसकी बात का मतलब बिल्कुल नहीं आया। अपने हाथ अराधना की गर्दन पर जमाए उसने कहर भरे स्वर में कहा था—"मुझे बताओ, ये क्या नाटक है?"

"नाटक तो तू कर रहा है कमीने। इस बार दांत भींचकर कहने वाले की उम्र छब्बीस के आसपास थी—"आज से नहीं, शुरु से नाटक कर रहा है तू। बल्कि तेरी करतूत को नाटक की जगह साजिश कहा जाए तो ज्यादा मुनासिब होगा। तू शुरु से जानता था कि हम सब अराधना से बहुत प्यार करते हैं। इसीलिए तूने इसे अपने प्रेमजाल में फंसाया। हमने इसे यह समझाने की बहुत कोशिश की कि तू गुंडा है, लफंगा है। तू इससे नहीं बल्कि हमारी दौलत से प्यार करता है। उसी

की वजह से इसके पीछे पड़ा है। मगर ये नहीं मानी। हममें से किसी की एक न सुनी इसने और तेरे जादू में फंसी होने के कारण हमसे विद्रोह करके तुझसे शादी करने पर आमादा हो गई। तब, हमें मजबूर होकर इसकी शादी तुझसे करनी पड़ी।"

भन्नाए हुए काले खां ने कहा–"मेरी समझ में नहीं आ रहा कि तुम लोग क्या बक रहे हो।"

"लेकिन हमारी समझ में सब कुछ आ रहा है। यह भी कि तू ये सारा नाटक क्यों कर रहा है।" अधेड़ आयु के पुरुष ने कहा–"तेरा ये नाटक उसी दिन शुरु हो गया था जब तुझे पता लगा कि आर्थिक रूप से हमारी अंदरूनी पोजीशन वह नहीं है जो बाहर से नजर आती है। कर्ज से बिंधे पड़े हैं हम। ये बंगला, कारें और फैक्ट्रियां...सब गिरवी पड़ी हैं। तुझे लगा–जिस वजह से अराधना से शादी की थी, तेरे हाथ वह कुछ भी लगने वाला नहीं है। जब हमारे पास कुछ है ही नहीं तो तेरे हाथ क्या लगेगा! तभी से तू अराधना से पीछा छुड़ाने के लिए तरह-तरह के नाटक करने लगा और अब...अब ये नाटक कर रहा है कि जैसे याददाश्त गुम हो गई हो। जैसे तुझे याद ही न हो कि अराधना से तेरी शादी हुई है और हम तेरे इनलॉज हैं।"

"और अब, अराधना से शादी के बाद हम तुझे इस तरह इससे पीछा नहीं छुड़ाने देंगे।" इस बार छब्बीस वर्षीय युवक बोला–"मेरे दो-चार घूंसों में ही तेरी याददाश्त वापस आ जाएगी।"

"मेरी समझ में नहीं आ रहा कि तुम क्या बक रहे हो।" काले खां कहता चला गया–"अगर वो सच है जो तुम कह रहे हो तो ये भी सच्चाई है कि मैं कोई आनंद-वानंद नहीं हूं। मेरा नाम काले खां है और मुझे नहीं मालूम कि मैं इस शरीर में कैसे आ गया।"

"ऐसा मत कहो बेटे, इतनी जल्दबाजी ठीक नहीं होती।" अधेड़ औरत नर्म और प्यार भरे लहजे में बोली थी–"हम लोग कोशिश कर रहे हैं। बहुत जल्द कर्जमुक्त हो जाएंगे। ये बंगला, ये कारें और सारी फैक्ट्रियां पुनः हमारी होंगी। उसमें तुम्हारा हिस्सा भी होगा।"

"समझने की कोशिश क्यों नहीं कर रही बुढ़िया! मुझे तुम लोगों के कोठी, बंगले और दौलत से कुछ भी लेना-देना नहीं है। मैं...

"मम्मी को गाली देता है हरामजादे!" गुस्से में दहाड़ने के साथ छब्बीस वर्षीय युवक उसकी तरफ लपका ही था कि अराधना में जाने कहां से इतनी ताकत आ गई कि काले खां के मजबूत बंधनों से निकलकर उसी की ढाल बनती गुर्राई–"तुम आनंद को हाथ भी नहीं लगाओगे सुनील, ये हम पति-पत्नि के बीच का मामला है।"

"तुझे कितनी बार समझाएं अराधना कि अब ये तुम दोनों के बीच का मामला नहीं रहा।" एक बार फिर अट्ठाइस वर्षीय युवक चीखा–"तू ये क्यों महसूस नहीं कर रही कि तुझसे पीछा छुड़ाने के नए-नए बहाने बना रहा है ये और इस बार तो हद ही कर दी। कह रहा है कि ये आनंद नहीं काले खां है। अगर तू हमें रोके न रहती तो हालात इतने न बिगड़ते। अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है। सामने से हट जा। हम इसकी अक्ल ठिकाने लगा देंगे।"

"प-प्लीज...प्लीज राजीव भैया।" अराधना बोली–"इन्हें कुछ मत कहो। इससे हालात और बिगड़ जाएंगे। तुम जानते हो कि मैं आनंद के बगैर नहीं रह सकती। बहुत प्यार करती हूं इनसे। तुम सब जाओ, मैं इन्हें समझा लूंगी।"

"तुमने बहुत कोशिश कर ली, अब तो हम ही समझाएंगे इसे।" कहने के साथ सुनील ने अराधना को पकड़कर बलपूर्वक काले खां के सामने से हटा लिया और...उसका ऐसा करना था कि राजीव का मजबूत घूंसा काले खां के चेहरे पर पड़ा।

हलक से चीख निकालता काले खां बैड पर जा गिरा। राजीव पुनः उस पर झपटने वाला था कि अधेड़ औरत उसके और काले खां के बीच आती बोली–"नहीं राजीव, ये ठीक नहीं होगा। हम घर के दामाद पर हाथ नहीं उठा सकते। इससे तो

मामला और बिगड़...

वाक्य अधूरा रह गया।

गुस्से में तमतमाए राजीव ने उसे भी एक तरफ धक्का दे दिया था और...उठने की कोशिश कर रहे काले खां के जवड़े पर एक और जोरदार घूंसा रसीद किया।

इस बार वह फर्श पर जा गिरा।

उसके बाद...राजीव ने उसे संभलने का मौका नहीं दिया। उसके जिस्म पर लात-घूंसे वरसाता चला गया जबकि अधेड़ औरत और अराधना ऐसा न करने के लिए चीखती रह गई थीं।

अधेड़ पुरुष किंकर्त्तव्यविमूढ़ अवस्था में खड़ा था। जैसे समझ न पा रहा हो कि इस अवस्था में उसे क्या करना चाहिए।

काले खां की आंखों के सामने अंधेरा छाने लगा और फिर वह खुद को वेहोश होने से न रोक सका।

काले खां को होश आया।

दिमाग सक्रिय हुआ तो वेहोश होने से पहले की घटना याद आने लगी। उसे लगा—वे लोग उसे आनंद सावित करने की कोशिश नहीं कर रहे थे वल्कि समझ ही आनंद रहे थे।

पर कौन आनंद?
वह आनंद कैसे हो सकता है?
तभी उसे अपने बदले हुए शरीर की याद आई।
कैसे हो गया यह चमत्कार?
क्या चक्कर है ये?

दिमाग में विचार उभरा—'मुझे उत्तेजित हुए वगैर इस चक्कर को समझने की कोशिश करनी चाहिए।'

पलकें कांपीं।

वह आंखें खोलने ही वाला था कि कानों में राजीव की आवाज पड़ी—"मैं फिर कहता हूं पापा, ये याददाश्त गुम होने का केस नहीं है। बेकार ही डाक्टर अंकल को बुलाया है आपने। ये नाटक कर रहा है, थोड़ी और ठुकाई होगी तो लाइन पर आ जाएगा।"

काले खां ने अपनी आंखों और पलकों के बीच हल्की-सी झिर्री बनाई। इतनी बारीक कि किसी को नजर न आ सके।

उसने देखा—राजीव, सुनील, अराधना और उनके मां-बाप के अलावा इस वक्त कमरे में एक और शख्स मौजूद था। उसके जिस्म पर डाक्टरों जैसा लिबास था। उसी ने कहा था—"इतना उत्तेजित होने की जरूरत नहीं है राजीव बेटे, इस मसले को शांति से हल करने में ही समझदारी होगी। मैं तुमसे सहमत हूं, ये याददाश्त गुम होने का मामला तो मुझे भी नहीं लग रहा।"

"तो क्या ये सचमुच नाटक कर रहा है?" अधेड़ ने पूछा।

"मुझे ऐसा भी नहीं लग रहा।"
"मतलब?"

"याददाश्त गुम होने का केस ये इसलिए नहीं हो सकता क्योंकि जिस शख्स की याददाश्त गुम हो जाती है, वह यह पूछता है कि मैं कौन हूं। यह नहीं बताता कि मैं फलां हूं जबकि तुम्हारा कहना ये है कि ये खुद को काले खां बता रहा है और नाटक करता हुआ मुझे इसीलिए नहीं लग रहा क्योंकि कोई भी आदमी ऐसा नाटक नहीं कर सकता जिसके बारे में पहले से जानता हो कि उसके कथन पर कोई यकीन नहीं करेगा। तुम लोगों ने बताया कि इसने खुद कहा कि ये शक्ल मेरी नहीं है, ये जिस्म भी मेरा नहीं है। अपने होशोहवास में कोई भी शख्स ये बात नहीं कह सकता क्योंकि जानता होगा कि उसकी बात पर कोई यकीन नहीं करेगा। ऐसा तो आदमी तभी कह सकता है जब खुद अपने होशोहवास में न हो।"

अधेड़ महिला के चेहरे पर अजीब-सा खौफ नजर आने लगा। डरी हुई-सी वह बोली—"इसका मतलब तो ये हुआ कि आनंद पर किसी का भूत सवार हो गया है!"

"बिल्कुल ठीक कहा आपने।" कजारिया मुस्कराया—"ओझा और भूत-प्रेत उतारने का दावा करने वाले लोग इस कंडीशन को ये ही शब्द देते हैं और फिर अपने ऊटपटांग तरीकों से भूत उतारने की प्रकिया शुरु कर देते हैं मगर...वो सब अंधविश्वास की बातें हैं भाभी, हम जैसे पढ़े-लिखे लोगों को इन बातों में नहीं आना चाहिए।"

"तो फिर ये क्या मामला है?" सुनील ने पूछा।

डाक्टर बोला—"मुझे ये डबल पर्सनेल्टी का केस लग रहा है।"

"डबल पर्सनेल्टी से क्या मतलब हुआ?" अधेड़ आदमी का पूरा चेहरा सवालिया निशान बन गया था।

"कभी-कभी आदमी खुद को वह बताने लगता है जो वह नहीं होता।" डाक्टर कजारिया कहता चला जा रहा था—"ऐसा तब होता है जब आदमी की पर्सनेल्टी पर उस व्यक्ति की पर्सनेल्टी हॉवी हो जाती है जो वह खुद को बता रहा होता है। और वह खुद को दूसरा आदमी सिर्फ बता ही नहीं रहा होता बल्कि समझ भी वही रहा होता है। मेरे ख्याल से आनंद की पर्सनेल्टी पर किसी काले खां की पर्सनेल्टी हॉवी हो गई है।"

"मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आ रहा डाक्टर अंकल कि आप ये क्या कह रहे हैं!" राजीव अब भी गुस्से में नजर आ रहा था—"मैंने पहले कभी ऐसी किसी घटना के बारे में नहीं सुना।"

"तुमने भले ही न सुना हो मगर मैंने ऐसे केस अपनी आंखों से देखे हैं।" कजारिया के होठों पर ऐसी मुस्कान थी जैसे वह राजीव के कथन को बचकाना समझता हो—"बल्कि यदि यह कहूं तो ज्यादा मुनासिब होगा कि मैंने ऐसे कई केस हैंडिल किए हैं।"

हजार आशंकाओं से घिरी अराधना ने पूछा—"तो क्या आनंद अब कभी खुद को आनंद नहीं समझेगा?"

"समझेगा क्यों नहीं, लेकिन..
"लेकिन?"
"ऐसे केस काफी टिपिकल होते हैं।"
"मतलब?" अधेड़ ने पूछा।

"ऐसे शख्स को उसकी अपनी पर्सनेल्टी में वापस लाने के लिए लंबे इलाज से गुजारना पड़ता है जिस पर कोई दूसरी पर्सनेल्टी कब्जा जमा बैठी हो और उसके लिए धैर्य की जरूरत पड़ती है। उस किस्म के उतावलेपन से कोई फायदा होने

वाला नहीं है जिस किस्म का उतावलापन तुम लोग दिखा रहे हो। इससे नुकसान हो सकता है।"

"जो ठीक समझो वो करो कजारिया।" अधेड़ थके-से स्वर में बोला—"हमें आनंद वापस चाहिए। उसके बगैर अराधना...

"कुछ देर के लिए आप सब कमरे से बाहर चले जाएं।" उसने अधेड़ की बात को पूरी होने का मौका नहीं दिया था—"मैं अकेले में इससे बातें करनी चाहूंगा।"

राजीव बोला—"अगर इसने होश में आते ही वैसी हरकतें शुरु कर दीं जैसी सोकर उठते ही की थीं तो?"

डाक्टर कजारिया ने सिर्फ इतना ही कहा—"मुझे ऐसे मरीजों को हैंडिल करना आता है।"

कुछ देर बाद कजारिया के अनुरोध पर वे सभी बाहर चले गए। कजारिया ने अंदर की तरफ से दरवाजे की चटकनी चढ़ाई। वापस बैड के नजदीक आया और साइड टेबल पर रखे जग से थोड़ा-सा पानी लेकर काले खां के चेहरे पर छपके मारे।

काले खां ने यह नहीं जताया कि वह पहले ही होश में आ चुका था। कराहों के साथ, इस तरह आंखें खोलीं जैसे उसके पानी के छपके मारने के कारण होश में आया हो।

कजारिया ने पूछा—"अब तुम कैसे हो मिस्टर काले खां?"

"क...काले खां! हां, मैं काले खां ही हूं।" कहने के साथ वह तेजी से उठ बैठा था—"वे लोग मुझे आनंद क्यों कह रहे थे?"

"उन्हें भ्रम हो गया था, वैसे...क्या मैं जान सकता हूं कि तुम क्या करते हो? बिजनेस या सर्विस?"

"प...पुलिस। मैं पुलिस इंस्पेक्टर हूं।"

"क्या तुम्हें अपने साथ घटी आखिरी घटना याद है?"

काले खां ने अपने जेहन पर जोर डाला और फिर...उसके चेहरे पर खौफ और आश्चर्य के भाव काबिज होते चले गए। लगभग चीख पड़ा था वह—"ओ मॉय गॉड...मैं तो मर चुका हूं।"

कौन था काले खां?

उसके साथ घटी विचित्र घटना का क्या मतलब था?

इस किस्म के सवालों का जवाब है—इस उपन्यास का फर्स्ट पार्ट—'डायन'। वे पाठक जिन्होंने 'डायन' नहीं पढ़ी, सीधे डायन-2 पढ़ने लगे हैं। उनके लिए पेश है, डायन का सारांश—

कहानी अंगद नामक किरदार से शुरु होती है।

उस अंगद से, जिसकी शक्ल प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता इमरान हाशमी से मिलती थी। इसीलिए उसे फिल्मों में इमरान के डुप्लिकेट का रोल मिल जाया करता था। उसके जीवन की सबसे बड़ी समस्या थी—एक ही सपना बार-बार चमकना।

बड़ा ही हौलनाक और डरावना सपना था वह।

सबसे पहले कब्रिस्तान में एक रहस्यमयी औरत कब्र खोदती नजर आती थी। उसके जिस्म पर हर सपने में सफेद लिबास

होता था। लंबे बाल हमेशा इस तरह चेहरे पर पड़े रहते थे कि वह कभी ठीक से उसकी शक्ल न देख सका।

हर सपने में वह कब्र से अपने पति की हड्डियां निकालती थी और उन्हें अपनी साड़ी में लपेटकर पुराने किले में ले जाती थी।

वहां, उन हड्डियों में वह अपने पति यानी अभिजीत की आत्मा को बुलाती थी। बाकायदा उससे बातें करती थी और फिर एक बच्चे की बलि देकर उसका खून अपने पति की खोपड़ी को पिलाती थी। सपने के मुताबिक उसे पूरा विश्वास था कि–सात बच्चों की बलि पूरी होने पर अभिजीत जिंदा हो जाएगा।

वह पांचवीं बलि थी।

अभिजीत की आत्मा ने बताया कि–यदि रिम्पी नाम की लड़की की बलि दी जाए तो वह अगली ही पूर्णिमा को जिंदा हो सकता है क्योंकि रिम्पी पूर्णिमा के दिन पैदा हुई थी इसलिए उसकी बलि को दो बलि माना जाएगा।

सपने के बाद!

हमेशा की तरह अंगद चीखकर बिस्तर से उठा और उसके मां बाप यानी मोहित बनर्जी और गंगोत्री उसकी इस अवस्था से बहुत परेशान हुए। यह सवाल उनके और खुद अंगद के दिमाग को भी कचोटा करता था कि उसे एक ही सपना बार-बार क्यों चमकता है?

फर्क बस इतना होता था कि हर बार बच्चा बदल जाता था।
बाकी सारे दृश्य ज्यों के त्यों होते थे।

इस बार तो एक नई बात हो गई थी। यह कि–वह उस बच्चे को पहचानता था जिसकी बलि कुछ ही देर पहले.सपने में देखी थी। वह बच्चा एकता कपूर और विशाल भारद्वाज की बहुचर्चित फिल्म 'एक थी डायन' में छोटा-सा रोल कर रहा था। अंगद की उससे बात भले ही कभी न हुई हो लेकिन उसे कई बार सेट पर देखा था।

सुबह होते ही अंगद फिल्मसिटी पहुंचा जहां 'एक थी डायन' की शूटिंग चल रही थी। उस दिन वहां वह बच्चा नहीं था। डायरेक्टर कन्नन अय्यर ने बताया कि बच्चे की शूटिंग पूरी हो चुकी है अतः अब उसे सेट पर आने की जरूरत नहीं है।

'एक थी डायन' के लेखक मुकुल शर्मा ने अंगद को न केवल यह बताया कि उस बच्चे का नाम अंकुर है, वह शहर के बहुत बड़े बिजनेसमेन धनपत का बेटा है बल्कि उसका एड्रेस भी दिया।

अगला सीन धनपत के घर का था।
पता लगता है कि अंकुर कल दोपहर से गायब है।

इंस्पेक्टर काले खां(वही काले खां जिसे आप इसी उपन्यास के प्रथम दृश्य में आनंद में परिवर्तित होते देख चुके हैं) अपने एक दरोगा राजपाल के साथ धनपत और उसकी पत्नी सरिता से पूछताछ कर रहा था। उस पूछताछ का नतीजा ये निकला कि–अंकुर को धनपत की सेक्रेटरी ने किडनेप कर लिया है। सेक्रेटरी केवल पंद्रह दिन पहले ही नौकरी पर रखी गई थी और उसका नाम शालू था। हैरत की बात यह थी कि धनपत के पास न शालू का एड्रेस था, न ही फोटो। बस एक मोबाइल नंबर था जो स्वीच ऑफ आ रहा था।

वहां पहुंचकर जब अंगद को अंकुर के किडनेप के बारे में पता लगा तो मारे घबराहट के उसका बुरा हाल हो गया।

तो क्या उसका सपना सच्चा था?

उसने एकांत में इंस्पेक्टर काले खां और दरोगा राजपाल को सपने के बारे में बताया।

काले खां तो उसकी वेसिर-पैर की बातें सुनकर इतना झल्ला गया कि पूरी बात सुने बिना ही गुर्राया–'अपनी ये बकवास धनपत और उसकी पत्नी के सामने मत कर देना वरना बेचारे हार्ट अटैक से ही मर जाएंगे।' मगर, राजपाल का मानना था कि–हो न हो, अंगद का सपना सच्चा है। शालू ही वह औरत है जिसे अंगद ने सपने में देखा था और उसने अंकुर की बलि दे दी है।

धनपत के ड्राइवर का नाम अखिल था।

काले खां उसे अपने साथ पुलिस हैडक्वार्टर ले गया। अखिल के बताए हुलिए के मुताविक पुलिस का कंप्यूटर आर्टिस्ट शालू का फोटो वनाने की कोशिश करने लगा। ठीक उसी वक्त एक ऐसी घटना घटी जिसने पुलिस हैडक्वार्टर में मौजूद न केवल सभी पुलिस वालों के बल्कि काले खां के भी होश उड़ा दिए।

शालू का हुलिया बताता अखिल अचानक गुर्राने लगा कि वह हुलिया नहीं बताएगा। जब काले खां ने पूछा–क्यों? तो उसने बड़े ही अजीब लहजे में कहा–शालू मना कर रही है।

उसका कहना था कि शालू उसके अंदर है और कह रही है कि अगर तूने कुछ भी बताया तो मैं तुझे मार डालूंगी।

काले खां को लगा कि वह ड्रामा कर रहा है। इसलिए सख्ती की मगर अखिल अपना सिर दीवार पर मारने लगा और देखने वालों को साफ-साफ ऐसा लग रहा था जैसे कोई अदृश्य शक्ति उसके बाल पकड़कर सिर दीवार पर पटक रही हो।

कुछ ही देर में वह लहूलुहान होकर बेहोश हो गया।
उसे अस्पताल पहुंचाया गया।

रास्ते में राजपाल ने काले खां से कहा–एक तरफ अंगद को वह सपना चमकना और दूसरी तरफ अखिल के साथ ये सब होना। अब तो मान जाओ सर कि ये कोई रूहानी चक्कर है।

हालांकि काले खां के पास राजपाल के सवालों के जवाब न थे मगर वह उसकी बातें मानने को तैयार नहीं था।

जो हुआ था, अस्पताल में काले खां ने जब उसके बारे में डाक्टर तेवतिया से बात की तो उसने कहा–ये मिर्गी का दौरा था। मगर अखिल की पत्नी ने बताया–उन्हें ऐसा दौरा पहले कभी नहीं पड़ा। काले खां की समझ में आकर नहीं दे रहा था कि ये मामला है क्या?

दूसरी तरफ राजपाल बराबर कहे चला जा रहा था कि ये सब रूहानी चक्कर है और आपने अंगद की पूरी बात न सुनकर गलती की है। अंततः वह काले खां को अंगद की पूरी बात सुनने के लिए उसके घर चलने को तैयार कर लेता है।

वे अंगद के घर पहुंचे।

डाक्टर तेवतिया वहां पहले से मौजूद था। अंगद के सपने को लेकर चर्चा हुई। हालांकि तेवतिया के पास भी बहुत से सवालों के जवाब नहीं थे मगर काले खां की तरह वह भी इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं था कि अंकुर के गायब होने और अंगद के सपने में कोई कनेक्शन हो सकता है। उसका कहना था–अंगद को किसी बीमारी के कारण बार-बार एक ही सपना चमकता है और इसके लिए उसे डाक्टर कजारिया से मिलना चाहिए क्योंकि वह ऐसी बीमारियों का इलाज करने में माहिर है। उनके बीच बातें चल ही रही थीं कि काले खां के मोबाइल पर फोन आया।

बताया गया कि अंकुर की लाश मिली है।

अगले सीन में हम अंगद को बैंड-स्टेंड पर तरूणा के साथ बैठा दिखाते हैं। तरूणा भी 'एक थी डायन' में एक छोटा-सा रोल कर रही थी और उसके तथा अंगद के बीच अफेयर चल रहा था।

मगर उस वक्त वे वहां मुहब्बत की नहीं बल्कि अंकुर की लाश के बारे में बातें कर रहे थे।

अंगद ने तरूणा को बताया कि लाश ठीक उसी अवस्था में मिली है जिस अवस्था में उसने सपने में बलि चढ़ाए जाते हुए देखा था। यानी–सिर अलग, धड़ अलग और सीने में दिल तो था ही नहीं क्योंकि उसने उस औरत को अंकुर के सीने से उसका धड़कता हुआ दिल निकालकर खाते हुए देखा था।

जाहिर है कि इतने सबके बाद अंगद मानसिक रूप से बहुत परेशान था। तरूणा उसे अपने प्यार की बातों में बहाने की कोशिश कर रही थी। शादी तक की बातें कीं उसने मगर अंगद ने कहा–जब तक मैं इस गुत्थी को न सुलझा लूं कि मुझे ये सच्चे सपने क्यों चमकते हैं, तब तक शादी के बारे में सोच भी नहीं सकता।

वह कहता है–अब तो मुझे उस दुष्ट औरत की अगली शिकार रिम्पी की फिक्र है। पता नहीं वह बेचारी कौन है, कहां रहती है?

दस वर्षीय रिम्पी को दिखाते हैं।
वह दीवानगी की हद तक इमरान हाशमी की फैन है।

इतनी ज्यादा कि छः मंजिला इमारत की छत पर चढ़ जाती है और अपने पापा, जिसका नाम महकार था, को धमकी देती है कि अगर उन्होंने उसके इस बर्थडे पर उसे इमरान हाशमी से मिलाने का वादा नहीं किया तो अभी की अभी नीचे कूद जाएगी।

खूब हंगामा होता है। सारा मौहल्ला इकट्ठा हो जाता है। डरे सहमे लोग महकार को उसकी डिमांड मान लेने की सलाह देते हैं मगर महकार को अच्छी तरह मालूम है कि रिम्पी सूखी धमकी दे रही है। वह किसी हालत में टैरेस से नहीं कूदेगी लेकिन अगर एक बार उसने उसे इमरान हाशमी से मिलाने का वादा कर लिया तो उसकी जान खा जाएगी और उस जैसा साधारण आदमी भला उसे इमरान से कैसे मिला पाएगा?

रिम्पी टैरेस के किनारे पर ऐसी खड़ी है जैसे अभी कूद जाएगी। महकार मौहल्ले वालों की भीड़ के बीच सड़क पर। दोनों के बीच बहस चल रही है। तभी सड़क पर खड़े लोग देखते हैं कि मौहल्ले का एक लड़का खुद को हीरो समझता हुआ रिम्पी के पीछे से उसकी तरफ दबे पांव बढ़ रहा है। रिम्पी को उसके बारे में पता नहीं है और मौका लगते ही वह रिम्पी को दबोच लेता है।

जिद्दी किस्म की रिम्पी इस बात पर बुरी तरह भड़क जाती है। उसमें और लड़के में हाथापाई होने लगती है। सड़क पर खड़ी भीड़ उस सबको सांस रोके देख रही होती है। अंत में रिम्पी अपने दांत लड़के की कलाई में गड़ा देती है। चीखता हुआ लड़का उसे छोड़ देता है मगर उस वक्त रिम्पी टैरेस के ऐसे हिस्से पर होती है कि भरपूर कोशिश के बावजूद खुद को संभाल नहीं पाती।

महकार के साथ सभी मौहल्ले वालों के हलकों से चीख निकल जाती हैं क्योंकि उनकी आंखें रिम्पी के जिस्म को हवा में लहराकर सड़क की तरफ गिरते देख रही थीं।

मगर 'जाको राखे सांईयां, मार सके न कोय' वाली कहावत चरितार्थ होती है। रिम्पी उसी समय सड़क से गुजर रहे रुई से भरे ट्रक के अंदर जाकर गिरती है। उसे खरोंच तक नहीं आती लेकिन दहशत बैठ गई है। उसे बुखार चढ़ जाता है।

जब भी होश में आती है 'इमरान-इमरान' पुकारकर पुनः बेहोश हो जाती है।

डाक्टर भी यह सलाह देता है कि अगर किसी तरह उसे इमरान से मिला दिया जाए तो वह तुरंत ठीक हो सकती है।

रिम्पी के बर्थडे वाले दिन महकार फिल्मसिटी में वहां पहुंचता है जहां 'एक थी डायन' की शूटिंग चल रही थी।

वह टेक के दरम्यान ही दौड़कर इमरान हाशमी के पैर पकड़ लेता है और अपनी बेटी से मिलने के लिए गिड़गिड़ाने लगता है।

यूनिट के लोग उसे पकड़ लेते हैं और दूर ले जाने लगते हैं जबकि उनकी गिरफ्त में फंसा महकार निरंतर चीख-चीखकर इमरान से रिक्वेस्ट कर रहा होता है। इमरान यूनिट के लोगों से रुकने के लिए कहता है। महकार से बात करता है। उसकी बातों से प्रभावित होता है और अपने सेक्रेटरी से उसे मेकअप रूम में ले जाने के लिए कहता है। टेक के बाद इमरान मेकअप रूप में पहुंचता है।

महकार उसे बताता है कि रिम्पी उसकी कितनी दीवानी है और उसने क्या हरकत की और तब से अब तक बीमार है जबकि आज उसका बर्थडे है। इमरान उसकी बातें सुनकर द्रवित हो जाता है। वह उसके साथ उसके घर चलने को तैयार है लेकिन तभी उसका सेक्रेटरी बताता है कि उसके पास कहीं भी जाने का टाइम ही कहां है। उसे अगली फ्लाइट से कनाडा जाना है। वहां उसकी वहां के मेयर से मीटिंग है। इमरान दुविधा में फंस जाता है। तभी उसके दिमाग में कुछ आता है। सेक्रेटरी से पूछता है–अंगद कहां है?

अंगद को दिखाते हैं।
'एक थी डायन' के सेट पर एक तेंदुआ घुस आया है।
चीखो पुकार मची हुई है।

यूनिट के सभी लोग चीखते-चिल्लाते इधर-उधर भाग रहे हैं। तरूणा भी उन्हीं में है। अंगद उसी को रोकता है। पूछता है कि क्या हुआ? बदहवास हालत में वह अंगद को तेंदुए के बारे में बताती है। अंगद उल्टा सेट की तरफ दौड़ पड़ता है।

घबराकर तरूणा भी उसके पीछे दौड़ती है और फिर अंगद और तेंदुए के बीच हल्का युद्ध होता है।

अंत में तेंदुआ जंगल की तरफ भाग जाता है।
अंगद की जय-जयकार हो जाती है।

यूनिट के लोग उसे कंधों पर उठाकर उसके जिंदाबाद के नारे लगा रहे हैं। तभी वहां इमरान का सेक्रेटरी पहुंचता है और अंगद से कहता है कि इमरान ने उसे फौरन अपने मेकअप रूम में बुलाया है।

अंगद उसके साथ मेकअप रूम में पहुंचता है।

महकार उसे देखकर दंग रह जाता है क्योंकि वह हूबहू इमरान नजर आता है। तब, वहां ये तय होता है कि असली इमरान कनाडा जाएगा और अंगद इमरान बनकर महकार के साथ रिम्पी से मिलने उसके घर जाएगा। इमरान ने इस काम के लिए अंगद को अपनी गाड़ी ही नहीं बल्कि ड्राइवर भी दे दिया था। इधर, अंगद यह सुनते ही चौंक पड़ता है कि महकार की बेटी का नाम रिम्पी है और उस वक्त तो उसकी हालत ही खराब हो जाती है जब पता लगता है कि रिम्पी का जन्म पूर्णिमा की रात को हुआ था।

यह बात जब वह तरूणा को बताता है तो तरूणा भी दंग रह जाती है। महकार कहता है कि पता नहीं किस्मत उससे क्या कराना चाहती है कि जिस लड़की को वह खोजता फिर रहा था उसका पिता खुद ही इमरान की ख्वाहिश लिए फिल्मसिटी आ पहुंचा और चांस ऐसे बने कि अब वह उसके साथ जा रहा है।

इमरान हाशमी की गाड़ी में सवार होकर अंगद के साथ तरूणा भी महकार के घर पहुंचती है। महकार के फ्लैट के बाहरी कमरे में एक औरत का चित्र लगा होता है जिस पर चंदन की माला चढ़ी हुई थी। उसे देखकर अंगद न केवल बुरी तरह चौंकता है वल्कि देखते ही देखते उसकी आंखें भर आती हैं।

महकार और तरूणा से भी यह बात छुपी नहीं रहती। वे उससे पूछते हैं कि वह उस फोटो को देखकर क्यों चौंका? अंगद उनके सवाल का जवाव टाल जाता है लेकिन वातों ही वातों में महकार से यह जान लेता है कि वह फोटो उसकी पत्नी सुकन्या का है जो एक हादसे में पांच साल पहले गुजर चुकी है।

जब वह महकार से सुकन्या की मौत के बारे में पूछता है तो महकार के चेहरे पर दुख और खौफ के भाव उभर आते हैं और वह बात को टालता हुआ कहता है कि तुम यहां रिम्पी की खातिर आए हो, उससे मिलकर उसे खुशी दो।

जाने क्या सोचकर अंगद भी उस बात पर इतना जोर नहीं देता और तीनों रिम्पी के कमरे में पहुंचते हैं। वहां कदम रखते ही अंगद और तरूणा हक्के-बक्के रह जाते हैं क्योंकि कमरे की एक भी दीवार नहीं चमक रही थी। चप्पे-चप्पे पर इमरान हाशमी के फोटो और पोस्टर्स लगे हुए थे। वहां उनकी मुलाकात नंदिनी दास से होती है जो एक वला की खूबसूरत लड़की थी। वह तीन दिन पहले ही उनके बगल वाले फ्लैट में किराए पर रहने आई थी लेकिन केवल तीन ही दिन में रिम्पी उससे बहुत ज्यादा घुल-मिल गई थी। इस वक्त भी, यानी महकार की गैर मौजूदगी में वही रिम्पी की देखभाल कर रही थी। रिम्पी को जगाया जाता है। अपने सामने इमरान हाशमी को देखकर वह खुशी से इस कदर उछल पड़ती है कि बुखार जाने कहां उड़नछू हो जाता है। वह अंगद को इमरान समझकर उसकी गोद में चढ़ जाती है। इमरान हाशमी से संवंधित इतनी-इतनी बारीक बातें करती है जो किसी दीवाने को ही पता हो सकती हैं।

कहती है—आज शाम को मेरी बर्थडे पार्टी है, तुम्हें उसमें मौजूद रहना है। जब महकार कहता है कि पार्टी कैसे होगी, तुम्हें तो बुखार है। तव रिम्पी अपने विस्तर में मौजूद प्याज दिखाती हुई कहती है कि बुखार इसके कारण था। उसने किसी किताब में पढ़ा था क़ि अगर प्याज को बगल में दवा लिया जाए तो बुखार चढ़ जाता है और उसने महक़ार को इमरान के पास भेजने के लिए इसी तरकीब का इस्तेमाल किया था। चारों जोर से ठहाका लगाकर हंसते हैं।

उधर, काले खां और राजपाल धनपत के बंगले पर पहुंचते हैं। अंकुर की डैडबॉडी मिलने की सूचना देते हैं।

जाहिर है कि वहां कोहराम मचना था, मचा।
लेकिन काले खां का तो मकसद ही कुछ और था।

जब हालात थोड़े सामान्य हुए तो उसने धनपत से अपने साथ पुलिस हैडक्वार्टर चलने के लिए कहा।

राजपाल को जब यह पता लगा कि काले खां धनपत को उसके बयान के आधार पर शालू का फोटो बनवाने के मकसद से ले जा रहा है तो उसके छक्के छूट गए।

उसने काले खां से कहा—अखिल का हश्र देखने के बावजूद आप ये क्या बेवकूफी कर रहे हैं सर? मेरा दावा है कि शालू एक रूहानी ताकत है और वह अपना फोटो नहीं बनने देगी। क्यों जान बूझकर धनपत की जान खतरे में डाल रहे हैं?

मगर काले खां एक नहीं सुनता।

धनपत को कंप्यूटर के सामने ले जाकर बैठा देता है। उधर, कंप्यूटर आर्टिस्ट की हालत खराब है। उसे लग रहा है कि पुनः वैसा ही कोई हादसा होगा जैसा अखिल के साथ हुआ था।

वह कांपते दिल और कांपते हाथों से धनपत के बताए हुलिए के मुताबिक फोटो बनाने की कोशिश करता है। आंख, नाक और होंठ ही बन पाए थे कि एक तेज आवाज के साथ कंप्यूटर स्क्रीन टूट गई और खील-खील होकर विखर गई।

इस बार किसी को कोई नुकसान तो नहीं पहुंचा था मगर फोटो नहीं बन सका पर काले खां और धनपत के दिमाग में यह नहीं आ रहा था कि स्क्रीन टूटी...तो टूटी क्यों? जबकि राजपाल के प्वाइंट ऑफ व्यू से ये सारे खेल शालू नाम की डायन खेल रही थी।

तीन दिन बाद उसने पुराने अखबार में छपी रिम्पी से संबंधित खबर पढ़ी और उछल पड़ा। वह खबर रिम्पी के टैरेस पर चढ़कर हंगामा उतारने के बारे में थी।

दौड़ा-दौड़ा काले खां के पास पहुंचा।
अखबार दिखाया।

जब काले खां ने पूछा–तुम्हारी हालत ऐसी क्यों हो रही है तब वह बोला कि आप शायद भूल गए हैं कि'अंगद को चमके सपने के मुताबिक उस औरत की अगली शिकार का नाम रिम्पी है।

काले खां थोड़ा चौंका लेकिन फिर बोला–क्या जरूरी है कि यह वही रिम्पी हो। इस बात की तहकीकात करने के लिए अंततः राजपाल उसे रिम्पी के घर चलने के लिए तैयार कर लेता है।

तरूणा जब अकेले में अंगद से पूछती है कि तुम सुकन्या के फोटो को देखकर चौंके क्यों थे तो अंगद की आंखें भर आती हैं।

चेहरा भावुक हो उठता है।

वह बताता है कि सुकन्या मेरी दीदी यानी बड़ी बहन है।

सुकन्या चौंककर कहती है–तुम्हारी दीदी? आज से पहले तो तुमने कभी नहीं बताया कि तुम्हारी कोई बड़ी बहन भी है?

तब अंगद कहता है कि–मेरी जुबान पर ताले लगे हुए थे।

जब तरूणा ने पूछा कि–कैसे ताले तो जवाब में अंगद ने बताया कि–बारह साल पहले की बात है, मैं छोटा था। मैं, मेरे माता-पिता और सुकन्या दीदी चमनगढ़ नामक गांव में रहते थे। वहां एक गांव में रहने वाले सभी परिवारों का गोत्र एक ही था अर्थात् सारे गांव को एक ही खानदान माना जाता था। इस नाते सभी लड़के-लड़कियों को एक दूसरे का भाई-बहन माना जाता था।

मगर दीदी को गांव के ही किसी लड़के से प्यार हो गया।

ऐसा गांव के लड़के-लड़कियों के बीच पहले भी कई बार हो चुका था और इस जुर्म में गांव वाले सजा के तौर पर उन्हें मार चुके थे। इसलिए दीदी ने उस लड़के के साथ हमेशा के लिए गांव छोड़ दिया। रात के वक्त उनके तकिए से एक लेटर मिला था। उसमें उन्होंने यह भी नहीं लिखा था कि वे किस लड़के के साथ गांव छोड़ रही हैं। बस ये लिखा था कि क्योंकि उन्हें मालूम है कि आपको और गांव वालों को किसी हालत में यह रिश्ता मंजूर नहीं होगा इसलिए हमेशा के लिए गांव छोड़कर जा रही हैं।

उस लेटर को पढ़कर पिताजी खूब गुस्सा हुए थे। खूब रोए थे। अपना सिर दीवारों में दे-देकर मारा था और बार-बार यही कह रहे थे कि बेटी ने उनकी नाक कटवा दी और अब वे गांव में किसी को मुंह नहीं दिखा सकेंगे। रात के बारह बजे उन्होंने अंधेरे में हमेशा के लिए गांव छोड़ने का फैसला लिया और मुझे और मां को लेकर मुंबई आ गए। तब के बाद हमने कभी-भी गांव की तरफ मुड़कर नहीं देखा और सुकन्या दीदी के बारे में तो उन्होंने मुझसे और मां से यह कह दिया था कि किसी की जुबान पर उसका नाम तक न आ जाए। जिस दिन ऐसा हो गया उस दिन वे हमेशा के लिए हमें छोड़कर कहीं भी चले जाएंगे। समझो कि–हमारी कोई बेटी थी ही नहीं।

अंगद तरूणा को इतना सब ही बता पाया था कि महकार वहां आ गया। उसे यह नहीं मालूम था कि तरूणा और अंगद के बीच क्या बातें हो रही थीं। अंगद ने उससे पूछा–सुकन्या की मौत के बाद तुमने दूसरी शादी क्यों नहीं की? तब, महकार की बातों से यह बात निकलकर सामने आई कि महकार और सुकन्या एक दूसरे से बहुत ज्यादा प्यार करते थे। उसने बताया कि जिस लड़की ने मेरी खातिर हमेशा के लिए अपने माता-पिता और सबसे प्यारे भाई सुजान(अंगद के बचपन का नाम) को हमेशा के लिए छोड़ दिया था, वह उसके मरने के बाद दूसरी शादी करके उससे बेवफाई कैसे कर सकता है!

अंगद ने जब महकार को कुरेदा तो उसने बताया कि–मैं चमन गढ़ का रहने वाला हूं। मैं और सुकन्या प्यार करने लगे थे जिस वजह से हमें गांव छोड़ना पड़ा और यहां आकर शादी कर ली। सुकन्या ने भी अपने घर लेटर छोड़ दिया था, मैंने भी। फिर धीरे-धीरे हमें गांव छोड़े साढ़े पांच साल हो गए। छः महीने की रिम्पी हमारी गोद में थी। अपने परिवारों की याद तो हम दोनों को आती ही थी। सुकन्या को सबसे ज्यादा याद अपने भाई सुजान की आती थी।

सो, एक दिन हमने सोचा–गांव चला जाए। संभव है इतने साल बाद परिवार वाले हमें माफ कर दें। एक रात छुपते-छुपाते गांव पहुंचे। मेरा घर गांव के बाहरी किनारे पर ही है। सबसे पहले वहीं पहुंचे। मां तो हमें देखकर खुश हो गई लेकिन पिता भड़क गए। मां ने बड़ी मुश्किल से उन्हें काबू में किया। रिम्पी को उनकी गोद में देकर बोली–देखो तो सही, तुम्हारी पोती कितनी प्यारी है।

पिता भी भावुक हो गए।

फिर भी, कहने लगे–मैं गांव के लोगों को कैसे मुंह दिखाऊंगा। तब, यह तय हुआ कि गांव में हमारे आगमन के बारे में किसी को बताया ही नहीं जाएगा। हम जितनी खामोशी से आए हैं, दो चार दिन रुकने के बाद उतनी ही खामोशी के साथ रात के वक्त वापस चले जाएंगे। तब, सुकन्या ने इस उम्मीद में अपने मां-बापू और भैया को बुलाने के लिए कहा कि शायद वे भी मेरे माता-पिता की तरह हमें माफ कर दें लेकिन पता लगा कि वे तो उसी रात गांव छोड़ गए थे और उसके बाद किसी ने उनकी सूरत नहीं देखी।

सुकन्या उस सारी रात रोती रही थी।

दो दिन रहने के बाद हम मुंबई लौट आए थे लेकिन आने से पहले मां ने मुझसे और सुकन्या से यह वादा ले लिया था कि गांव के देवताओं को पूजने हम साल में एक बार गांव जरूर आया करेंगे। हमने नियमपूर्वक चार साल तक उस वादे को निभाया लेकिन पांचवें साल जब देवता पूजने गए और वहां से लौट रहे थे तो...

इतना कहने के बाद महकार के चेहरे पर आतंक और खौफ के भाव उभर आए थे। अंगद आगे की कहानी जानने के लिए बेचैन हो उठा परंतु तभी वहां रिम्पी आ टपकी थी।

वो कहने लगी कि सब टैरेस पर चलो, देखो कि मैंने अपने बर्थडे की क्या तैयारियां की हैं। उन्होंने उसे टालने की बहुत कोशिश की लेकिन वह रिम्पी ही क्या जो टल जाए!

बात अधूरी रह गई। सबको टैरेस पर जाना पड़ा।
रात का वक्त।

बिल्डिंग के टैरेस पर रिम्पी की बर्थडे पार्टी चल रही थी। उसमें ज्यादातर बच्चे शामिल थे। बड़ों में उसने केवल अपनी दो टीचर्स और नंदिनी को बुलाया हुआ था।

बड़े हों या बच्चे, इमरान हाशमी(अंगद) से मिलकर सभी बहुत खुश और गद्‌गद्‌ थे और उन सभी से ज्यादा खुश था–अंगद।

वह बहुत ही प्यार भरी नजरों से चारों तरफ फुदकती फिर रही रिम्पी को निहार रहा था। उसे उसमें अपनी सुकन्या दीदी का अक्श नजर आ रहा था। नंदिनी दास अंगद में कुछ खास ही दिलचस्पी ले रही थी और वह सुंदर ही इतनी थी कि अंगद की नजरें भी गाहे बगाहे उसकी तरफ उठ जाती थीं।

तरूणा यह सब नोट कर रही थी।

उसके हृदय से ईर्ष्या की चिंगारियां फूटने लगी थीं। उसकी मनस्थिति से अनभिज्ञ अंगद नंदिनी से घुट-घुटकर बातें कर रहा था।

जब काले खां और राजपाल टैरेस पर चल रही पार्टी में पहुंचे तो केक काटा जा चुका था और नंदिनी पर नजर पड़ते ही राजपाल न केवल बुरी तरह चौंक पड़ा बल्कि कांप भी उठा। उसने काले खां से भी उसे ध्यान से देखने के लिए कहा और बोला–देखिए सर, उस लड़की की आंखें, भंवें, नाक और होंठ वैसे ही हैं जैसे अखिल और धनपत के द्वारा शालू का हुलिया बताए जाने पर कंप्यूटर पर बने थे।

काले खां ने नंदिनी की तरफ देखा और वह भी चौंक पड़ा।

नजरें नंदिनी के चेहरे पर चिपकी रह गई थीं। लगा उसे भी था कि उसके नाक-नक्श कंप्यूटर पर बने अधूरे चेहरे से मिलते हैं मगर गारंटी से नहीं कहा जा सकता था कि वह शालू ही है जबकि राजपाल को इस बात में कोई शक नहीं था। उसका कहना था कि–शालू पंद्रह दिन पहले धनपत की जिंदगी में आई और बलि देने के लिए अंकुर को ले उड़ी और अब वही यहां नंदिनी के नाम से आई है तथा अगली पूर्णिमा से पहले रिम्पी को ले उड़ेगी।

काले खां को नंदिनी से पूछताछ करना जरूरी लगा। वह सबको छोड़कर सीधा नंदिनी के पास पहुंचा और सवाल-जवाब करने शुरु कर दिए। नंदिनी ने बड़ी ही प्यारी नजरों से काले खां की तरफ देखते हुए कहा था–यहां इस किस्म की बातें करके बेचारी रिम्पी का बर्थडे क्यों खराब किया जाए! क्यों न आप मेरे फ्लैट में चलें!

नंदिनी इतनी ज्यादा खूबसूरत थी कि काले खां जैसा शख्स भी उसकी तरफ आकर्षित हुए बगैर न रह सका जबकि राजपाल ने उसे चेताया था–पूछताछ करते वक्त उसकी आंखों में मत झांकना सर, डायनें हिप्नोटिज्म जानती हैं। एक बार को काले खां के जिस्म में भी झुरझुरी-सी दौड़ गई थी लेकिन फिर सिर को झटककर राजपाल के कमेंट्स से अपने दिमाग को मुक्त करने की कोशिश की।

नंदिनी के फ्लैट नंबर छः सौ छः में काले खां ने उससे पूछताछ शुरु की। मुख्य मकसद यह जानना था कि यहां से पहले वह कहां रहती थी और उसके परिवार में और कौन-कौन हैं?

परंतु अगर यह लिखा जाए तो गलत न होगा कि उसके जवाबों ने काले खां की खोपड़ी घुमाकर रख दी थी।

उसने बताया कि मैं दरभंगा की रहने वाली हूं। पांच दिन पहले वह बिल्डिंग पूरी तरह धराशायी हो गई जिसमें मैं रहती थी। मेरे मां-बाप और एक भाई ही नहीं बल्कि बिल्डिंग में रहने वाले सभी लोग मारे गए। सिर्फ मैं बची हूं और मैं भी केवल इसलिए बच गई क्योंकि उस वक्त बिल्डिंग में नहीं थी।

उस हादसे के बारे में काले खां ने अखबार में पढ़ा था।

बोला कि–वो बिल्डिंग तो रात के दो बजे गिरी थी, इतनी रात को आप बिल्डिंग में नहीं थीं तो कहां थीं?

उसने जवाब दिया–श्मशान में।

काले खां को झटका-सा लगा। राजपाल की तो रूह ही फना हो गई। हिम्मत करके काले खां ने पूछा–रात के दो बजे

आप श्मशान में क्या करने गई थीं? तो उसने जवाब दिया–मैं काले जादू और उन्हें करने वाले अघोरियों पर रिसर्च कर रही हूं। वे लोग उसी समय श्मशान में मिलते हैं, इसलिए गई थी मगर उनमें से तो कोई मिला नहीं, हमारी रिहाइशी बिल्डिंग जरूर गिर गई।

कहने का मतलब ये कि काले खां ने हर तरह से घुमा फिराकर पूछताछ कर ली लेकिन कोई ऐसा प्वांइट नहीं मिला जिसके बेस पर इस नतीजे पर पहुंचा जा सकता कि वह लड़की वही है या नहीं जो खुद को बता रही है। उसके पास खुद को नंदिनी साबित करने वाला कोई आइडेंटिटी कार्ड भी नहीं था।

उसका कहना था–सबकुछ उस बिल्डिंग में दफन हो गया। अगर आपको मुझे नंदिनी साबित करने का कोई सबूत मिल जाए तो मुझे भी जरूर दे देना ताकि भविष्य में मेरे सामने वैसी कोई दुविधा न आए जैसी इस समय आई हुई है। जबकि काले खां यह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि नंदिनी सचमुच दरभंगा की उसी बिल्डिंग में रहती थी जो अखबार की रिपोर्ट के मुताबिक धराशायी हो गई थी या उसकी आड़ में कोई झूठी कहानी घढ़ रही थी।

अंततः उसे उससे पूछताछ करनी छोड़कर बैरंग अवस्था में फ्लैट से निकलना पड़ा।

अब राजपाल को पूरा यकीन हो गया था कि वह शालू ही है मगर सवाल यह था कि इस बात को कन्फर्म कैसे किया जाए!

फिर, तरकीब राजपाल के ही दिमाग में आई और वह तरकीब उसने काले खां को बताई। तरकीब यह थी कि धनपत को यहां बुलाकर उसे नंदिनी को दिखाया जाए। वह फौरन बता देगा कि नंदिनी शालू है या नहीं। काले खां ने तुरंत धनपत को फोन करके वहां पहुंचने के लिए कहा और खुद बिल्डिंग के बाहर ही रुक गए।

जिस वक्त धनपत के पास काले खां का फोन आया उस वक्त वह पुलिस कमिश्नर से मिलकर अपने घर की तरफ लौट रहा था। उसने कमिश्नर से कहा था कि उसे नहीं लगता कि काले खां उसके बेटे के मर्डर केस को सुलझा पाएगा, अतः इस केस पर किसी और को नियुक्त किया जाए। काले खां से बात होने के तुरंत बाद उसने अपनी गाड़ी का रुख विले पार्ले वेस्ट की बिल्डिंग 'चंद्रलेखा' की तरफ मोड़ दिया क्योंकि काले खां ने उसे वहीं बुलाया था।

विले पार्ले की तरफ बढ़ते अभी उसे मुश्किल से पांच ही मिनट हुए थे कि मोबाइल पर शालू का फोन आया। वह बुरी तरह चौंका और...क्योंकि तब तक उसे पूरा यकीन हो चुका था कि उसके बेटे की कातिल शालू ही है इसलिए उस पर बुरी तरह भड़क उठा लेकिन दूसरी तरफ से शालू ने जो कहा, उसे सुनकर उसकी खोपड़ी उलट गई। शालू की आवाज से लग रहा था कि वह बहुत कष्ट में है। किसी ने उसे कैद कर रखा है।

उसने धनपत को बताया कि उसे और अंकुर को धनपत के किसी पुराने दुश्मन गिरीराज ने किडनेप किया था और उसी ने अंकुर की हत्या की है। इतना ही नहीं, उसने यह भी बताया कि इंस्पेक्टर काले खां और दीवान राजपाल गिरीराज से मिले हुए हैं क्योंकि उसने उन्हें मोटी रकम दी है।

उसने आगे कहा–काले खां को यह भी पता लग गया है कि तुमने कमिश्नर से उसकी शिकायत की है इसलिए वह भी तुम्हारे खिलाफ भड़का हुआ है और गिरीराज से मिलकर उसने तुम्हारी हत्या का प्लान तैयार किया है। उसी के मुताबिक उसने तुम्हें चंद्रलेखा नाम की बिल्डिंग के बाहर बुलाया होगा।

तात्पर्य यह कि शालू उसे ये यकीन दिला देती है कि वह सच बोल रही है। तब धनपत पूछता है कि तुम कहां कैद हो? शालू बताती है–उसी बिल्डिंग यानी चंद्रलेखा के फ्लैट नंबर छः सौ छः में जिसके नीचे काले खां और राजपाल खड़े हैं। मुझे फ्लैट के एक कमरे में बंद किया गया है जबकि बाकी फ्लैट में गिरीराज और उसके आदमी फैले हुए हैं।

इस वार्ता के बाद धनपत काले खां और राजपाल की नजरों से छुपता-छुपाता चंद्रलेखा नामक बिल्डिंग की सर्विसलेन में

पहुंचता है। उसका मकसद शालू को गिरीराज की कैद से निकालना था। उसी के लिए वह रेनवाटर पाइप पर चढ़ता हुआ फ्लैट नंबर छः सौ छः की खिड़की तक पहुंचता है लेकिन वहां पहुंचते ही खिड़की के अंदर से एक हाथ उसे धक्का दे देता है। एक लंबी चीख के साथ वह सर्विसलेन में गिरता है और मर जाता है।

हवा के परों पर तैरती हुई धनपत की चीख ने न केवल बिल्डिंग के बाहर खड़े काले खां और राजपाल को चौंका दिया था बल्कि टैरेस पर चल रही रिम्पी की बर्थडे पार्टी में भी हलचल मच गई थी।

काले खां और राजपाल दौड़ते हुए टैरेस पर पहुंचे। एक टार्च की मदद से सर्विसलेन में देखा–वहां कोई आदमी औंधे मुंह पड़ा नजर आया। काले खां दौड़कर सर्विसलेन में पहुंचा। उसने औंधे मुंह पड़े शख्स की नब्ज देखी और यह यकीन होने पर कि वह मर चुका है, पुलिस हैडक्वार्टर फोन किया। तब तक उसे यह मालूम नहीं था कि मरने वाला धनपत है। इस बात का पता उसे तब लगा जब पुलिस फोटोग्राफर और फिंगर प्रिंट्स एक्सपर्ट अपना काम कर चुके तथा उसने औंधे मुंह पड़ी लाश को सीधा किया।

धनपत को वहां देखते ही वह बुरी तरह चौंक पड़ा था और यह बात उसकी समझ में आकर नहीं दे रही थी कि धनपत सर्विसलेन में क्यों पहुंचा? उसने इन्वेस्टिगेशन शुरु की और शीघ्र ही इस नतीजे पर पहुंच गया कि धनपत को फ्लैट नंबर छः सौ छः की खिड़की से धक्का देकर मारा गया है।

और...फ्लैट नंबर छः सौ छः नंदिनी का था।

उस वक्त तो उसे इस बात में कोई शक ही नहीं रह गया कि धनपत की हत्या नंदिनी ने ही की है जब उसे पता लगा कि उसके फोन के बाद धनपत के मोबाइल पर नंदिनी के मोबाइल से दो बार फोन किए गए हैं। उसने फौरन नंदिनी को गिरफ्तार कर लिया।

अंगद और तरूणा जब महकार के साथ उसके फ्लैट पर पहुंचे तो आश्चर्य और खौफ के कारण बुरा हाल हो गया क्योंकि अकेली बैठी रिम्पी खुद ही से बातें कर रही थी।

उस वक्त रिम्पी के चेहरे पर मासूमियत की जगह बहुत ही वीभत्स भाव थे और वह किसी अदृश्य शक्ति से बात कर रही थी।

जब उन्होंने पूछा कि वह किससे बात कर रही है तो रिम्पी ने बड़े ही राजदाराना लहजे में कहा–देखते नहीं, मेरे सिर पर मेरी फ्रेंड बैठी है! जोर से मत बोलो, वो नाराज हो जाएगी।

उसकी अजीब बातों ने तीनों को बुरी तरह डरा दिया था।

महकार ने चीखकर पूछा–तेरी कौनसी फ्रेंड बैठी है तेरे सिर पर? फिर अचानक ही रिम्पी दर्द से छटपटाने लगी और कहने लगी कि नहीं...नहीं, मेरे सिर को मत खुरचो। हटो...हटो यहां से। हिश्श।

वह ऐसे एक्शन कर रही थी जैसे अपने सिर पर बैठे किसी कीड़े को हटाने की कोशिश कर रही हो और फिर...उनके देखते ही देखते उसके सिर से एक छिपकली कमरे के फर्श पर कूदी।

उन तीनों के हलकों से चीखें निकल गई थीं।
छिपकली आम छिपकली से काफी बड़ी और डरावनी थी।

लंबी जीभ इस कदर सुर्ख थी जैसे उसने अभी-अभी किसी का खून पिया हो। अभी वे कुछ समझ भी न पाए थे कि छिपकली फर्श पर दौड़ी और एक ही जम्प में तरूणा के पेट से जा टकराई।

भय की ज्यादती के कारण तरूणा मानो पागल हो गई। वह बार-बार 'हिश्श...हिश्श' करती उसे अपने पेट से हटाने की कोशिश करने लगी मगर छिपकली वहां थी कहां जो हटती!

वह तो अदृश्य हो चुकी थी।

ठीक उसी तरह अचानक चमकनी वंद हो गई थी जिस तरह चमकी थी। रिम्पी इस तरह गहरी नींद सो चुकी थी जैसे कुछ हुआ ही न हो जवकि खौफ के कारण सवसे ज्यादा बुरा हाल महकार का था। वह पागलों की तरह बड़बड़ाया–नहीं छोड़ेगी, अव ये छिपकली मेरी रिम्पी को जिंदा नहीं छोड़ेगी। इसने सुकन्या का पीछा भी उसे मारने से पहले नहीं छोड़ा था।

बुरी तरह वेचैन अंगद ने पूछा–महकार, ये तुम क्या बड़बड़ा रहे हो? सुकन्या दीदी से इस छिपकली का क्या संबंध और भला एक छिपकली किसी को कैसे मार सकती है?

महकार की आंखें शून्य में स्थिर हो गईं। उन आंखों में आतंक तांडव कर रहा था। होंठ बुदबुदाने लगे–

महकार ने बताया–पांच साल पहले जब वह और सुकन्या गांव में देवता पूजने गए थे और वहां से लौट रहे थे तो उस तूफानी रात में उसकी वाइक एक पेड़ से टकराई। वह बेहोश हो गया। होश में आया तो सुकन्या को अपने आसपास न पाकर घबरा गया।

वह पागलों की तरह सुकन्या का नाम ले-लेकर चीखता हुआ उसे जंगल में ढूंढता फिर रहा था। फिर एक दिशा से सुकन्या के दो बार चीखने की आवाज आई। वह उसी तरफ दौड़ा।

सुकन्या उसे बेहोश अवस्था में मिली थी। जब होश में आई तो वह किसी अदृश्य शक्ति से बात कर रही थी। महकार के यह पूछने पर कि वह किससे वात कर रही है। बोली–देखते नहीं, मेरे सिर पर छिपकली बैठी है। महकार ने घबराकर उसका सिर चैक किया और बोला–यहां तो कुछ भी नहीं है।

मगर सुकन्या बार-बार कहती रही कि उसके सिर पर छिपकली है। बीच-बीच में वह अपने सिर की तरफ देखती हुई उस कथित छिपकली से बात भी कर रही थी।

महकार को लगा कि सुकन्या ने जंगल में कुछ ऐसा देखा है जिसके कारण उसका दिमाग हिल गया है। पूछा कि उसके साथ क्या हुआ है? जैसे ही सुकन्या बताने को हुई, वैसे ही वह दर्द के कारण छटपटाने लगी। महकार ने पूछा–क्या हुआ? तो बोली–वो मुझसे तुम्हें कुछ भी बताने को मना कर रही है। बताने की कोशिश करती हूं तो अपने नुकीले पंजों से मेरे सिर को खुरचने लगती है। कहती है कि अगर तूने कुछ बताने की कोशिश की तो मैं इसी तरह तेरे सिर को खुरचकर तेरे कपाल में घुस जाऊंगी और तुझे मार डालूंगी। प्लीज महकार, मुझसे कुछ भी मत पूछो। फिर वह किसी अदृश्य शक्ति से कहने लगती–आह...आह...अच्छा नहीं बता रही, प्लीज मेरे सिर को मत खुरचो। बहुत दर्द हो रहा है।

सुकन्या के मुंह से निकल रही इस किस्म की ऊटपटांग बातों ने महकार के दिमाग को हिलाकर रख दिया था।

महकार को अब भी यही लग रहा था कि सुकन्या ने कुछ ऐसा देखा है जिसके कारण वह बुरी तरह डर गई है और उसके दिमाग में यह वहम बैठ गया है कि उसके सिर पर कोई छिपकली सवार है। सो, महकार ने सोचा–फिलहाल यहां से चला जाए। जब सुकन्या के दिमाग से उस रहस्यमयी घटना का असर कम होगा तब पूछ लेगा। अतः वह उसे जैसे-तैसे मुंबई ले आया।

मगर जो उसने सोचा था, वह उसकी गलतफहमी साबित हुई। घर आने के बाद, हफ्तों गुजर जाने के बावजूद जब भी वह उससे उस रात की घटना के बारे में पूछता और सुकन्या बताने की कोशिश करती, दर्द से तड़पने लगती और अपने

सिर की तरफ देखती हुई गिड़गिड़ाने लगती कि–अच्छा, मैं कुछ नहीं बता रही। मेरे सिर को मत खुरचो। शांत हो जाओ।

वह कहती–उस रात के बारे में कुछ मत पूछो महकार, छिपकली की परमीशन नहीं है। यदि मैंने कुछ बताया तो वह मुझे मार डालेगी। मुझे यह भी मंजूर है कि वह मुझे मार डाले लेकिन वो दर्द नहीं सहा जाता जो उसके नुकीले पंजों से मेरे सिर को खुरचने पर होता है।

महकार ने सुकन्या को कई साइक्लोजिस्टों को दिखाया। सबका यही कहना था कि वह भ्रम की शिकार है। उसके सिर पर कोई छिपकली नहीं है। फिर एक दिन थक-हारकर महकार ने कहा–तुम्हें मेरी कसम है सुकन्या, अगर तुमने मुझे उस रात के बारे में नहीं बताया तो मेरा मरा मुंह देखोगी।

सुकन्या ने तब भी कुछ नहीं बताया। इस बात से महकार को बहुत ठेस लगी क्योंकि वह समझता था कि सुकन्या उसकी कसम किसी हालत में नहीं तोड़ सकती जबकि पूरी खामोशी के साथ सुकन्या आंखों में ऐसे भाव लिए उसकी तरफ देखती रही थी जैसे उसे आखिरी बार निहार रही हो।

अगले दिन उससे नाराज महकार आफिस चला गया। दोपहर के वक्त उसके मोबाइल पर डाक्टर कजारिया का फोन आया। उसने बताया कि उसकी पत्नी उसके क्लीनिक पर है।

महकार चौंक पड़ा। बोला–सुकन्या वहां क्या कर रही है? वह ठीक तो है? डाक्टर कजारिया ने कहा–नहीं, मुझे वह ठीक नहीं लग रही। जितनी जल्दी हो सके यहां आ जाओ।

डाक्टर कजारिया मशीनों के जरिए मरीज को हिप्नोटिज्म करके उसके अतीत और पूर्वजन्मों में ले जाकर ऐसी बीमारियों का पता लगाने में माहिर था जिनका पता आम तरीकों से नहीं लगता था।

महकार आंधी तूफान की तरह वहां पहुंचा।

तब कजारिया ने बताया कि सुकन्या ने उससे यह पूछा था कि हिप्नोटिज्म के दरम्यान अगर कोई मरीज के जिस्म को किसी किस्म की चोट पहुंचाए तो उसे दर्द होता है या नहीं। मैंने मना कर दिया। कहा–हिप्नोटिज्म के दरम्यान मरीज का जिस्म एक लाश के समान होता है जिस पर मरीज को किसी चोट का एहसास नहीं होता। यह सुनकर सुकन्या के चेहरे पर खुशी और सुकून के भाव आए थे और उसने कहा था–मैं आपकी पूरी फीस भरने को तैयार हूं। आप मुझे हिप्नोटिज्म कर दीजिए क्योंकि मैं अपनी बीमारी के बारे में जानना चाहती हूं। लेकिन उसके बारे में मुझे कैसे पता लगेगा। तब मैंने कहा कि–बेहोशी के दरम्यान तुम जो भी देखोगी वही बोलोगी और उसे मैं टेप कर लूंगा। होश में आने के बाद तुम उस टेप को सुनकर अपनी बीमारी के बारे में जान सकती हो। यह जानने के बाद वह पूरी तरह खुश और संतुष्ट नजर आने लगी थी। मैं उसे अंदर वाले कक्ष में ले गया। अपने तरीके से उसका इलाज शुरु किया तो हैरत और खौफ की ज्यादती के कारण मेरा बुरा हाल हो गया।

बुरी तरह बेचैन महकार ने पूछा–ऐसा क्या हुआ था?

कजारिया ने एक टेप रिकार्डर ऑन कर दिया। उससे सुकन्या की आवाज निकलनी शुरु हुई। वह महकार को संबोधित करती हुई कह रही थी–महकार, मैंने तुमसे कहा था कि मैं मरने को तैयार हूं लेकिन वो दर्द नहीं सहा जाता जो छिपकली के खरोंचने से होता है इसलिए डाक्टर कजारिया के पास आई हूं। मैं यहां इसलिए आई हूं क्योंकि तुम्हारी कसम नहीं तोड़ सकती। मुझे मालूम है कि अगर मैं तुम्हें उस रात के बारे में कुछ बताऊंगी तो वह मुझे मार डालेगी। मुझे मरना मंजूर है लेकिन अब सबकुछ बताकर रहूंगी। जब डाक्टर कजारिया ने यह कहा कि बेहोशी के वक्त शरीर में होने वाली किसी पीड़ा का एहसास नहीं होता तो मुझे रास्ता मिल गया। सो, इस मेज पर हूं। अब उस रात का किस्सा सुनो–

तुम बेहोश हो गए थे। एक बार होश में आए तो 'पानी-पानी' कहकर फिर बेहोश हो गए। मैं पागलों की तरह पानी ढूंढने लगी और पीने लायक पानी की तलाश में दूर निकल गई। मुझे पता ही नहीं लगा कि कब कब्रिस्तान में पहुंच गई और वहां मैंने सफेद कपड़ों में लिपटी एक ऐसी औरत को फावड़े से एक कच्ची कब्र खोदते देखा जिसके लंबे बाल इस कदर उसके चेहरे को ढके हुए थे कि उसकी शक्ल नजर नहीं आ रही थी। मैं उस दृश्य को देखकर बुरी तरह डर गई थी मगर वो तो मेरे डर की सिर्फ शुरुआत थी। जरा सोचो, उस वक्त मेरा क्या हाल हुआ होगा जिस वक्त उसने अपनी साड़ी उतार कर मलबे पर डाली और फिर खुदी हुई कब्र से हड्डियां निकालकर साड़ी पर डालने लगी। उसने सारी हड्डियां साड़ी पर डालने के बाद पोटली बनाई और उसे कंधे पर डालकर एक तरफ को चल दी।

डरी हुई होने के बावजूद मेरे मन में यह जिज्ञासा जागी कि वह औरत किसकी हड्डियों को कहां ले जा रही है इसलिए उसका पीछा करने लगी। वह एक बहुत ही डरावने और उजाड़ पड़े हुए पुराने किले में पहुंची। वहां का दृश्य देखकर तो मेरे होश ही उड़ गए क्योंकि उस औरत के द्वारा मोमबत्ती जलाते ही मैंने देखा–पुराने किले के मेन हॉल के उबड़-खाबड़ फर्श पर रंगोली बनी हुई थी और रंगोली के ऊपर एक बारह वर्षीय लड़की का जिस्म उलटा लटका हुआ था। वह मासूम लड़की बेहोश थी।

औरत ने कब्र से निकाली हुई हड्डियों को रंगोली पर सजाना शुरु कर दिया। जल्दी ही रंगोली पर किसी आदमी का पूरा कंकाल नजर आने लगा और फिर वह औरत पद्मासन की मुद्रा में बैठकर किन्हीं मंत्रों का जाप करने लगी।

मैं सांस रोके सबकुछ देख रही थी।

उस वक्त मेरे रोंगटे खड़े हो गए जब कंकाल को हिलते देखा। हड्डियां खड़खड़ाहट की आवाज पैदा कर रही थीं और फिर, उस वक्त तो जैसे मेरी धमनियों में बहता लहू जम गया जब मैंने उस औरत को कंकाल के कान में कहते सुना–तुम अभिजीत ही हो न!

जरा सोचो महकार, उस वक्त मेरी क्या हालत हुई होगी जब कंकाल के मुंह से निकली आवाज मेरे कानों तक पंहुची।

उसने कहा था–हां मेरी महबूबा, मैं अभिजीत ही हूं।

मैं जो देख और सुन रही थी, उस पर विश्वास नहीं हो रहा था मगर हकीकत मेरे सामने थी। वो औरत कंकाल से और कंकाल औरत से बात कर रहा था। उन बातों का सार ये है कि वो कंकाल अभिजीत का था और अभिजीत उसका पति था। उसे पूरा विश्वास था कि सात बच्चों की बलि के बाद अभिजीत जिंदा हो जाएगा।

पहली बलि यानी उल्टी लटकी हुई बच्ची की बलि मेरे सामने दी गई। बलि देने से पहले औरत उसे होश में ले आई थी क्योंकि औरत के मुताबिक बेहोश अवस्था में बलि नहीं दी जा सकती थी। जाहिर है कि होश में आते ही लड़की चीखने-चिल्लाने लगी मगर उसकी चीख-चिल्लाहटों का न औरत पर कुछ फर्क पड़ा, न ही कंकाल पर बल्कि अगर यह कहूं तो ज्यादा मुनासिब होगा कि वे उसकी चीखें सुनकर खुशियां मना रहे थे–जश्न मना रहे थे।

खूंखार औरत ने फरसे से एक ही झटके में उल्टी लटकी लड़की की गर्दन धड़ से अलग कर दी। गर्म और गाढ़े खून की धार सीधी कंकाल के मुंह में गिरने लगी। वे दोनों पैशाचिक अट्टहास लगा रहे थे। एक थम्ब के पीछे खड़ी वह सब देख रही मैं थर-थर कांप रही थी। क्या तुम सोच सकते हो महकार कि मौत के उस भयावह मंजर को देखने के बावजूद मैं किस तरह अपने मुंह से निकलने वाली चीख को रोक सकी होऊंगी! जैसे भी रोकीं, अपने मुंह से निकलने वाली चीखों को तो मैं रोके रही लेकिन उस वक्त अपनी उबकाई को न रोक सकी जिस वक्त औरत ने बच्ची के सीने से उसका धड़कता हुआ दिल निकाला और अपने दांतों से इस तरह कुतर-कुतरकर खून से लिसड़े दिल को खाने लगी जैसे अमरूद खा रही हो।

बड़ा ही घिनावना दृश्य था वह और इसीलिए मैं अपनी उबकाई न रोक सकी। उबकाई की आवाज ने खतरनाक औरत

को ठिठका दिया। उसे पहली बार एहसास हुआ कि वहां उसके और अभिजीत के अलावा कोई और भी था।

अपने चेहरे पर बिखरे बालों के झरोखे से उसने थम्ब की तरफ देखा। अंगारों की तरह सुलग रही उसकी आंखों को देखकर मेरे तिरपन कांप गए थे और उस वक्त तो छक्के ही छूट गए जब उसने मौत से भी कर्कश आवाज में कहा—कौन है वहां?

मुझे सामने आना पड़ा। मेरा पूरा जिस्म सूखे पत्ते की मानिंद कांप रहा था। हाथ जोड़ लिए थे मैंने। रो पड़ी थी। रोते-रोते ही गिड़गाड़ाई थी—मुझे माफ कर दो, मुझे यहां से जाने दो।

मगर, वह खूंखार अंदाज में मेरी तरफ बढ़ी। मुझे यह समझने में एक सेकिंड भी नहीं लगा था कि वह किसी भी कीमत पर मुझे जिंदा नहीं छोड़ेगी और अगर मुझे बचना है तो वहां से भागना चाहिए लेकिन फिर भी, हजार कोशिशों के बावजूद मैं अपने जिस्म को हिला तक नहीं पा रही थी। तभी मैंने तुम्हारी आवाज सुनी महकार, तुम जंगल में मेरा नाम ले-लेकर मुझे पुकार रहे थे और...तुम्हारी आवाज मात्र ने मेरे जिस्म में हौसले का संचार किया। जाने क्यों मुझे लगा था कि अगर किसी तरह अपने महकार के पास पहुंच जाऊं तो मेरा महकार मुझे दुनिया की हर बला से बचा लेगा।

भागने के बारे में सोच ही रही थी कि मेरी तरफ बढ़ती हुई औरत दुल्हन के रूप में नजर आने लगी। मेरा खौफ और बढ़ गया। मुझे लगा—वह औरत नहीं छलावा है। कोई रूह है। क्योंकि कोई औरत तो इस तरह देखते ही देखते अपना रूप बदल नहीं सकती।

तुम मुझे लगातार पुकार रहे थे और मैं कांपती टांगों से पलटी तथा दरवाजे की तरफ जम्प लगा दी। अपने पीछे पायलों की छनछन और चूड़ियों की खनक सुनी थी। मैं समझ गई कि वह मेरे पीछे दौड़ रही है। मैं बेतहाशा भागती रही। मुझे नहीं मालूम था कि किधर भाग रही हूं। उधर तुम हो भी या नहीं। रास्ते में वो कब्रिस्तान पड़ा भी या नहीं जहां से मैं उसके पीछे लगी थी।

अचानक महसूस किया कि मेरे पीछे अब कोई आवाज नहीं हो रही है। मतलब वह मेरा पीछा नहीं कर रही है। दौड़ते ही दौड़ते मैंने पलटकर पीछे देखा। इस बार तो मुंह से किल्ली ही निकल गई क्योंकि एक बहुत बड़ी छिपकली को दौड़कर अपनी तरफ आते देखा था। तभी पैर किसी पत्थर से टकराया और मैं चीखती हुई दूर जा गिरी। बेहोश होने से पूर्व मैंने महसूस किया कि छिपकली एक ही जम्प में मेरे सिर पर आकर सवार हो गई थी।

उसके बाद जब मैं होश में आई तो तुम सामने थे मगर सिर पर छिपकली सवार थी। वही छिपकली जो अब तक भी मेरे सिर ही पर सवार है और तुम्हें उस रात के बारे में कुछ भी नहीं बताने दे रही।

बस...टेप में इतना ही था।

सुकन्या पर जो गुजरी थी उसे सुनकर महकार की रूह फना हो गई। डाक्टर कजारिया के चेहरे पर अब भी खौफ के साए मंडरा रहे थे। उसने कहा—जो कुछ तुमने टेप में सुना, सुकन्या के होश में आने पर मैंने उससे भी डरावना मंजर देखा।

महकार एक बार फिर चौंका। पूछा—ऐसा क्या देखा आपने?

जवाब में कजारिया उसे अंदर वाले कक्ष में ले गया। सुकन्या वहां कजारिया की विचित्र और विशाल मशीन पर लेटी हुई थी। कजारिया ने बताया—जब मैं इसे हिप्नोटिज्म से बाहर लाया तो ये दर्द से छटपटाने लगी। अपने सिर की तरफ देखने की कोशिश करती बोली—नहीं, मेरे सिर को मत खुरचो, बहुत दर्द हो रहा है। तभी, इसके मुंह से दूसरी लेकिन बहुत ही भयंकर आवाज निकली—बहुत चालाक समझती है खुद को। खुद को ऐसी अवस्था में ले जाकर उस रात की सारी सच्चाई बता दी कि मैं तेरे सिर को खुरचती भी तो तुझे किसी तकलीफ का एहसास न होता मगर मैंने भी सोच

लिया है कि तुझे तेरी इस चालाकी का माकूल जवाब दूंगी। इसीलिए उस वक्त तेरे सिर को नहीं खुरचा जब तू बेहोश थी लेकिन जैसे ही होश में आई तेरे सिर को खुरचना शुरु कर दिया है और इसी तरह खुरचती हुई तेरे कपाल में घुस जाऊंगी। तड़पा-तड़पाकर मारुंगी तुझे। ले..ले। अब भुगत अपनी चालाकी का अंजाम।

और फिर सुकन्या अपनी आवाज में दर्द से छटपटाने लगी। मैंने इसी के मुंह से इसकी भी और दूसरी भी आवाज निकलते सुनी है। ऐसा लग रहा था जैसे दोनों में युद्ध हो रहा हो।

महकार आवाक् रह गया क्योंकि उसने सुकन्या के मुंह से कभी कोई दूसरी आवाज नहीं सुनी थी।

उसके कहने पर कजारिया सुकन्या को दोबारा होश में लाया।

होश में आते ही छिपकली और सुकन्या के बीच वैसा ही युद्ध शुरु हो गया जैसा कजारिया ने बताया था। वह डरावनी आवाज भी सुकन्या के मुंह से ही निकल रही थी जो बार-बार एक ही बात कह रही थी। यह कि–जैसे ही तू बेहोश होगी मैं तेरा सिर खुरचना बंद कर दूंगी और जैसे ही होश में आएगी खुरचना शुरु कर दूंगी क्योंकि मुझे तुझे तकलीफ दे-देकर मारना है।

अपनी ऑरिजनल आवाज में सुकन्या चीखे जा रही थी, तड़पे जा रही थी। जब महकार पर वह सब न देखा गया तो कजारिया से कहा–जल्दी से सुकन्या को बेहोश कर दो।

कजारिया ने वैसा ही किया।

आंखों में आंसू लिए महकार अंगद और तरूणा को बता रहा था–मगर, सुकन्या को कितनी देर और कब तक बेहोश रखा जा सकता था। मैं जब भी इलाज के लिए उसे किसी डाक्टर के पास ले जाता तो वह उसकी बीमारी को समझने के लिए होश में लाता। उसके होश में आते ही छिपकली अपना काम शुरु कर देती और कुछ भी समझ में न आने की अवस्था में डाक्टर यह कहकर पल्ला झाड़ लेता कि उसे कोई बीमारी नहीं है, बस भ्रम हो गया है कि उसके सिर पर छिपकली है जो उसके सिर को खुरच रही है।

मैंने कई बार छिपकली से बात की। हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाया कि सुकन्या की गलती को माफ कर दे और उसका पीछा छोड़ दे मगर वह इसके लिए तैयार नहीं हुई। सुकन्या के ही मुंह से हर बार उसने यही कहा कि इसे इसके किए की सजा जरूर मिलेगी।

अब तो उसके सिर में कपाल के ठीक ऊपर ऐसा जख्म भी बनने लगा था जैसे किसी ने वहां नुकीले पंजों से खरोंचा हो।

मुंबई का शायद ही ऐसा कोई डाक्टर बचा हो जिसके पास मैं उसे लेकर नहीं गया मगर कोई फायदा नहीं हो रहा था।

अंत में लीलावती ले गया।
वहां के सबसे बड़े डाक्टर को दिखाया।

उसने कहा–आपरेशन करना पड़ेगा। मेरी स्थिति तो मरता क्या न करता वाली थी। आपरेशन करने को कह दिया। आपरेशन करने के बाद जब उसे होश में लाया गया तो पुनः उसके और छिपकली के बीच का युद्ध शुरु हो गया। मैं उसे बेहोश करने के लिए चिल्लाने लगा। डाक्टर्स भी अपनी तरफ से काफी जल्दी कर रहे थे मगर उनके सफल होने से पहले ही 'फट्ट' की ऐसी जोरदार आवाज के साथ सुकन्या का कपाल फटा जैसे गुब्बारा फटा हो और...गर्म खून के साथ गोश्त के लोथड़े हवा में उछल गए।

तभी एक छिपकली सुकन्या के सिर से सीधी फर्श पर कूदी। उसे मैंने ही नहीं, वहां मौजूद डाक्टर्स ने भी देखा था। वे

हैरान जरूर रह गए लेकिन यह मानने को तब भी तैयार नहीं थे कि मेरी सुकन्या की जान उसी छिपकली ने ली है मगर अब उनके कुछ भी सोचने से भला मुझ पर क्या फर्क पड़ने वाला था!

मेरी सुकन्या मुझे हमेशा के लिए छोड़कर चली गई थी बल्कि अगर यह कहूं तो ज्यादा मुनासिब होगा कि उसे मुक्ति मिल गई थी क्योंकि वो कोई जिंदगी नहीं थी जिसे वह जी रही थी।

इतना सब बताने के बाद महकार रोने लगा था तथा तरूणा और अंगद सन्न नजर आ रहे थे।

महकार रोता-रोता ही बोला—और अब, मैंने उसी छिपकली को रिम्पी के सिर से कूदकर तरूणा के पेट पर गायब होते देखा है। मैं समझ गया हूं कि अब मेरी रिम्पी को कोई नहीं बचा सकेगा।

यह सब सुनते-सुनते अंगद जहां हैरान रह गया था वहीं बेहद जजबाती भी हो उठा। उसके जबड़े और मुट्ठियां भिंच गई थीं। चट्टानी लहजे में गुर्रा उठा था वह—नहीं, मैं अपनी भांजी को कुछ नहीं होने दूंगा। छिपकली के रूप में जिस भी बला ने मेरी दीदी को तड़पा-तड़पाकर मारा है, उसी तरह मैं उसे भी तड़पा-तड़पाकर मारूंगा। मैं गिन-गिनकर अपनी दीदी की मौत का बदला लूंगा।

यह सब सुनकर महकार बुरी तरह चौंका। उसके मुंह से हैरत में डूबे शब्द निकले—सुकन्या तुम्हारी दीदी और रिम्पी भांजी! ये तुम क्या कह रहे हो अंगद? मैं कुछ समझा नहीं।

जजबातों में डूबे अंगद ने जब यह बताया कि वह सुजान है तो महकार दंग रह गया।

कुछ देर बाद जब स्थिति सामान्य हुई तो महकार ने कहा—ये तो समझ में आ गया था कि छिपकली सुकन्या के सिर पर क्यों सवार हुई मगर ये समझ में नहीं आ रहा कि इस बार उसने रिम्पी को क्यों चुना? मेरी मासूम बेटी ने उसका क्या बिगाड़ा है?

अपने सपने की रोशनी में अंगद की समझ में यह बात आ रही थी कि खुद को छिपकली में तब्दील कर लेने की खूबी रखने वाली उस खूंखार औरत ने रिम्पी को ही क्यों चुना लेकिन यह बात उसने महकार को नहीं बताई क्योंकि अगर वह अपने सपने के बारे में बता देता यानी यह बता देता कि वह कंकाल को अगली बलि रिम्पी की देने वाली है तो उसके रहे-सहे हौसले भी पस्त हो जाते।

अभी वे आपस में बात कर ही रहे थे कि अंगद के मोबाइल पर काले खां का फोन आया। वह बुरी तरह हड़बड़ाया हुआ था जैसे कोई अनहोनी देख ली हो। बोला—अंगद, जहां हो, जिस हाल में हो, फौरन धनपत के ड्राइवर अखिल के घर पहुंच जाओ।

अंगद ने पूछना चाहा कि क्या हो गया है लेकिन उसने किसी भी सवाल का जवाब दिए बगैर अखिल का एड्रेस बताया और फोन काट दिया। अंगद अवाक् मुद्रा में खड़ा रह गया था।

काले खां और राजपाल नंदिनी की शिनाख्त कराने उसे लेकर अखिल के घर पहुंचे मगर वहां पहुंचते ही दोनों के दिमाग का फ्यूज उड़ गया क्योंकि उनके सामने अखिल की लाश पड़ी थी।

सिर्फ लाश ही होती, तब भी शायद उनकी वह हालत न होती जो हुई। लाश से भी ज्यादा हैरान कर देने वाली बात यह थी कि उसका मर्डर बहुत ही अनोखे तरीके से हुआ था।

लाश के ऊपर पोलीथीन की बनी एक छोटी-सी छतरी पड़ी हुई थी। छतरी के नीचे एक दीपक था जो तब तक बुझ चुका था।

गंदी मिट्टी का बना एक पुतला था जिसकी शक्ल अखिल से मिलती थी। उस सबके अलावा वहां हरी मिर्च, काली उड़द की दाल और नींबू जैसी अजीबो-गरीब चीजें बिखरी पड़ी थीं।

प्रत्यक्षदर्शियों और खुद अखिल की पत्नी ने बताया कि अखिल बिल्कुल ठीक-ठाक था कि अचानक हवा में उड़ती पोलीथीन की बनी ये छतरी नीचे आई और अखिल की झोंपड़ी में घुसकर उससे टकरा गई। ऐसी आवाज हुई जैसे गुब्बारा फटा हो और अखिल हमेशा के लिए सो गया।

अखिल के मर्डर का यह तरीका काले खां की समझ से बाहर था जबकि राजपाल की आंखें विस्फारित अंदाज में फैली हुई थीं और नंदिनी ने तो साफ-साफ घोषणा कर दी कि अखिल को किसी पहुंचे हुए तांत्रिक ने तंत्र विद्या से मारा है।

काले खां का भेजा आउट हो गया। गुर्राया—ये क्या बकवास है? तुम ऐसा कैसे कह सकती हो?

नंदिनी बोली—मजाक है क्या! अघोरियों पर रिसर्च कर रही हूं। इसलिए जानती हूं कि तंत्र विद्या से इसी तरह कोई भी तांत्रिक हजारों किलोमीटर दूर बैठा होने के बावजूद मारण अनुष्ठान के जरिए जिसे चाहे मार सकता है।

यह बात काले खां की समझ में भले ही न आ रही हो मगर यह प्रश्न उसके जेहन में लगातार हथौड़े की तरह चोट कर रहा था कि उसने धनपत से नंदिनी की शिनाख्त करानी चाही, वह मर गया। अखिल से करानी चाही, वह इतने रहस्यमय तरीके से मर गया।

ये चक्कर क्या है?

अगर यह लिखा जाए तब भी गलत न होगा कि अब उसे भी किसी हद तक राजपाल की बातों पर विश्वास हो चला था। तभी तो उसने अंगद को तुरंत फोन करके अखिल के घर बुलाया।

अखिल के पहुंचते ही उसने नंदिनी की तरफ इशारा करने के साथ अंगद से कहा—ध्यान से देखो इसे, कहीं ये वही औरत तो नहीं है जिसे तुमने सपने में देखा था?

अंगद अपने चेहरे पर हैरानियां लिए नंदिनी की तरफ देखता बोला—मैं तो आपको पहले ही बता चुका हूं कि सपने में मुझे उसकी सूरत साफ नहीं चमकी थी क्योंकि उसके बाल हमेशा उसके चेहरे पर पड़े रहते हैं।

कुछ भी समझ में न आने की अवस्था में भन्नाए हुए काले खां ने नंदिनी को घसीटकर जीप में डाला और वहां से चल दिया।

राजपाल ने पूछा—अब इसे कहां ले जा रहे हैं सर? काले खां ने जवाब दिया—धनपत की पत्नी सरिता के पास। वह जरूर इसकी शिनाख्त कर देगी। राजपाल का चेहरा पीला पड़ गया। बोला—ये आप क्या अनर्थ करने जा रहे हैं सर? क्या अब भी आप नहीं समझे कि हम इसकी शिनाख्त नहीं कर सकेंगे। हमारे पहुंचने से पहले ही वह भी धनपत और अखिल की तरह लाश में तब्दील हो चुकी होगी!

अगला दृश्य 'एक थी डायन' की शूटिंग का था। मानसिक रूप से डिस्टर्ब होने के कारण अंगद अपना शॉट ठीक से नहीं दे पा रहा था। एकता कपूर ने उसे अपने पास बुलाया और पूछा कि आज वह ठीक से काम क्यों नहीं कर पा रहा है? इतना सुनते ही वह रोने लगा और एकता कपूर और विशाल भारद्वाज के पैर पकड़ लिए।

उन्होंने उसे एक कुर्सी पर बैठाया और उसकी वर्तमान हालत का कारण पूछा और जवाब में उसने अपने सपने से लेकर महकार के घर पहुंचने तक के ही नहीं, सुकन्या के अंत और अब रिम्पी के सिर पर सवार छिपकली के बारे में भी बता दिया। अंत में बुरी तरह रोता हुआ कहने लगा—मैं किसी भी हालत में अपनी भांजी का बाल भी बांका नहीं होने दूंगा लेकिन समझ में नहीं आ रहा कि उस बला को कैसे रोकूं? कैसे टकराऊं उससे।

विशाल भारद्वाज ने कहा–दुर्गा माता की शरण में पहुंच जाओ, कोई भी काली ताकत, मां भवानी की शक्ति से बड़ी नहीं होती। वे ही तुम्हारी और तुम्हारी भांजी की मदद करेंगी।

एकता कपूर बोली–विशाल ने ठीक कहा अंगद। तुम्हारी मदद मां ही कर सकती है। मैं मां के एक परमभक्त को जानती हूं। उनका नाम महाराज चंडिकामृत है। उनकी शरण में जाओ। मैं उन्हें फोन कर दूंगी। वे तुम्हारी मदद जरूर करेंगे। मां पर विश्वास रखो।

अंगद ने कहा–मां पर तो मुझे पूरा विश्वास है।
तो फिर जोर से बोलो। एकता बोली–जय माता दी।
सबने एक स्वर में कहा था–जय माता दी।

यहां तक की कहानी आपने 'डायन' में पढ़ी। इससे आगे के दो सीन भी 'डायन' के ही हैं। आगे के पूरे के पूरे सीन यहां इसलिए दिए गए हैं ताकि उन पाठकों की समझ में पूरी कहानी ठीक से आ सके जो किसी वजह से 'डायन' नहीं पढ़ पाए थे।

तो प्रस्तुत है, आगे की कहानी–

वह करीब पच्चीस बाइ पच्चीस का गोल हॉल था।

गुंबदाकार छत चालीस फुट ऊपर। गुंबद के सेंटर में लगे लोहे के कुंदे में एक बहुत बड़ा फानूस झूल रहा था।

दीवारों पर सुंदर नक्काशी हुई, हुई थी और आठों दिशाओं में बड़ी-बड़ी और गहरी अल्मारियां बनी हुई थीं।

उन अल्मारियों पर पारदर्शी कांच के दरवाजे थे और दरवाजों के पार थीं–सभी देवियों की बड़ी-बड़ी और सुंदर मूर्तियां।

वहां महालक्ष्मी विराजमान थीं। महासरस्वती विराजमान थीं। शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्माण्डा, स्कंदमाता, महिषासुर मर्दिनी, कालरात्रि, सिद्धिदात्री, महागौरी, कात्यायनी और सिंह पर सवार मां दुर्गा अपनी छटा बिखेरे हुए थीं।

वे सभी उम्दा किस्म के संगमरमर की बनी हुई थीं और सभी ने बेहतरीन कढ़ाई वाले कीमती कपड़े के वस्त्र धारण किए हुए थे।

लेकिन सबसे बड़ी मूर्ति महाकाली की थी।
किसी दुर्लभ काले पत्थर की बनी हुई थी वह।
सिर पर मुकुट। गले में नरमुंडों की लंबी माला।
जीभ बाहर।
एक हाथ में खड़ग, दूसरे में त्रिशूल।

तीसरे में खप्पर और चौथे में रक्तबीज का कटा हुआ सिर। सिर से बहता सारा खून खप्पर में गिर रहा था।

पता नहीं वह किस चीज की खुश्बू थी लेकिन हॉल में ऐसी खुश्बू फैली हुई थी कि किसी का भी हृदय आनंदित कर सकती थी।

महाराज चंडिकामृत हॉल के बीचोंबीच चंदन के आसन पर बैठे थे। उनका रंग गुलाबी था। ऐसा–जैसे मक्खन में चुटकी भर सिंदूर मिला दिया गया हो। सफेद दाढ़ी-मूंछें, वैसे ही लंबे-लंबे बाल। गोल चेहरा। लंबी नाक। तेजस्व से भरी बड़ी-बड़ी आकर्षक आंखें। होंठ न ज्यादा पतले थे, न मोटे। चौड़ा मस्तक। मस्तक पर चंदन की रेखाएं और नाक के ठीक ऊपर सिंदूर की गोल बिंदी। चेहरे पर ऐसा तेज जो देखने वाले को अजीब-सा सुकून पहुंचाता था।

उनके ऊपरी जिस्म पर कोई वस्त्र न था। केवल जनेऊ और छाती के सफेद बाल नजर आ रहे थे। धड़ से नीचे वे भगवा रंग की धोती पहने हुए थे। कुल मिलाकर उनका व्यक्तित्व ऐसा था कि जो भी एक बार देख लेता, उन्हीं का होकर रह जाता।

उनके सामने उनकी तरफ मुंह करके करीब सात शिष्य बैठे थे और उनके तथा चंडिकामृत के बीच एक खूबसूरत औरत की मृत देह रखी हुई थी। अपनी प्रभावशाली वाणी से उन्होंने अभी-अभी सामने बैठे शिष्यों से कहा था–"परकाया प्रवेश के संदर्भ में हम तुम्हें काफी कुछ बता चुके हैं। फिर भी संभव है कि तुम लोगों को विश्वास न आया हो और यह सोचते हो कि जो हमने बताया वह केवल किताबी ज्ञान है। वास्तव में वैसा संभव नहीं है।"

"नहीं महाराज।" एक शिष्य ने कहा–"आपके दिए ज्ञान पर संदेह का तो प्रश्न ही नहीं उठता।"

"फिर भी, प्रयोग जरूरी है। हर ज्ञान का अनिवार्य अंग है ये।" चंडिकामृत ने औरत की मृत देह की तरफ इशारा करने

के साथ पूछा था–"इसे कहां से लाए हो?"

"आपकी आज्ञानुसार, आश्रम के पीछे बहने वाली नदी से निकाली है। ऐसा लगता है किसी दुष्ट ने गला दबाकर इसे मार डाला और नदी में बहा दिया।"

"हमें ऐसी ही मृत देह चाहिए थी जो खंडित न हो।"
सभी शिष्य खामोश रहे।

एकाएक चंडिकामृत ने पद्मासन लगा लिया और अपनी रीढ़ की हड्डी बिल्कुल सीधी कर ली।

आंखें बंद।
चेहरा महाकाली की मूर्ति की तरफ।

एक लंबी सांस ली और फिर उनका पेट इतना अंदर धंसता चला गया जैसे पीठ से लग गया हो।

न चाहते हुए भी शिष्यों के दिल जोर-जोर से धड़कने लगे थे। वे कभी महाराज को देखते थे तो कभी बीच में रखी मृत देह को।

ऐसा महसूस हो रहा था जैसे चंडिकामृत अंदर ही अंदर अपने शरीर से खेल रहे हों।

एक मिनट गुजरा...दो मिनट!
तीन...चार...पांच!
और फिर दस मिनट गुजर गए।

करीब पंद्रह मिनट बाद, उस वक्त शिष्यों के दिल बहुत जोर जोर से धड़कने लगे थे जब मृत देह की खुली हुई निस्तेज आंखों में जीवन ज्योति लौटती देखी और उस वक्त वे अपने अंदर बहुत ही अजीब-सी खुशी महसूस कर रहे थे जब औरत की पलकें कांपीं।

"महाराज।" एक शिष्य ने पूछा–"आप कहां हैं?"

"जहां परकाया प्रवेश के बाद हमें होना चाहिए।" चंडिकामृत की यह आवाज औरत के मुंह से निकली थी।

"महाराज।" सबसे आगे बैठे शिष्य ने श्रद्धा से हाथ जोड़ लिए थे–"आपने परकाया प्रवेश के बारे में हमें ज्ञान जरूर दिया है परंतु आज साक्षात् ऐसा होते देखकर हमें खुशी और आनंद की अनुभूति हो रही है। बल्कि अगर यह कहें तब भी गलत न होगा कि सबकुछ अपनी आंखों से देखने के बाद भी विश्वास नहीं हो रहा।"

औरत उठकर बैठ गई। उसके मुंह से फिर महाराज चंडिकामृत की आवाज विस्फुटित हुई–"पंचामृत, अब तुम हमारी वास्तविक देह को समाधि से बाहर निकालने का प्रयत्न करो।"

पंचामृत उठा और जैसे ही उसने चंडिकामृत के पद्मासन में बैठे शरीर को छेड़ा, वह किसी शव की तरह एक तरफ लुढ़क गया।

औरत ने कहा–"उसकी नब्ज-नाड़ी चैक करो।"

पंचामृत चैक करने के बाद बोला–"कुछ नहीं है महाराज, यह वैसा ही शव है जैसा कुछ देर पहले वह था जिसमें इस वक्त आप विराजमान हैं।"

"पर ये कोई चमत्कार नहीं है मेरे बच्चों, हालांकि दुष्ट लोग इसे चमत्कार बताकर भोले-भाले लोगों को ठगते हैं। इस विद्या का दुरुपयोग करते हैं। वास्तव में यह विशुद्ध वैज्ञानिक प्रक्रिया है और मानव जाति के कल्याण हेतु बनाई गई है।"

"आप हमें इस बारे में बता चुके हैं और हम अभ्यास भी कर रहे हैं।" एक अन्य शिष्य ने कहा था–"आपकी कृपा रही तो एक दिन हम भी परकाया प्रवेश की इस विद्या में पारंगत हो जाएंगे।"

"तो बताओ, किस तरह होता है ये?" कहते वक्त खूबसूरत औरत के होठों पर मोहक मुस्कान थी–"समझो कि आज हम तुम सबकी परीक्षा ले रहे हैं। पर ठहरो!"

किसी शिष्य की समझ में नहीं आया कि एक विशेष धारा में बहते-बहते महाराज चंडिकामृत क्यों रुक गए?

क्यों 'ठहरो' कहा उन्होंने?

धीरे-धीरे उस महिला की आंखें बंद हो गई थीं जिसमें इस वक्त चंडिकामृत विराजमान थे। उनके शिष्य समझ सकते थे कि इस वक्त वे कुछ देख रहे हैं और फिर वे आंखें बंद किए बोले–"ओह! अंगद आ पहुंचा है।"

"कौन अंगद महाराज?" पंचामृत ने प्रश्न किया।
"माध्यम एकता बनी है परंतु उसे यहां आना ही था।"

कोई शिष्य उनकी बातों का अर्थ न समझ सका। मगर किसी ने प्रश्न भी न किया। वे ही बोले–"दुखों की वैतरणी से गुजर रहे अंगद को सम्मान के साथ हमारे प्रतीक्षाकक्ष में बैठाओ। हम अपना वास्तविक शरीर धारण करके वहां पहुंचते हैं।

"जी महाराज।" पंचामृत उठकर खड़ा हो गया।
महिला पद्मासन में बैठ गई।

आंखें पुनः मुंद गईं। पेट पीठ की तरफ जाने लगा अर्थात् फिर परकाया प्रवेश की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई थी।

चंडिकाश्रम महाबलेश्वर की पहाड़ियों में हजारों-हजार मीटर में फैला हुआ था। उसकी सरहदों पर दस फुट ऊंची दीवार बनाई गई थी। जिस विशाल गेट पर नक्काशी करके सभी देवी-देवताओं की मूर्तियां लगाई गई थीं उसमें प्रवेश करते ही अंगद को अपने मन में बड़े ही अनोखे सुख की अनुभूति हुई थी।

चमत्कारिक तरीके से उसकी बेचैनी दूर हो गई थी।

वह बेचैनी जिसे वह उस क्षण से लगातार महसूस कर रहा था जिस क्षण रिम्पी के सिर से छिपकली को कूदते देखा था। और सुकन्या की कहानी सुनने के बाद तो उसके मन पर एक अजीब-सी दहशत बैठ गई थी। भावुकतावश उसने यह कसम जरूर खाई थी कि रिम्पी का बाल भी बांका नहीं होने देगा और छिपकली से गिन गिनकर बदले लेगा लेकिन कहीं अंदर ही से आवाज आई थी कि ऐसा वह कैसे कर सकेगा?

छिपकली की ताकत को देखते हुए उसे कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था बल्कि अगर यह भी कहा जाए कि ये कार्य उसे असंम्भव लग रहा था तब भी अतिश्योक्ति न होगी।

शायद इसीलिए वह लगातार बेचैनी महसूस कर रहा था।

वह बेचैनी जो उस विशाल गेट के अंदर कदम रखते ही जाने कहां गायब हो गई थी।

उसने सुना तो था कि किसी भूमि विशेष का प्रभाव ऐसा होता है जहां कदम रखते ही शरीर में सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होने लगता है मगर इस बात पर कभी विश्वास न किया था।

पंचामृत ने उसके समक्ष उपस्थित होकर दोनों हाथ जोड़कर उसका अभिवादन किया।

अंगद के हाथ भी स्वतः जुड़ गए।

उसे जिस प्रतीक्षाकक्ष में पहुंचाया गया था वहां बहुत ही धीमी धीमी आवाज में गायत्री मंत्र गूंज रहा था।

हर तरफ हृदय को सुकून पहुंचाने वाली शांति छाई हुई थी।

उसे एक गद्‌देदार कुर्सी पर बैठाने के बाद पंचामृत ने बहुत ही सौम्य स्वर में कहा था–"महाराज चंद मिनटों में उपस्थित होते हैं।"

अंगद सिर्फ गर्दन हिलाकर रह गया।
पंचामृत जा चुका था।

कुछ देर बाद श्वेत वस्त्र धारण किए एक सेवक उपस्थित हुआ, उसके हाथ में मिट्टी की बनी एक ट्रे थी और ट्रे में था–मिट्टी के गिलास में पानी। उसने कहा था–"जल ग्रहण कीजिए।"

अंगद की इच्छा पानी पीने की हुई मगर इंकार कर दिया। सेवक ने ट्रे ज्यों की त्यों सेंटर टेबल पर रखी और वापस चला गया।

कुछ देर बाद बरांडे से खड़ाऊं बजने की आवाज आई जैसे कोई आहिस्ता-आहिस्ता दरवाजे की तरफ बढ़ा चला आ रहा हो। वह कुर्सी पर तनकर बैठ गया था। दिल तेजी से जरूर धड़कने लगा था परंतु उसमें कोई घबराहट न थी।

फिर, द्वार पर ऐसी मानवाकृति नजर आई जैसे कोई महापुरुष खड़ा हो। अंगद को उसके अंदर से ही किसी ने तुरंत उठकर उस महापुरुष के चरणस्पर्श करने का आदेश दिया।

उसने वैसा ही किया।

चंडिकामृत ने उसके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और कहा–"अपने स्थान पर बैठो।"

मगर अंगद उनके बैठने से पहले नहीं बैठा। तब बैठा जब वे ठीक सामने रखे थोड़े ऊंचे सिंहासन पर बैठ गए। बैठते ही उन्होंने कहा था–"तुम्हारी इच्छा जल पीने की है परंतु नहीं पिया, इसे पिओ अंगद। सबसे पहले शरीर की क्षुधा शांत करनी चाहिए।"

अंगद ने इस तरह गिलास उठाकर पानी पिया जैसे चंडिकामृत के शब्द उसके लिए आदेश थे। तब, चंडिकामृत ने कहा–"एकता ने बताया कि तुम किसी समस्या में हो।"

अंगद एक बार शुरु हुआ तो फिर रुका नहीं।

सबसे पहले अपने सपनों के बारे में बताया। फिर अंकुर के बारे में। रिम्पी के घर पहुंचने की पूरी कहानी। सुकन्या की कहानी। छिपकली की गिरफ्त में आई रिम्पी की हालत।

"ओह!" चंडिकामृत के चौड़े मस्तक पर चिंता की लकीरें नजर आने लगी थीं–"ये तो कपाली है।"

"कपाली? कौन कपाली महाराज?"

"उस औरत का नाम है जिसे तुम सपने में देखते हो। जिसे सुकन्या ने प्रथम बलि देते अपनी आंखों से देखा था।"

"क-क्या आप उसे जानते हैं?"

"बहुत अच्छी तरह। वह गेसूपुर गांव की रहने वाली थी। शादी होकर बेलापुर आई। उसकी शादी अभिजीत से हुई और फिर, अभिजीत की मृत्यु हो गई। परंपराओं के मुताबिक कपाली को उसकी चिता पर सती होने का आदेश मिला। वह इसके लिए तैयार न थी मगर जबरदस्ती दुल्हन बनाकर चिता पर बैठा दिया गया। चिता में आग लगा दी गई और...और, उसके बाद...

"उसके बाद क्या महाराज?" अंगद बेचैन हो उठा था—"उसके बाद क्या हुआ? मुझे बताइए।"

"हमें रोका जा रहा है।"
"क-कौन रोक रहा है?"
"परमात्मा के अलावा हमें और कौन रोक सकता है!"

अंगद निरुत्तर हो गया। मन में बहुत कुछ जानने की जिज्ञासा जाग उठी थीं मगर यह भी जान चुका था कि अपनी मर्जी से वह कुछ नहीं ज़ान सकता। केवल वही जान सकता है जो महाराज चंडिकामृत चाहेंगे। उन्होंने कहा—"सबसे पहले हम तुम्हें तुम्हारे उस सवाल का जवाब देना चाहेंगे जिसने शुरु से ही तुम्हें सबसे ज्यादा परेशान कर रखा है।"

"कौनसा सवाल महाराज?"

"खुद बताओ। तुम्हें सबसे पहले, सबसे ज्यादा किस सवाल ने परेशान किया था?"

"कि इस संसार में अरबों-खरबों लोग हैं, उस डरावने सपने की शृंखलाएं मुझे ही क्यों चमकती हैं?"

"क्योंकि कपाली के द्वारा दी गई सबसे पहली बलि को सुकन्या ने अपनी आंखों से देखा था। उन आंखों से, जिनमें यकीन करो अंगद तुम और केवल तुम बसे हुए थे। महकार भी नहीं। रिम्पी भी नहीं। जब कपाली ने तड़पा-तड़पाकर उसकी जान ले ली तो स्वाभाविक रूप से उसके हृदय में भी प्रतिशोध की ज्वाला धधक उठी। मगर क्योंकि उसकी मृत्यु हो गई थी। उसके पास शरीर नहीं था इसलिए वह चाहकर भी कुछ नहीं कर सकती थी। अपना प्रतिशोध पूरा करने के लिए उसे किसी की जरूरत थी और दिल की गहराईयों से वह बस एक ही बात चाहती थी। यह कि—मुझ पर हुए जुल्म का बदला मेरा भैया सुजान ले। इसीलिए वह तुम्हें सपना दिखाती थी। पहली बलि के बाद कपाली ने जितनी भी बलियां दीं, उस पुराने किले में मौजूद रहकर सुकन्या की आत्मा ने वे सभी देखी हैं। उसके शरीर ने नहीं बल्कि उसकी आंखों ने। याद रहे, उन्हीं आंखों ने जिनमें केवल तुम बसे हो और उन आंखों से गुजरकर वे बलियां सपने बनकर तुम्हारी आंखों में आती रहीं। सुकन्या ऐसा इसलिए कर रही थी ताकि किसी तरह तुम कपाली के पास पहुंच जाओ और उसकी वीभत्स मौत का बदला लो।"

"और वही हुआ महाराज...वही हुआ।" उत्साहित अंगद कहता चला गया—"चौथे सपने में मैंने अंकुर को पहचान लिया। उसकी तलाश में निकल पड़ा। उसी सपने में रिम्पी का नाम आया था और फिर, मेरी बहन की आत्मा ने मुझे वहां भी पहुंचा दिया।"

"सुकन्या के पीछे छिपकली बनकर वह इसलिए लगी थी क्योंकि उसने उसे पुराने किले में वह सब करते देख लिया था मगर रिम्पी के सिर पर सवार होने के पीछे वैसा कोई कारण नहीं है। सपने में तुम सुन ही चुके हो कि रिम्पी दो बलियों के बराबर है। केवल इसी लिए वह उसके निशाने पर आई।"

"क्या वह कामयाब हो जाएगी?"

"अगर हो गई...तो कयामत आ जाएगी अंगद।" एक बार फिर चंडिकामृत के चौड़े मस्तक पर चिंता की गहरी लकीरें खिंच गई थीं–"अभिजीत जिंदा हो जाएगा और अगर वह जिंदा हो गया तो सोई हुई शैतानी शक्तियां जाग जाएंगी। इस धरती पर इंसानों और सद्पुरुषों का रहना मुश्किल हो जाएगा। परंतु इस प्रश्न का जवाब परमात्मा के अलावा किसी पर नहीं है। कभी-कभी वह अपने भक्तों की परीक्षा भी लेता है और इसीलिए उन्हें संकट में डालता है। परंतु घबराओ मत, उसी परमात्मा से प्रेरित तुम्हारी बहन की आत्मा ने अगर तुम्हें यहां तक भेजा है तो इसके पीछे भी कोई कारण होगा।"

जोश में भरे अंगद ने पूछा–"क्या कोई ऐसा तरीका है महाराज कि उसे नेस्तनाबूद किया जा सके?"

"ये काम हमारे बस्का तो है नहीं।"

"ऐसा न कहें महाराज।" अंगद ने असीम श्रद्धा के साथ अपने हाथ जोड़ लिए थे–"आपकी शक्ति तो अपरंपार है।"

"विश्वास रखो अंगद, हम तुमसे झूठ नहीं बोलेंगे बल्कि अगर यह कहा जाए तो ज्यादा मुनासिब होगा कि हम कभी झूठ बोलते ही नहीं हैं। निश्चित रूप से हमारे पास अनेक शक्तियां हैं परंतु इसमें कोई शक नहीं कि आज की कपाली के पास हमसे कई-कई गुना ज्यादा शक्तियां हैं। अगर हम आमने सामने आए तो शायद हम उसके सामने ठहर नहीं सकेंगे।"

इस विचार ने अंगद के चेहरे पर निराशा के भाव फैला दिए थे कि वह जिसके पास मदद मांगने आया था, वह तो खुद ही कपाली की शक्तियों से डरा हुआ था।

चंडिकामृत धारा-प्रवाह कहते चले जा रहे थे–"इसका कारण ये है कि कपाली ने हमसे बहुत ज्यादा घोर तपस्याएं करके शैतानी ताकतें हासिल कर ली हैं। और ऐसा उसने अपने प्रेम के जुनून की वजह से किया। निश्चित रूप से वह अभिजीत से बहुत ज्यादा प्रेम करती थी। उसी प्रेम की खातिर उसने उसे जिंदा करने का संकल्प लिया और ये तो तुम्हें मानना ही पड़ेगा कि प्रेम के जुनून से बड़ा कोई जुनून नहीं होता। उसी जुनून की खातिर वह कपालतंत्र के पीछे पड़ गई और वे शक्ति और सिद्धियां प्राप्त करने में सफल हो गई जो हमारे पास भी नहीं हैं। फॉर एग्जांपिल–वो अभिजीत की हड्डियों में उसकी आत्मा को बुला सकती है पर हम ऐसा नहीं कर सकते।"

"कपालतंत्र कौन महाराज?"
"उसका गुरु, वह–जिसने उसे काली शक्तियों की दीक्षा दी।"
"वह उसे कहां मिला?"
"अभी तुम्हारे लिए यह जानने का वक्त नहीं आया है।"
"लेकिन।" अंगद की आंखों में आंसू आ गए थे–"अगर आप ही हार मान रहे हैं तो मैं किसके पास जाऊं?"

"अपने पास।"
"क्या मतलब महाराज?"

"मैं ये तो नहीं कहूंगा कि तुम उसे परास्त कर सकते हो मगर इतना जरूर जानता हूं कि वो अद्भुत शक्ति केवल तुममें है जिसके कारण तुम उससे टकरा सकते हो।"

हैरान अंगद के मुंह से निकला–"ये आप क्या कह रहे हैं?"

चंडिकामृत के होठों पर बहुत ही रहस्यमय मुस्कान उभरी थी। फिर, उन्होंने कहा था–"जैसा हनुमान के साथ था वैसा हर प्राणी के साथ होता है अंगद, उसे खुद मालूम नहीं होता कि उसमें कौनसी विशेष शक्तियां हैं। उसे उसकी शक्तियों

के बारे में बताना होता है–उन्हें जगाना होता है, जैसे हनुमान को यह एहसास कराया गया था कि वे हवा में तैरकर समुद्र पार कर सकते हैं और जब तुम मेरे पास आ ही गए हो तो वह काम मैं करूंगा। मैं तुम्हें तुममें छुपी शक्तियों का एहसास कराऊंगा। उन्हें जगाऊंगा लेकिन...

"लेकिन?"
"तुम्हें दो काम करने होंगे।"
"बोलिए–मैं सबकुछ करने को तैयार हूं।"

"पहला, तुम्हें कठोर बल्कि कठोरतम परिश्रम करना होगा। दूसरा, खुद को पूरी तरह माता के प्रति समर्पित कर दोगे।"

"वो तो मैं अब भी–माता को सबसे सबसे ज्यादा मानता हूं।"
"मानना, खुद को समर्पित करना नहीं होता।"
"जी?"

"तुम देख चुके हो–आज का विज्ञान पढ़ा आधुनिक समाज उन शक्तियों को नहीं मानता जो कपाली ने प्राप्त कर ली हैं। आंखों से देखने के बावजूद किसी डाक्टर ने यह नहीं माना कि सुकन्या के सिर पर छिपकली सवार है और वह उसके सिर को खुरच रही है। ठीक ऐसे ही ये लोग यह भी नहीं मानेंगे कि काले जादू के ज्ञाता किसी के शरीर में घुस सकते हैं। उससे मनचाहे काम करा सकते हैं और हजारों किलोमीटर दूर बैठकर किसी की हत्या तक कर सकते हैं, आदि, आदि। मगर हम मानते हैं कि ये सब हो सकता है। कपाली जैसे लोग भी इन विद्याओं में पारंगत हो सकते हैं और हम जैसे माता के भक्त भी। हममें और उनमें केवल इतना अंतर है कि वे शैतान के उपासक हैं और हम मां के। महाकाली की पूजा करके हम जो ज्ञान, शक्तियां और सिद्धियां प्राप्त करते हैं उनका इस्तेमाल दुनिया में रोशनी फैलाने के लिए करते हैं जबकि उनका मकसद दुनिया में अंधेरा करके उसे अपने आधीन कर लेना है। इसलिए दिमाग से यह तर्क-वितर्क कभी न करना कि ये काम कैसे हो गया, वो कैसे हो गया। जो भी हो जाए, बस पूरा विश्वास रखना कि वो माता ने किया है। कपाली की शक्तियां तुम्हें डराएंगी, तुम्हारे अंदर खौफ पैदा करेंगी और तुम डरोगे भी मगर अपने मन से इस विश्वास के धागे को कभी न टूटने देना कि मां वैष्णो देवी जैसी ताकत तीनों ब्रह्मांडों में किसी के पास नहीं है। कपाली और कपालतंत्र की तो बिसात क्या है, उस शैतान में भी नहीं जिसकी वे पूजा करते हैं। तुम तो जानते होगे मां दुर्गा में सभी देवी-देवताओं की संयुक्त ताकत है। जो भी करो, बस ये सोचकर करना कि वह युद्ध तुम्हारे और कपाली के बीच नहीं, शैतान और सबकी मां के बीच हो रहा है।"

"मेरे मन में आज ही से यह विश्वास जागना शुरु हो गया है।"

"ये लो।" कहने के साथ चंडिकामृत ने अपने दाएं हाथ की मुट्ठी उसकी तरफ बढ़ाई।

अंगद समझ न सका कि वे उसे क्या दे रहे हैं परंतु अपना हाथ उनकी तरफ बढ़ा दिया। चंडिकामृत ने अपनी मुट्ठी उसके हाथ के ऊपर ले जाकर खोल दी। एक छोटा-सा कागज अंगद के हाथ पर गिरा। उसे देखते हुए अंगद ने पूछा–"ये क्या है महाराज?"

"खोलकर देखो।"

सस्पेंस में डूबे अंगद ने कागज की तहें खोलीं। उसने देखा कि कागज पर सिर्फ दो पंक्तियां लिखी थीं।

चंडिकामृत ने कहा–"इसे पढ़ो।"

अंगद ने पढ़ा–

–त्रयंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारूकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामतात्।।

पढ़ने के बाद पूछा–"ये क्या है महाराज?"
"महामृत्युंजय मंत्र।"
"महामृत्युंजय मंत्र?"

"इस मंत्र को किसी भी तरह रिम्पी के शरीर से स्पर्श कराए रखना। जैसे–इस कागज को किसी तावीज में बंद करके उसके गले में डाल सकते हो। मृत्यु अटल है अंगद लेकिन जिस व्यक्ति के पास ये महामृत्युंजय मंत्र होता है उसकी अकाल मृत्यु नहीं हो सकती। इसका भावार्थ है।" महाराज चंडिकामृत ने बताया–"हम भगवान शंकर की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो प्रत्येक श्वास में जीवन शक्ति का संचार करते हैं, जो सम्पूर्ण जगत का पालन-पोषण अपनी शक्ति से करते हैं। उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे हमें मृत्यु के बंधनों से मुक्त कर दें, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो जावे। जिस प्रकार एक ककड़ी बेल पर पक जाने के बाद उस बेल रूपी संसार के बंधनों से मुक्त हो जाती है उसी प्रकार हम भी इस संसार रूपी बेल में पक जाने के बाद जन्म-मृत्यु के बंधनों से सदैव के लिए मुक्त हो जाएं और आपके चरणों की अमृतधारा का पान करते हुए शरीर को त्याग कर आप में लीन हो जावें।" मंत्र का भावार्थ बताने के बाद महाराज आगे बोले–"अंगद, यह मंत्र जीवन प्रदान करता है अर्थात् अकाल मृत्यु, दुर्घटना और अप्राकृतिक मृत्यु से हमें बचाता है। यह मंत्र सर्प और बिच्छू के काटने पर भी पूरा प्रभाव रखता है और कपाली जैसे लोगों की तुलना सर्प और बिच्छू से ही की जाती है। इस मंत्र का महत्वपूर्ण लाभ ये है कि यह कठिन और असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त करता है। यह बात अच्छी तरह जान लो कि–यह मंत्र हर बीमारी को भगाने का बड़ा शस्त्र है।"

"मैं इसे रिम्पी के गले में बांध दूंगा।" कहने के साथ अंगद ने कागज को बड़ी श्रद्धा से अपनी आंखों से लगाया था।

"और ये लो।" चंडिकामृत ने पुनः मुट्ठी उसकी तरफ बढ़ाई।
इस बार उन्होंने एक और कागज अंगद को दिया।
अंगद इस बात पर हैरान था कि पिछली बार जब महाराज ने मुट्ठी खोली थी तो उनके हाथ में केवल एक ही कागज था।

ये दूसरा कागज कहां से आ गया?
मगर इस बात को उसने अपने दिमाग में प्रश्न न बनने दिया।
चंडिकामृत ने कहा–"इसे भी खोलकर देखो।"
अंगद ने आज्ञा का पालन किया।
इस कागज पर एक यंत्र बना हुआ था।

चंडिकामृत ने बताया–"ये महामृत्युन्जय यंत्र है। इसके भी वही लाभ हैं जो मंत्र के हैं। तावीज में इन दोनों को बंद करके रिम्पी के गले में डाल देना। छिपकली उसके आसपास भी नहीं फटकेगी।"

अंगद ने ध्यान से यंत्र को देखा। जो निम्न था–
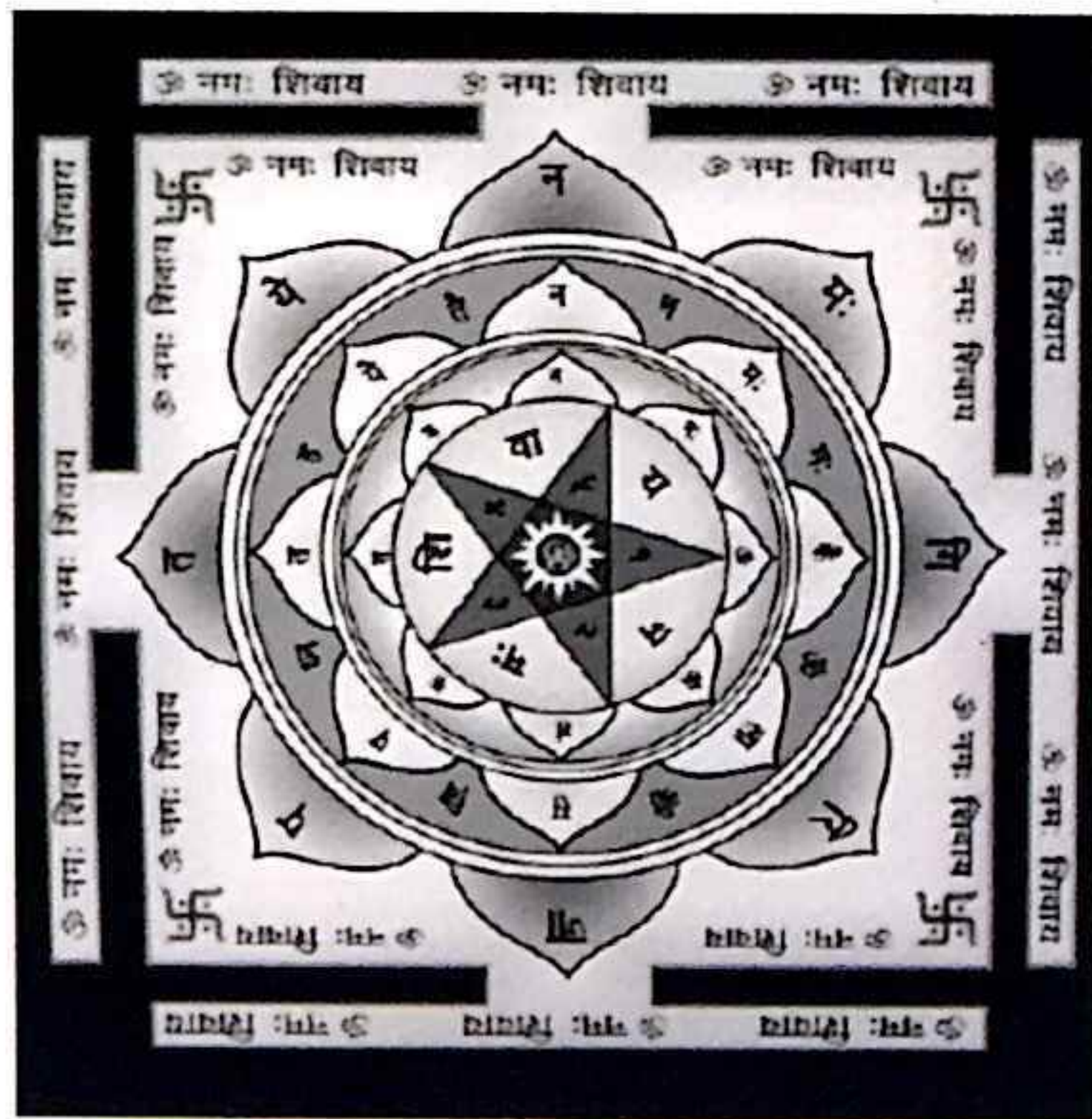
“धन्यवाद महाराज...आपका कोटि-कोटि धन्यवाद।” अंगद ने इतने भावुक स्वर में कहने के साथ मुट्ठी बंद की कि उसकी आंखें छलछला उठीं–“आपने मेरी बहुत बड़ी समस्या हल कर दी।”

“नहीं अंगद, इस भ्रम में न रहना कि तुम्हें सभी समस्याओं से मुक्ति मिल गई है।” चंडिकामृत का लहजा बहुत गंभीर था।

एक बार फिर अंगद का दिल कांपा–“क्या मतलब महाराज?”

“कपाली इतनी आसानी से रिम्पी का पीछा नहीं छोड़ेगी। वो अपनी चाल जरूर चलेगी। हमारे पास शंकर भगवान का दिया हुआ ये मंत्र और यंत्र है तो उसके पास शैतान के दिए हुए बहुत से यंत्र और मंत्र। इनका जबरदस्त टकराव होने वाला है।”

“पर किसी भी शैतान के यंत्र-मंत्र भगवान शंकर के यंत्र-मंत्रों से ज्यादा शक्तिशाली नहीं हो सकते महाराज।”

“बस यही विश्वास अपने मन में बनाए रखना।” महाराज के चेहरे पर खुशी छलकी–“किसी हालत में किसी शैतान का यंत्र-मंत्र रिम्पी का बाल भी बांका नहीं कर सकेगा...एक बात और बताएं?”

“जी बोलिए।”

“चंडिकामृत की आंखें शून्य में स्थिर हो गईं। ऐसा लगता था जैसे वे कुछ देख रहे हों और फिर यूं बोले जैसे स्वप्न में बोल रहे हों–“तुम्हारे साथ एक ऐसी रहस्यमय शक्ति है जिसके कारण कपाली तुम्हारी जान नहीं ले सकती।”

अंगद ने उत्सुक होकर पूछा–“वो कौन है महाराज?”

“वक्त आने पर खुद पता लग जाएगा।” महाराज टाल गए मगर तभी उनके चेहरे पर बुरी तरह चौंकने के भाव उभरे थे। मुंह से शब्द फिसले–“अरे! पुलिस जीप का एक्सीडेंट हो गया।”

“कौनसी पुलिस जीप का?” अंगद उछल पड़ा था।

“उसमें जीप का ड्राइवर, काले खां, राजपाल और नंदिनी थे। बड़ा भीषण एक्सीडेंट है। जीप एक ट्रक से टकराने के बाद काफी ऊंचाई तक हवा में उछल गई है।”

"और बताओ...और बताओ महाराज कि वहां क्या हो रहा है?" बुरी तरह बेचैन अंगद ने पूछा था।

चंडिकामृत के चेहरे पर चिंता की लकीरें खिंच गईं। वे बड़बड़ा उठे–"अंधकार! अंधकार!! अंधकार!!!"

"क्या मतलब महाराज?" अंगद ने हड़बड़ाकर पूछा।
"अब हम कुछ नहीं देख सकते।"

"पर क्यों महाराज? ऐसा कैसे हो सकता है कि एक पल पहले आप सब कुछ देख रहे थे मगर अब कुछ नहीं देख सकते?"

वे निराशा भरे स्वर में बोले–"हमने पहले ही कहा था, उसके पास हमसे ज्यादा शक्तियां हैं।"

"तो क्या आपको कपाली नहीं देखने दे रही?"
"उसने हमारी दिव्य-दृष्टि के समक्ष अंधकार फैला दिया है।"
अंगद को अगला प्रश्न न सूझा।

थोड़े अंतराल के बाद चंडिकामृत ही बोले–"परंतु ये स्पष्ट हो गया कि कपाली उन्हें सरिता के पास नहीं पहुंचने देना चाहती।"

एक बार फिर अंगद को कहने के लिए कुछ न सूझा।

"पर अंगद।" पुनः वे ही बोले–"तुम उस ओर से अपना ध्यान हटा लो। तुम्हारा सबसे पहला काम है–महामृत्युन्जय यंत्र और मंत्र को जल्दी से जल्दी रिम्पी के पास पहुंचाना।"

"जी।"

"और लो...ये भी लो।" कहने के साथ उन्होंने एक बार फिर अपनी मुट्ठी उसकी तरफ बढ़ा दी थी।

अंगद समझ न सका कि इस बार वे उसे क्या देने वाले हैं मगर अपार श्रद्धा के साथ उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया था।

इस बार जो चंडिकामृत की मुट्ठी खुली तो चांदी का बना एक सुंदर ताबीज उसके हाथ पर आ गिरा।

वह काले धागे में बंधा था।

चंडिकामृत ने उत्तेजित स्वर में कहा–"महामृत्युन्जय मंत्र और यंत्र को इस ताबीज में बंद करके अपने गले में डाल लो ताकि रास्ते में कहीं खो न सके और जितनी जल्दी हो सके रिम्पी के पास पहुंचो। इस वक्त इसके अलावा और कोई चारा नहीं है। रिम्पी के गले में ताबीज डालने के बाद तुम्हें लौटकर यहीं आना है अंगद। बहुत कुछ सीखना है तुम्हें, वह सब सीखे बगैर कपाली से नहीं टकरा सकोगे।"

"ठीक है महाराज।" अंगद ने जल्दी से यंत्र-मंत्र को ताबीज में बंद किया। उसे अपने गले में डाला और चंडिकामृत के चरणस्पर्श करता हुआ बोला–"मैं चलता हूं।"

अंगद दौड़ता हुआ चंडिकाश्रम से बाहर निकला। उसी के साथ बाहर निकली थी–उसकी बहन सुकन्या की आत्मा।

मगर वह उसे देख नहीं सकता था।

उससे अंजान अंगद पार्किंग में खड़ी इमरान हाशमी की उस कार के करीब पहुंचा जो इस वक्त भी उसके पास थी।

"जल्दी चलो।" कहते हुए अंगद ने झटके से गेट खोला और पिछली सीट पर जा गिरा।

उसका वाक्य खत्म होने से पहले ही न केवल गाड़ी स्टार्ट हो चुकी थी बल्कि असलम नामक ड्राइवर उसे आगे बढ़ा चुका था।

दोनों में से किसी को भी, बाल बराबर भी एहसास न था कि बगैर शरीर वाली सुकन्या की आत्मा भी गाड़ी में मौजूद है।

अंगद लगातार गाड़ी तेज चलाने के लिए कह रहा था और असलम वैसा कर भी रहा था।

कुछ देर बाद असलम को हैडलाइट्स ऑन करनी पड़ीं क्योंकि सूर्यदेव पूरी तरह अमेरिका पहुंच चुके थे।

उस वक्त रात के करीब दस बजे थे जब गाड़ी अजीब-से तरीके से झटके खाने लगी। अंगद ने बेचैन स्वर में पूछा—"क्या हुआ?"

"शायद पंक्चर।" असलम ने कहा।

"प...पंक्चर!" अंगद के मुंह से ऐसी आवाज निकली जैसे बम फटने के बारे में सुना हो—"मॉय गॉड। अब क्या होगा?"

असलम ने गाड़ी की रफ्तार कम करके उसे फुटपाथ पर उतारने के साथ कहा—"स्टेपनी है मेरे पास।"

अंगद दरवाजा खोलकर बाहर निकला। असलम भी बाहर निकल चुका था। दोनों गाड़ी के टायर्स चेक करने लगे।

अंगद ने कहा—"पीछे दाईं तरफ वाला है।"

"इसमें भी पंक्चर है।" कहने के साथ असलम ने उसी साइड के अगले पहिए में ठोकर मारी थी।

"द-दोनों में कैसे हो सकता है?"
"क्या बताऊं सर, होने को कुछ भी हो सकता है।"
"स्टेपनी तो एक ही होगी?"
"जाहिर है।"

अंगद पर कुछ कहते न बन पड़ा। जेहन में तूफान-सा चल रहा था। जी चाह रहा था—उड़े...और रिम्पी के पास पहुंच जाए मगर ऐसी अड़चन आ गई थी जिसका कोई हल नहीं सूझ रहा था।

अंगद ने दांत किटकिटाते हुए दाएं हाथ का घूंसा बाईं हथेली पर मारते हुए कहा—"सोचो असलम...कुछ सोचो।"

"क्या सोचूं सर? यहां दूर-दूर तक कोई यह बताने वाला भी तो नहीं है कि आसपास पंक्चर लगाने वाले की दुकान कहां है?"

तभी एक गाड़ी फर्राटा भरती उनके करीब से गुजरी।

अंगद के दिमाग में ख्याल उभरा कि—'क्यों न किसी से लिफ्ट लेकर मुंबई पहुंचा जाए!' और फिर...यह ख्याल उसे जमता चला गया। मुंह से निकला—"असलम।"

"यस सर।"

"अगर मैं किसी से लिफ्ट लेकर मुंबई पहुंच जाऊं तो?"

"तो?"

"तुम्हें बुरा तो नहीं लगेगा?"

"इसमें बुरा लगने की क्या बात है सर, जल्दी है तो आप निकल सकते हैं। मैं पंक्चर लगवाकर पहुंच जाऊंगा।"

"थैंक्यू असलम...थैंक्यू।" अंगद के मुंह से ये शब्द निकले ही थे कि एक गाड़ी की हैडलाइट्स नजर आईं। उसे रोकने की धुन में अंगद सड़क के बीचोंबीच पहुंच गया और दीवानावार दोनों हाथों को सिर के ऊपर उठाकर क्रॉस की शक्ल में हिलाने लगा।

गाड़ी तेज रफ्तार से चली आ रही थी मगर अंगद ने इस बात की जरा भी परवाह नहीं की।

वह उसी तरह हाथ हिलाता रहा।

और फिर, वातावरण में टायरों के सड़क पर घिसटने की दिल दहला देने वाली आवाज गूंजी। शायद गाड़ी के चालक ने सड़क के बीचोंबीच खड़े अंगद को देख लिया था और उसने जोर से ब्रेक मारे थे परंतु रफ्तार इतनी ज्यादा तेज थी कि गाड़ी सड़क पर घिसटती हुई अंगद की तरफ बढ़ी। असलम को यह कहते हुए उसे पकड़कर खींचना पड़ा कि—"क्या कर रहे हैं सर, वो आपको कुचल देगी।"

लाल रंग की फरारी काफी दूर तक घिसटती चली जाने के बाद रुकी। अंगद उसकी तरफ दौड़ा।

आत्मा अंगद के साथ उड़ी।

अंगद फरारी के करीब पहुंचा और बाईं तरफ वाली विंडो पर झुककर, हांफता-सा बोला—"लिफ्ट प्लीज।"

ऐसा कहने के साथ ही उसने बदबू का भभका अपने नथुनों से गुजरकर जेहन को अपनी जकड़न में लेता महसूस किया था। फरारी के अंदर से आ रही बदबू ऐसी थी जैसे सड़ी हुई लाश से उठ रही हो।

उस वक्त अंगद अपने जेहन को बदबू से छुटकारा दिलाने की कोशिश कर रहा था जब एक ऐसी आवाज कानों से टकराई जैसे टीन की पत्ती को पत्थर पर रगड़ा गया हो—"तुम तो अपने साथ-साथ मुझे भी मरवा डालते। लिफ्ट मांगने का ये कौनसा तरीका था?"

"स...सॉरी।" अंगद के मुंह से शब्द फिसले—"म...मुझे मुंबई पहुंचने की जल्दी है। इसीलिए गलती हो गई।"

गाड़ी के अंदर की लाइट ऑन हुई।

अंगद ने देखा तो देखता ही रह गया क्योंकि ड्राइविंग सीट पर बैठे करीब तीस वर्षीय युवक का चेहरा ऐसा था जैसे उस पर सफेद पेंट किया गया हो। वह काले कांच का चश्मा पहने हुए था और जिस्म पर काले कपड़े का ऐसा लबादा जिसने उसके सिर तक को ढक रखा था। उसे देखकर अंगद के ही नहीं, गाड़ी की विंडो पर पहुंच चुके असलम के मुंह से भी बोल न फूट सका। गाड़ी से निकलकर उसके नथुनों में भी बदबू का भभका घुस गया था।

टीन की पत्ती के पत्थर पर रगड़ने जैसी आवाज पुनः उनके कानों से टकराई—"जल्दी तो मुझे भी है, इसीलिए इतनी तेज गाड़ी चला रहा था कि पूरी ताकत से ब्रेक लगाने के बावजूद नहीं रुकी।"

अंगद को उसकी आवाज, उसका हुलिया और रात के वक्त काला चश्मा पहनकर ड्राइविंग करना आदि सब कुछ खटका

था मगर फिर भी स्वार्थ वश पूछा—"क्या आप मुझे लिफ्ट देंगे?"

"कहां जाना है?"

"जाना तो विले पार्ले है पर मुंबई में जहां भी छोड़ देंगे, चलेगा। मैं वहां से टैक्सी पकड़कर विले पार्ले चला जाऊंगा।"

"बैठो।" पुनः वही आवाज।

'नहीं...नहीं अंगद।' चीखती हुई सुकन्या की आत्मा ने अंगद को फरारी से परे धकेला—'इस गाड़ी में मत बैठो।'

मगर न तो अंगद ने कोई आवाज ही सुनी थी और न ही उसके स्पर्श को अपने जिस्म पर महसूस किया, उसने तो असलम के विरोध को भी दरकिनार कर दिया था। उस असलम के विरोध को जिसने अंगद का हाथ ऐसे अंदाज में दबाया था जैसे फरारी में न बैठने के लिए कह रहा हो परंतु अंगद ने उस पर ध्यान देकर भी ध्यान नहीं दिया और झट से दरवाजा खोलकर अंदर बैठ गया।

उसने दरवाजा बंद किया ही था कि असलम फुसफुसाते स्वर में कहे बगैर न रह सका—"मुझे कुछ ठीक नहीं लग रहा सर।"

"क्यों? क्या हुआ?"

"ये बदबू कैसी है?"

"गाड़ी के अंदर कहीं शायद कोई चूहा मरा पड़ा है।" अंगद से पहले उस विचित्र व्यक्ति ने कहा।

'झूठ।' आत्मा चिल्लाई।
मगर व्यर्थ।
किसी ने कुछ नहीं सुना।
असलम ने ये जरूर कहा—"आपके चेहरे पर पेंट?"
"एलर्जी है।" चालक बोला—"उसी की दवा लगा रखी है।"
अंगद बोला—"चलिए न...प्लीज!"

रहस्यमय व्यक्ति ने बटन दबाकर विंडो का कांच ऊपर किया और गाड़ी आगे बढ़ा दी मगर सुकन्या की आत्मा उससे पहले ही गाड़ी के अंदर पहुंच चुकी थी। वह अब भी बार-बार अंगद से कह रही थी कि तुम्हें इस गाड़ी में नहीं बैठना चाहिए लेकिन अंगद सुने तब न! आत्मा कसमसाकर रह गई थी।

काले खां की बात सुनकर डाक्टर कजारिया बुरी तरह चौंका था। मुंह से निकला—"क-क्या कहा तुमने! तुम मर चुके हो?"

"हां डाक्टर...हां। मैं सचमुच मर चुका हूं।" ये शब्द कहते वक्त काले खां की हालत पागलों जैसी थी।

"ऐसा हुआ कैसे?" कजारिया ने पूछा।

काले खां ने बदहवास अवस्था में कहा—"हमारा एक्सीडेंट हो गया था और...और एक्सीडेंट भी बड़ा अजीब था। वह औरत सिर्फ ड्राइवर को नजर आई थी। मुझ सहित और किसी को नहीं।"

"कौन औरत? तुम क्या कह रहे हो, मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। प्लीज, थोड़ा विस्तार से बताओ।"

"पुलिस इंस्पेक्टर के रूप में मैंने एक से एक जटिल केस हल किए हैं लेकिन वह केस सबसे अजीब था।" काले खां एक बार शुरु हुआ तो सब कुछ बताता चला गया। यह भी कि शालू ने किस तरह अंकुर को किडनेप किया था। यह भी कि उसे और राजपाल को किस तरह नंदिनी के शालू होने का शक हुआ। और यह भी कि जब उन्होंने धनपत और अखिल से नंदिनी की शिनाख्त कराने की कोशिश की तो वे कितने रहस्यपूर्ण तरीके से मारे गए। इतना बताने के बाद उसने आगे कहा—"उसके बाद हम नंदिनी को, उसकी शिनाख्त कराने के लिए सरिता के पास ले जा रहे थे जबकि राजपाल इस बात के जरा भी फेवर में नहीं था। जीप में मैं, राजपाल, ड्राइवर और नंदिनी थे। जीप हवा से बातें कर रही थी। राजपाल ने कांपते स्वर में कहा—"म-मेरी बात मान जाओ सर, ये आप ठीक नहीं कर रहे हैं। यह तो जानते बूझते किसी की जान लेने के बराबर है।"

मैं गुर्राया था—"तू अपनी बकवास बंद नहीं करेगा?"

"जो मैं कह रहा हूं, उसे आप बकवास कैसे कह सकते हैं सर? आप अपनी आंखों से देख चुके हैं कि...

"राजपाल।" मैं फिर उसकी बात पूरी होने से पहले ही गुर्राया था—"मैंने तुझसे पहले ही कहा था, मेरे साथ धनपत के बंगले पर चलना है तो जीप में बैठ, नहीं चलना तो वहीं रह जाना था। अब बैठ ही गया है तो चुपचाप बैठा रह, एक भी लफ्ज मत बोल। मैं इस हरामजादी को इसके अंतिम अंजाम तक पहुंचाकर रहूंगा।"

जीप की पिछली सीट पर बैठी नंदिनी के हलक से जैसे अंगारे निकले थे—"ये गाली तुमने किसे दी इंस्पेक्टर?"

"तुझे।" मैंने भन्नाए हुए लहजे में कहा।
वो बोली—"तुम ठीक नहीं कर रहे।"

"तेरी धमकियों से राजपाल डर सकता है, मैं नहीं।" गुस्से की ज्यादती के कारण उस वक्त मुझ पर उसके सौंदर्य का जादू बेअसर था। मैं कहता चला गया—"ये इसलिए खौफजदा है क्योंकि इसका ख्याल है कि धनपत और अखिल की हत्याएं तूने अपनी अलौकिक शक्तियों से की हैं जबकि मैं ऐसा नहीं मानता।"

"तुम क्या मानते हो?" नंदिनी ने मुझे घूरा था।
"वो दोनों मौतें इत्तफाक के अलावा और कुछ भी नहीं थीं।"
नंदिनी का सपाट लहजा—"मैं भी यही मानती हूं।"
मैंने गर्दन घुमाकर पीछे देखा।

बला की खूबसूरत नंदिनी दास बहुत ही चित्ताकर्षक अंदाज में मुस्कराई थी। उस मुस्कान को देखकर मेरे जिस्म में झुरझुरी-सी दौड़ गई मगर फिर भी कड़े लहजे में बोला—"मतलब?"

उसने कहा—"राजपाल एक कमजोर दिमाग का शख्स है। ये जो सोच रहा है, वो पागलपन है। मेरे पास कोई अलौकिक शक्ति नहीं है। तुम अपनी जगह बिल्कुल ठीक हो। वे मौतें इत्तफाक के अलावा और कुछ भी नहीं हैं मगर...

"मगर?" मेरे हलक से फिर गुर्राहट निकली।

"यह तो तुम्हें भी मानना पड़ेगा...बल्कि मानना चाहिए कि अखिल का खात्मा किसी आम इंसान ने नहीं किया। उसे किसी पहुंचे हुए तांत्रिक ने काले जादू के इस्तेमाल से मारा है।"

"पर क्यों?" राजपाल बोल उठा—"किसी तांत्रिक ने ऐसा क्यों किया? वो भी तब, जब हम तुम्हें शिनाख्त के लिए उसके...

"इस सवाल का जवाब तुम्हारे इंस्पेक्टर को तलाशना है।" एक बार फिर उसने मुझे चेतावनी दी थी—"बहरहाल, सरकार

इन्हें इसी किस्म के सवालों के जवाब तलाशने की तनख्वाह देती है!"

"वही कर रहा हूं। इसीलिए तुझे धनपत के बंगले पर ले जा रहा हूं।" मैं अपने दिमाग को गुस्से से बाहर नहीं निकाल पा रहा था—"सरिता जरूर शिनाख्त करेगी कि तू ही शालू है।"

"अगर उसे भी कुछ हो गया तो?"
"तो?" मैं सन्न रह गया।

"तब तो तुम भी वही सोचने लगोगे जो राजपाल सोच रहा है। यह कि—मेरे पास कोई अलौकिक शक्ति है। मैं उसी शक्ति से ऐसे हर शख्स को मौत के घाट उतारती जा रही हूं जिससे मेरी शिनाख्त कराने की कोशिश की जाती है!"

एक सेकिंड को तो मैं उसके शब्द सुनकर सकपका ही गया था मगर अगले ही पल संभलकर बोला—"मैं तब भी ये नहीं मान सकता क्योंकि मेरा दृढ़ विश्वास है कि किसी के पास ऐसी अलौकिक शक्तियां नहीं हो सकतीं।"

"थैंक्स गॉड। मैं ऊपर वाले की शुक्रगुजार हूं कि वह अभी तक तुम्हारे दिमाग को बिल्कुल सही पटरी पर डाले हुए है।" नंदिनी अजीब-से लहजे में कहती चली गई—"यदि तुम भी राजपाल के-से अंदाज में सोचने लगते तो मेरे लिए मुसीबत खड़ी हो जाती। जिस इंसान के पास कोई अलौकिक शक्ति न हो, उस पर अगर कोई यह इल्जाम लगा दे कि तुम अलौकिक शक्तियों से लोगों के कत्ल कर रहे हो तो उसके लिए खुद को बेगुनाह साबित करना एक तरह से नामुमकिन ही हो जाए। ऊपर वाले की मेहर है कि तुम्हारे रहते मैं ऐसे किसी जंजाल में फंसने वाली नहीं हूं।"

मैंने उसे यह जानने की मंशा से घूरा कि उसने यह सब व्यंग में कहा था या सामान्य स्वर में मगर, किसी नतीजे पर न पहुंच सका।

तभी, जीप का हूटर बहुत जोर से बजा और बजता ही चला गया क्योंकि ड्राइवर उससे हाथ नहीं हटा रहा था। मैंने उसकी तरफ देखते हुए झल्लाकर कहा—"क्या कर रहा है?"

"वो सड़क से हट ही नहीं रही है साब।" बुरी तरह आतंकित ड्राइवर अब भी हूटर बजाए चला जा रहा था।

मैंने खाली पड़ी सड़क को देखते हुए पूछा—"कौन?"
"वो औरत।"
"कौन औरत? सड़क पर तो कोई नहीं है।"

"वो सामने से आ तो रही है साब! अरे, उसे सुनाई नहीं दे रहा क्या?" घबराई हुई अवस्था में वह लगातार हूटर बजाए चला गया।

फिर ब्रेक पेडल पर लगभग खड़ा हो गया और स्टेयरिंग को तेजी के साथ इस तरह बाईं तरफ घुमाया जैसे सड़क पर मौजूद किसी को बचाने की कोशिश में वह सब किया हो और...मेरी 'क्या कर रहा है...क्या कर रहा है?' के बीच सड़क पर घिसटती हुई जीप 'भड़ाक' की जोरदार आवाज के साथ सामने से आ रहे ट्रक से जा टकराई। एक साथ चारों की चीखें गूंजीं क्योंकि—

जीप हवा में कलाबाजियां खा रही थी।

मैं सीट से उछलकर हवा में तैर गया। जमीन पर आने पर सिर बहुत जोर से एक पत्थर से टकराया। उसके बाद मैं गहरी खाई की तरफ लुढ़कता चला गया। मुझमें इतनी ताकत बाकी न रही थी कि अपने जिस्म को खाई की तरफ लुढ़कने से रोक सकता। एक पेड़ से टकराया और उसके मोटे तने के साथ अटककर रह गया। फिर, एक झटका-सा लगा। मैं अपने जिस्म से बाहर निकल आया।

"जिस्म से बाहर निकल आए!"

"हां।" काले खां बोला–"अब मुझे किसी किस्म के दर्द का एहसास नहीं हो रहा था। मेरे उस जिस्म में भी कोई हलचल बाकी न बची थी जिसे अपने सामने पड़ा देख रहा था। उसके बाद, खुद पर मेरा काबू न रहा। मैं तिनके की मानिंद हवा में उड़ने लगा।"

"चुप मत हो मिस्टर काले खां...चुप मत हो।" उत्तेजित अवस्था में डाक्टर कजारिया बोला–"मुझे बताओ उसके बाद क्या हुआ?"

"मेरा शरीर वहीं पड़ा रह गया था मगर महसूस किया कि हवा में उड़ता हुआ मैं बड़ी आसानी से खाई के ऊपर यानी उस सड़क पर आ गया जहां एक्सीडेंट हुआ था। मैंने देखा–चकनाचूर हुई जीप एक तरफ औंधी पड़ी थी। जिस ट्रक से जीप टकराई थी, वह भी वहीं था। जीप की टक्कर से उसका अगला हिस्सा पिचक चुका था। वह एक खंबे में धंसा हुआ था। उसके ड्राइवर-क्लीनर को ज्यादा चोटें नहीं आई थीं। वे ट्रक के केबिन में ही फंसे हुए थे और उस वक्त निकलने की कोशिश कर रहे थे।"

कजारिया ने पूछा–"तुम्हारा ड्राइवर, राजपाल और नंदिनी?"

"मैंने उन्हें भी देखा।" कहते वक्त काले खां की आंखें इस तरह शून्य में स्थिर थीं जैसे इस वक्त भी उन्हीं दृश्यों को देख रही हों–"वे तीनों सड़क पर अलग-अलग दिशाओं में पड़े कराह रहे थे। तीनों ही जख्मी थे, कोई कम, कोई ज्यादा। सबसे कम चोटें नंदिनी को लगी थीं। उससे ज्यादा राजपाल को और उससे ज्यादा ड्राइवर को। मैंने मदद के लिए उनकी तरफ बढ़ना चाहा परंतु ऐसा कर न सका। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे अब मेरे वश में कुछ नहीं रहा है। मैं रुई के किसी बहुत ही छोटे टुकड़े की तरह हवा में तैर रहा था।"

"उसके बाद?"

"सबसे पहले वहां एक सफारी पहुंची। सड़क का हाल देखकर रुकी। उसमें से पांच लड़के निकले। उन्होंने ट्रक के ड्राइवर-क्लीनर को बाहर निकाला। मेरे ड्राइवर, राजपाल और नंदिनी की मदद के लिए आगे बढ़े। उनमें से एक ने अपने मोबाइल से पुलिस को फोन किया, दूसरे ने सिटी हास्पिटल को। मेरे देखते ही देखते वहां दोनों तरफ से आने वाले वाहन रुकने लगे। भीड़ बढ़ने लगी।"

कजारिया ने कहा–"मतलब उस एक्सीडेंट में तुम्हारे अलावा और किसी की मौत नहीं हुई थी?"

"नहीं।" काले खां ने बताया–"कुछ ही देर में वहां पुलिस भी पहुंच गई थी और सिटी हास्पिटल की एंबुलेंस भी। ट्रक के ड्राइवर-क्लीनर को पुलिस ने हिरासत में ले लिया था। मेरे ड्राइवर, राजपाल और नंदिनी को एंबुलेंस लेकर सिटी हास्टिल जा पहुंची।"

"तुम्हें कैसे पता कि वह सिटी हास्पिटल ही गई थी?"

"क्योंकि अब दुनिया की कोई ताकत मुझे कहीं भी पहुंचने से नहीं रोक सकती थी। हवा में उड़ता हुआ मैं एंबुलेंस के पीछे-पीछे गया था। मैंने आपरेशन थ्येटर में उनका इलाज होते हुए ही नहीं, हास्पिटल के कमरों में शिफ्ट होते हुए भी देखा। मुझे अब भी याद है–ड्राइवर को रूम नंबर एक सौ चार में रखा गया है, राजपाल को एक सौ दस में और नंदिनी का रूम नंबर एक सौ पच्चीस है।"

"यहां कैसे पहुंचे?"

"जैसा कि पहले ही बता चुका हूं–मैं अपने काबू में नहीं था। मुझे नहीं मालूम, जाने कहां-कहां से उड़ता हुआ इस

वैडरूम में आ गया। वैड पर एक लड़की और एक जवान लड़का सोया हुआ था। जाने मेरे अंदर ये ख्याल कहां से आया कि मैं इस लड़के के जिस्म में घुस सकता हूं। मैंने वैसा ही किया। मैं उस लड़के के अंदर घुस गया। ऐसा लगा जैसे मैं सो गया होऊं। कुछ देर पहले मेरी बगल में सोई लड़की ने जगाया। अब मैं जानता हूं कि उस लड़की का नाम अराधना है और जिस जिस्म में इस वक्त मैं हूं, उसका नाम शायद आनंद है। ओ माई गॉड, अब मैं समझा कि वे मुझे आनंद क्यों कह रहे थे! मेरा जिस्म कैसे वदल गया! इसका मतलब ये हुआ कि मेरी आत्मा ने जिस्म चेंज कर लिया है मगर जो कुछ मैंने बताया, उसके अलावा मुझे कुछ नहीं मालूम। मैं नहीं जानता कि मरने के बाद मेरी आत्मा इस जिस्म में क्यों आ घुसी मगर सच यही है कि इस वक्त मैं खुद को आनंद नहीं काले खां महसूस कर रहा हूं।"

कजारिया को लगा–अब उसके पास काले खां अथवा आनंद से पूछने के लिए कुछ भी नहीं रह गया है। सारी बात उसकी समझ में आ गई थी। अतः बोला–"क्या तुम मुझे जानते हो?"

"इसके ज्यादा और कुछ नहीं कि आप एक डाक्टर हैं।"

"मैं साधारण बीमरियों का इलाज करने वाला डाक्टर नहीं हूं।" कजारिया ने कहा–"मैं अपने पेशेंट्स को हिप्नोटिज्म करके उनकी ऐसी बीमारियों का पता लगाने और फिर उनका इलाज करने में माहिर हूं जिनका पता साधारण मेडिकल इन्वेस्टिगेशन से नहीं लग पाता। अपनी मशीन पर लिटाने के बाद मैं लोगों को उनके पूर्वजन्मों तक में ले जाता हूं और उन बीमारियों तक का पता लगा लेता हूं जो कई जन्मों से मरीज का पीछा कर रही होती हैं।"

"मुझे यहां से जाना है।"
"ये लोग तुम्हें नहीं जाने देंगे।"
"यह हकीकत उन्हें स्वीकार करनी ही होगी कि अब मैं उनका आनंद नहीं बल्कि काले खां हूं।"

"कम से कम तुम्हारे समझाने से वे इस हकीकत को समझेंगे नहीं बल्कि यही समझते रहेंगे कि यह सारा नाटक तुम अराधना से पीछा छुड़ाने के लिए कर रहे हो।"

"तो मैं क्या करूं?"
"अब जो करना है, तुम्हें नहीं...मुझे करना है।"
"आपको?"
"मैं उन्हें यकीन दिलाऊंगा कि तुम आनंद नहीं काले खां हो।"

एकाएक काले खां का पुलिस इंस्पेक्टर वाला दिमाग सक्रिय हो गया। उसने शक भरी नजरों से कजारिया को घूरते हुए सवाल किया–"आप ऐसा क्यों करेंगे?"

"क्योंकि तुम मेरे लिए शोध की वस्तु हो।"
"शोध की वस्तु?"

"अपने एक्सपीरिएंस के लिए मैं ये देखना चाहता हूं कि तुम जैसा चमत्कारी मानव कहां जाकर किस तरह क्या-क्या करता है। इसके लिए तुम्हें खुली हवा में छोड़ना जरूरी है जबकि ये लोग तुम्हें इस बंगले में कैद करके रख देंगे।"

एक बार फिर काले खां की पलकें सुकड़ गई थीं–"क्या आप यह कहना चाहते हैं कि आप यहां से निकलने में मेरी मदद करेंगे?"

"वेशक।"
"कैसे?"
"मैं डाक्टर ही नहीं, अनिल कश्यप का दोस्त भी हूं..

"कौन अनिल कश्यप?"
"अराधना, संजीव और सुनील के पिता।"
"ओह!"

"वे एक डाक्टर के नाते भी और दोस्त के नाते भी मेरी बातों पर विश्वास करेंगे। मैं उन्हें विश्वास दिला दूंगा कि इस वक्त तुम आनंद नहीं वल्कि काले खां हो और अपने आनंद को वापस पाने के लिए उन्हें धैर्य और समझदारी से काम लेना होगा। मैं उनके दिलों में यह डर भी वैठा सकता हूं कि अगर उन्होंने समझदारी से काम नहीं लिया तो अपने आनंद को हमेशा के लिए खो सकते हैं मगर इस काम में तुम्हें मेरी मदद करनी होगी।"

"मैं किस तरह मदद कर सकता हूं?"

"मैं बाहर जाऊंगा। उन्हें समझाने की कोशिश करूंगा। तव तक तुम खामोशी के साथ इसी कमरे में रहोगे। कोई शोर शरावा या बखेड़ा करने की कोशिश नहीं करोगे।"

काले खां ने उसे ऐसे अंदाज में देखा जैसे जानने की कोशिश कर रहा हो कि वह सच बोल रहा है या कोई चाल चल रहा है। फिर, उसकी नजर कमरे की खुली हुई खिड़की पर पड़ी और बोला–"यदि आप मुझे यहां से निकालने का वादा कर रहे हैं तो मुझे कोई बखेड़ा करने की क्या जरूरत है!"

डाक्टर कजारिया बोला–"ओके। मैं उन्हें समझाने जा रहा हूं। तब तक तुम आराम से इस कमरे में रहो।"

काले खां कुछ नहीं बोला।

कजारिया जैसे ही कमरे से बाहर गया और काले खां ने बाहर की तरफ से दरवाजे का डंडाला बंद होने की आवाज सुनी, उसके मुंह से एक ही शब्द निकला–"गधा।"

वह तेजी से खिड़की की तरफ लपका और यह देखते ही झूम उठा कि लॉन की तरफ वाली जमीन खिड़की की चौखट से केवल पांच फुट नीचे थी अर्थात् वह आसानी से वहां कूद सकता था।

फरारी के अंदर बहुत देर तक सन्नाटा छाया रहा क्योंकि न वह रहस्यमय शख्स कुछ बोला था, न अंगद...और सुकन्या की आत्मा की आवाज तो कोई सुन ही नहीं सकता था।

सभी कांच चढ़े हुए थे। एसी ऑन था। गाड़ी में जो बदबू थी, अंगद का जेहन उसका अभ्यस्त हो गया था।

गाड़ी में छाए तनावपूर्ण सन्नाटे से घबराकर उसने बहुत हिम्मत करके बातों का सिलसिला शुरु करने की मंशा से कहा–"क्या मैं आपका नाम जान सकता हूं?"

"अभिजीत।" जैसे पुनः टीन के पत्ते को पत्थर पर घिसा गया।
आत्मा तुरंत चीख पड़ी थी–'ये झूठ बोल रहा है अंगद।'
जबकि अंगद के हलक से चीख-सी निकली–"अ-अभिजीत!"
"क्या हुआ?" उसने पूछा।

"क-कुछ नहीं...कुछ नहीं।" हड़वड़ाकर अंगद ने ऐसा कहा जरूर मगर हकीकत ये है कि उसने अपनी रीढ़ की हड्डी में सिहरन सी दौड़ती महसूस की थी क्योंकि पलक झपकते ही कपाली के पति का नाम याद आ गया था। मगर फिर जल्दी ही यह सोचकर खुद को समझाया कि एक नाम के दो आदमी भी तो हो सकते हैं।

उसने पूछा–"क्या मेरे नाम में कोई खराबी है?"

"नहीं-नहीं। कैसी बात कर रहे हैं आप?"
"तुम्हारा नाम?"
"अंगद।"
"विले पार्ले पहुंचने की जल्दी क्यों है?"
"मेरी दस वर्ष की बेटी बहुत बीमार है।"
"क्या हुआ है उसे?"

अंगद जरा भी नहीं गड़बड़ाया क्योंकि इस सवाल का जवाब वह पहले ही सोच चुका था। बोला—"बहुत तेज बुखार है।"

"बीवी का फोन आया होगा और उसने रोते हुए फौरन घर पहुंचने के लिए कहा होगा!"

"हां।" अंगद ने झूठ बोला।

"बेटा तो मेरा भी बीमार है और इत्तफाक से उसकी उम्र भी दस ही वर्ष है। दरअसल मैं विजनेस मीटिंग के लिए महाबलेश्वर गया था। पत्नी का फोन पहुंचा कि बेटे की तबियत ज्यादा खराब हो गई है। कहने लगी सब कुछ छोड़ छाड़कर जल्दी से आ जाओ। वह रो रही थी। इसीलिए गाड़ी तेज चला रहा था।"

'झूठ है। ये जो कह रहा है वो सरासर झूठ है अंगद, तुम इसकी किसी भी बात पर यकीन मत करो।' आत्मा ने कहा, मगर—

उससे अंजान अंगद ने पूछा—"आपके बेटे को क्या हुआ?"
"कहता है कि उसके सिर पर छिपकली सवार है।"

"छ-छिपकली सवार है!" इन शब्दों के साथ अंगद इतनी बुरी तरह चौंका कि अगर यह लिखा जाए कि वह सीट से उछल पड़ा तो गलत न होगा। पलक झपकते ही न केवल उसके चेहरे पर आतंक के साए मंडराने लगे थे बल्कि गाड़ी का टेंपरेचर बीस होने के बावजूद जिस्म पसीने से तर-ब-तर हो गया। हकबकाई-सी अवस्था में वह अभिजीत की तरफ देखता रह गया था।

'मैं अंगद को अपनी आवाज क्यों नहीं सुना सकती!' बेबसी से तड़पती आत्मा ने अपने अदृश्य हाथ का जोरदार घूसा गाड़ी की छत पर मारा था—'मैं यहां अपनी मौजूदगी का एहसास उसे क्यों नहीं करा सकती! कुछ करो दुर्गा माता। मेरे भैया की मदद करो।'

"क्या हुआ?" अभिजीत ने अपनी नजरें सड़क पर गड़ाए रखे पूछा था—"तुम इतनी बुरी तरह क्यों चौंके?"

"क...कुछ नहीं।" अंगद खुद को नियंत्रित करने की भरपूर चेष्टा के साथ बोला—"ब...बड़ी अजीब बीमारी के बारे में बता रहे हैं आप! किसी के सिर पर छिपकली कैसे सवार हो सकती है?"

"मेरा कहना भी यही है लेकिन अंकुर ऐसा ही कहता है।"
"अ-अंकुर?" अंगद एक बार फिर चौंका।
अभिजीत ने कहा—"मेरा बेटा।"

'उफ्फ!' आत्मा के अदृश्य चेहरे पर हर तरफ बेबसी ही बेबसी नजर आ रही थी। फिर वह यह सोचकर शांत बैठ गई कि उसके कुछ भी करने से कुछ नहीं होगा जबकि—

अंगद की आंखों के सामने धनपत के बेटे का चेहरा नाच रहा था—उसका चेहरा जिसे सबसे पहले उसने 'एक थी डायन' के सेट पर शूटिंग में हिस्सा लेते देखा था और फिर सपने में, कपाली द्वारा उसकी बलि देखी थी। एक बार फिर वह

संभलकर बोला–"तो आपके बेटे का नाम अंकुर है!"

"शालू ने रखा है, उसे यही नाम पसंद था।"

"श-शालू!" अंगद के छक्के छूट गए। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि ये क्या हो रहा है? ये शख्स सारे के सारे वे ही नाम क्यों ले रहा है जो पहले भी उसकी जिंदगी में आ चुके हैं। क्या ये संयोग है? क्या इतना बड़ा संयोग हो सकता है? अंगद किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सका था कि अभिजीत की आवाज कानों में पड़ी।

"कैसे आदमी हो यार तुम! बात-बात पर चौंकने की बीमारी तो नहीं है तुम्हें!" वह कहता चला गया–"पहले मेरा नाम सुनकर चौंके। बीमारी के बारे में सुनकर चौंके। फिर अंकुर का नाम सुनकर चौंके और अब मेरी पत्नी का नाम सुनकर तुम्हारे चेहरे पर बारह बज गए हैं। चक्कर क्या है ये?"

"क-कुछ नहीं...कुछ नहीं।" काफी कोशिश के बावजूद अंगद खुद को नियंत्रित नहीं कर पा रहा था–"द-दरअसल मैं अभी तक यही सोच रहा हूं कि कोई बच्चा यह कैसे कह सकता है कि उसके सिर पर छिपकली सवार है।"

"यह सोच-सोचकर तो मेरा और शालू का ही नहीं उन डाक्टर्स का भी दिमाग खराब हुआ जा रहा है जिन्हें उसे दिखाया है। किसी की समझ में रोग नहीं आ रहा। सबका यही कहना है कि उसे भ्रम हो गया है जबकि शालू का कहना है कि इतना छोटा बच्चा झूठ नहीं बोल रहा हो सकता।"

"आपने उसे किस डाक्टर को दिखाया है?"
"कस्बे में जितने भी डाक्टर हैं...सबको दिखा चुके हैं।"
"कस्बे में?"

"इसी रास्ते में हाइवे से हटकर 'पंजर' नाम का एक छोटा सा कस्बा है। बड़ी शांत और खूबसूरत जगह है। मुंबई की भीड़भाड़ से बचने के लिए हम वहीं रहते हैं।"

"इसका मतलब आप वहां जाएंगे?"
"जाहिर है।"

"तो फिर आपने मुझे लिफ्ट क्यों दी? मैंने तो आपसे कहा था कि मुझे मुंबई जाना है।"

"मुझे भी मुंबई ही जाना है भाई।"
"अभी तो आपने कहा..

"फोन पर मेरे और शालू के बीच यही तय हुआ है कि हम रात ही में अंकुर को मुंबई ले जाकर डाक्टर को दिखाएंगे।"

"यानी पहले आप अपने घर जाएंगे। वहां से अंकुर को लेकर मुंबई के लिए निकलेंगे!"

"इसके अलावा और क्या हो सकता है!"
"इसमें तो टाइम लगेगा जबकि मुझे जल्दी है।"

"घबराओ नहीं यार।" वह बोला–"हमें खुद ही जल्दी होगी। अंकुर को जल्दी से जल्दी डाक्टर के पास जो पहुंचाना है। जितना टाइम कस्बे से उसे लेने में लगेगा, उसे रास्ते में कवर कर लूंगा।"

अंगद को बोलने के लिए कुछ सूझ न रहा था।

"फिर भी अगर कहो तो मैं तुम्हें यहीं...हाइवे पर छोड़ देता हूं। किसी और से लिफ्ट लेकर मुंबई पहुंच जाना क्योंकि मेरी मजबूरी है, घर तो जाना ही होगा।"

'बिल्कल ठीक।' आत्मा कह उठी–'यही ठीक रहेगा अंगद। तुम यहीं उतर जाओ, किसी और गाड़ी से लिफ्ट ले लो।'

जवकि–

"नहीं, उसकी जरूरत नहीं है।" अंगद के दिल में छिपकली ग्रस्त अंकुर से मिलने की इच्छा ने वड़ी प्रवलता से सिर उठाया था इसलिए बोला–"क्या मैं जान सकता हूं कि अंकुर कितने समय से अपने सिर पर छिपकली सवार होने की शिकायत कर रहा है?"

"आज पांचवां दिन है।"
"ये सिलसिला कैसे शुरु हुआ?"

"मंडे वाले दिन, भरी दोपहरी में वह खेलने के लिए घर से वाहर निकल गया था। फिर, करीब ढाई बजे कस्वे के तीन-चार लोग उसे वेहोश अवस्था में उठाकर लाए।"

"वह वेहोश कैसे हो गया था?"

"घबराई हुई शालू ने भी यही पूछा था। कस्वे के लोगों ने बताया कि वह उन्हें इमली के पेड़ के नीचे पड़ा मिला था।"

"इमली के पेड़ के नीचे?"

"कस्वे के लोगों ने इमली के उस पेड़ के बारे में जो बताया, उसे सुनकर तो शालू के होश ही उड़ गए।"

"क्या बताया?"

"यह कि चिलचिलाती दोपहर में अंकुर को उस पेड़ के पास नहीं जाना चाहिए था क्योंकि उस पर कपाली रहती है।"

"क-कपाली!" अंगद के सारे शरीर में झुरझुरी-सी दौड़ गई। जिस्म एक बार फिर पसीने से नहा गया था। चेहरे पर हर तरफ आतंक ही आतंक नजर आने लगा।

अभिजीत ने पूछा–"क्या तुमने भी उसका नाम सुना है?"

"न-नहीं तो।" न चाहते हुए भी अंगद बौखला गया था–"मैंने तो यह नाम कभी नहीं सुना।"

"तुम्हारे रिएक्शन से तो ऐसा ही लगा।"
"ग-गलत लगा।"
"कपाली एक डायन है।"
"ड-डायन?" अंगद की जुबान लड़खड़ा गई।

"ऐसा मैं नहीं, कस्वे के लोग कहते हैं।" अभिजीत कहता चला गया–"उन्होंने शालू से यही सब कहा। यह कि–पीपल के उस पेड़ पर कपाली रहती है। वह दो टाइम इमली के उस पेड़ से उतरकर नीचे आती है। एक–भरी दोपहर में, तब जवकि आसपास कोई नहीं होता। दूसरे–रात के बारह बजे। इन दो टाइमों पर इमली के उस पेड़ के आसपास किसी को नहीं जाना चाहिए।"

"कोई चला जाए तो क्या होता है?"

"वैसा ही कुछ जैसा अंकुर को हो गया है।"

"यानी बच्चा यह कहने लगता है कि उसके सिर पर छिपकली सवार हो गई है!"

"बच्चा ही नहीं, जवान भी, बूढ़ा भी, औरत भी, मर्द भी। कस्बे के लोगों का कहना है कि ऐसा पहले भी कई लोगों को हो चुका है। जरूरी नहीं कि सिर पर छिपकली ही सवार हो। कुछ भी उल्टा-सीधा हो सकता है। आदमी ऊल-जुलूल बोलने लगता है। ऊट-पटांग हरकतें करने लगता है। सिर पर छिपकली सवार होने की बात तो अंकुर के मुंह से पहली बार ही सामने आई है। उससे पहले एक औरत ने यह कहा था कि उसके जिस्म में सांप घुस गया है।"

"ओह!"

"उनके मुताबिक किसी को ऊल-जुलूल महसूस होना या ऊट पटांग बातें करना कोई बीमारी नहीं है बल्कि उसका मतलब ये होता है कि व्यक्ति के दिलो दिमाग पर कपाली सवार हो गई है।"

"उस हालत में कस्बे के लोग क्या करते हैं?"

"कस्बे से करीब पंद्रह किलोमीटर दूर जंगल में झोंपड़ी डालकर एक ओझा रहता है। वे मरीज को उसके पास ले जाते हैं। वह झाड़ फूंक करता है और मरीज ठीक हो जाता है।"

"क्या तुम अंकुर को उसके पास...

"नानसेंस!" अभिजीत उसकी बात पूरी होने से पहले ही कह उठा—"कस्बे के लोग अनपढ़ और गंवार हैं। हम पढ़े-लिखे लोग भला उनकी तरह अंधविश्वासी कैसे हो सकते हैं! मेरे ख्याल से कपाली-बपाली की वह कहानी उन्हीं जैसे कम बुद्धि वाले लोगों द्वारा गढ़ी गई क़ाल्पनिक कहानी है। सीधी-सी बात है। बच्चे को वहम हो गया है और उसका इलाज कोई डाक्टर ही कर सकता है।"

अंगद को महकार द्वारा कहा गया हर शब्द याद आने लगा। यह कि उसने सुकन्या को मुंबई के बड़े से बड़े डाक्टर को दिखाया था। कोई कुछ न कर सका। जी चाहा—यह बात उसे बताए।

अभिजीत कह रहा था—"हालांकि शालू ने अंकुर को ओझा के पास ले जाने की बात कही थी मगर मैंने डांट दिया। कहा कि उसे गंवार लोगों की बातों में नहीं आना चाहिए।"

अंगद की इच्छा उसे चंडिकामृत के बारे में बताने की हुई मगर लगा—अभिजीत उसे भी जाहिल और गंवार ही समझेगा अतः इस विचार को जेहन से छिटकता हुआ बोला—"क्या अंकुर ने बताया कि उसके सिर पर छिपकली कैसे सवार हुई?"

"सबसे पहले शालू ने पूछा था, फिर मैंने भी कई बार पूछा और अंकुर ने बताने की कोशिश भी की मगर...

अभिजीत की आवाज भर्रा गई थी। ऐसा लगा था जैसे चाह कर भी आगे के शब्द मुंह से न निकाल पाया हो। रोना आ रहा हो उसे और खुद को रोने से रोकने की कोशिश कर रहा हो। अंगद ने उसकी तरफ देखा परंतु यह देखकर सन्न रह गया कि चेहरे पर ऐसा कोई भाव न था जैसे वह खुद को रोने से रोकने की कोशिश कर रहा हो।

सफेद पेंट से पुता चेहरा बिल्कुल सपाट नजर आ रहा था।

काले चश्मे में छुपी आंखें सड़क पर स्थिर थीं। उसकी आवाज और चेहरे के भावों में कोई तालमेल न पाकर अंगद को अजीब-सा लगा था। वह केवल इतना ही कह सका—"मगर?"

"शालू के पूछने पर जब पहली बार उसने बताने की कोशिश की तो दर्द से तड़पने लगा। अपने सिर की तरफ देखता हुआ बड़े ही विचित्र स्वर में कहने लगा कि–'नहीं-नहीं आंटी, मैं कुछ नहीं बता रहा। प्लीज, मेरे सिर को खुरचना बंद करो।' उसकी वह हालत और तड़पन देखकर शालू घबरा गई। जबकि वह शालू से कहने लगा–'प्लीज मम्मी, उसके बारे में मत पूछो। वह बताने से मना करती है। अपने नुकीले पंजों से मेरे सिर को खुरचने लगती है। कहने लगती है कि अगर मैंने इस बारे में किसी को बताया तो वह मेरे सिर को खुरचकर कपाल में घुस जाएगी और मुझे मार डालेगी'। मेरे पूछने पर भी यही सब हुआ। अंकुर जैसे ही उसके बारे में बताने की कोशिश करता है, दर्द से तड़पने लगता है। छटपटाने लगता है। ऐसी हालत हो जाती है उसकी कि देखी नहीं जाती इसलिए...अब तो हमने उससे पूछना भी बंद कर दिया है।"

अंगद के जेहन में जहां यह बात आई कि अंकुर के साथ भी ठीक वही हो रहा है जो सुकन्या दीदी के साथ हुआ था वहीं, इस बात ने उसे हैरान कर दिया कि जो वेदना अभिजीत की आवाज और उसके मुंह से निकलने वाले लफ्जों से टपक रही थी, उसका उसके चेहरे पर दूर-दूर तक अतापता नहीं था। चेहरा उस वक्त भी पत्थर की तरह सपाट नजर आ रहा था। यह फर्क किसी भी तरह उसकी समझ में नहीं आ रहा था। फिर भी सवाल किया–"जब वह किसी को छिपकली के बारे में नहीं बता रहा होता तब क्या होता है?"

"बिल्कुल शांत रहता है। कहता है–'छिपकली उसके सिर पर सो रही है। किसी किस्म का नुकसान नहीं पहुंचा रही।' बीच-बीच में आंखों से सिर की तरफ देखकर उससे बातें करने लगता है। उस वक्त हम पति-पत्नि बहुत डर जाते हैं।"

अंगद ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि गाड़ी को तेज झटका लगा। उसने चौंककर सड़क की तरफ देखा तो पाया–गाड़ी हाइवे छोड़कर पतली सड़क पर पहुंच चुकी थी। झटका उसी के कारण लगा था। मुंह से निकला–"क्या ये कस्बे का रास्ता है?"

"हां।" उसने संक्षिप्त जवाब दिया।

'ये खेल खेल रहा है अंगद।' बहुत देर से शांत बैठी सुकन्या की आत्मा ने अपने दोनों हाथों से अंगद के जिस्म को झंझोड़ते हुए कहा था–'तुम बहुत बड़ी मुसीबत में फंसने वाले हो...कुछ करो।'

मगर अंगद चुप बैठा रहा।

डाक्टर कजारिया के लॉबी में कदम रखते ही अनिल कश्यप, राजीव, सुनील, अराधना और उसकी मां सोफों से खड़े हो गए। अनिल कश्यप ने पूछा–"क्या हुआ कजारिया, कुछ पता लगा कि वह नाटक कर रहा है या वाकई डबल पर्सनेल्टी का चक्कर है?"

"न वह नाटक कर रहा है कश्यप और न ही डबल पर्सनेल्टी का चक्कर है।" कजारिया बोला–"यह तो एक तीसरा ही और बेहद हैरतअंगेज चक्कर निकला।"

"कैसा चक्कर?"

"असल में वह एक एक्सीडेंट में मारा जा चुका पुलिस इंस्पेक्टर है।" कजारिया कहता चला गया–"अगर मैं अपने डाक्टरी अनुभव के आधार पर कहूं तो वो ये है कि उस इंस्पेक्टर के दिलो दिमाग पर किसी केस को हल करने की धुन इस हद तक सवार है कि मरने के बाद भी उसके दिलो दिमाग से निकल नहीं पाई। इसीलिए उसकी आत्मा अंतरिक्ष में विलीन नहीं हुई बल्कि धरती पर ही भटकती रही। ऐसे किस्से तूने भी सुने होंगे कि मरते वक्त अगर किसी के दिल में कोई इच्छा रह जाए तो उसकी आत्मा को मुक्ति नहीं मिलती बल्कि वह धरती पर ही भटकती रहती है। मेरे ख्याल से काले खां के साथ भी वैसा ही हुआ। यह बात उसने मुझे खुद बताई है कि भटकती हुई उसकी आत्मा आनंद और अराधना के बेडरूम में पहुंच गई और फिर आनंद के जिस्म में दाखिल हो गई।"

"क-क्या ऐसा हो सकता है?"

"ऐसा हो चुका है।" कजारिया ने अपना एक-एक शब्द जमाते हुए कहा–"उससे हुई बातों के आधार पर मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि अब वह आनंद नहीं बल्कि इंस्पेक्टर काले खां है।"

अनिल कश्यप बोला–"जो हैरतअंगेज बात तू कह रहा है, दिमाग उसे स्वीकार नहीं कर रहा, पर स्वीकार तो करनी पड़ेगी क्योंकि तू कह रहा है। तू...जो ऐसी घटनाओं का माहिर डाक्टर है।"

"पर अंकल।" अराधना रोने को तैयार थी–"मेरा आनंद कहां गया? क्या वो कभी अपने शरीर में नहीं लौटेगा?"

"लौटेगा क्यों नहीं बेटी, जरूर लौटेगा। पूरा विश्वास रखो।" डाक्टर कजारिया ने उसे ढांढ़स बंधाया–"फिलहाल आनंद के जिस्म में काले खां की आत्मा घुसी हुई है। जब तक वह नहीं निकलेगी तब तक आनंद अपने जिस्म में वापस नहीं आ सकेगा और मैं उसे आनंद के जिस्म से निकालने तथा आनंद को उसके अपने जिस्म में वापस लाने की पूरी कोशिश करुंगा।"

असमंजस में फंसी अराधना चुप रह गई।

"आओ, उससे मिलते हैं।" कहने के बाद कजारिया राजीव और सुनील की तरफ देखता हुआ बोला–"मेरे ख्याल से अब तुम समझ गए होगे कि उसके साथ किसी किस्म की मारपीट करने से कोई फायदा होने वाला नहीं है!"

दोनों खामोश रहे।

उसके बाद, वे सभी उस क़मरे में पहुंचे जिसमें काले खां को बंद किया था लेकिन वह वहां नहीं था।

वे सभी हक्के-वक्के रह गए।

गाड़ी हिचकोले खाती आगे बढ़ रही थी क्योंकि उस कम चौड़ी सड़क पर जगह-जगह गड्ढे थे और फिर ज्यों-ज्यों वे आगे बढ़ते गए, सड़क के दोनों तरफ फैला जंगल घना होता गया। जंगली कुत्तों के भौंकने और सियारों के रोने की आवाजें आने लगीं। बीच-बीच में कई बार हाथी की चिंग्घाड़ भी सुनाई दी थी।

वातावरण डरावना-सा होता जा रहा था।

जंगल इतना ज्यादा घना होता चला गया कि अंगद के दिल में दहशत-सी बैठती चली गई और फिर एक ऐसी घटना घटी जिसने उसके जिस्म के जर्रे-जर्रे को कंपकंपाकर रख दिया था।

हुआ यह कि–एक मोड़ के बाद अचानक ही सड़क के बीचों बीच खड़ा एक जंगली सूअर नजर आया। वह किसी शेर की तरह लंबा और ऊंचा था। हैडलाइट्स में उसकी आंखें बड़े-बड़े बल्वों की मानिंद चमक रही थीं।

गाड़ी की तरफ देखकर उसने अपना भयंकर जबड़ा फाड़ा और इतनी जोर से दहाड़ा कि सारा जंगल दहल उठा।

गाड़ी लगातार उसकी तरफ बढ़ रही थी।

"रोको! रोको!" अंगद चिल्लाया और...रफ्तार भी इतनी ज्यादा नहीं थी कि अभिजीत रोक नहीं सकता था मगर उसने गाड़ी रोकने की कोई कोशिश नहीं की बल्कि रफ्तार बढ़ा दी थी।

सूअर दूसरी दहाड़ के साथ गाड़ी पर झपटा और...बहुत जोर से दोनों की टक्कर हुई। गाड़ी को तेज झटका लगा था जबकि सूअर का भारी-भरकम जिस्म हवा में उछलकर सड़क पर जा गिरा।

अगले पल गाड़ी उसे कुचलती हुई आगे निकल गई थी।

दहशतजदा अंगद ने सीट पर बैठे ही बैठे तेजी से पलटकर पीछे देखा। गाड़ी की पिछली लाइट की रोशनी में सड़क पर पड़ा लहूलुहान सूअर बुरी तरह तड़पता नजर आया। वह मरने से पहले की तड़प थी और फिर वह दृश्य गाड़ी दूर निकल आने के कारण अंधेरे में डूबता चला गया। गर्दन सीधी करते हुए अंगद के मुंह से खौफ में डूबी आवाज निकली—"उसे बचाया जा सकता था।"

"उस अवस्था में हम नहीं बचते।" अभिजीत ने कहा।

"क्यों?"

"क्योंकि ये जंगल है—उनका इलाका। अगर हम गाड़ी रोक लेते तो कुछ देर बाद दूसरे जानवर भी आ सकते थे। वे हमें इस कदर घेर लेते कि आगे बढ़ने का रास्ता नहीं मिलता।"

"बड़े वेरहम हो।" अंगद की आवाज कांप रही थी।

"अपनी जान बचाने के लिए बेरहम बनना पड़ता है।" उसकी आवाज में ऐसा हिंसक भाव था कि अंगद थरथराकर रह गया था—"रात के ही नहीं, दिन के वक्त भी इस सड़क पर गाड़ी रोकने का मतलब है—अपनी मौत को आमंत्रित करना।"

अंगद को अचानक उस रहस्यमय शख्स से डर लगने लगा।

कारण शायद यह था कि सफेद पेंट से पुते चेहरे पर अब भी कोई भाव नहीं था। अंगद सोचने लगा—कैसा आदमी है ये, जिसके चेहरे पर कोई भाव ही नहीं आता!

करीब पांच मिनट बाद तब, जबकि अंगद किसी हद तक खुद को नियंत्रित कर चुका तो बोला—"और कितनी दूर है?"

"क्या?"
"आपका घर।"

"बस पहुंच ही गए समझो। सामने नजर आने वाले मोड़ के बाद बस एक मोड़ और...तुम मेरे घर के सामने ही होगे।"

मगर पहला मोड़ पार करते ही एक नई मुसीबत नजर आई।

गंदा कुर्ता और धोती पहने वह एक बूढ़ा आदमी था जो सड़क के बीचों बीच खड़ा अपने दोनों हाथ उठाए जाने क्या चिल्ला रहा था! उसके सिर और दाढ़ी के काले-सफेद मिक्स बाल गंदे और लंबे थे। पैरों में कोई जूता-चप्पल नहीं।

"अरे...अरे रोको।" अंगद चीखा—"वो मर जाएगा।"

अभिजीत ने इस बार वैसी हरकत नहीं की जैसी सूअर के साथ की थी बल्कि ब्रेक पेडल पर लगभग खड़ा हो गया। ऐसा न करता तो निश्चय ही बूढ़े का हाल भी सूअर जैसा हो जाता क्योंकि सड़क पर घिसटती हुई गाड़ी रुकते-रुकते भी उसके जिस्म से टच हो गई थी मगर बूढ़े ने इस बात की जरा भी परवाह नहीं की। उसके चेहरे पर डर या खौफ का कोई भाव नहीं उभरा था। दौड़ता हुआ उस विंडो के करीब पहुंचा जिसके पार अंगद बैठा था और उसके कांच को पीटता हुआ जोर-जोर से चीखने लगा—"खोलो...खोलो इसे।"

हड़बड़ाए हुए अंगद ने कांच नीचे सरकाया।

बूढ़े ने चिल्लाकर पूछा था–"क्या तुमने मेरे पोते को देखा है?"
"प-पोते को?" अंगद के मुंह से स्वतः ये शब्द निकले।

"हां। पता नहीं मेरा 'कबीर' रात के इस वक्त कहां चला गया! मैंने उससे मना कर रखा था कि रात को कभी कहीं न जाए। जरूर उसे किसी भूत-प्रेत ने उठा लिया है। हे भगवान! मेरे जिगर का टुकड़ा कहीं किसी जंगली जानवर के जबड़े में न फंस जाए।"

अभिजीत गुर्राया–"ये पागल है अंगद। कांच चढ़ाओ।"
"पर ये कह रहा है कि..
"मैंने कहा कांच चढ़ाओ।"

"उसे ढूंढने में मेरी मदद करो बाबू।" बूढ़ा गिड़गिड़ाया–"मुझे पूरा विश्वास है कि उसे कुछ नहीं हुआ होगा। वो मिल जाएगा। हम उसे गाड़ी में बैठकर ढूंढेंगे तो दूर-दूर तक ढूंढ सकते...

बूढ़े की आवाज डूबती चली गई क्योंकि अभिजीत ने न केवल अंगद की खिड़की का कांच अपनी तरफ से चढ़ा दिया था बल्कि गाड़ी आगे भी बढ़ा दी थी। जाने क्या-क्या चिल्लाता हुआ बूढ़ा गाड़ी के पीछे दौड़ा चला आ रहा था।

अंगद की हालत बहुत विचित्र थी। बौखलाई हुई-सी अवस्था में उसने अभिजीत से कहा था–"रोको तो सही, सुनो तो सही उसकी बात। बेचारे का पोता खो गया है शायद।"

"उसका पोता कई साल से खोया हुआ है।"
"क्या मतलब?"
"तभी से पागल हो गया है वह। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं। इतना ही काफी है कि मैंने उसे कुचल नहीं दिया।"

सकपकाया-सा अंगद चुप रह गया जबकि सुकन्या की आत्मा पर जाने कैसा जुनून सवार हुआ था कि चीखती चली गई–'इसकी बात पर यकीन मत करो अंगद। सरासर झूठ बोल रहा है ये। उसके पोते को इसी ने किडनेप किया है।' मगर, जब उसने अंगद पर अपनी बात का जरा भी प्रभाव न देखा तो पागलों की तरह दोनों हाथों से ड्राइविंग कर रहे अभिजीत के सिर पर घूंसे बरसाती हुई चीखी–'मेरे भैया से झूठ बोलता है! उसे अपनी खतरनाक साजिश में फंसाता है। मैं तुझे मार डालूंगी।' परंतु...जब उसने देखा–उसके किए कुछ भी नहीं हो रहा है तो हताश हो गई। इस बेवसी के कारण वह बुरी तरह रोने लगी कि अंगद की कोई मदद नहीं कर पा रही है।

लेकिन दोनों में किसी को भी उसके रोने का पता न लगा।

अंगद बुत् बना बैठा था और अभिजीत ने गाड़ी की गति बढ़ा दी थी। बूढ़ा काफी पीछे छूट गया और अब तो फरारी सड़क का एक और मोड़ भी मुड़ चुकी थी।

वह मोड़ पार करते ही हेडलाइट एक ऐसे मकान पर पड़ी जिसे देखते ही अंगद के जिस्म में झुरझुरी-सी दौड़ गई थी।

जंगल के बीचों बीच अंधेरे में किसी दैत्य की मानिंद खड़ा वह दो मंजिला मकान था। उसे चारों तरफ से घने पेड़ों ने घेर रखा था। ऊपरी मंजिल की एक खिड़की के धुंधले पड़े कांच के पार बहुत ही मरियल-सी पीली रोशनी नजर आ रही थी।

बाकी सारा मकान अंधेरे में डूबा हुआ था।

हालांकि सड़क उससे आगे भी थी मगर अभिजीत ने गाड़ी वहीं रोक दी। इंजन बंद किया और...हेडलाइट ऑफ करते ही चारों तरफ घुप्प अंधेरा छा गया। जाने क्यों, उस वक्त अंगद के जेहन में ये विचार बड़ी शिद्दत से कौंधा था कि इस

शख्स के साथ यहां आकर उसने अपने जीवन की बहुत बड़ी भूल की है।

खौफ के जर्म्स उसकी नस-नस में गर्दिश करने लगे थे।

"यहां बस यही एक मकान है।" अभिजीत ने ड्राइविंग डोर खोलकर बाहर निकलते हुए कहा था—"पंजर' नाम का कस्बा यहां से एक किलोमीटर दूर है।"

अंगद के कानों में बस उसकी आवाज पड़ी थी। अंधेरे के कारण अब वह उसे नजर नहीं आ रहा था। गाड़ी का दरवाजा खोलते वक्त उसने अपने हाथ को कांपते महसूस किया और जमीन पर पैर रखते वक्त टांगों में कंपन। फिर उसने खुद से कहा—'अंगद, अब हिम्मत से काम लेने के अलावा कोई चारा नहीं है।'

हिम्मत बांधे वह गाड़ी से बाहर आ गया। अभिजीत ने अपनी जेब से एक पेंसिल टार्च निकालकर ऑन कर ली थी।

रोशनी की उस छोटी-सी लकीर ने अंगद के हौसले को बहुत बल दिया। वह लपककर अभिजीत के नजदीक पहुंच गया था और यही क्षण था जब जेहन में खौफ के बारूद से भरा बम-सा फूटा।

ऐसा बम जिसकी चिंगारियां उसके जिस्म में दौड़ रहे रक्त की हर बूंद को खौफजदा कर गईं।

ऐसा इसलिए हुआ था क्योंकि अभिजीत के नजदीक पहुंचते ही वह बदबू एक बार फिर उसके नथुनों से घुसकर जेहन को जकड़ती चली गई थी जिसे उसे गाड़ी में मरे किसी चूहे की बदबू बताया था। यह महसूस करते ही अंगद की शिराओं में दौड़ता खून मानो जम गया था कि वह बदबू अभिजीत के जिस्म से उठ रही थी।

उस अभिजीत के जिस्म से जिसने मकान की तरफ बढ़ते हुए कहा था—"मेरे पीछे आ जाओ।"

उसके पीछे बढ़ना तो दूर, दहशत की ज्यादती के कारण अंगद हिल तक न सका था। ऐसा लग रहा था जैसे जमीन के हाथों ने उसके पैर जकड़ लिए हों जबकि जिधर अभिजीत गया था उस तरफ से सूखे पत्तों के चरमराने की आवाज आने लगी थी।

जाहिर था कि वे उसके कदमों तले कुचलकर चरमरा रहे थे।

थोड़ा आगे जाकर वह घूमा और फिर पलटकर पेंसिल टॉर्च की बारीक रोशनी अंगद के जिस्म पर डालता हुआ बोला—"वहीं खड़े क्यों रह गए मिस्टर अंगद? आओ न!"

"अ-आ तो रहा हूं।" टूटे-फूटे शब्दों के साथ जब अंगद ने कदम आगे बढ़ाए तो लगा—वह लड़खड़ाकर गिरने वाला है।

अभिजीत की आवाज सुनाई दी—"संभलकर।"

अंगद के मुंह से बोल न फूट सका क्योंकि हलक सूख चुका था। अभिजीत पुनः घूमा और मकान के दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

अंगद उसके पीछे बढ़ जरूर रहा था मगर अंदर से कोई हर पल चीखे जा रहा था कि—'ये क्या बेवकूफी कर रहा है अंगद! उसके पीछे मत जा। तू किसी बहुत बड़ी मुसीबत में फंसने जा रहा है। भाग जा...भाग जा यहां से।' मगर, उस वक्त अंगद भागता भी तो कहां? किस तरफ? हर तरफ खौफनाक जंगली जानवरों से भरा जंगल था। उसके पास अभिजीत के पीछे बढ़ते जाने के अलावा कोई विकल्प ही न था। अब उसके पैरों तले दबने वाले सूखे पत्ते भी चीखने-चिल्लाने लगे थे। भयावह वातावरण ने अंगद के जेहन को ही नहीं बल्कि मुकम्मल वजूद को अपनी गिरफ्त में ले लिया था।

वह जब भी रुकता, आगे बढ़ते हुए अभिजीत को जाने कैसे पता लग जाता कि वह पलटता और टॉर्च की प्रकाश किरण उसके जिस्म पर डालता हुआ कहता—"मैं समझ सकता हूं मिस्टर अंगद कि तुम्हें डर लग रहा है मगर डरने की कोई बात नहीं है। मैं हूं न!"

अंगद कैसे बताता कि वह उसी से डर रहा है!
वह कहता—"बेखौफ चले आओ।"
और...अंगद को उसकी तरफ बढ़ना पड़ता।

सूखे पत्तों से भरा करीब तीस फुट का रास्ता पार करने के बाद वे उजाड़ और भुतहा-से मकान के भारी-भरकम दरवाजे पर पहुंचे।

उस पर लोहे की एक मोटी सांकल लटक रही थी।

अभिजीत ने सांकल का निचला सिरा पकड़कर उसे किवाड़ पर मारते हुए बजाया तो बड़ी ही डरावनी आवाज दूर-दूर तक गूंज गई।

उस वक्त तक अंगद भी उसके करीब पहुंच चुका था जब उसने तीसरी बार सांकल बजाई।

अंदर से लकड़ी का मोटा डंडाला सरकने की आवाज आई।

अंगद बड़ी मुश्किल से अपने जिस्म की कंपकंपाहट को रोके हुए था और उस वक्त तो रोकने की लाख चेष्टाओं के बाद भी वह अपने हलक से निकलने वाली चीख को न रोक सका जब दरवाजा खोलने वाली औरत पर नजर पड़ी।

उसके हाथ में पीली रोशनी उगलती एक ऐसी लालटेन थी जिसकी चिमनी का पचास परसेंट हिस्सा काला पड़ चुका था।

उस औरत की आंखें सफेद थीं।

सफेद आंखों के बीच बस इतने छोटे दो काले बिंदू नजर आ रहे थे जैसे काले पेन से फुल स्टॉप लगा दिए गए हों।

अंगद उन्हीं आंखों को देखकर चीखा था।

काले खां इस वक्त स्काई कलर की घिसी हुई जींस और ऐसी सफेद टीशर्ट पहने हुए था जिस पर आगे और पीछे की तरफ लाल रंग से बहुत बड़े दिल के निशान बने हुए थे।

पैरों में सफेद रंग के पीटी-शू।

शायद लिखने की आवश्यकता नहीं है कि ये कपड़े आनंद के थे और काले खां द्वारा कमरे में मौजूद वार्डरोब से निकाले गए थे।

अनिल कश्यप के बंगले की चारदीवारी पार करके सड़क पर आने में उसे जरा भी मेहनत नहीं करनी पड़ी थी और...सड़क पर आते ही उसने जान लिया था कि वह जुहू के इलाके में था।

उसने ऑटो पकड़ा और सीधा धनपत के बंगले पर जा पहुंचा।

लोहे वाले गेट पर दरबान मौजूद था लेकिन वह किसी को भी बंगले के अंदर आने-जाने से न रोक रहा था क्योंकि बार-बार गाड़ियां अंदर-बाहर आ-जा रही थीं।

लोहे वाले गेट को पार करने पर देखा—ड्राइव-वे के दाएं-बाएं अनेक गाड़ियां पार्क हुई, हुई थीं। जो तेजी उसके जेहन में थी उसी तेजी के साथ आगे बढ़ता इमारत के मुख्यद्वार के नजदीक पहुंचा।

वहां इधर-उधर जत्थे बनाए अनेक स्त्री-पुरुष खड़े आपस में बातें कर रहे थे। माहौल शांत और गमगीन था।

काले खां समझ सकता था कि ये गमगीन माहौल अंकुर और धनपत की मृत्यु के कारण है लेकिन उसके दिमाग पर तो सरिता को सिटी हास्पिटल ले जाकर नंदिनी की शिनाख्त कराने का भूत सवार था इसलिए किसी की परवाह किए बगैर मेनगेट पार कर गया।

लॉबी में कदम रखते ही उसे ठिठक जाना पड़ा क्योंकि वहां कम से कम पच्चीस-तीस लोग बैठे हुए थे। सारा फर्नीचर लॉबी के कोनों में सिमेट दिया गया था। फर्श पर दरी और दरी के ऊपर सफेद चादरें बिछी हुई थीं। सब लोग उन्हीं पर बैठे थे।

घुटने मोड़े सरिता ठीक सामने बैठी थी।

उसके जिस्म पर सफेद साड़ी और ब्लाऊज था। साड़ी का पल्ला सिर पर ढका हुआ और आंखों पर था—काला चश्मा।

काले खां समझ सकता था कि ये चश्मा उसने अपने आंसुओं को छुपाने के लिए लगा रखा है। उसके गुलाबी चेहरे पर इस वक्त हर तरफ गम की लकीरें नजर आ रही थीं।

वह नजरें नीचे किए बैठी थी।

इतने लोगों की मौजूदगी के बावजूद माहौल में ऐसी शांति थी कि सुईं भी गिरे तो बम के धमाके जैसी आवाज हो।

उस तक पहुंचने के लिए काले खां को जमीन पर बैठे मातमपुर्सी करने आए लोगों के बीच से गुजरना जरूरी था और वहां के माहौल ने उसे एकाएक ही ऐसा करने की इजाजत न दी।

जेहन में यह बात भी कौंधी थी कि अगर सरिता से वह ये कहेगा कि वह काले खां है तो उसके द्वारा यकीन मानने का सवाल ही नहीं उठता। निश्चय ही वह उसे कोई पागल समझेगी।

तो फिर उसे कैसे अपने साथ सिटी हास्पिटल ले जाए?

इस प्रश्न ने उसे काफी देर तक अपने स्थान पर हक्का-बक्का सा खड़े रखा बल्कि अगर यह कहा जाए तो ज्यादा मुनासिब होगा कि वह बेचैन-सा नजर आने लगा था क्योंकि वह जल्दी से जल्दी उसे लेकर नंदिनी के पास पहुंचना चाहता था और हालात ऐसे थे नहीं।

फिर, दिमाग में एक तरकीब आई।

और फिर...जरा भी हिचकिचाहट दिखाए बिना जमीन पर बैठे लोगों के बीच से गुजरता हुआ सरिता के करीब पहुंचा।

सरिता ने चेहरा उठाकर उसकी तरफ देखा।

काले खां उसके कान पर झुकता हुआ बोला—"मुझे इंस्पेक्टर काले खां ने भेजा है।"

सरिता के चेहरे पर सवालिया निशान नजर आए।

काले खां ने पुनः फुसफसाते से लहजे में कहा—"मुझे एकांत में आपसे कुछ बातें करनी हैं।"

"मैं यहां से नहीं उठ सकती।" उसने उदास स्वर में कहा था।

"समझने की कोशिश कीजिए।" काले खां बोला–"इंस्पेक्टर साहब ने शालू को गिरफ्तार कर लिया है।"

वह चौंकी।

चेहरे पर गुस्से के भाव उभरे। वह समझ सकता था कि ये भाव शालू के लिए हैं। मुंह से केवल इतना ही निकला–"तो?"

"इंस्पेक्टर साहब आपसे उसकी शिनाख्त कराना चाहते हैं।"
"श-शिनाख्त?"

"बहुत चालू है वह। बार-बार कह रही है कि वह शालू नहीं है। जबकि इंस्पेक्टर साहब अच्छी तरह जानते हैं कि वही शालू है मगर, आप पढ़ी-लिखी हैं। कानून की पेचीदगियों को समझ सकती हैं। पुलिस बगैर गवाह के कुछ नहीं कर सकती। आप जब उसके सामने पहुंचेंगी और कहेंगी कि वही शालू है तो उसकी सारी चालाकियां धरी रह जाएंगी बल्कि...आपके सामने पड़ने पर वह खुद ही टूट जाएगी। उसके बाद उसके मुंह से यह कबूल कराना इंस्पेक्टर साहब का काम होगा कि अंकुर और धनपत की हत्या उसी ने की है।"

सरिता पुनः चौंकी–"उनकी भी!"

"हां। इंस्पेक्टर साहब के पास पूरे सबूत हैं कि अंकुर की ही नहीं, धनपत जी की हत्या भी शालू ने ही की है।"

"चलो। मैं चल रही हूं।" कहने के साथ वह उठ खड़ी हुई।
मातमपुर्सी करने आए लोगों में हलचल-सी मची।
सरिता ने हाथ जोड़े और कहा–"माफी चाहूंगी। मुझे जरूरी काम से पुलिस स्टेशन जाना पड़ रहा है।"
सबके चेहरों पर 'क्यों' उभरा था मगर बोला कोई कुछ नहीं।

अब सरिता लोगों के बीच से निकलती हुई काले खां के पीछे पीछे मेनगेट की तरफ बढ़ी। पोर्च और ड्राइव-वे के आसपास खड़े लोगों के जेहन में भी सरिता को देखकर यह सवाल उभरा था कि वह किसके साथ कहां जा रही है लेकिन पूछा किसी ने कुछ नहीं।

ड्राइवर जरूर लपकता हुआ गाड़ी के नजदीक पहुंच गया था।

गाड़ी का पिछला गेट खोलने के लिए हैंडिल पकड़ती हुई सरिता ने उससे पूछा था–"तुम कैसे आए हो?"

"परमीशन हो तो मैं अपनी बाइक यहीं छोड़कर, आप ही की गाड़ी की अगली सीट पर बैठ जाऊं?"

पिछला गेट खोलकर बैठती हुई सरिता ने उसे मूक परमीशन दी और वह लपककर ड्राइवर के बगल वाली सीट पर बैठ गया।

गाड़ी बैक होने के बाद सड़क पर पहुंची ही थी कि काले खां ने ड्राइवर से कहा–"सिटी हास्पिटल।"

पीछे बैठी सरिता ने टोका–"हास्पिटल या पुलिस स्टेशन?"

"हास्पिटल चलना है मैडम, क्योंकि एक छोटे से एक्सीडेंट के बाद शालू हल्की-सी जख्मी हो गई है।" काले खां ने प्रभावशाली स्वर में कहा था–"आपको उसकी शिनाख्त वहीं करनी है।"

सरिता खामोश हो गई।

काले खां को भी अब ज्यादा बोलने की जरूरत नहीं थी। वह अपने पहले मिशन में कामयाब हो गया था लेकिन उसी समय जेहन में यह विचार कौंधा–'क्या इस बार मैं कामयाब हो जाऊंगा?'

मैंने दो बार शालू का चित्र बनवाने की कोशिश की, दोनों बार हैरतअंगेज घटनाएं घट गईं। एक बार धनपत से और दूसरी बार अखिल से शिनाख्त करानी चाही, दोनों मारे गए। तीसरी बार तब जबकि इस इरादे से उसे लेकर सरिता के पास आ रहा था तो जीप का ऐसा एक्सीडेंट हुआ कि मैं ही मर गया।

क्या इस बार मैं सरिता को उसके सामने ले जा सकूंगा या फिर कोई अनहोनी घटना घट जाएगी?

यह सवाल काले खां के जेहन में बहुत तेजी से चकराने लगा था और अगर यह कहा जाए तब भी गलत न होगा कि यह सोचकर उसके दिल की धड़कनें बढ़ने लगी थीं कि कहीं फिर कुछ ऐसा न हो जाए जिसके बारे में उसने कल्पना तक न की हो।

जिसके साथ एक-दो नहीं, पूरी पांच घटनाएं घट चुकी हों उसके जेहन में ऐसी शंका उभरना स्वाभाविक था।

मगर सभी शंकाएं निर्मूल साबित हुईं। कहीं कुछ नहीं हुआ और गाड़ी सिटी हास्पिटल के गेट के सामने जा रुकी।

सरिता को साथ लिए वह फर्स्ट फ्लोर पर पहुंचा और उस वक्त दिल 'धाड़-धाड़' की आवाज पैदा करता पसलियों पर सिर पटकने लगा था जिस वक्त एक सौ पच्चीस की तरफ बढ़ा।

सोच रहा था–आखिर वह वक्त आ ही गया जब वह नंदिनी की शिनाख्त कराने वाला है।

रूम का दरवाजा खुला हुआ था।

पर्दा पड़ा था और काले खां एक झटके से पर्दा हटाकर अंदर दाखिल हुआ। नंदिनी बैड की पुश्त से पीठ टिकाए हुए थी।

काले खां को उत्तेजित अंदाज में अंदर दाखिल होते देखकर चौंकी। फिर उसने थोड़े नागवारगी वाले अंदाज में पूछा–"कौन हैं आप और ये किस तरह कमरे में घुसे चले आए हैं?"

काले खां के जवाब देने से पहले सरिता ने अंदर कदम रखा और वह नंदिनी को देखकर चौंक पड़ी थी। चौंकी नंदिनी भी उसे देखकर थी और वे दोनों ही एक-दूसरे को देखकर थोड़ी-बहुत नहीं बल्कि अच्छी-खासी चौंकी थीं। इस कदर कि नंदिनी के चेहरे पर नजर पड़ते ही सरिता जहां की तहां जाम हो गई थी और सरिता को देखकर नंदिनी का मुंह खुला का खुला रह गया था।

उनकी वह हालत देखकर काले खां को सफलता की गंध आई और खुशी से झूमता-सा बोला–"यही है न मैडम? यही है न शालू?"

सरिता ने जवाब नहीं दिया।
अवाक् मुद्रा में खड़ी रह गई थी वह।
जैसे बुरी तरह शॉक्ड हुई हो।

कुछ देर तक नंदिनी की हालत भी वैसी ही रही थी लेकिन फिर, गुलाबी और रसभरे होंठों पर बड़ी ही रहस्यमय मुस्कान थिरकी।

सरिता की तंद्रा अभी तक नहीं टूटी थी।

नंदिनी के होठों पर थिरकने वाली मुस्कान ने काले खां का जेहन चिड़चिड़ाहट से भर दिया था। लगभग चीखकर सरिता से कहा था उसने–"आप जवाव क्यों नहीं देतीं मैडम? यह शालू ही है न!"

"श-शालू! ये?" उसकी तंद्रा भंग हुई–"न-नहीं तो?"
"झूठ।" वह दहाड़ा–"आप झूठ वोल रही हैं।"
"अरे!" सरिता चौंकी–"आप इस तरह चीख क्यों रहे हैं? मैं भला झूठ क्यों बोलूंगी? ये शालू नहीं है।"
"तो फिर कौन है ये?"

सरिता ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि उससे पहले नंदिनी बोल पड़ी–"ये भला क्या जानें कि मैं कौन हूं?"

"तुम चुप रहो।" काले खां आपे से बाहर होकर दहाड़ा।

"क्यों चुप रहूं?" नंदिनी ने कहा–"जब मैं ही इन्हें नहीं जानती तो ये मुझे क्या जानें और...

"मैं आपसे पूछ रहा हूं सरिता मेम।" नंदिनी की बात पूरी होने से पहले ही काले खां न सिर्फ सरिता के करीव पहुंचा बल्कि उसके दोनों कंधे पकड़कर झंझोड़ता हुआ चीखा–"आपसे पूछ रहा हूं कि ये शालू है या नहीं? आप डरिए मत। किसी भी बात से मत डरिए आप। ये आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। मत भूलिए कि ये चालाक लड़की आपके बेटे की हत्यारी है। बड़ी ही बेरहमी से इसने अंकुर की बलि दी थी। उसका दिल तक निकालकर खा गई थी और धनपत जी की हत्या भी इसी ने की है। इसे फांसी के फंदे पर पहुंचाना आपका धर्म है और ऐसा केवल तव होगा जव आप कहेंगी कि–हां, यही शालू है। आपके पति की सेक्रेटरी शालू।"

"छोड़िए मुझे।" कहने के साथ एक झटके से सरिता ने खुद को उससे छुड़ाया–"आप हैं कौन और क्यों इस तरह चीख रहे हैं? क्यों एक शरीफ और मासूम लड़की को मेरे मुंह से शालू कहलवाना चाहते हैं? इंस्पेक्टर काले खां कहां है?"

"मैं! मैं! मैं ही इंस्पेक्टर काले खां हूं।" जबरदस्त उत्तेजना से वह चीखता चला गया था–"और मैं दावे से कह सकता हूं कि आप झूठ बोल रही हैं। यही लड़की शालू है। बहुत शातिर है ये। इसने आंखों ही आंखों में आपको डरा दिया है। एक ऐसी औरत को झूठ बोलने पर मजबूर कर दिया है इसने जिसके पति और बेटे की हत्या की। मैं फिर कहता हूं, आप डरिए मत। बेखौफ होकर शिनाख्त कीजिए। मेरे रहते यह आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकेगी।"

"त-तुम? तुम इंस्पेक्टर काले खां?"
"हां मैडम। मैं ही काले खां हूं।"

"काले खां को क्या मैं जानती नहीं!" सरिता ने भन्नाकर कहा था–"मुझे तो तुम कोई पागल लगते हो।"

काले खां के कुछ भी कहने से पहले बाहर से भागते-दौड़ते कदमों की आवाज सुनाई दी और फिर हास्पिटल स्टाफ के चार-पांच आदमी दौड़ते हुए कमरे में आए। वे सभी बुरी तरह हांफ रहे थे और बदहवास अवस्था में थे। उनमें से एक ने पूछा–"क्या हुआ यहां?"

"मैं धनपत की पत्नी सरिता हूं।" वह बोली–"पता नहीं ये कौन पागल आदमी है जो मुझे ये कहकर यहां ले आया कि इंस्पेक्टर काले खां ने मेरे बेटे और पति की हत्यारी शालू को पकड़ लिया है और मुझे उसकी शिनाख्त करनी है। यह मुझसे जवरदस्ती एक बेकसूर लड़की को शालू कहलवाना चाहता है और इतना ही नहीं, खुद ही को इंस्पेक्टर काले खां वता रहा है।"

"हां। हां। हां। मैं काले खां हूं।" सचमुच वह पागलों की तरह दहाड़ा था–"जिस्म चेंज कर लिया है मैंने।"

सब हैरान रह गए क्योंकि भला कोई भी किसी के जिस्म चेंज करने की बात को सच कैसे मान सकता था?

बैड पर अधलेटी नंदिनी के चेहरे पर भी हैरत के भाव थे। वह ये कहे बगैर न रह सकी—"मैं ये नहीं कह सकती मिस्टर कि तुम कौन हो मगर यह दावा जरूर पेश कर सकती हूं कि तुम काले खां नहीं हो सकते क्योंकि मैं उन्हें अच्छी तरह जानती थी और...

"और?" वह फिर चीखा—"और क्या चालाक लड़की?"

"वे उसी एक्सीडेंट में मारे जा चुके हैं जिसमें मैं जख्मी हुई।"

"वही बात तो समझाने की कोशिश कर रहा हूं मैं सबको। ये बात आसानी से किसी की समझ में नहीं आएगी लेकिन मुझे लगता है कि तेरी समझ में आ रही है। तेरे होंठों पर नाचने वाली ये मुस्कान कह रही है कि तू मेरी बेबसी का मजा लूट रही है लेकिन एक दिन मैं सबको समझा दूंगा कि मरने के बाद मेरा शरीर चेंज हो गया है।"

"पता नहीं आप मुझ पर क्या-क्या इल्जाम लगा रहे हैं!" "मैं इल्जाम लगा रहा हूं!

मैं तुझ पर इल्जाम लगा रहा हूं बदजात लड़की!" दहाड़ने के साथ वह उस पर झपट ही जो पड़ा।

नंदिनी 'बचाओ-'बचाओ' चिल्लाने लगी।

हास्पिटल के स्टाफ ने झपटकर उसे जकड़ लिया और घसीटते हुए कमरे से बाहर ले गए।

महाराज चंडिकामृत दुर्लभ काले पत्थर से बनी महाकाली की मूर्ति के ठीक सामने चंदन के आसन पर बैठे ध्यान में डूबे थे कि हौले से चौंके। किसी ने उनके चौड़े मस्तक पर ऐसे अंदाज में दस्तक दी थी जैसे किसी दरवाजे को खुलवाने के लिए दी गई हो।

उन्होंने आंखें खोलीं।

नजर ठीक सामने खड़ी एक पारदर्शी आकृति पर पड़ी।

वह ऐसी आकृति थी जैसे हवा में पानी से बनाई गई हो। उस आकृति के चेहरे पर हर तरफ वेदना ही वेदना नजर आ रही थी।

चंडिकामृत के मुंह से शब्द विस्फुटित हुए–"ओह! ये तुम हो सुकन्या! क्यों विघ्न डाला हमारे ध्यान में?"

सुकन्या की आकृति ने कहा–"आप यहां ध्यान में बैठे हैं और वहां मेरा भाई कपाली के जाल में फंस गया है।"

"हमने तो पहले ही कहा था, वह अपनी चाल जरूर चलेगी।"

"क्या मतलब है इस बात का?" सुकन्या की आत्मा भन्नाई हुई थी–"ऐसा कैसे हो सकता है कि आप मेरे भाई को खतरे में डालकर खुद यहां चैन से ध्यान लगाए बैठे रहें?"

"बहुत गुस्से में हो!"
"क्या आप नहीं जानते कि मैं अंगद से कितना प्यार करती हूं!"
चंडिकामृत मुस्कराए। बड़ी ही सौम्य मुस्कान थी वह। शांत स्वर में बोले–"क्या हुआ है? कुछ बताओ तो सही!"
"ऐसा क्या है जो आपको नहीं पता?"
"फिर भी, तुम्हें बताना चाहिए।"

रोषयुक्त स्वर में आत्मा कहती चली गई–"कपाली ने आपके दिए महामृत्युन्जय यंत्र और मंत्र को छीनने के लिए एक भूत और एक पिशाचनी को सड़ी हुई लाशों के जिस्म में कैद करके भेजा है। उनके जिस्मों से बदबू उठ रही है। भूत ने लिफ्ट देने के बहाने...

चंडिकामृत ने उसकी बात काटकर कहा–"जब तक अंगद के गले में मंत्र और यंत्र हैं, तब तक वे उसे हाथ भी नहीं लगा सकते।"

"इसके लिए उन्होंने एक बच्चे को किडनेप किया है। वे जो भी कराएंगे, उसी बच्चे से कराएंगे। मेरा भैया भावुक है और उन्होंने सारा षड्यंत्र उसकी इसी कमजोरी का फायदा उठाने की मंशा से रचा है। वे जानते हैं कि एक समय ऐसा आएगा जब जजबातों में फंसा अंगद यंत्र-मंत्र को अपने गले से निकाल देगा। ऐसा हो गया तो फिर अंगद किसी हालत में नहीं बच पाएगा। वे उसे मार डालेंगे।"

"तुम अभी तक इस धरती पर क्यों भटक रही हो?"
"मतलब?"
"मदद करो अपने भैया की।"

"परिहास न करो महाराज। काश! काश मैं ऐसा कर सकती।" कहते वक्त बेबसी से आकृति के दांत भिंच गए थे–"आप जानते हैं कि मैं सबकुछ देख सकती हूं–सुन सकती हूं। मगर कर कुछ नहीं सकती। मुझे तो आपकी दिव्य दृष्टि के अलावा कोई देख भी नहीं सकता। मैं तो हवा हूं–सिर्फ हवा। जिसे आपके अलावा न कोई देख सकता है, न सुन सकता है। मेरे पास कोई ताकत नहीं है महाराज।"

"कौन कहता है तुम्हारे पास ताकत नहीं है?"

"होती...तो मदद मांगने आपके पास न आती। वहीं उस भूत और पिशाचनी के जिस्मों के टुकड़े-टुकड़े कर डालती।"

"बड़े आश्चर्य की बात है सुकन्या कि तुम्हें ये मालूम है कि तुम हवा हो और यह नहीं जानतीं कि हवा में कितनी ताकत होती है।"

"मतलब?"

"वो देखो।" चंडिकामृत ने भवन के एक तरफ इशारा करते हुए कहा–"चौकी पर पीतल का एक विशाल कलश रखा है।"

आकृति ने उधर देखते हुए कहा–"देख रही हूं।"
"कितना भारी होगा वह?"
"मैं नहीं समझ पा रही कि आप क्या पूछ रहे हैं!"

"बहुत साधारण सवाल है सुकन्या।" चंडिकामृत के गुलाबी होंठों पर मुस्कान थी–"अपने अनुमान से उसका वजन बताओ।"

"करीब सौ किलो तो होगा ही।"

"तुम हवा हो, तेजी से उससे टकराओ। हवा को कभी चोट नहीं लगती। चोट उसे लगती है जिससे हवा टकराती है।"

सुकन्या की आकृति के चेहरे पर ऐसे भाव उभरे जैसे पलक झपकते ही उसे परमज्ञान मिल गया हो। और फिर...उसके जबड़े भिंचते चले गए। आकृति हवा में विलीन होने लगी। चंडिकामृत की दिव्य दृष्टि हवा के एक गोले को इतनी तेजी से घूमता हुआ देख सकती थी जैसे किसी शरारती बच्चे ने फिरकनी घुमा दी हो और फिर, हवा में ही घूमता हवा का वह गोला कलश से जा टकराया।

कलश अपनी जगह से उछलकर करीब दस फुट दूर मौजूद पीछे वाली दीवार से जोरदार आवाज के साथ टकराया और टनटनाहट की आवाज करता हुआ फर्श पर लुढ़कने लगा।

अचानक ही भवन में जैसे अंधड़ आ गया था। न केवल भारी भरकम पीतल के घंटे जोर-जोर से हिलने और बजने लगे थे बल्कि गुंबद में लटका फानूस भी झोटे खाने लगा था।

भवन में सुकन्या की आवाज गूंजी–"आप महान हैं महाराज चंडिकामृत, आप इसीलिए महान हैं क्योंकि सामने वाले को उसकी ताकत का एहसास कराते हैं।"

चंडिकामृत के होठों पर सबको भली लगने वाली मुस्कान नृत्य कर रही थी जबकि घूमता हुआ हवा का गोला बाहर निकल गया।

काले खां ने जो बताया, उसे सुनने के बाद पुलिस कमिश्नर उसकी तरफ ऐसे अंदाज में देखने लगा था जैसे अपने

सामने बैठे संसार के नौवें आश्चर्य को देख रहा हो।

थोड़ा नियंत्रित होने के बाद बोला—"बड़ी हैरतअंगेज और अविश्वसनीय कहानी सुना रहे हो तुम।"

"ये कहानी नहीं सर, हकीकत है। आप जैसे चाहें मेरी परीक्षा ले सकते हैं। कह ही चुका हूं—राजपाल को बुला लीजिए, उससे पूछिएगा कि एक्सीडेंट से पहले जीप में मेरे, नंदिनी के और उसके बीच जो बातें हुई थीं वे मैंने अक्षरशः बताई हैं या नहीं। अगर मैं कोई और हूं तो वे बातें कैसे बता सकता हूं?"

कमिश्नर ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला था कि राजपाल ने अंदर कदम रखते हुए सैल्यूट किया।

कमिश्नर ने राजपाल से एक्सीडेंट के बारे में पूछा।

राजपाल ने पूरी घटना वैसी ही बताई जैसी काले खां ने बताई थी। जीप में हुई एक-एक बात भी उसने वही बताई जो कमिश्नर के सामने बैठा काले खां पहले ही बता चुका था। कमिश्नर के चेहरे पर आश्चर्य काबिज हो गया था जबकि काले खां के नए चेहरे पर सफलता और प्रसन्नता के भाव थे। पूरी बात बताने के बाद राजपाल ने कहा—"बड़े दुख की बात है सर कि उस एक्सीडेंट में इंस्पेक्टर साहब की मौत हो गई।"

"अगर हम कहें कि इंस्पेक्टर काले खां नहीं मरा तो?"
"त-तब तो बहुत अच्छी बात है। मगर जब मैं होश में आया तो मुझे यही बताया गया कि वे नहीं रहे।"
कमिश्नर ने काले खां की तरफ इशारा करते हुए कहा—"ये बैठे तुम्हारे इंस्पेक्टर काले खां साहब।"
"य-ये?" राजपाल बौखला गया, लगा—कमिश्नर साहब उससे मजाक कर रहे हैं। बोला—"ये वो कैसे हो सकते हैं?"
"इसका दावा यही है।"

वह राजपाल से बोला—"ये सच है राजपाल, मैं काले खां ही हूं। शरीर बदल गया है मेरा।"

"श-शरीर बदल गया है?" हैरत से राजपाल की आंखें फट गईं।

"अपने शरीर से निकलने के बाद मैंने दुर्घटनास्थल का सारा मंजर देखा। तुम्हारा आपरेशन भी, उसके बाद...

वह एक ही सांस में सबकुछ बताता चला गया।

राजपाल की आंखें इस तरह फट पड़ीं जैसे अभी कटोरियों से कूदकर नीचे गिर जाएंगी। काले खां के चुप होने पर उसने सवाल किया—"आपने बताया, कथित आनंद के इस जिस्म में आने के बाद भी आप नहीं माने और सरिता को लेकर नंदिनी की शिनाख्त के लिए हास्पिटल पहुंचे। क्या आप मुझे बताएंगे, वहां क्या हुआ? सरिता ने उसकी शिनाख्त शालू के रूप में की या नहीं?"

वहां जो कुछ हुआ था उसे विस्तार से बताने के बाद काले खां ने कहा—"अब मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि नंदिनी ही शालू है। उसने आंखों ही आंखों में सरिता के दिल में कोई ऐसा डर बैठा दिया कि उसने उसे पहचानकर भी पहचानने से इंकार कर दिया।"

"यानी वो डायन अभी-भी आपसे खेल रही है!"
"मतलब?" यह शब्द एक साथ दोनों के मुंह से निकला।

"कम से कम मुझे यही लगता है सर।" राजपाल ने कमिश्नर की तरफ देखते हुए कहा—"खेल ये चल रहा है कि इंस्पेक्टर साहब रूहानी ताकतों को मानने को तैयार नहीं हैं और रूहानी ताकतें इस बात पर आमादा हैं कि इन्हें अपनी ताकत के वजूद का एहसास कराकर रहेंगी। अपनी बात को प्रूव करने के लिए उन ताकतों ने इन्हें इनके ऑरिजनल

जिस्म से निकालकर दूसरे जिस्म में डाल दिया। अब तो मान जाइए सर।" उसने सीधे काले खां से कहा था—"इस घटना के जरिए रूहानी ताकतों ने आपको यह बताने की कोशिश की है कि वे क्या-क्या कर सकती हैं।"

कमिश्नर बोला—"इसका मतलब तो ये हुआ राजपाल कि तुमने इसे काले खां स्वीकार कर लिया है।"

"क्षमा करें सर, क्या आपने स्वीकार नहीं किया? अगर नहीं किया तो क्या आप मुझे कारण बताएंगे?"

"सवाल हमारे स्वीकार या अस्वीकार करने का नहीं है।" उसने बहुत ही गंभीर स्वर में कहा था—"सवाल है कानून का और कानून को भले ही चाहे जितनी दलीलें दे दी जाएं लेकिन वो सामने बैठे शख्स को काले खां के रूप में स्वीकार नहीं कर सकता। जो काले खां सरकारी सर्विस में था, पुलिस इंस्पेक्टर था, उसकी मौत हो चुकी है। उसकी लाश सबके सामने है।"

"कहां है मेरी लाश?" काले खां ने पूछा।
"मोर्चरी में।"
"मैं उसे देखना चाहता हूं सर।"
"आओ।" कहने के साथ कमिश्नर कुर्सी से खड़ा हो गया।

वे दोनों भी खड़े हो गए और फिर वे मोर्चरी में पहुंचे। कमिश्नर ने उन्हें काले खां की लाश दिखाई। उसे देखते वक्त काले खां के नए चेहरे पर अजीब-से भाव थे। बोला—"कैसी अजीब बात है सर, दुनिया का शायद मैं वो पहला शख्स हूं जो अपनी लाश देख रहा है।"

कमिश्नर कुछ नहीं बोला।
काले खां ने ही कहा—"एक रिक्वेस्ट करूं सर?"
"रिक्वेस्ट?"

"जब तक मैं न कहूं तब तक मेरी इस लाश का अंतिम संस्कार न किया जाए बल्कि किसी लेप के साथ सुरक्षित रखा जाए।"

"उससे क्या होगा?"

"मैं अपने इस शरीर को वापस हासिल करके रहूंगा।" कहते वक्त उसके चेहरे पर जलजले के-से भाव थे।

"कैसी बेवकूफाना बातें कर रहे हो?" कमिश्नर बोला—"भला अपना शरीर दोबारा कैसे हासिल किया जा सकता है?"

"अगर मैं इस शरीर से निकलकर, आनंद के शरीर में आ सकता हूं तो वापस अपने शरीर में भी जा सकता हूं।"

"माफ करें सर।" राजपाल बोला—"अब भी आपकी समझ में यह बात क्यों नहीं आ रही कि जो चमत्कार हुआ है, वह आपने नहीं किया बल्कि रूहानी ताकतों ने किया है।"

काले खां तपाक् से बोला—"और तेरे ख्याल से रूहानी ताकत हमारे सामने फिलहाल नंदिनी के रूप में है?"

"मुझे तो ऐसा ही लगता है।"
"तो फिर वही मुझे मेरे शरीर में वापस लाएगी।"

"आप फिर गलत लाइन पर जा रहे हैं सर।" राजपाल की स्थिति ऐसी हो गई जैसे अपने बाल नोंच लेना चाहता हो—"इस बात को आप समझ क्यों नहीं रहे कि वो आपके साथ चाहे जो कर सकती है लेकिन आप उससे कुछ नहीं

करा सकते।"

"मैं तुम्हें उसे मजबूर करके दिखाऊंगा।"
"उफ्फ्!" राजपाल अपने माथे पर हाथ मारकर रह गया।

"उसे छोड़िए सर, आप मेरी रिक्वेस्ट पर ध्यान दीजिए।" वह कमिश्नर से मुखातिब हुआ था—"बस कुछ दिनों के लिए मेरी डेड बॉडी को महफूज रखिए।"

"सबकुछ हमारे हाथ में नहीं है।"
"मतलब?"

"तुम्हारे परिवार वाले, तुम्हारी बीवी डेड बॉडी की डिमांड कर रही है। अंततः इस बॉडी पर हक तो उन्हीं का है। वे अंतिम संस्कार करना चाहेंगे तो हम रोक नहीं सकते।"

"मैं उन्हें मना लूंगा।"
"कैसे?"

"वो मुझ पर छोड़िए सर।" वह राजपाल की तरफ पलटता हुआ बोला—"तू मेरे साथ चल।"

"कहां?" राजपाल सकपकाया।
"मेरे घर...और कहां?"
कमिश्नर ने कहा—"हम भी चल रहे हैं।"

अंगद की चीख के कारण विचित्र और डरावनी आंखों वाली उस औरत के हाथ से लालटेन मानो छूटते-छूटते बची थी जिसके चेहरे पर सफेद पेंट पुता हुआ था। उसने भी सिर से पांव तक काला लबादा पहन रखा था और उसके जिस्म से भी वैसी ही बदबू उठ रही थी जैसी अभिजीत के जिस्म से। उसने चौंककर अभिजीत की तरफ देखते हुए पूछा था—"ये कौन है अभिजीत?"

अभिजीत मानो हकबका गया था, जैसे जवाब देते न बना हो।
अंगद की घिग्घी बंधी हुई थी।
जूडी के मरीज की मानिंद कांप रहा था वह।
"क्या हुआ मिस्टर अंगद?" अभिजीत ने पूछा।
अंगद के मुंह से निकला—"य-ये औरत...ये औरत!"
"मेरी पत्नी है...शालू।"
"इ-इसकी आंखें!"

"बचपन से ऐसी हैं। क्या किया जा सकता है! कुदरत के आगे किसी का वश नहीं चलता।" वह कहता चला गया—"अगर मुझे जरा भी इल्म होता कि तुम इन आंखों को देखकर डर जाओगे तो पहले ही इनके बारे में बता देता।"

"च-चेहरे पर ये पेंट?"
"इसे भी एलर्जी है।"
अंगद ने उनके जिस्मों से उठती बदबू के बारे में पूछना चाहा पर मुंह से आवाज न निकल सकी।
शालू ने पूछा—"अभिजीत, तुमने बताया नहीं...ये कौन है?"

अंगद ने महसूस किया कि उसकी आवाज भी अभिजीत जैसी ही थी। ऐसी, जैसे लोहे की पत्ती को पत्थर पर रगड़ा गया

हो। उसे सबकुछ अजीब लग रहा था, अलग लग रहा था। बहुत बुरी फीलिंग आ रही थी मगर समझ न पा रहा था कि चक्कर क्या है?

अभिजीत ने अपनी उसी विशिष्ट आवाज में कहा था—"इसका नाम अंगद है। मैंने इसे मुंबई तक के लिए लिफ्ट दी है।"

"बड़ा अजीब आदमी है।" लालटेन की पीली रोशनी में अपनी विचित्र आंखों से वह अंगद को ऊपर से नीचे तक देखती हुई बोली थी—"मुझे देखते ही इस तरह चीखा जैसे चुड़ैल देख ली हो।"

"बुरा मत मानो शालू, क्या तुम यह नहीं सोच सकतीं कि रात के इस वक्त यहां तक आते-आते कोई भी नया शख्स खौफ का गोला बन सकता है! यह बेचारा पहले ही से बहुत ज्यादा डरा हुआ था। तुम्हारी आंखें देखीं तो चीख ही पड़ा। क्यों मिस्टर अंगद, मैंने कुछ गलत तो नहीं कहा?"

"न-नहीं।" अंगद इतना ही कह सका।
अभिजीत शालू से बोला—"वैसे ये इतना बुरा नहीं है।"
"आओ।" हाथ में लालटेन लिए वह पीछे हटी।
पहले अभिजीत ने चौखट पार की।
उसके पीछे अंगद ने।

हालांकि तब तक अंगद खुद को काफी हद तक नियंत्रित कर चुका था मगर थरथराहट अभी-भी जिस्म में बाकी थी। जाने वह कौनसी ताकत थी जो कानों में वहां से भाग जाने के लिए फुसफसा रही थी मगर...भागकर जाता कहां?

अभिजीत ने पलटकर दरवाजा वापस बंद किया। भारी-भरकम डंडाला सरकाने के बाद वह पलटा ही था कि शालू ने शिकायती स्वर में कहा—"मैंने जल्दी आने के लिए कहा था, तुमने फिर भी इतनी देर कर दी। अंकुर को संभालना भारी हो रहा था।"

"क्या वह फिर छिपकली से बात कर रहा है?"
"बीच-बीच में करने लगता है।"
"नींद की गोली दी?"
"दी...मगर उसका असर कुछ ही देर रहा।"
"और दे देतीं!"

"कोशिश की...मगर कपाली ने नहीं लेने दी। वह उसके सिर को खुरचने लगी। अंकुर दर्द से तड़पने लगा। कहने लगा—'गोली मत दो मम्मी, छिपकली आंटी मना कर रही हैं।"

"आओ। देखता हूं।" कहने के साथ अभिजीत शालू से आगे निकल गया था। शालू लालटेन संभाले उसके पीछे थी। अंगद उसके पीछे। लालटेन के अलावा वहां रोशनी का कोई इंतजाम नहीं था और उस रोशनी में ज्यादा कुछ दिखाई नहीं दे रहा था फिर भी इतना तो वह देख ही चुका था कि वह एक बहुत बड़ा डबल हाइट हॉल था। गुंबद में बंधी जंजीर के साथ बहुत ही विशाल परंतु आदम जमाने का फानूस लटका हुआ था। मुख्यद्वार के ठीक सामने की तरफ चौड़ी सीढ़ियां बाल्कनी तक चली गई थीं।

अभिजीत उन्हीं की तरफ बढ़ा।

अंगद भले ही अभी तक वहां के डरावने माहौल से अपने जेहन को मुक्त न कर पाया हो मगर इतना तो समझ ही चुका था कि अंकुर उस कमरे में होगा जिसकी खिड़की से झांकता प्रकाश उसे बाहर ही से नजर आ गया था। उसने सीढ़ियों की तरफ बढ़ते हुए पूछा—"क्या इस मकान में बिजली नहीं है?"

"दूर-दूर तक कोई खंवा ही नहीं है तो बिजली कहां से होगी!" ये शब्द सीढ़ियां चढ़ते हुए अभिजीत ने कहे थे।

"मेरी समझ में नहीं आ रहा कि इस जगह और इस मकान में ऐसा क्या है कि आपने इसे अपना रेजिडेंस बनाया!"

"रात में आए हो न, इसलिए ऐसा लग रहा है। दिन में देखना, चारों तरफ का नजारा कितना रमणीक है।"

अंगद ने सोचा–मुझे क्या पड़ी है! एक बार इस भुतहा मकान से निकल जाऊं, उसके बाद पलटकर भी नहीं देखूंगा।

सीढ़ियां चढ़ने के बाद वे बाल्कनी में पहुंचे। बाल्कनी से उस कमरे में, जिसमें अंकुर था। वहां पहले ही से एक लालटेन मौजूद थी। दो लालटेन होने के कारण पीली रोशनी थोड़ी बढ़ गई थी।

अंगद ने देखा–एक दस वर्षीय लड़का आरामकुर्सी की पुश्त से पीठ टिकाए उसके अर्धचंद्राकार पहियों के सहारे झूल रहा था।

उसने सफेद रंग का निक्कर और लाल टीशर्ट पहन रखी थी।

गोरे रंग, नीली आंखों और भूरे बालों वाला वह एक सुंदर लड़का था मगर आंखों को सिर की तरफ उठाए जाने किससे बातें कर रहा था बल्कि 'जाने किससे' की जगह यदि यह लिखा जाए कि अंगद की समझ में वह छिपकली से बातें कर रहा था तो ज्यादा मुनासिब होगा। अपनी ही दुनिया में खोए उसने अभी-अभी कहा था–"मुझे स्पाइडर मेन की ड्रेस पसंद है आंटी, क्या तुम मुझे वो दिलाओगी?"

फिर ऐसा लगा जैसे वह छिपकली की तरफ से दिए जाने वाले जवाब को सुन रहा हो और उसके तुरंत बाद खुशी से उछलता हुआ बोला–"गुड...वैरीगुड आंटी, तब तो मैं कभी नहीं चाहूंगा कि आप मेरे सिर से उतरें। अब तो आप मेरी सबसे अच्छी आंटी बन गई हैं।"

अंगद को उसका इस तरह बातें करना बहुत ही डरावना लगा।

जेहन के पर्दे पर रिम्पी उभर आई थी। उसे भी तो उसने इसी तरह खुद से बातें करते देखा था और उस वक्त वह बुरी तरह डर गया था। इस क्षण उसे अंकुर से सहानुभूति और कपाली से बहुत ही जबरदस्त घृणा हुई जो मासूम बच्चों को अपना शिकार बना रही थी। अंकुर ने अभी तक भी उनमें से किसी की तरफ भी नहीं देखा था जैसे उसे कमरे में उनकी मौजूदगी के बारे में पता ही न हो। खुद ही में खोया वह छिपकली से बातें कर रहा था।

"कहां खोए हो यार अंकुर!" अभिजीत ने कहा–"देखो, मैं आ गया हूं और अब हम मुंबई घूमने चलेंगे।"

ऐसा लगा जैसे अंकुर की तंद्रा भंग हुई हो। उसने अभिजीत की तरफ देखा और खुश होता हुआ बोला–"आप आ गए डैडी! देखा, छिपकली आंटी कितनी अच्छी हैं मगर...।" एकाएक उसके चेहरे पर नाराजगी के भाव उभरे–"आप बहुत गंदे हैं। मैं कब से आपसे स्पाइडर मेन की ड्रेस मांग रहा था लेकिन आप नहीं लाए जबकि छिपकली आंटी कह रही हैं कि वे मुझे...

"क्या आंटी मुझसे भी अच्छी हैं?" उसने अंकुर की बात काटी।

"नहीं।" अंकुर के ऐसा कहते ही उसके हलक से चीख निकली और फिर, वह दर्द से तड़पता हुआ कहने लगा–"नहीं-नहीं आंटी, मेरे सिर को मत खुरचो, डैडी आपसे अच्छे नहीं हैं। बहुत पेन हो रहा है। प्लीज...प्लीज मुझे माफ कर दो।"

अभिजीत ने झपटकर उसके दोनों कंधे पकड़े। झंझोड़ता हुआ बोला–"खुद को संभालो अंकुर...संभालो बेटे।"

अब अंकुर के मुंह से आवाजें तो बहुत निकल रही थीं मगर कोई शब्द नहीं निकल रहा था। उन्हें आवाजें नहीं बल्कि चीखें कहा जाए तो ज्यादा मुनासिब होगा। अभिजीत के बंधनों में जकड़ा वह इस तरह तड़प रहा था जैसे गर्म रेत पर पड़ी मछली तड़प रही हो।

शालू भी उसकी तरफ लपकी थी मगर वह दोनों में से किसी के भी काबू में नहीं आ रहा था। अभिजीत चीखा—"मैं इसे पकड़े हुए हूं शालू, तुम नींद का इंजेक्शन तैयार करो। इसे वही लगाना होगा।"

"ल...लेकिन अभिजीत।" शालू की आवाज में एक मां की तड़प थी—"अगर उस हालत में छिपकली इसके कपाल में घुस गई तो?"

"कुछ नहीं होगा, तुम इंजेक्शन तैयार करो।" अभिजीत दर्द से तड़पते-मचलते अंकुर को संभालने की कोशिश करता बोला।

शालू कमरे के कोने में रखी एक मेज की तरफ झपटी। कांपते हाथों से उसकी दराज से सीरिंज और इंजेक्शन निकाला। उधर, अभिजीत के लिए दर्द से छटपटाते अंकुर को संभालना मुश्किल हो रहा था। उसकी चीखें सारे मकान में गूंज रही थीं और...अंगद के देखते ही देखते वह उसे रिम्पी की शक्ल में नजर आने लगा। उसे लगने लगा कि वह उसकी रिम्पी है, जिसके कपाल में कपाली घुसने वाली है। महकार के शब्द याद आए। यह कि—किस तरह सुकन्या का कपाल गुब्बारे की मानिंद फट गया था।

उस सबको याद करते हुए अंगद के चेहरे पर जजबातों की आंधी चल रही थी और फिर वह बहुत जोर से चीख पड़ा—"ठहरो।"

अभिजीत और शालू ने चौंककर उसकी तरफ देखा। अंदाज ऐसा था जैसे बिजली से चलने वाले पुतले स्वीच ऑफ होने पर रुक गए हों जबकि अंकुर पर कोई फर्क नहीं पड़ा था।

अभिजीत के बंधनों में जकड़ा वह उसी तरह दर्द से छटपटाता और चीखता रहा था। अंगद का हाथ अपने गले में पड़े ताबीज पर गया और फिर एक ही झटके में ताबीज उसके हाथ में था। साथ ही वह बड़े भावुक अंदाज में बोला था—"छोड़ दो उसे।"

"क्या कर रहे हो ये?" अभिजीत चीखा।

उसकी बात पर ध्यान दिए बगैर अंगद ने अपने उस हाथ को आगे किया जिसमें ताबीज था और बड़े ही जुनूनी अंदाज में अंकुर से कहा—"इधर देख कपाली...इधर।"

चीखते हुए अंकुर ने ताबीज की तरफ देखा और चमत्कारिक अंदाज में न केवल चीखना बंद कर दिया बल्कि उसके चेहरे पर

खौफ के लक्षण उभर आए।
बोला—"नहीं...नहीं, इसे मुझसे दूर रखो।"
"भाग जाओ यहां से। छोड़ दो इस बच्चे का पीछा।"
"नहीं।" अंकुर चिल्लाया।

"तो फिर ठीक है। मैं इसे तुम्हारे गले में डालूंगा।" कहने के साथ दांतों पर दांत जमाए अंगद उसकी तरफ बढ़ा था।

हकबकाया-सा अभिजीत अंकुर को छोड़ चुका था। प्रत्यक्ष में वह और शालू भले ही हत्प्रभ नजर आ रहे हों मगर क्षण भर के लिए उनकी नजरें मिली थीं और होठों पर उभरी थी काईयां मुस्कान।

अंगद उस मुस्कान को नहीं देख पाया क्योंकि इस वक्त उसका संपूर्ण ध्यान अंकुर पर था–उस अंकुर पर जो तावीज को देखता हुआ डर के मारे पीछे हट रहा था।

अंगद को पूरा यकीन हो गया था कि तावीज अंकुर को कपाली से मुक्त करा देगा इसलिए एक ही जम्प में उसके नजदीक पहुंचा और बगैर किसी संकोच के तावीज उसके गले में डाल दिया।

अंकुर एक चीख के साथ जमीन पर जा गिरा और...यही क्षण था जब उस कमरे में ही नहीं बल्कि पूरे मकान में अभिजीत और शालू के हलकों से निकलने वाले अट्टहास गूंजने लगे।

बड़े ही खौफनाक अट्टहास थे वे।

अंगद ने चौंककर उनकी तरफ देखा तो देखता ही रह गया बल्कि अगर यह कहा जाए तो ज्यादा उपयुक्त होगा कि उसके समूचे जिस्म में चार सौ चालीस वोल्ट का करंट दौड़ गया था क्योंकि ठीक उसी समय उन्होंने अपने लबादे उतारकर फेंक दिए थे।

अब वे बिल्कुल नंगे थे।
वीभत्स और डरावने।
हड्डियों पर यहां-वहां सड़ा हुआ गोश्त लटक रहा था।

एक ही झटके में अभिजीत ने अपनी आंखों से चश्मा उतारकर एक तरफ उछाल दिया। उसकी आंखें देखकर अंगद के तिरपन कांप गए क्योंकि वे भी ठीक शालू की आंखों जैसी थीं।

बड़ी-बड़ी सफेद आंखों पर फुल स्टाप जितना काला बिंदू।

अंगद को सूझ नहीं रहा था कि क्या करे, लग रहा था–वह किसी प्रेतलीला में फंस गया है।

"अब तू नहीं बच सकता अंगद।" अभिजीत ने खतरनाक अंदाज में उसकी तरफ बढ़ते हुए कहा था–"अब तेरे पास वो यंत्र और मंत्र नहीं है जिसके रहते हम तुझे स्पर्श तक नहीं कर पा रहे थे।"

आगे बढ़ती हुई शालू बोली–"ये सारा खेल तुझसे तावीज लेने के लिए खेला गया। हम तो ताबीज को हाथ लगा नहीं सकते थे, इसलिए आदमी के बच्चे को किडनेप करके उसे समझाया कि अगर वह खुद को बचाना चाहता है तो उसे क्या करना होगा और उसने अपना पार्ट बड़ी खूबसूरती से अदा किया।"

बौखलाए हुए अंगद ने मूर्खाना अंदाज में पूछा था–"क्या तुम कपाली के आदमी हो?"

दोनों जबड़े फाड़कर हंसे। फिर अभिजीत ने कहा–"आदमी नहीं मूर्ख...आदमी नहीं, मैं प्रेत हूं और ये पिशाचनी।"

इस बीच लड़का भी उठकर खड़ा हो गया था और...अभिजीत तथा शालू के वीभत्स रूप देखकर बुरी तरह डर गया था। कमरे के एक कोने से चिपका वह रोता हुआ बोला था–"म...मुझे बचा लो अंकल, ये अंकल-आंटी मुझे मार डालेंगे।"

अंगद की समझ में और कुछ आया हो या न आया हो मगर ये बात जरूर समझ में आ गई थी कि इस मुसीबत से उसे सिर्फ वह तावीज ही बचा सकता है और फिर उसने बच्चे की तरफ जम्प लगा दी थी परंतु उस तक पहुंच न सका क्योंकि उससे पहले ही प्रेत के सड़े हुए पैर की ठोकर उसके जबड़े पर पड़ी थी।

हलक से चीख निकालता हुआ अंगद दूर जा गिरा।

खौफ की ज्यादती के कारण कोने में सिमटा बच्चा बुरी तरह रो रहा था। पिशाचनी ने दूर ही से उसे पुचकारते हुए कहा–"तू क्यों डर रहा है बच्चे! तुझे हम कुछ नहीं कहेंगे। तूने तो हमारे लिए वो काम किया है जिसे हम नहीं कर सकते थे।"

बच्चा बेचारा उसकी बात क्या समझता!
वह उसी तरह कोने से चिपका डरा-सहमा रोता रहा।

हालांकि अंगद काफी तेजी से उठा था लेकिन उठते ही उसने अपनी गर्दन प्रेत के उन हाथों के बीच पाई जिन पर सड़ा हुआ गोश्त चिपका हुआ था। खुद को मुक्त करने की उसने भरपूर चेष्टा की मगर नाकामयाब रहा। प्रेत ने उसे खिलौने की तरह हवा में उठा लिया था। सांसें रुकने लगी थीं। मुंह से घूं-घूं की आवाजें निकलने लगीं। चेहरा सुर्ख होता चला गया। जीभ बाहर आने लगी और यहां तक कि आंखें कटोरियों से निकलने को तैयार हो गईं।

अंगद को एहसास हो गया था कि अब वह किसी भी हालत में बच नहीं सकेगा लेकिन तभी, हवा का एक तेज झोंका प्रेत के जिस्म से टकराया। वह झोंका इतना तेज था कि प्रेत के हाथ से न सिर्फ अंगद की गर्दन छूट गई बल्कि उसका जिस्म हवा में तिनके की मानिंद उड़ता हुआ एक दीवार से जा टकराया।

उसकी पकड़ से मुक्त होते ही अंगद फर्श पर जा गिरा था।
उधर पिशाचनी प्रेत का अंजाम देखकर हैरान थी कि हवा का वही तेज झोंका खुद उसके जिस्म से भी टकराया।
उसका भी वही अंजाम हुआ।

उसके बाद तो जैसे कमरे में तेज हवाओं के झक्कड़ चलने लगे थे। अंगद ने फर्श से उठने की कोशिश जरूर की थी लेकिन कमरे में चल रहे तूफान ने उसे भी कामयाब न होने दिया। लड़का भी फर्श पर गिर चुका था और प्रेत तथा पिशाचनी पर तो जैसे कयामत टूट पड़ी थी। वे समझ नहीं पाए थे कि वो कौनसी आफत है जो हवा का गोला बनकर उन पर टूट पड़ी है।

फिरकनी की मानिंद तेजी से घूमता हुआ हवा का वह गोला उन्हें संभलने का मौका नहीं दे रहा था। रह-रहकर उनके जिस्म दीवारों से टकरा रहे थे और जल्दी ही वह पल आ गया जब उनके जिस्म वहीं पड़े रह गए और कपाली द्वारा उनमें कैद की गई प्रेत और पिशाचनी की रूहें वहां से भाग खड़ी हुईं।

सुकन्या की आत्मा इतने गुस्से में थी कि उसने उनके बेजान जिस्मों को भी कई बार उड़ा-उड़ाकर दीवारों पर मारा। वह तभी शांत हुई जब यकीन हो गया कि अब वे कुछ नहीं कर सकेंगे।

हवा के तेज झक्कड़ों के रुकते ही अंगद खड़ा हुआ और अपने चेहरे पर परम आश्चर्य के भाव लिए चारों तरफ देखने लगा।

सारा मंजर ही बदला हुआ था।
प्रेत और पिशाचनी के बेजान जिस्म फर्श पर पड़े थे।

हवा ने उन दोनों के अलावा कमरे में मौजूद किसी भी वस्तु को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया था। यहां तक कि दोनों लालटेनें भी यथा स्थान रखी पीली रोशनी फेंक रही थीं।

अंगद समझ नहीं पा रहा था कि ये सब हुआ क्या?
कैसी हवा थी वह?

तभी कमरे में रोते हुए बच्चे की आवाज गूंजी–"म-मुझे माफ कर दो अंकल, मैंने वही किया जो इन दोनों ने कहा।

इन्होंने कहा था कि अगर मैंने इनका कहा नहीं माना तो ये मुझे मार डालेंगे।"

अंगद ने आगे बढ़कर उसे गले से लगा लिया और बोला—"डर मत बेटे, मेरी समझ में सबकुछ आ गया है। तेरे बाबा तुझे ढूंढते फिर रहे हैं, मैं तुझे उनके पास पहुंचा दूंगा।"

वह अंगद से इस तरह लिपट गया जैसे कभी अलग न होगा। अंगद ने उसे गोद में उठाया और यह सोचने में समय नहीं गंवाया कि कमरे में अचानक इतनी तेज हवा क्यों चली थी। उसने एक हाथ में लालटेन ली और कमरे से बाहर निकल आया। लगभग दौड़ते हुए सीढ़ियां उतरा। उस वक्त वह हॉल से गुजरकर मुख्य दरवाजे की तरफ बढ़ रहा था जब बाहर से उसी बूढ़े की दर्दनाक आवाज सुनाई दी जिसे प्रेत ने पागल बताया था।

वह अब भी जंगल में 'कबीर-कबीर' पुकारता फिर रहा था।
बच्चा सजग हो उठा—"ये तो मेरे बाबा की आवाज है।"

बच्चे को गोद में उठाए अंगद लगभग दौड़ता हुआ मुख्यद्वार पर पहुंचा। उसे खोला और बाहर निकल गया।

उधर, लालटेन की रोशनी ने जंगल में भटक रहे बूढ़े की आंखों को अपनी तरफ खींचा और उधर देखते ही उसकी नजर एक लड़के की गोद में मौजूद अपने पोते पर पड़ी तो दीवानावार 'कबीर-कबीर' कहता हुआ उसकी तरफ दौड़ा मगर भावनाओं के वेग के कारण वह लड़खड़ाकर उस जमीन पर गिर गया जिस पर सूखे पत्ते बिछे हुए थे।

इधर, कबीर भी 'बाबा-बाबा' चिल्लाता हुआ अंगद की गोद से निकलने के लिए मचलने लगा था। अंगद दौड़कर बूढ़े के करीब पहुंचा और उसे सहारा देकर उठाया मगर इस वक्त बूढ़े का ध्यान अपने जिस्म पर लगी चोटों की तरफ नहीं था। उसने अंगद की गोद से कबीर को इस तरह छीना था जैसे मणि वाले सांप ने किसी से अपनी खोई हुई मणि को छीना हो।

वह बार-बार कबीर को चूमने लगा था। उस दृश्य को देखकर अंगद की ही नहीं, सुकन्या की उन आंखों में भी आंसू नजर आने लगे जिन्हें चंडिकामृत के अलावा कोई नहीं देख सकता था। उसके चेहरे पर इस वक्त बड़े ही अजीब से सुकून का तेज था।

कबीर ने बूढ़े को बता दिया था कि उसे एक भूत और भूतनी अपने साथ मकान में ले गए थे, उनसे मुझे इन अंकल ने बचाया है।

बूढ़ा अंगद के पैरों में गिर-गिरकर शुक्रिया अदा करने लगा।

तब अंगद ने यह कहते हुए कबीर के गले से ताबीज निकाला कि—"कबीर से उन शैतानों ने इसके सिर पर छिपकली सवार होने की एक्टिंग कराई थी जबकि इससे मुझे कबीर जैसे ही एक ऐसे बच्चे की रक्षा करनी है जिसके सिर पर सचमुच गंदी कपाली छिपकली बनकर सवार होती है।"

बूढ़ा शायद कुछ समझ न सका था जबकि ताबीज को अपने गले में डालने के बाद अंगद गाड़ी की तरफ बढ़ गया।

नाचती-गाती सुकन्या की आत्मा उसके साथ थी।
वे तीनों काले खां के घर पहुंचे।
वहां मातम का माहौल था।
पुलिस कमिश्नर के पहुंचने पर थोड़ी हलचल हुई। उसे अंदर वाले कमरे में पहुंचा दिया गया।

काले खां और राजपाल साथ थे।

कुछ देर बाद कमिश्नर ने काले खां की पैंतीस वर्षीय पत्नी जहांआरा को भी वहीं बुला लिया और कमरा बंद करने के बाद जब उसे बताया गया कि काले खां मरा नहीं बल्कि जिंदा है तो मारे खुशी के उसके मुंह से किल्ली निकल गई मगर उस वक्त आंखें हैरत से फट पड़ीं जब कमिश्नर ने बताया कि काले खां अपना जिस्म चेंज कर चुका है। जब काले खां ने बताया कि मैं ही काले खां हूं तो वह डरी-डरी-सी नजरों से उसकी तरफ देखने लगी।

तब, कमिश्नर राजपाल सहित कमरे से बाहर आ गया।
कमरे में सिर्फ काले खां और जहांआरा रह गए थे।
ऐसा कमिश्नर ने जान-बूझकर किया था।

पंद्रह मिनट बाद जब दरवाजा खुला तो जहांआरा के चेहरे पर हैरत और खुशी के अजीब-से मिले-जुले भाव थे। उसने कमिश्नर से कहा था—"मुझे यकीन हो गया है कि ये काले खां ही हैं मगर...

"मगर?"
"बड़ी हैरत की बात है, ऐसा पहले न कभी देखा न सुना।"

"हमें तो शक है कि वो काले खां नहीं बल्कि कोई बहुत ही बड़ा फ्राडिया है जो किसी खास वजह से खुद को काले खां बता रहा है।"

"नहीं-नहीं साब।" वह जल्दी से बोली—"ऐसा नहीं है।"
"क्यों?"

"क्योंकि साब।" वह थोड़ी शर्माई, चेहरे पर हल्की-सी सुर्खी फैली, बोली—"उन्हें पति-पत्नि के रिश्ते की वे बातें भी पता हैं जो किसी और को पता नहीं हो सकतीं।"

कमिश्नर को पहले ही मालूम था कि यही होने वाला है फिर भी उसने जांच-पड़ताल जरूरी समझी थी।

संतुष्ट होने के बाद बोला—"अब वो चाहता है कि उसकी डेड बॉडी को महफूज रखा जाए ताकि...

"हां साब। उन्होंने ये भी कहा—"मैं भी यही चाहती हूं।"

"ठीक है।" उससे कहने के बाद कमिश्नर कमरे में पहुंचा और काले खां से बोला—"तुम सारी दुनिया के लिए एक चमत्कारी हस्ती हो और वापस अपने शरीर में लौट आए तो इससे भी बड़ा चमत्कार होगा। मैं उस चमत्कार को देखना चाहूंगा।"

"मौका देने के लिए शुक्रिया सर।" वह राजपाल की तरफ देखता बोला—"मुझे राजपाल चाहिए।"

"ये काले खां का सहायक था, जो तुम नहीं हो।"
"प्लीज सर।"
कमिश्नर ने राजपाल से पूछा—"क्या तुम भी यही चाहते हो?"
"ज-जी सर।"

"ठीक है।" कमिश्नर मुस्कराया—"छुट्टी की एप्लीकेशन दे देना क्योंकि इसके साथ रहने पर तुम ड्यूटी पर नहीं होगे।"
राजपाल बस इतना ही कह सका—"जैसा हुक्म सर।"

हास्पिटल से छुट्टी मिलने के बाद और 'चंद्रलेखा' बिल्डिंग के प्रांगण में कदम रखने से पहले ही नंदिनी ने रिम्पी के लिए बहुत सारे खिलौने, चॉकलेट्स और टॉफियां खरीद ली थीं।

लिफ्ट के जरिए सीधी महकार के फ्लैट पर पहुंची।

कालबेल बजाने के लिए हाथ स्वीच की तरफ बढ़ा ही था कि कानों में कुछ अजीब-सी आवाजें पड़ीं।

वे आवाजें ऐसी थीं जैसे कोई रो और गिड़गिड़ा रहा हो और कोई औरत अपनी फटी हुई-सी आवाज में कुछ कह रही हो।

बीच-बीच में किसी के 'ही-ही—ही-ही' करके जोर से हंसने की आवाजें भी आ रही थीं।

नंदिनी कुछ समझ न सकी।
अजीब-से सस्पेंस में फंस गई थी वह।
हाथ कालबेल के स्वीच से लौट आया।
हैंडिल पकड़ा।
वह नीचे की तरफ दबता चला गया।
यानी दरवाजा खुला था।
उसने आहिस्ता से दरवाजा खोला।

झिर्री बनते ही रहस्यमयी आवाजें तेज हो गईं और फिर, उस झिर्री के माध्यम से जो दृश्य नंदिनी ने देखा, उसे देखकर आंखें हैरत से फैलती चली गईं। धमनियों में बहता लहू जमने लगा।

उसने देखा—तरूणा एक कोने में खड़ी थी जबकि महकार की आंखों से आंसू बह रहे थे। वह रिम्पी के सामने...केवल दस वर्षीय अपनी बेटी रिम्पी के सामने खड़ा गिड़गिड़ा रहा था—"मैं हाथ जोड़ कर विनती करता हूं। पैर पकड़ता हूं तुम्हारे। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो मेरे पीछे पड़ गई हो! पहले सुकन्या को मार डाला अब...

"उसने मुझे बलि देते देखा था।" सोफे पर उकडूं बैठी रिम्पी के मुंह से अजीब फटी हुई-सी आवाज निकली थी—"और फिर मेरी बात भी नहीं मानी। बहुत चालाक समझती थी खुद को। मुझे चकमा देकर तुझे ही नहीं, डाक्टर कजारिया को भी सारी बातें बता दीं। उसे तो मरना ही था।"

"ल-लेकिन रिम्पी ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"
रिम्पी ने उसी आवाज में कहा—"पूर्णिमा को पैदा हुई है ये।"
"त-तो?" महकार जैसे कुछ समझ न सका।

"यह दो बलियों के बराबर है। इसकी बलि पूरी होते ही मेरा अभिजीत जिंदा हो जाएगा।"

"नहीं-नहीं। मेरी रिम्पी की बलि न देना।" रोता हुआ कहने के साथ महकार घुटनों के बल जमीन पर बैठ गया था—"अगर तुम्हें बलि ही देनी है तो मैं तैयार हूं। मगर मेरी रिम्पी को...

वह गिड़गिड़ाता रहा और रिम्पी अपने दांत दिखाती हुई 'ही-ही, ही-ही' करती बड़े ही डरावने अंदाज में हंसती रही। हंसने के बीच ही उसने कहा था—"अंगद ने मुझसे अपनी बहन का बदला लेने की कसम खाई है। रिम्पी को बचाने की कसम भी खाई है। चंडिकामृत तक पहुंच गया वह मगर मैंने उसका इंतजाम कर दिया है।"

"अंगद का इंतजाम कर दिया है!" महकार चौंका था—"क्या किया तुमने उसके साथ?"

"चंडिकामृत से रिम्पी का रक्षा कवच लेकर चला था मगर मैंने अपने प्रेत और पिशाचनी को भेज दिया है। वे उसे यहां नहीं पहुंचने देंगे। उसकी लाश जंगल के बीच बने मकान में मिलेगी।"

"नहीं...नहीं...तुम ऐसा नहीं कर सकतीं।" जो महकार अभी तक गिड़गिड़ा रहा था वह अचानक उग्र होकर उस पर झपट पड़ा और अपने दोनों हाथ रिम्पी के गले पर जमाता हुआ गुर्राया–"मैं तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा।"

रिम्पी पुनः 'ही-ही–ही-ही' की डरावनी आवाज के साथ हंसी और फिर बोली–"अच्छा है। अच्छा है कि इसे तू ही अपने हाथों से मार डाले। मुझे कष्ट नहीं करना पड़ेगा।"

"ये क्या कर रहे हो महकार भैया!" चीखती हुई नंदिनी दरवाजे से सीधी उसकी तरफ लपकी थी और उसे रिम्पी से अलग करती हुई बोली–"ये क्या हो रहा है यहां! और रिम्पी...ये तुम क्या कर रही हो? क्यों हंस रही हो इस तरह? तुम्हारी आवाज को क्या हुआ?"

रिम्पी ने नंदिनी को देखा तो जाने क्या हुआ कि...उसे देखती रह गई। नंदिनी की नजरें भी उसी पर केंद्रित थीं और फिर अचानक उसे ऐसा लगा जैसे जो आंखें उसे देख रही हैं वे रिम्पी की नहीं हैं। किसी और की आंखें हैं वे। बहुत डरावनी। नंदिनी को अपने समूचे जिस्म में झुरझुरी-सी दौड़ती महसूस हुई जबकि रिम्पी लगातार उसी को घूरती हुई बोली थी–"तू यहां क्या कर रही है?"

"अरे! मुझसे किस तरह बोल रही हो रिम्पी! मैं नंदिनी हूं।"
"हां। मैं जानती हूं कि तू नंदिनी है लेकिन यहां क्यों आई?"
"मुझे पुलिस ने छोड़ दिया है क्योंकि...

"समझने की कोशिश करो नंदिनी।" तरूणा ने उसे झंझोड़ते हुए कहा था–"इस वक्त वह रिम्पी नहीं है।"

"रिम्पी नहीं है!" नंदिनी चिहुंकी–"तो कौन है?"
"छ-छिपकली।"
"छिपकली! तुम किसी बुरी आत्मा की बात तो नहीं कर रहीं!"
तरूणा बस इतना ही कह पाई–"ह-हां।"

नंदिनी हैरत से आंखें फाड़े रिम्पी की तरफ देखने लगी। अभी कोई कुछ बोल भी नहीं पाया था कि फ्लैट के बाहर से भागते कदमों की आवाज सुनाई दी और अगले ही पल अंगद ने अंदर कदम रखा।

वह बुरी तरह हांफ रहा था।

"तू!" रिम्पी के हलक से वही फटी हुई आवाज निकली–"तू यहां कैसे पहुंच गया। तेरा इंतजाम तो मैंने कर दिया था।"

हांफते हुए अंगद ने चौंककर रिम्पी की तरफ देखा और पलक झपकते ही उसकी समझ में सारी बात आ गई। जबड़े भिंचते चले गए उसके। एक-एक नस में तनाव पैदा हो गया और फिर उसके मुंह से गुर्राहट निकली–"मुझे रोकने का जो इंतजाम तूने किया था। महादेव के आशीर्वाद से उसे चीरकर मैं यहां आ पहुंचा हूं और अब तू रिम्पी का बाल भी बांका नहीं कर सकती।"

"ओह!" रिम्पी की आंखें सुर्ख होती चली गई थीं–"गले में पड़े ताबीज की वजह से उछल रहा है!"

"हां।" अंगद ने झटके से ताबीज अपने गले से अलग किया और बोला–"महादेव का यह ताबीज तुझे जलाकर खाक कर देगा। तू मेरी रिम्पी के आसपास भी नहीं फटक सकेगी।"

"जिस चंडिकामृत की ताकत के बूते पर तू इतना उछल रहा है गधे, वो रिम्पी को बचा नहीं पाएगा।"

"रिम्पी के बारे में नहीं कपाली, अब तू अपने बारे में सोचना शुरु कर दे क्योंकि मैं तुझे छोड़ूंगा नहीं। मेरी बहन के खून

के एक-एक कतरे का हिसाब देना होगा तुझे।"

और...अपने भाई के शब्द सुनकर उसी कमरे में भटक रही सुकन्या की आत्मा की आंखें डबडबा उठी थीं।

एकाएक रिम्पी छत की तरफ देखती बोली–"ओह! तो तू भी पहुंच गई यहां! मतलब मुझे घेरने की पूरी तैयारी की गई है!"

उसकी बात सुनकर अंगद सकपका गया। उसने छत की तरफ देखा। समझ न पाया कि अचानक ही कपाली किससे बात करने लगी थी। फिर, उस तरफ से ध्यान हटाकर रिम्पी से बोला–"तू पागल हो गई है शायद!"

"मजा आएगा।" रिम्पी के वीभत्स चेहरे पर चैलेंज को स्वीकार करने जैसे भाव उभरे थे–"अब इस खेल में मजा आएगा। पहली बार कपाली को अपनी ताकत दिखाने का मौका मिलेगा।"

"सबसे पहले रिम्पी का पीछा छोड़।" अंगद ताबीज को अपनी मुट्ठी में दबाए उसकी तरफ बढ़ा।

"आह! आह!" अचानक रिम्पी के मुंह से उसकी ऑरिजनल आवाज निकलने लगी। दर्द से तड़पती हुई वह अंगद की तरफ देखती कह रही थी–"नहीं इमरान, मेरी तरफ मत बढ़ो। छिपकली मेरे सिर को खुरच रही है। आह...आह!"

अंगद ने देर किए बगैर ताबीज रिम्पी के गले में डाल दिया।

ऐसा होते ही रिम्पी के हलक से जोरदार चीख निकली और वह सोफे से सीधी फर्श पर गिरी। अंगद उसे उठाने के लिए झुका ही था कि रिम्पी के सिर से कूदकर वह विशाल और डरावनी छिपकली सोफे के नीचे जा घुसी जिसे वे पहले भी देख चुके थे।

उसके बाद अंगद ने छिपकली को ढूंढने की काफी कोशिश की मगर वो तो वो...उसकी परछाईं भी नजर नहीं आई।

महकार, तरूणा और नंदिनी अपने-अपने स्थान पर इस तरह खड़े रह गए थे जैसे कमरे के फर्श ने उन्हें जकड़ रखा हो।

चेहरों पर अभी तक खौफ था और दिमागों में सनसनी।

अंगद ने फर्श पर पड़ी रिम्पी को उठाकर बेड पर लिटाया।

उनकी तरफ पलटता हुआ बोला–"अब डरने की कोई बात नहीं है। कपाली कभी रिम्पी के सिर पर सवार नहीं हो सकेगी।"

"क-कौन कपाली?" महकार के मुंह से निकला।

"छिपकली का नाम है। मुझे महाराज चंडिकामृत ने बताया। उन्होंने ये ताबीज दिया है जिससे डरकर वह भाग गई।"

"कौन चंडिकामृत?"

"मैं तुम लोगों को सबकुछ बता दूंगा। पहले अपने होश ठिकाने लाओ और नंदिनी, तुम्हें तो पुलिस पकड़कर ले गई थी!"

"छोड़ना पड़ा...क्योंकि इंस्पेक्टर काले खां का शक बेबुनियाद था। तुम तो जानते हो, जिस वक्त धनपत को मेरे फ्लैट की खिड़की से धकेला गया उस वक्त मैं टैरेस पर थी।"

"मैंने तो पहले ही इन लोगों से कहा था।" अंगद ने तरूणा और महकार की तरफ इशारा किया।

"ल-लेकिन ये सब क्या था?" नंदिनी ने पूछा–"कौन है कपाली और रिम्पी के सिर पर क्यों आ बैठी?"

"उधर पुलिस तुम्हें अपने साथ ले गई, इधर हम फ्लैट में आए तो देखा–रिम्पी अकेले कमरे में बैठी किसी अदृश्य शक्ति से बात कर रही थी। पता लगा–उसके सिर पर छिपकली सवार है...खैर इस वक्त छोड़ो। मैं तुम्हें सबकुछ बता दूंगा।"

"नहीं। मुझे अभी बताओ। मैं ऐसी कपालियों का इलाज करने वाले कई तांत्रिकों को जानती हूं। वे कपाली को रिम्पी के सिर से उतारकर काली कोठरी में उल्टा लटका देंगे।"

"किसी तांत्रिक की जरूरत नहीं है नंदिनी, महाराज चंडिकामृत की कृपा से मैं माता दुर्गा की शरण में पहुंच गया हूं और कोई भी शैतानी ताकत उनके सामने नहीं ठहर सकती।"

"मैं कुछ समझ नहीं पा रही हूं।"

"कहा तो है, समय आने पर सबकुछ समझा दूंगा। इस वक्त हम सबका सबसे पहला काम रिम्पी को होश में लाना है।"

और तब, जब रिम्पी को होश में लाया गया।

वह इस तरह उठकर बैठ गई जैसे गहरी नींद से उठी हो। उसके चेहरे की मासूमियत लौट आई थी। बोली–"अरे, मुझे इतनी गहरी नींद कैसे आ गई और तुम सब मुझे इस तरह क्यों देख रहे हो?"

हंसते हुए अंगद ने कहा–"तुम चीज ही देखने वाली हो।"

"मैं कहां! देखने वाली चीज तो नंदिनी आंटी हैं। इनकी तरफ देखो।" यह बात उसने इस ढंग से कही कि बरबस ही सबके मुंह से हंसी का फव्वारा छूट पड़ा।

नए जिस्म में काले खां इस वक्त अपनी बुलेट पर था।

राजपाल पिछली सीट पर।

वे मेनरोड पर पहुंचे ही थे कि राजपाल ने कहा–"क्या मैं जान सकता हूं सर कि हम कहां जा रहे हैं?"

"विले पार्ले। चंद्रलेखा बिल्डिंग।"

राजपाल के जिस्म में झुरझुरी-सी दौड़ी–"व-वहां क्यों?"

"क्योंकि अब नंदिनी वहीं मिलेगी।"

"उससे मिलकर क्या होगा?"

"वही, जिस मिशन पर निकले हैं। तेरे ख्याल से उसी ने तो मेरा जिस्म चेंज किया है! अब वही ऑरिजनल जिस्म में पहुंचाएगी।"

"थोड़ा ठंडा करके खा लीजिए सर।"

"मतलब?"

"आपके उस चालीस साल के सड़े हुए जिस्म में क्या रखा है!"

काले खां गुर्रा उठा—"क्या मतलब?"

"कुछ दिन तो मजे लीजिए इस जवान जिस्म के!"

"तू नहीं मानेगा?"

"इसमें मानने की क्या बात है सर, इस संसार के आप ऐसे पहले आदमी हैं जिसकी जवानी लौट आई है। मुझे तो ईर्ष्या हो रही है आपसे।" राजपाल मजाक के मूड में आ चुका था—"काश नंदिनी ने मेरा बचपन लौटा दिया होता।"

"तेरी ऐसी इच्छा है तो उससे पहली रिक्वेस्ट यही करेंगे।"
"आप रिक्वेस्ट करेंगे...और वो भी नंदिनी से?"
"तेरी खातिर उस डायन के सामने भी झुक लेंगे।"
"यानी आप मान चुके हैं कि वह डायन है!"
"डायन एक गाली है...और मैं उसे वही दे रहा हूं।"
"जबकि मैं ये पूछ रहा हूं कि क्या आपने उसे अब भी सचमुच की डायन कुबूल नहीं किया?" राजपाल का लहजा संजीदा हो उठा।

"राजपाल।" काले खां सीरियस नजर आया—"जिस आश्चर्य जनक तरीके से मेरा जिस्म चेंज हुआ है, उससे लगता तो है कि इस दुनिया में कहीं परालौकिक शक्तियां भी हैं। तेरे ये कहने में दम नजर आता है कि जो कुछ मेरे साथ हुआ है उसे इस संसार में रहने वाले लोग अंजाम नहीं दे सकते। ऐसा तो वे ही शक्तियां कर सकती हैं जिन्हें सुपर नैचुरल पावर्स कहा जाता है।"

राजपाल के चेहरे पर राहत के गहरे भाव उभरे, बोला—"जानते हैं सर कि आपके शब्द सुनकर मुझे कैसा लग रहा है?"

"बता दे।"

"जैसे मां ने किसी बच्चे के सिर पर मंडराते खतरे के बादलों को छंटते देख लिया हो।"

राजपाल के जजबातों का एहसास करके उसकी आंखें गीली हो गईं। बोला—"मैं जानता हूं तू मुझसे कितनी मुहब्बत करता है।"

"भला आपसे मुहब्बत करके क्या मिलेगा मुझे! मुहब्बत करनी होगी तो किसी हसीना से करूंगा।" राजपाल बोला—"आपसे तो बस रिक्वेस्ट ही कर सकता हूं।"

"वो भी कर डाल।"

"जैसा कि इस वार्ता के प्रारम्भ में ही कहा था, थोड़ा ठंडा करके खाने की आदत डाल लीजिए।"

"क्या कहना चाहता है?"

"क्या समझते हैं आप! क्या यह कि आप सीधे नंदिनी की छाती पर जा चढ़ेंगे। उससे कहेंगे कि मुझे मेरे ऑरिजनल जिस्म में लौटा तो वो लौटा देगी?"

"तो क्या किया जाए?"

"जो तनातनी से कब्जे में न आए, उस पर मुहब्बत का जाल फेंकना चाहिए और जिस पर ताकत का जोर न चले उसके खिलाफ डिप्लोमेसी की तलवार उठा लेनी चाहिए।"

"आज तो बड़ी समझदारी की बात कर रहा है राजपाल!"

"आज से पहले इस नाचीज की बातों को आपने पानी ही कब दिया था जनाब जो फल-फूलकर आपके सामने आ पातीं!"

"जरा खोलकर समझा, क्या कहना चाहता है?"

"नंदिनी के सामने शिकस्त कबूल कर लीजिए, बल्कि माथा ही टेक दीजिए। कहिए–गलती हो गई जो तुम पर शक किया। वो शालू साली कोई और ही थी जिसे मेरठ की पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। इस तरह, पेट में घुस जाइए उसके और जब पूरी तरह घुस चुकें तो अंदर से पेट फाड़ डालिए।"

"क्या डायनें भी चापलूसी में फंस जाती हैं?"
"जब देवी-देवता फंस जाते हैं तो डायनों की क्या बिसात है?"
"देवी-देवता फंस जाते हैं?"

"शायद आपने कभी किसी देवी-देवता की आरती को ध्यान से नहीं पढ़ा-सुना! सबमें प्रशंसा ही तो होती है उनकी। जब इंसान यह समझता है कि देवी-देवता को उनकी तारीफ करके पाया जा सकता है तो डायन को कब्जे में क्यों नहीं किया जा सकता!"

नंदिनी की खूबसूरती से तो अंगद पहले ही से प्रभावित था मगर पिछले चौबीस घंटों से वह जिन नजरों से उसकी तरफ देख रही थी, उन नजरों ने अंगद को बेचैन कर दिया था बल्कि अगर ये कहा जाए कि उसके दिल में गुदगुदी-सी पैदा कर दी थी, तो गलत न होगा।

नंदिनी की बड़ी-बड़ी और हिरनी जैसी आंखों में उसने अपने लिए दीवानगी देखी थी और...इतनी हसीन आंखों में अपने लिए दीवानगी देखना भला किसे अच्छा नहीं लगता!

उस दीवानगी को देखने के लिए उसने कई बार नंदिनी की तरफ देखा था और हर बार उसे उसी अंदाज में अपनी तरफ देखते पाया था। इससे भी आगे–जब नंदिनी ने देखा कि अंगद उसकी तरफ देख रहा है तो उसने अपनी आंखें चुराईं नहीं बल्कि कुछ और ज्यादा नशा पैदा कर लिया उनमें।

गुलाबी होठों पर मुस्कान दौड़ाकर कुछ और गहराई से अंगद की आंखों में झांकने लगी।

हर बार अंगद ने ही उसकी चमकदार आंखों से आंखें चुराई थीं, उसने एक बार भी नहीं और...उनके बीच चल रही इस केमेस्ट्री को तरूणा ने भी नोट कर लिया था।

ईर्ष्या ने भले ही उसे जलाकर खाक कर दिया हो मगर सबके सामने कुछ नहीं कहा लेकिन टैरेस पर अकेले में मिलते ही अंगद पर भड़क उठी–"ये तुम्हारे और नंदिनी के बीच क्या चल रहा है?"

"क-क्या चल रहा है?" अंगद सकपकाया।
तरूणा गुर्राई–"ये भी मुझे बताना पड़ेगा?"
"पता तो लगे, तुम्हें क्या शिकायत है?"
"किन नजरों से देख रही है वह तुम्हें?"
"मैं किसी को किन्हीं नजरों से देखने से कैसे रोक सकता हूं?"

"तुम्हें भी तो मजा आ रहा है!"
"मुझे मजा आ रहा है?"
"और नहीं तो क्या! तुम भी तो चोरी-चोरी उसे देखते हो।"
"इसमें क्या हो गया?" वह हंसा था।

"हो क्यों नहीं गया!" तरूणा ने पूरे अधिकार के साथ हुक्म-सा दिया–"वैसी नजरों से तुम सिर्फ मुझे देख सकते हो।"

"ओके बाबा, ओके। अब ये झगड़ा बंद भी करो।"

"ये झगड़ा तब तक बंद नहीं होगा जब तक वादा नहीं करोगे कि अब उसकी तरफ नहीं देखोगे।"

"ठीक है, मैं उसके सामने जब भी जाऊंगा, आंखों पर काली पट्टी बांध लूंगा।"

"मैं मजाक नहीं कर रही हूं।"

"ये मजाक नहीं तो और क्या है! ऐसा कैसे हो सकता है कि कोई सामने आए और आप उसकी तरफ देखें ही नहीं?"

"अंगद।" अचानक तरूणा का लहजा भीग गया–"तुम समझ क्यों नहीं रहे कि मैं क्या कह रही हूं!"

"मैं समझ रहा हूं।"
"क्या समझ रहे हो?"
"कि तुम्हारे दिल में ईर्ष्या का पौधा जन्म ले रहा है।"

सभी आशाओं के विपरीत तरूणा ने कहा–"ये सच है।"

"क्या तुम जानती हो कि ये पौधा जिसके दिल में जन्म लेता है उसे अंदर ही अंदर कचोट-कचोटकर खा जाता है?"

"मैं ये भी जानती हूं कि ये पौधा सिर्फ उसके दिल में जन्म लेता है जो किसी से बेइंतहा...बेइंतहा मुहब्बत करता है।"

"मुहब्बत की पहली शर्त है–विश्वास। अगर तुम्हें मुझ पर वो नहीं है तो खंगालो खुद को–क्या तुम वाकई मुहब्बत करती हो?"

"तुम पर तो विश्वास है अंगद मगर शायद खुद पर भरोसा नहीं है मुझे और...इस दुनिया पर भी भरोसा नहीं है।"

"दुनिया से मतलब?"

"शायद मैंने पहले भी कहा था कि मुझे उसमें वे सारे लक्षण नजर आते हैं जो जादूगरनी में होते हैं।" कहीं खोई-सी वह कहती चली गई–"मैंने बचपन में पढ़ा था, जादूगरनी की आंखों में किसी को भी हिप्नोटिज्म करने की शक्ति होती है। शायद उसी शक्ति से उसने महज तीन दिन में रिम्पी को अपनी बना लिया और अब...मैं साफ-साफ देख रही हूं कि वह तुम पर डोरे डाल रही है।"

"मैंने भी कहा था कि मैं किसी भ्रम में नहीं हूं, अगर वह ऐसा कर भी रही है तो मैं जानता हूं कि वह मेरे लिए नहीं बल्कि इमरान हाशमी के लिए है। जैसे ही उसे पता लगेगा कि मैं इमरान नहीं हूं, खुद-ब-खुद तुम्हारी सारी शिकायतें दूर हो जाएंगी।"

ऐसा तो तरूणा को भी लगता था, इसलिए चुप रह गई।

तब, उसने तरूणा का मुखड़ा हाथों की गोद में भरा और कहा था–"फिर भी, अगर तुम्हें दुख होता है तो मैं उससे दूर रहूंगा।"

मगर, उस वक्त वह तरूणा से किए गए वादे को निभा न सका जब रिम्पी के लिए चॉकलेट्स लेने के हेतु बाहर निकला, लिफ्ट में नंदिनी मिली और उसने कहा–"अच्छा हुआ तुम मुझे यहां मिल गए, मैं तुम्हें कहीं ले जाना चाहती हूं।"

"कहां?"

"जब तक नहीं बताऊंगी तब तक क्या तुम नहीं चलोगे?" यह सवाल उसने खास उन्हीं नजरों से देखते हुए कहा था जो अंगद के दिल में गुदगुदी पैदा कर देती थीं।

मुंह से बस यही निकला था–"ए-ऐसी तो कोई बात नहीं है।"
"तो पूछो मत, जहां ले चलूं...चले चलो।" ये बात उसने तरूणा जैसे ही अधिकार से कही थी।

उस वक्त वह ऊंची एड़ी की सेंडिल्स, काले रंग की सिलेक्स और सफेद रंग का ऐसा कुर्ता पहने हुए थी जिसकी छाती वाले स्थान पर बड़े-बड़े लाल अक्षरों से इंग्लिश में लिखा था–"आइ लव यू।"

ये अक्षर उसके एक वक्ष से शुरु होकर दूसरे वक्ष पर खत्म होते थे। कुर्ता हॉफ बाजू का था इसलिए गोरी और गोल कलाइयां साफ नुमायां हो रही थीं। फेस पर हल्का मेकअप। रसभरे होंठों पर नेचुरल कलर की लिपिस्टिक, आंखों के सिरों पर आई-ब्रो और भंवें तो कुदरती ऐसी थीं जैसे अभी-अभी ब्यूटी पार्लर से बनवाकर आई हो।

अपने घने, काले और लंबे बालों को उसने चौड़े मस्तक के चारों तरफ से समेटकर बांधा हुआ था मगर फिर भी, दाईं तरफ वाली बालों की एक लट रह-रहकर कपोल पर बनने वाले छोटे से भंवर को चूमने लगती थी। उस लट को वह अपनी पतली-पतली और नाजुक उंगलियों से बार-बार दाएं कान के ऊपर लपेट रही थी।

लिफ्ट से निकलकर अंगद कब उसके साथ पार्किंग में खड़ी उसकी गाड़ी के करीब पहुंच गया उसे पता ही नहीं लगा।

ऐसा शायद नंदिनी के जिस्म से निकलकर महक रही परफ्यूम की खुश्बू के कारण हुआ था।

फिर, उसी खूश्बू से बंधा वह बगल वाली सीट पर बैठ गया क्योंकि ड्राइविंग सीट नंदिनी ने खुद संभाली थी।

"व-वो देखिए सर, नंदिनी।"
"कहां?"
"उधर। पार्किंग में।"
"ओह! हां। अंगद भी साथ है?"
"उसे कहां ले जा रही है ये डायन?"

"इसका मतलब वह उस पर डोरे डाल रही है। ठीक वैसे ही जैसे अंकुर को किडनेप करने के लिए धनपत पर डाले थे। सीधी-सी बात है, अंगद को जाल में फंसाकर इस बार वह रिम्पी को ले उड़ेगी।"

"हमें उसे रोकना होगा सर।"
"रोकने से पहले देखना होगा कि वे जा कहां रहे हैं।"
"मैं आपसे सहमत हूं। देखिए, वो गाड़ी स्टार्ट कर चुकी है और गाड़ी बिल्डिंग के गेट की तरफ बढ़ रही है।"
"हमें उसका पीछा करना चाहिए।"
"तो सोच क्या रहे हैं, चलिए न!"

काले खां ने चंद्रलेखा के प्रांगण के दूसरे सिरे पर मौजूद बुलेट को 'यू-टर्न' दिया और नंदिनी की गाड़ी के पीछे चल दिया।

गाड़ी जब चंद्रलेखा के प्रांगण से निकलकर सड़क पर पहुंची तो अंगद ने कहा—"अब तो बता दो, हम कहां जा रहे हैं?"

"फिर वही सवाल!" उसने अपनी चमकदार आंखों से उसकी तरफ देखा था—"मुझ पर विश्वास नहीं है क्या?"

अंगद का दिल चाहा कि कह दे—अभी हमारी मुलाकात को दिन ही कितने हुए हैं जो तुम विश्वास की बात कहने लगी हो मगर ऐसा कह नहीं सका वह। इसलिए, इस क्षण उसे लगा—तरूणा कहीं ठीक ही तो नहीं कहती है? कहीं सचमुच जादूगरनी ही तो नहीं है ये? कहीं वास्तव में हिप्नोटिज्म ही तो नहीं जानती?

कहीं मैं इसके 'पाश' में तो नहीं बंधता जा रहा हूं?

जेहन में ऐसे ख्याल आते ही दिल को पक्का किया और निश्चय कर लिया कि इसी मुलाकात में उसे बता देगा कि वह इमरान हाशमी नहीं बल्कि उसका डुप्लिकेट है।

उसे पूरा विश्वास था कि यह पता लगते ही वह उस पर अपनी आंखों का जादू चलाना बंद कर देगी।

वह बोली—"रिम्पी की बर्थडे पार्टी में मेरे और तुम्हारे बीच कुछ बातें हुई थीं। क्या वे तुम्हें याद हैं?"

याद होते हुए भी अंगद ने थोड़े उखड़े से स्वर में कहा—"मेरे और लोगों के बीच इतनी बातें होती हैं कि सबको याद रखने लगा तो मेरा दिमाग बातों के कबाड़े से ठसाठस भरा गोदाम बन जाएगा इसलिए जो बातें जब होती हैं उन्हें वहीं छोड़कर आगे बढ़ जाता हूं।"

"मैं याद दिलाती हूं।" वह बोली—"मैंने तुमसे पर्दे पर किए जाने वाले 'किस' के बारे में बात की थी। जब तुमने बताया कि शूटिंग के दरम्यान इतने किस लेने पड़ते हैं कि हीरो-हीरोइनों के होंठ सूज जाते हैं तो मेरे मुंह से बरबस ही यह निकल गया था कि—'ना बाबा ना। मैं तो उसके अलावा किसी को किस नहीं दे सकती जिस पर मेरा दिल न आए। भला ये भी कोई बात हुई कि अलग-अलग लोगों से अपने होंठ चुसवाते रहो!' इस पर तुमने कहा था—'मुझे भी नहीं देंगी?' और मेरे मुंह से निकल गया था—'आपकी बात और है। आपके किस लेने के स्टाइल की तो मैं हमेशा से फैन हूं। किस कदर होठों का रस चूसते हैं आप! जैसे भंवरा फूलों का रस चूस रहा हो।"

"यह बात याद दिलाने का कारण?"

"जब मैंने बाद में सोचा तो इस बात पर बेहद आश्चर्य हुआ कि ये शब्द मैंने तुमसे बोल कैसे दिए? आखिर कौनसे नशे में थी मैं? समझ न सकी कि उस क्षण मैं इतनी बेहया कैसे हो गई थी। फिर, दिमाग को एक झटका लगा। तब, जब इंस्पेक्टर काले खां ने तुम्हारे बारे में एक बात बताई। उसे सुनते ही समझ में आ गया कि वे शब्द मेरे मुंह से कुदरत ने क्यों निकलवाए थे।"

"क्यों निकलवाए थे?" अंगद ने पूछा—"और काले खां ने मेरे बारे में ऐसा क्या बताया था जिसे सुनकर...

सेंटेंस अधूरा रह गया क्योंकि नंदिनी गाड़ी रोक चुकी थी और जहां वह रुकी थी उसके ठीक सामने लगे बोर्ड पर लिखा था—

डॉ. आर. के. कजारिया!

उस नाम को पढ़ते ही अंगद के समूचे जिस्म में झुरझुरी-सी दौड़ गई क्योंकि पलक झपकते ही उसे महकार द्वारा सुनाई

गई सुकन्या की पूरी कहानी याद आ गई थी।

यही तो था वह कजारिया जिसके क्लीनिक पर आकर उसकी दीदी ने अपने मरने की परवाह न करते हुए छिपकली की सारी पोल टेप करा दी थी। मुंह से निकला—"क्या ये वही डाक्टर कजारिया है जिसे अपनी विशेष पद्धति से असाध्य रोगों का इलाज करने में माहिर माना जाता है और जो लोगों को मशीन द्वारा हिप्नोटिज्म करके उन्हें पूर्वजन्मों तक में ले जाता है?"

"तुम मुझे महकार भैया द्वारा सुकन्या दीदी के बारे में सुनाई गई सारी कहानी सुना चुके हो इसलिए समझ सकती हूं कि डाक्टर कजारिया से मिले भले ही न हो मगर उसके बारे में जानते हो और यदि ये कहूं तब भी गलत न होगा कि मुझे भी कजारिया तथा उसकी खासियत के बारे में उसी स्टोरी से पता लगा।"

"मुझे यहां क्यों लाई हो?"

"क्योंकि मुझे लगता है...बल्कि यह कहना चाहिए कि जानती हूं कि—जो कुछ मैं बताऊंगी, तुम उस पर विश्वास नहीं करोगे।"

"मतलब?"

"डाक्टर कजारिया की टेबल पर लेटने के बाद तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास करना ही पड़ेगा।"

"मैं भला उसकी टेबल पर क्यों लेटने लगा?"
"शायद मेरी बातें सुनने के बाद लेटना चाहो!"
"ऐसा क्या बताने वाली हो तुम?"

"सबसे पहले यह कि काले खां ने मुझे यह बताया था कि तुम इमरान हाशमी नहीं बल्कि उसके डुप्लिकेट अंगद हो।"

अंगद को झटका लगा।

इसका मतलब वह उसकी हकीकत पहले से जानती थी और अब...यह सोचते हुए उसके आश्चर्य को कोई ठिकाना नहीं मिल पा रहा था कि हकीकत जानने के बावजूद उसकी उन नजरों का क्या कारण था जो उसके दिल में गुदगुदी पैदा कर देती थीं।

यह कहा जाए तो गलत न होगा कि नंदिनी ने पहले ही झटके में उसके और तरूणा के अनुमान को धराशायी कर दिया था।

मुंह से केवल इतना ही निकल सका—"तो?"

"आज से करीब एक साल पहले दरभंगा में हमारे घर बद्रीनाथ से एक ज्योतिषी आया था। उसने तीन बातें बताई थीं। पहली, एक झटका लगेगा और सबकुछ बिखर जाएगा। दूसरी, उसने मेरी तरफ देखते हुए कहा था—बहुत मेहनत कर रही हो तुम, एक बार सारी मेहनत पर पानी फिर जाएगा लेकिन तुम हार नहीं मानोगी। पुनः शुरु करोगी और सफलता मिलेगी। उस वक्त उसकी इन दोनों में से किसी भी बात का मतलब हमारी समझ में नहीं आया था। हमने समझने की कोशिश की तो बोला—बाबा के मुंह से जो निकल जाता है...निकल जाता है। उसका अर्थ नहीं समझाया करता। और...बाद में एक रात पलक झपकते ही वह इमारत गिरी जिसमें हम रहते थे। अर्थात् एक झटका लगा और सब कुछ बिखर गया। मेरी रिसर्च के वे कागज भी उसी में दफन होकर रह गए जिन्हें मैंने बड़ी मेहनत से तैयार किया था। मुझे अपनी रिसर्च पुनः एबीसीडी से शुरु करनी पड़ी। यानी दूसरी भविष्यवाणी भी अक्षरशः सच्ची साबित हुई थी।"

"तुमने तीसरी भविष्यवाणी के बारे में नहीं बताया।"

"उसने कहा था कि जब तुम्हारा दूल्हा मिलेगा तो शुरु में अपना असली नाम नहीं बताएगा। उसका असली नाम कुछ और होगा और...बताएगा कुछ और?"

"ओह!" अंगद बहुत जोर से ठहाका लगाकर हंसा—"इसलिए तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हारा वही दूल्हा हूं!"

"इस बात का इल्म मुझे ठीक उसी क्षण हो गया था जिस क्षण काले खां ने तुम्हारा असली नाम बताया।"

"और इसलिए तुम मेरी तरफ प्यार भरी नजरों से देखने लगीं!"
"अपने जीवन साथी को भला कौन उन नजरों से नहीं देखता!"

"बस। बस देवी जी, अब बस करो।" अंगद ने कहा—"मैं इस किस्म की भविष्यवाणियों को नहीं मानता।"

"पर मैं मानती हूं और...उस ज्योतिषी की तीसरी भविष्यवाणी को झूठ मानने का सवाल ही नहीं उठता जिसकी दो भविष्यवाणियां अक्षरशः सच्ची साबित हो चुकी हैं।"

"तुम मानती रहो, मेरी सेहत पर कोई फर्क नहीं पड़ता।"
"ज्योतिषी ने उससे आगे भी कुछ कहा था।"
"मुझे नहीं सुनना।"
"सुनने से क्या फर्क पड़ने वाला है!"
"अगर तुम्हें इसी से तसल्ली मिलेगी तो—सुनाओ।"

"उसने कहा था कि तुम्हारा साथ इसी जन्म का नहीं है बल्कि जन्म-जन्मांतर का है। पिछले जन्म में तुम्हारा नाम कजरी और तुम्हारे दूल्हे का नाम बलबीर था।"

"उससे पिछले जन्म में?"
"उसने नहीं बताया।"

"पर बताया तो उसने यह था कि हमारा साथ जन्म-जन्मांतर का है!" अंगद ने खिल्ली उड़ाने वाले भाव से कहा था।

"पिछले जन्मों के बारे में न मैंने पूछा, न उसने बताया बल्कि मेरे पूछने पर तो उसने कुछ बताया ही नहीं था। जो बताया खुद बताया और जो उसके मन में आया बताया।" नंदिनी संजीदा स्वर में कहती चली गई थी—"जब उसने यह सब कहा था तब मैंने भी इन बातों को तुम्हारी ही तरह मजाक और खिल्ली में लिया था लेकिन जब दो भविष्यवाणियां खरी उतर गईं तो...

"तो तुम मुझे इसलिए यहां लाई हो!" अंगद ने उसकी बात पूरी होने से पहले ही कहा—"डाक्टर कजारिया की टेबल पर लिटाकर तुम मुझे मेरा पिछला जन्म दिखाना चाहती हो ताकि अपनी बातों पर विश्वास दिला सको!"

"ये सच है और।" नंदिनी ने थोड़ा गैप देकर आगे कहा—"यह भी सच है कि मैं खुद भी कन्फर्म होना चाहती हूं कि क्या तुम ही वो शख्स हो जिसके बारे में उस ज्योतिषी ने कहा था।"

"तुम तो एक तरह से कन्फर्म ही हो!"

"ऐसा भी तो हो सकता है कि मुझे आगे चलकर ऐसा कोई दूसरा व्यक्ति मिले जिसके दो नाम हों। ज्योतिषी ने यह तो नहीं बताया था कि ऐसा एक ही शख्स मिलेगा!"

"करेक्ट।" वह मजाक के मूड में था—"बात में दम है।"

"यदि पिछले जन्म में तुम बलवीर ही निकले और तुम्हारी पत्नी का नाम कजरी हुआ तो शक की कोई गुंजाइश नहीं रह जाएगी।"

"मुझे ये सब जानने में कोई दिलचस्पी नहीं है।"

"प्लीज अंगद, ऐसा मत कहो।" उसके लहजे में याचना उभर आई थी—"अपने लिए न सही, मेरे लिए अंदर चलो। तुम्हें यहां लाने के पीछे दो कारण हैं। पहला, मुझे मालूम था कि तुम मेरी बातों पर विश्वास नहीं करोगे। मुझे अंधविश्वासी समझोगे। दूसरा, मैं कन्फर्म होना चाहती हूं कि वो तुम ही हो या नहीं।"

"इससे क्या फर्क पड़ता है नंदिनी कि हम पिछले जन्म में क्या थे और कौन किसके साथ था! हमारे सामने ये जन्म है और हमें यही जन्म जीना है जिसे बगैर किसी उलझन के जीना चाहिए।"

मगर, नंदिनी ने उसकी एक न सुनी। बराबर जिद करती रही।

वैसे, अंगद ने कहा भले ही चाहे जो हो मगर अपने पिछले जन्म के बारे में जानने की जिज्ञासा तो उसके दिल में भी जाग उठी थी।

सो, तैयार हो गया।

"उसके बाद?" तरूणा का दिल जोर-जोर से धड़क रहा था। "हम अंदर चले गए। डाक्टर कजारिया से मिले...

वह उसकी बात काटकर चीखी—"तुम टेबल पर लेटे?"
"हां।"
"क-क्यों? क्यों लेटे तुम उसकी टेबल पर?" तरूणा के चीखने में रोने की आवाज शामिल थी।
"मुझे भी पूर्वजन्म के बारे में जानने की जिज्ञासा हो गई थी।"
"या यह जानने के लिए मरे जा रहे थे कि तुम पूर्वजन्म में उस जादूगरनी के पति थे या नहीं?" उसने अंगद का गिरबान पकड़कर बुरी तरह झंझोड़ा था।
"बेशक। ये जिज्ञासा भी थी।"
"चल गया न! चल गया न तुम पर भी उस जादूगरनी का जादू! मैं पहले ही से जानती थी कि एक दिन वह तुम्हें मुझसे छीन लेगी।" जजबातों के भंवर में फंसी तरूणा कहती चली गई—"मगर मुझे भी ऐसी-वैसी मत समझना। आसानी से हार नहीं मानूंगी। तुम मेरे हो और मेरे ही रहोगे। वह तुम्हें मुझसे छीन नहीं सकेगी।"

"किसी को पता नहीं भविष्य में क्या होगा।"
"मतलब?"

"तरूणा।" अंगद ने गंभीर स्वर में कहा—"मशीन ने बताया कि पिछले जन्म में मेरा नाम सचमुच बलवीर था। उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में एक गांव है—महलका। मैं उसी में रहता था। ये सारे दृश्य मैंने ठीक उसी तरह देखे हैं जैसे हम पर्दे पर चली रही फिल्म देखते हैं और जो कुछ मैं देख रहा था, वह बोल भी रहा था। मेरी आवाज टेप हो रही थी। हिप्नोटिज्म से बाहर आने के बाद मैंने वो टेप भी सुनी है। मेरे पिता का नाम हरीराम, मां का केलादेवी। एक बहन भी थी—सरला। मेरी शादी दूसरे जिले के गांव में रहने वाले धनीराम की बेटी कजरी से हुई थी। मैं उससे बहुत प्यार करता था। मैं कैंसर से मरा था लेकिन उससे पहले उसने मेरी बहुत सेवा की और...

"बस! बस!" वह रो पड़ी—"मुझे नहीं सुनना और कुछ।"

"ठीक है। नहीं सुनना तो नहीं सुनाता।" कहने के साथ अंगद उठ खड़ा हुआ लेकिन तभी, तरूणा ने उसका हाथ पकड़ा और एक तेज झटका देकर वापस बैठाती बोली–"तुम कहीं नहीं जाओगे।"

"जब तुम्हें सुनना ही नहीं है तो?"

उसने भन्नाकर कहा–"डिटेल में जाने की जरूरत नहीं है। मतलब ये हुआ कि उसने और उसके ज्योतिषी ने जो कहा वह सच है। पिछले जन्म में तुम उसके पति थे!"

"हां।"
"उसके बाद?"
"उसके बाद क्या?"
"क्या किया तुमने?"
"क्या किया होगा?"

"बांहों में भर लिया होगा उसे। गले से लगा लिया होगा। चूमा चाटा होगा। आखिर जन्म-जन्म के बिछड़े प्रेमी हो!"

"हां तरू, मैंने यही किया। मैं भावुक हो गया था।"

"मैं तुम्हें मार डालूंगी–कच्चा चबा जाऊंगी।" वह सिंहनी की मानिंद उस पर झपटी थी–"बोटी-बोटी कर दूंगी तुम्हारी।"

और...अंगद हंसने लगा था।

हंसते हुए ही उसने तरूणा को बांहों में भर लिया जबकि गुस्से में वह उसके बाजुओं से निकलने के लिए छटपटाती कहती चली गई थी–"छोड़ो मुझे। उसी को बांहों में भरो। वो तुम्हारी...

"अरी पगली।" वह उसे और ज्यादा अपनी बांहों में कसता हुआ बोला–"वही सब किया होता या करने का ख्वाहिशमंद भी होता तो तुम्हें यह सब बताता ही क्यों?"

उसके बंधन से निकलने की तरूणा की कोशिश को ऐसे ब्रेक लग गए जैसे चाबी से चलने वाली गुड़िया की चाबी खत्म हो गई हो। उसकी आंखों में झांकते हुए कहा था उसने–"मतलब?"

"मैंने उससे सीधा सवाल किया था।" अंगद धीर-गंभीर स्वर में बोला–"यह कि, क्या तुम नहीं जानतीं कि मैं और तरूणा एक दूसरे से मुहब्बत करते हैं?"

"कह दिया तुमने?"
"डंके की चोट पर।"
"मेरे अच्छे अंगू! तो क्या बोली वो?"
"बोली–जानती हूं।"
"तुमने कहा नहीं! फिर क्यों डोरे डाल रही हो मुझ पर?"
"इस तरह तो नहीं कहा लेकिन मतलब यही था।"
"मुझे बताओ, तुमने क्या कहा?"

"इसमें शक नहीं तरू कि यह जानने के बाद कि पिछले जन्म में सचमुच मैं बलवीर और वह मेरी पत्नी कजरी थी, वह बहुत भावुक हो गई थी और मेरी तरफ इस तरह देखने लगी थी जैसे उसने अपने खोए हुए पति को पा लिया हो इसलिए मैंने उसकी भावनाओं को चोट न पहुंचाते हुए समझाने वाले लहजे में कहा था–"नंदिनी, हमें पिछले जन्मों में उलझकर अपनी जिंदगी को जटिल नहीं बनाना चाहिए। अगर ये सच है कि पूर्व जन्म में तुम मेरी पत्नी कजरी थीं तो

इस जन्म का सच ये है कि मैं तरूणा से मुहब्बत करता हूं और उसी से शादी करुंगा। पिछले जन्मों में न उलझकर हमें इस जन्म के सच को स्वीकार करना चाहिए।"

"वेरीगुड।" तरूणा की आवाज भर्रा गई–"मुझे अपने अंगू से यही उम्मीद थी...तो क्या बोली वो?"

"मुहब्बत भले ही तरूणा से करते हो लेकिन शादी तो तुम्हारी मुझसे ही होगी।"

"अरे, बड़ी ढीट लड़की है!"

"मैंने पूरे विश्वास के साथ कहा–'ऐसा नहीं होगा।' वह मुझसे भी ज्यादा विश्वास के साथ बोली–'ऐसा ही होगा, मुझे यह विश्वास इसलिए है क्योंकि यह भविष्यवाणी उस ज्योतिषी ने की है जिसकी सभी भविष्यवाणियां अक्षरशः सत्य साबित हुई हैं। मुझे नहीं पता कि वे बानक कैसे बनेंगे मगर विश्वास है कि बनेंगे।"

"तब तुमने क्या कहा?"

"इसके अलावा और क्या कहता कि–'ठीक है, तुम ज्योतिषी की भविष्यवाणियों के साथ जियो, मैं तो अपने प्यार के विश्वास के साथ जी ही रहा हूं।"

"मेरे अच्छे अंगू...मेरे प्यारे अंगू।" कहने के साथ उसने अंगद के चेहरे पर चुंबनों की झड़ी लगा दी थी–"इसीलिए तो नहीं छोड़ सकती मैं तुम्हें। तुमसे सच्चा प्यार करने वाला और कहीं मिलेगा ही नहीं। तुम्हारी जगह कोई और होता तो फिसल जाता।"

"अरे-अरे, छोड़ो न! क्या क़र रही हो!" अंगद खुद को उसकी पकड़ से छुड़ाने की नकली कोशिश कर रहा था कि उसी समय जेब में रखा मोबाइल़ बजने लगा।

अंगद ने स्क्रीन पर नजर डालते हुए कहा–"बालाजी से है।" कहने के साथ ही ऑन किया और कान से लगाता हुआ बोला–"हां प्रेरणा जी, अंगद बोल रहा हूं।"

दूसरी तरफ से प्रेरणा की आवाज उभरी–"एकता जी ने यह पुछवाया है कि तुम और तुम्हारी भांजी ठीक-ठाक तो हैं?"

"हां। ठीक हैं। जो हुआ, उसके बारे में एकता जी को बताने के लिए आफिस आने ही वाला था कि...

"क्या तुम टेनिस क्लब पहुंच सकते हो?"
"हां। हां। क्यों नहीं!"

"तो तीन बजे पहुंच जाओ। एक सीन है, जो करना तो इमरान को तो था लेकिन वो अभी तक कनाडा से ही नहीं लौटे हैं। एकता जी ने कहा–अंगद से करा लो।"

अंगद थोड़ा अटका। बोला–"मैं एकता जी का आदेश टाल तो नहीं सकता लेकिन...

"लेकिन?"
"महाराज चंडिकामृत के आदेश के मुताबिक मुझे उनके आश्रम पहुंचना है। वे मुझे..
"मुश्किल से दो घंटे लगेंगे अंगद, यहीं से निकल जाना।"
"ठीक है, पहुंच जाता हूं। क्या एकता जी भी वहां मिलेंगी?"
"पक्का नहीं कहा जा सकता।"
"मुझे उन्हें बताना था कि महाराज चंडिकामृत के..

"उनकी बात महाराज से हो गई थी।"
"ओह, तब तो उन्हें सबकुछ पता लग ही गया होगा।"
"इसीलिए तो फोन कराया है, तो तुम पहुंच रहे हो न!"
"पक्का।"

अंगद और नंदिनी के निकलते ही काले खां और राजपाल ने डाक्टर कजारिया के क्लीनिक में कदम रखा और...बाहरी कमरे में ही मौजूद कजारिया उन्हें देखकर चौंका—"तुम यहां?"

"मैं भी नहीं सोच सकता था कि इतनी जल्दी हमारी दूसरी मुलाकात हो जाएगी।" काले खां ने मुस्कराते हुए कहा—"आपके लिए तो मैं शोध की वस्तु हूं, फिर आराम से अपने क्लीनिक में क्यों बैठे हैं? मेरी गतिविधियों पर नजर क्यों नहीं रखे हुए?"

डाक्टर कजारिया मुस्कराया, बोला—"तुम पर नजर रखने के लिए तुम्हारे साथ-साथ रहना जरूरी नहीं है। अभी शायद मीडिया को तुम्हारे बारे में भनक नहीं लगी है। जैसे ही उन्हें यह पता लगेगा कि इस शहर में एक ऐसा शख्स घूम रहा है जिसका शरीर किसी और का है, आत्मा किसी और की—वे उसकी पल-पल की खबर छापना और दिखाना शुरु कर देंगे और वे खबरें मुझ तक पहुंचने लगेंगी।"

"बड़ा आसान रास्ता चुना है आपने।"
"अब ये बताओ—यहां क्यों आए हो?"

"अभी-अभी जो लड़की यहां से गई है, वह वही है जिसे शालू साबित करने के चक्कर में एक्सीडेंट हुआ था।"

"नंदिनी! ओ...हो।" कजारिया चौंका—"हां, तुमने उसका नाम नंदिनी ही बताया था और उसने भी मगर...मैं रिलेट न कर सका। यह बात जेहन में ही नहीं आई कि यह नंदिनी वह हो सकती है।"

"हम उसी का पीछा करते हुए यहां पहुंचे हैं।"
"मतलब अभी तक उसे शालू सिद्ध नहीं कर पाए!"
"कर दिया होता तो यहां झक क्यों मार रहे होते?"
"क्या तुम सरिता से भी उसकी शिनाख्त नहीं करा सके?"

"इस बार मैं सरिता को लेकर उसके पास पहुंच तो गया मगर एक नया ही ड्रामा खड़ा हो गया।"

"क्या?"
"सरिता ने उसे पहचानने से इंकार कर दिया।"
"तब तो...

"नहीं, वो सच नहीं है।" काले खां ने उसकी बात काटकर कहा था—"मैं जानता हूं कि उसने झूठ बोला है।"

"वो झूठ क्यों बोलेगी?"

"उसका भी पता लगा लूंगा मैं। फिलहाल यह बताइए कि वह अंगद के साथ यहां क्यों आई थी?"

"आए तो वे किसी और ही मकसद से थे बल्कि यह कहा जाए तो ज्यादा उचित होगा कि नंदिनी अंगद को लेकर आई थी पर अंगद ने पांच साल पुरानी एक बात छेड़कर मेरे जेहन के सभी तारों को बुरी तरह झनझना दिया है।"

"कौनसी पांच साल पुरानी बात?"

"पांच साल पहले सुकन्या नाम की लड़की अपना केस लेकर खुद मेरे पास आई थी। वह मेरी पहली पेशेंट थी जिसका मैं इलाज न कर सका बल्कि अगर यह कहूं तब भी गलत न होगा कि वह केस आज भी मेरे लिए एक मिस्ट्री है।"

"कैसी मिस्ट्री?"
"उसके सिर पर छिपकली सवार थी।"
"क-किसी के सिर पर छिपकली सवार थी?" काले खां बुरी तरह चौंका था-"ये क्या कह रहे हैं आप?"
"ये हकीकत है। सिर को खुरचती हुई छिपकली सुकन्या के कपाल में घुस गई और अंततः उसे मार डाला।"
"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।"

"अंगद ने उसी सुकन्या की बात छेड़कर मेरे जख्म हरे कर दिए। उसने केवल यही नहीं बताया कि वह सुकन्या का भाई है बल्कि एक ऐसी हैरतअंगेज स्टोरी सुनाई जिसके बाद फैसला नहीं कर पा रहा हूं कि क्लीनिक में बंद रहूं या अपने जेहन में उमड़-घुमड़ कर रहे सवालों का जवाब पाने के लिए फील्ड में उतर जाऊं!"

"ऐसी क्या स्टोरी सुनाई उसने?"

"उसने बताया कि उसे किसी औरत द्वारा बच्चों की बलि देने के सपने चमकते थे। पिछले दिनों एक ऐसे बच्चे की बलि का सपना देखा जिसे वह जानता था, साथ ही यह भी देखा कि उस औरत की अगली शिकार रिम्पी नाम की लड़की है। किस्मत उसे रिम्पी के घर ले आई और वहां पहुंचकर उसने जाना कि वह उसकी बहन सुकन्या की बेटी यानी उसकी भांजी है। सुकन्या के साथ जो हुआ था, वह उसके बहनोई यानी महकार ने तब बताया जब रिम्पी के सिर पर भी छिपकली सवार हो गई।"

"रिम्पी के सिर पर छिपकली सवार हो गई?"

"कहता है-मगर अब फिक्र की कोई बात नहीं है। वह किन्हीं महाराज चंडिकामृत की शरण में पहुंच गया है। उन्होंने उसे न सिर्फ यह बता दिया है कि बच्चों की बलियां देने वाली उस औरत का नाम कपाली है बल्कि ऐसा इलाज भी कर दिया है कि अब छिपकली रिम्पी को परेशान नहीं कर सकेगी। चंडिकामृत ने उसे यह भी बताया कि बलियों के सपने उसे इसलिए आते थे क्योंकि उन बलियों को सुकन्या की आत्मा लाइव देखती थी और उसकी आंखों में अंगद बसा था। उसकी आंखों से गुजरकर घटना सपना बनकर उसके जेहन तक पहुंच जाती थी।"

काले खां कह उठा-"आप बड़ी हैरतअंगेज बातें कर रहे हैं।"
"ये बातें मैं नहीं कर रहा बल्कि अंगद ने बताईं।"
"सुकन्या के साथ क्या हुआ था?"

कजारिया को जो मालूम था, बताने के बाद बोला-"कितनी अनोखी बात है! हिप्नोटिज्म होने पर सुकन्या ने जो बताया, उसकी मृत्यु के बाद अंगद को वैसे ही सपने चमकने लगे। मेरे सामने उसके द्वारा बताया गया चंडिकामृत का दावा भी था। जब से यह पता लगा है, तब से मन इस रहस्यमय घटना की गहराई में जाने के लिए बेचैन है। पर समझ नहीं पा रहा ऐसा कैसे करूं।"

अगर यह लिखा जाए कि वह सब सुनने के बाद काले खां और राजपाल के दिमाग सन्नाने लगे थे तो गलत न होगा। कुछ देर बाद काले खां ने कहा-"अब हम आपको एक ऐसी बात बता सकते हैं जिसे सुनने के बाद आपका दिमाग भी उसी तरह सन्नाने लगेगा जिस तरह हमारा जेहन सन्नाया हुआ है।"

"ऐसी क्या बात बताओगे तुम?"
"हमें शक है कि नंदिनी ही कपाली है।"
"क-क्या?" सचमुच कजारिया उछल पड़ा।

"अंगद ने अपने जिस परिचित बच्चे की बलि का सपना देखा था, वह धनपत का बेटा अंकुर था। वही अंकुर जिसे शालू ने किडनेप किया था और जिसको तलाश करते-करते हम रिम्पी के घर नंदिनी तक पहुंचे। यह तो बता ही चुके हैं कि भरपूर कोशिश के बावजूद अभी तक हम उसे शालू साबित नहीं कर सके हैं।"

"लेकिन तुम यह कैसे कह सकते हो कि वही कपाली है?"

"इसमें शक नहीं कि अंकुर को शालू ने ही किडनेप किया और याद रहे, आप ही के मुताबिक–कपाली की शक्ल न सुकन्या ने देखी थी, न ही अंगद अपने सपनों में देख पाया। अगर नंदिनी ही शालू है तो कपाली भी वही होगी।"

"तुम काफी दूर तक सोच रहे हो।"

"शालू ने अंकुर के किडनेप को आसान बनाने के लिए धनपत को अपने रूपजाल में फंसाया था। हमारे ख्याल से ठीक वही चाल वह इस बार भी चल रही है। उसकी अगली शिकार रिम्पी है। रिम्पी अंगद को इमरान समझकर उसके बहुत नजदीक है, शायद इसीलिए इस बार वह अंगद को अपने रूपजाल में फंसा रही है।"

कजारिया के चेहरे पर ऐसे भाव उभरे जैसे कुछ गुत्थियां सुलझ कर उसके दिमाग में फैल गई हों। बोला–"हां, यकीनन वह अंगद से मुहब्बत का दावा कर रही है लेकिन...

"लेकिन?"
"मेरी मशीन बता रही है कि उसका दावा सच्चा है।"
"मतलब?"

"नंदिनी का कहना था कि उसे एक ज्योतिषी ने बताया है कि पिछले जन्म में अंगद उसका पति था जबकि अंगद इस बात को मानने को तैयार नहीं था। नंदिनी इसीलिए उसे मेरे पास लाई थी। मशीन ने बताया कि पिछले जन्म में वे वास्तव में पति-पत्नि थे।"

इतनी सारी जानकारियां एक साथ मिल जाने के कारण काले खां की बुद्धि चकराई हुई थी। उसने राजपाल की तरफ देखा, उस बेचारे का हाल तो उससे भी बुरा था। पुनः कजारिया से मुखातिब होता बोला–"आपकी मशीन झूठ नहीं बोल सकती?"

कजारिया ने दावे से कहा–"बिल्कुल नहीं।"
"तब तो गुत्थियां इस कदर उलझ गई हैं कि बगैर आगे बढ़े उन्हें सुलझाया ही नहीं जा सकता।"
"वह खुद मशीन पर क्यों नहीं लेटी?" राजपाल ने सवाल किया।
"मतलब?"

"सर।" वह काले खां की तरफ घूमा–"डाक्टर साहब की विद्या हमारी सभी समस्याओं का हल है। अगर नंदिनी को इनकी मशीन पर लिटा दिया जाए तो हम उसका मुकम्मल अतीत जान सकते हैं। आराम से पता लग जाएगा कि वह शालू या कपाली है या नहीं।"

काले खां की आंखें जुगनुओं की मानिंद चमकने लगीं। उसने कजारिया से कहा–"राजपाल की बात एकदम दुरुस्त है।"

"मैं सहमत हूं, लेकिन...
"लेकिन?"

"कानून के मुताबिक मैं किसी को भी उसकी मर्जी के बगैर हिप्नोटिज्म नहीं कर सकता।"

"हम उसे तैयार करने की कोशिश करेंगे।"

राजपाल बोला–"और अगर वह तैयार नहीं हुई तो इस बात पर पक्की मोहर लग जाएगी कि नंदिनी, शालू और कपाली एक ही बला के तीन नाम हैं। वह रिम्पी को उठाने के लिए ही सक्रिय है।"

"मैं तुझसे सहमत हूं राजपाल।"
"पर ध्यान रहे सर, हमें ठंडा करके खाना है। नंदिनी को देखते ही झपट नहीं पड़ना है उस पर।"
अंगद मोबाइल पर कह रहा था–"मैं आ तो रहा हूं प्रेरणा मगर एक मुसीबत खड़ी हो गई है।"
"क्या?" दूसरी तरफ से प्रेरणा ने पूछा।

"जब मैंने रिम्पी को बताया कि मैं शूटिंग पर जा रहा हूं तो वह जिद पर अड़ गई। कहने लगी, मुझे भी शूटिंग देखनी है और वह ऐसी लड़की है कि अगर एक बार जिद पर अड़ जाए तो...

"इसमें प्रॉब्लम क्या है!" प्रेरणा उसकी बात पूरी होने से पहले ही बोली–"उसे भी ले आओ। देख लेगी शूटिंग। मैं तो कहती हूं अच्छा ही है। जब से यूनिट के लोगों को उसके बारे में पता लगा है सब उससे मिलने के इच्छुक हैं। उनकी इच्छा भी पूरी हो जाएगी।"

"वो तो ठीक है, लेकिन अगर वहां किसी की चूक से रिम्पी को यह पता लग गया कि मैं इमरान नहीं बल्कि अंगद हूं तो बवाल खड़ा हो जाएगा। पता नहीं क्या हंगामा कर दे वो।"

"उसकी चिंता मत करो, मैं यूनिट के सभी लोगों को समझा दूंगी कि तुम्हें इमरान कहकर ही पुकारें, उसे ले आओ।"

"ठीक है।" कहकर अंगद ने कनेक्शन काट दिया।

'एक थी डायन' के जिस सीन के लिए अंगद को बुलाया गया था, उसे टेनिस क्लब में फिल्माया जाना था।

वहां भी शूटिंग देखने वालों की काफी भीड़ जुट गई थी।

सिक्योरिटी भीड़ को इस तरह नियंत्रित किए हुए थी कि वे लोग शूटिंग देख भी लें और काम में बाधा भी न पड़े।

अंगद के साथ रिम्पी ही नहीं तरूणा, नंदिनी और महकार भी पहुंचे थे। तरूणा ने अंगद के सामने एकांत में नंदिनी की मौजूदगी पर एतराज उठाया था। कहा था–'इसका हमारे बीच क्या काम?' तब, अंगद ने कहा था–'देखो तरू, बेवजह खुद को ईर्ष्या के जाल में मत फंसाओ, मुझ पर और अपने प्यार पर भरोसा रखो। रिम्पी उसके साथ रहना चाहती है और उसके साथ खुश है। उसी ने उससे शूटिंग पर चलने की जिद की है और फिर...जब मेरे दिल में उसके लिए कुछ नहीं है और यह बात मैं खुलेआम उससे कह भी चुका हूं तो साथ रहने पर वह मुझे खा नहीं जाएगी।'

इस तर्क के बाद तरूणा चुप रह गई थी मगर दिल से अब भी उसकी उपस्थिति को स्वीकार नहीं कर पा रही थी।

रिम्पी सहित उन सबको कुर्सियों पर ठीक वहां बैठाया गया था जहां एक लंबे स्टेंड पर कैमरा लगा था।

शायद लिखने की आवश्यकता नहीं है कि चंडिकामृत द्वारा दिया गया ताबीज इस वक्त भी रिम्पी के गले में पड़ा था।

ताबीज को पहली बार देखने पर जब उसने पूछा था कि मेरे गले में ये ताबीज किसने और क्यों डाला तो अंगद ने कहा था–'इस ताबीज में विद्या माता की शक्ति है, इसे गले में डालकर पढ़ोगी और एग्जाम दोगी तो स्कूल की नंबर वन स्टूडेंट बन जाओगी।'

उस वक्त उसने बड़ी मासूमियत से पूछा था–'मेरे नंबर मयंक से भी ज्यादा आएंगे?'

'कौन मयंक?' अंगद ने पूछा था।

'है एक मोटा लड़का।' उसने मुंह बनाते हुए कहा था–'हमेशा मुझसे ज्यादा नंबर लाता है।'

'गारंटी है।' अंगद ने कहा था–'अगर तुम इसे कभी अपने गले से नहीं उतारोगी तो मयंक से ज्यादा नंबर आएंगे।'

'तब तो मैं इसे हमेशा पहने रखूंगी।' कहने के साथ उसने तावीज को चूम लिया था।

यूनिट के सभी लोग जहां यह जानते थे कि रिम्पी के साथ क्या प्रॉब्लम है वहीं वे यह भी जानते थे कि उस प्रॉब्लम के बारे में खुद रिम्पी को कुछ भी नहीं पता है यानी वह नहीं जानती कि उसके सिर पर छिपकली सवार होती है। इसलिए, सभी को सख्त हिदायत थी कि उससे इस बारे में कोई बात नहीं करेगा और यह हिदायत भी दी गई थी कि अंगद को कोई अंगद नहीं कहेगा बल्कि इमरान कहेगा और इमरान की तरह ही ट्रीट करेगा।

जिस फ्लोर की तरफ कैमरे का रुख था, वह ऐसा नजर आ रहा था जैसे ओपन रेस्टोरेंट हो। थोड़े-थोड़े गैप से पड़ी हुई गोल मेजें और उनके चारों तरफ चेयर्स।

मेजों के ऊपर रंग-बिरंगी छतरियां लगी थीं।

चेयर्स पर जो लोग बैठे थे, वे सभी उम्रों के थे और उन्होंने रंग बिरंगे कपड़े पहन रखे थे। मेजों पर कुछ खाने-पीने का सामान और ड्रिंक्स आदि भी रखे थे। वेटर इधर-उधर टहल रहे थे।

रेस्टोरेंट के पीछे की तरफ टेनिस कोर्ट नजर आ रहा था।

रिम्पी ने करीब खड़े अंगद से पूछा–"तुमने हमें यहां, कैमरे के पास क्यों बैठाया है इमरान? वहां, रेस्टोरेंट में क्यों नहीं बैठाया?"

अंगद ने हंसते हुए बताया–"वो असली नहीं, नकली रेस्टोरेंट है रिम्पी। फिल्मी रेस्टोरेंट।"

"फिल्मी रेस्टोरेंट?"

"वहां सीटों पर जो लोग बैठे हैं, वे किसी रेस्टोरेंट में आए असली कस्टमर्स नहीं हैं बल्कि जूनियर आर्टिस्ट हैं। फिल्म में वे सभी पर्दे पर नजर आने वाले हैं। अगर तुम भी पर्दे पर नजर आना चाहती हो तो वहां बैठा देते हैं।"

"ना बाबा...ना।" उसने ऐसे अंदाज में कहा कि सभी हंस पड़े।

"कुछ बताओ तो।" वही बोली–"मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा कि यहां क्या हो रहा है।"
"फिल्म में एक बच्चा है जुबिन। उसकी उम्र बारह साल है। सब उससे बहुत प्यार करते हैं। बोबो भी।"

"बोबो कौन?"

"मैं।" वह हंसा–"एक थी डायन में मेरा नाम बोबो है।"
"ओके।"
"इस सीन में हम जुबिन को उस टेनिस कोर्ट में टेनिस की बॉल से खेलते दिखाएंगे जो रेस्टोरेंट के पीछे नजर आ रहा है।"
"ओह, अच्छा।"

"यह भी दिखाएंगे कि मैं यानी बोबो और उडवाडिया रेस्टोरेंट की एक सीट पर बैठे जुविन के बारे में बातें कर रहे हैं।"
"उडवाडिया कौन?"
"ये भी मूवी का एक करेक्टर है।"
"वे जुविन के बारे में क्या बातें करते हैं?"
"मूवी में दिखाया गया है कि जुविन को मीशा नाम की एक डॉल दीखती है मगर वह किसी और को नहीं दिखती। इस सीन में मैं और उडवाडिया उसी बारे में बातें करेंगे। उडवाडिया जुविन को डॉल नजर आने का थोड़ा मजाक उड़ाएगा मगर मैं फिक्र करूंगा।"

"उसके बाद क्या होगा?"
"बस इस सीन में इतनी ही शूटिंग होगी।"
"इतनी-सी?"
"तुम देखना।" अंगद फिर हंसा—"इतनी-सी शूटिंग में ही घंटों लग सकते हैं। कई बार रिटेक हो सकते हैं। तुम बोर हो सकती हो क्योंकि बार-बार वैसा हो सकता है।"

"क्यूं?"

"होता है। कभी किसी से कोई गलती हो जाती है, कभी किसी से। किसी एक से भी गलती हो जाए तो पूरे सीन की शूटिंग दोबारा करनी पड़ती है। बड़ी मेहनत का काम है।"

"इसमें क्या मेहनत है!"

"अब चुप हो जा मेरी अम्मा वरना कन्नन अय्यर तुझे सेट से बाहर फिकवा देंगे क्योंकि तेरे बोलने से उन्हें डिस्टर्ब होगा।"

"कौन कन्नन अय्यर?"

"वो देख। वो रहे। उधर।" अंगद ने कन्नन अय्यर की तरफ इशारा किया जो इस वक्त ओवर बिजी नजर आ रहे थे। वे सिर पर छज्जे वाली कैप, पैरों में पीटी-शू, स्काई कलर की जींस और लेनिन की सफेद शर्ट पहने हुए थे। उमस भरी गर्मी के कारण कमीज पसीने से तर होकर कई जगह से उनके पतले-दुबले जिस्म से चिपक गई थी मगर इस बात की जरा भी परवाह किए बगैर वे अपनी असिस्टेंट ताहा अनवर को कोई जरूरी बात समझा रहे थे।

"मैं यहां तुम्हारी गेस्ट हूं।" रिम्पी अकड़कर बोली—"वो कौन होते हैं मुझे यहां से उठवाकर फिंकवाने वाले?"

"तुम्हें मालूम है न, डायरेक्टर हीरो से भी बड़ा होता है!"
"हां। ये तो मालूम है।"
"वे एक थी डायन के डायरेक्टर हैं।"

"ओह!" यह शब्द रिम्पी के मुंह से निकला ही था कि कन्नन लपकते हुए से उसी तरफ आए और रिम्पी की तरफ हाथ बढ़ाते हुए बोले—"हैलो बेबी, आय एम कन्नन अय्यर।"

"आई नो...पर अब मैं नहीं बोलूंगी।"
"क्यों?" कन्नन चौंके—"क्यों नहीं बोलोगी?"
"क्योंकि आप डिस्टर्ब होंगे।"

"मैं डिस्टर्ब होऊंगा! बिल्कुल नहीं। तुम्हारे बोलने से बिल्कुल नहीं।" वे हंसे थे—"ऐसा किसने कहा तुमसे?"

"इमरान ने।" उसने अंगद की तरफ इशारा किया।

"क्यों इमरान?" कन्नन ने रिम्पी को खुश करने के लिए इमरान को आंखें दिखाई तो इमरान बोला–"बहुत बोल रही थी सर, पूरी फिल्म की स्टोरी यहीं जान लेना चाहती है।"

"मैंने कब पूरी फिल्म की स्टोरी पूछी!" रिम्पी तुरंत बोली–"बस यही तो कहा था कि इस काम में भला क्या मेहनत है!"

"कोई मेहनत नहीं है बेबी।" कन्नन ने कहा–"तुम बस देखती रहो कि हम कितनी आसानी से काम निपटाते हैं।" कहने के बाद रिम्पी को कुछ भी बोलने का मौका दिए बगैर वे अंगद से बोले–"तुमने अपने डायलाग याद कर लिए?"

"अच्छी तरह।"

"याद रहें, कैमरे की तरफ तुम्हारी पीठ है, इमरान होता तो उसे सामने वाली चेयर पर...।" कहते-कहते कन्नन को याद आ गया कि वे क्या कहने वाले हैं। अचानक रुककर अपनी जीभ दांतों तले दबा ली और रिम्पी की तरफ देखा। उसके चेहरे पर कोई खास रिएक्शन न पाकर राहत की सांस लेते हुए बोले–"हां तो मैं ये कह रहा था कि तुम्हें इधर वाली सीट पर बैठना है ताकि कैमरे की तरफ तुम्हारी पीठ रहे। इस सीन में हमें तुम्हारा नहीं बल्कि उडवाडिया का चेहरा दिखाना है इसलिए वो सामने वाली सीट पर बैठेगा। पीछे की तरफ टेनिस कोर्ट में जुविन खेलता नजर आएगा।"

अंगद ने बस इतना ही कहा–"ओके।"
"पहले एक रिहर्सल हो जाए।"
"मेरी तरफ से तो टेक ही ले लीजिए।"

"चलो।" कहने के बाद वे कैमरे के समीप खड़े सौरभ गोस्वामी की तरफ मुड़ गए और...अंगद फ्लोर की तरफ चला गया।

कुछ देर बाद वह फ्लोर पर मौजूद एक मेज के इस तरफ पड़ी चेयर पर जा बैठा। उसके सामने यानी कैमरे की तरफ फेस करके उडवाडिया बैठ गया। कैमरे के अंदर से झांकते हुए सौरभ ने उसकी चेयर थोड़ी बाईं तरफ सरकवाई क्योंकि अंगद के कंधे से उसके चेहरे का थोड़ा-सा हिस्सा ढक रहा था।

सारी तैयारियां होने के बाद कन्नन के एक असिस्टेंट प्रोसित रॉय ने जोर से कहा–"साइलेंस।"

सेट पर पूरी तरह सन्नाटा छा गया।
"लाइट।" प्रोसित रॉय ने फिर कहा।
लाइटें ऑन हो गईं।
प्रोसित फिर बोला–"कैमरा।"
सन्नाटे में कैमरा चलने की आवाज सुनाई देने लगी।
"साऊंड।" पुनः प्रोसित ने ही कहा।
साऊंड रिकार्डिस्ट ने अपने यंत्र ऑन कर दिए।

एक लड़का कैमरे के सामने नजर आया मगर इस तरह कि वह खुद कैमरे में कैद न हो सके। उसके हाथ में एक क्लेप था। उसने उस क्लेप को ठीक कैमरे के सामने किया जिस पर 'एक थी डायन' 12.12.12, सीन-167 और टेक-1 लिखा हुआ था।

लड़के ने वह सब बोला जो क्लेप पर लिखा था और जोर से क्लेप देकर तेजी से एक तरफ को हट गया।

दृश्य शूट होना शुरु हो गया था।

जुबिन पीछे टेनिस की बॉल से खेलता नजर आ रहा था।

उडवाडिया ने अंगद की तरफ देखते हुए कहा—"मेरे घर के बगल वाली गली में एक बाबा रहता है। बाबा बंगाली। उससे समय लेना था।"

अंगद चुपचाप बैठा रहा।

उडवाडिया अचानक जोर से हंसता हुआ कहता है—"भूत-प्रेत, चुड़ैलों का तसल्लीबख्श इलाज करने वाले महान तांत्रिक।"

अंगद कोर्ट में खेल रहे जुबिन की तरफ इशारा करता हुआ बोला—"इसे मीशा सिर्फ सुनाई ही नहीं, दिखाई भी दे रही है। ये भी अफसाने बुन रहा है मेरी तरह।"

उडवाडिया बोला—"बिल्कुल। वह तुम्हारी उम्र का है।"
अंगद ने कहा—"मैं 32 का हूं।"
उडवाडिया फिर बोला—"तुम्हारी चुड़ैल उम्र। तुम भी 11 वर्ष के थे न, जब ये डायन तुम्हारी जिंदगी में आई थी।"

"नो...नो...कट्।" अचानक कन्नन कह उठा—"सब गड़बड़ हो गया। जुबिन, तुम्हें बॉल इस तरफ मारनी चाहिए थी क्योंकि जिस वक्त उडवाडिया ये डायलाग बोल रहा है उस वक्त बॉल वहां से आकर इसके पैर पर लगनी चाहिए।"

टेनिस कोर्ट में खड़े जुबिन ने वहीं से कहा—"सॉरी सर।"

"फिर करते हैं।" कन्नन ने ऐसा कहा ही था कि कोई चीखता सा बोला—"इमरान साहब आ गए...इमरान साहब आ गए।"

सबका ध्यान भंग हो गया। चौंककर आवाज की दिशा में देखा और फिर पब्लिक में खलबली-सी मच गई। सबके मुंह से निकलने लगा था—"इमरान...इमरान...इमरान।"

रिम्पी ने भी उधर देखा था।

अंगद फ्लोर से दौड़ता हुआ इधर आया। नंदिनी ने रिम्पी और इमरान हाशमी के बीच आने की कोशिश की थी ताकि वह इमरान को न देख सके लेकिन रिम्पी कुर्सी से खड़ी हो चुकी थी।

किसी ने यह भी कह दिया—"कनाडा से कब आए इमरान?"

"एयरपोर्ट से सीधा यहीं आ रहा हूं।" कहता हुआ इमरान हाशमी कैमरे के करीब आ गया था।

सबने खूब कोशिश की कि रिम्पी इमरान को न देख सके मगर वह देख चुकी थी और उसकी आंखों में आश्चर्य के भाव थे।

पब्लिक को तो खैर कुछ पता नहीं था लेकिन यूनिट के सभी लोग बौखलाए हुए थे। इमरान हाशमी ने कन्नन के करीब पहुंचकर हाथ आगे बढ़ते हुए कहा—"हैलो सर।"

"त-तुम कब आए अंगद?" हड़बड़ाए हुए कन्नन बोले।
इमरान हाशमी चकराया—"अ-अंगद?"

"ह-हां।" अंगद जल्दी से बोला—"त-तुम अंगद ही तो हो! मेरे डुप्लिकेट। कब आए कनाडा से?" यह सब कहने के साथ वह बार बार आंखों से रिम्पी की तरफ इशारा करता हुआ उसे समझाने की चेष्टा कर रहा था मगर इमरान की समझ में

कुछ नहीं आया। उसने कहा—"अबे पागल हो गया है क्या? अंगद तू है या मैं?"

"त-तू। तू है अंगद।" बुरी तरह बौखलाया हुआ वह अब भी इमरान को समझाने की कोशिश कर रहा था—"पब्लिक तो साली पागल है जो तुझे इमरान समझ रही है। इमरान तो मैं हूं।"

क्योंकि सबके द्वारा बार-बार रिम्पी की तरफ इशारा किया जा रहा था इसलिए इमरान ने उस रिम्पी की तरफ देखा जो आंखें फाड़े उसी को देख रही थी और फिर...पलक झपकते ही उसे याद आ गया कि कनाडा जाने से पहले क्या प्रपंच रचा गया था। वह समझ गया कि यही लड़की रिम्पी होगी। जल्दी से अंगद की तरफ देखता हुआ बोला—"माफ करना इमरान, पब्लिक ने मुझे इमरान समझा तो सोचा—क्यों न कुछ देर के लिए मजाक ही कर लिया जाए!"

"व-वही तो...वही तो मैं कहूं कि आज तुझे हो क्या गया है?" अंगद खिसियानी हंसी हंसता हुआ कहता चला गया—"मुझसे थोड़ी शक्ल क्या मिलती है खुद को इमरान हाशमी ही समझने लगा!"

"सॉरी सर।" उसने कहा।

"रिम्पी।" अंगद ने झुककर रिम्पी से कहा—"इससे मिलो, ये मेरा डुप्लिकेट है। अंगद है इसका नाम। तुमने तो सुना ही होगा, सब आर्टिस्टों के डुप्लिकेट होते हैं।"

रिम्पी की आंखें डबडबाई हुई थीं, वह एकदम फट पड़ी—"चीट किया है। तुमने मुझे चीट किया है।"

"नहीं रिम्पी मैं सच कहता हूं। मैं इमरान हूं और ये अंगद।"

"झूठ!" उसने बहुत जोर से कहा—"तुम अब भी झूठ बोल रहे हो। क्योंकि इमरान के चेहरे पर ये निशान नहीं है।" कहने के साथ उसने उसके होठों के नीचे मौजूद चोट के उस छोटे से निशान की तरफ इशारा किया जो उसे इमरान से अलग करता था।

अब...किसी के पास कहने के लिए कुछ नहीं था।
सब सन्न रह गए थे।

या अगर यूं कहा जाए तब भी गलत न होगा कि सब उस छोटी सी लड़की से हार गए थे। वह तेजी से पैर पटकती हुई एक तरफ को दौड़ी। अंगद दौड़ता हुआ आगे निकला और जमीन पर बैठकर उसका रास्ता रोकता हुआ बोला—"सॉरी रिम्पी, माफ कर दे मुझे। ये सब हमें मजबूरी में करना पड़ा।"

"रास्ते से हटो।" वह चिल्लाई।

"जिस दिन तेरे पापा तेरी जिद पर इमरान को लेने फिल्म सिटी पहुंचे, उसी दिन इमरान का कनाडा जाना जरूरी था। तेरे पापा कहने लगे—रिम्पी की जिद है कि उसके बर्थडे में इमरान जरूर होना चाहिए। तब फैसला हुआ कि...

"मुझे कुछ नहीं सुनना।"
"खुद इमरान भी इस फैसले में शामिल था। तू पूछ सकती.."अंगद ठीक कह रहा है रिम्पी।" तब तक वहां पहुंच चुका इमरान भी जमीन पर बैठ चुका था—"उस दिन मेरा कनाडा जाना जरूरी था। इसीलिए अंगद को भेजना पड़ा।"

रिम्पी गुस्से से नथुने फुलाती दोनों को घूरती रही।

"मैं इमरान न सही रिम्पी लेकिन तेरा मामा हूं।" अंगद की आंखें भर आई थीं—"जानती है न मामा कौन होता है! मैं तेरी मम्मी का भाई हूं। सुकन्या मेरी दीदी थी।"

"फिर चीटिंग।" वह चिल्लाई—"मम्मी ने तो कहा था कि उनके भाई का नाम सुजान है।"

हां रिम्पी। मैं ही सुजान हूं।" अंगद रो पड़ा—"जब मैं छोटा था तो मेरा ही नाम सुजान था।"

"झूठ...झूठ...तुम फिर झूठ बोल रहे हो।"

"ये सच है रिम्पी, मैं प्रूव कर सकता हूं।"

"तो करो।"

अंगद रिम्पी को तरूणा, महकार और नंदिनी के साथ लिए सीधा अपने फ्लैट पर पहुंचा था मगर उनमें से कोई नहीं जानता था कि उनके साथ सुकन्या की आत्मा भी थी।

अंगद के माता-पिता यानी मोहित बनर्जी और गंगोत्री पर नजर पड़ते ही रिम्पी की बड़ी-बड़ी आंखें सुकड़ती चली गईं।

उसके मासूम चेहरे पर आश्चर्य के भाव उभर आए और वो कह उठी थी—"अ-आप तो मेरे नानू और नानी हैं।"

"न-नानू और नानी!" अधेड़ मोहित और गंगोत्री के मुंह से ये शब्द निकले। फिर, गंगोत्री रोती-सी बोली—"कौन है री तू?"

"ये रिम्पी है मां।" अंगद ने कहा—"सुकन्या दीदी की बेटी।"
"स-सुकन्या की बेटी! तू सच कह रहा है?"
"हां मां। ये दीदी की ही बेटी है।"
"तुझे कहां मिल गई?"
"बस मां...किस्मत ले गई दीदी के घर।"

"ल-लेकिन...लेकिन।" इन शब्दों के साथ गंगोत्री ने मोहित की तरफ देखा था। शायद वह यह जानना चाहती थी कि सुकन्या का नाम सुनकर उनकी क्या प्रतिक्रिया है। डरा-सहमा-सा अंगद भी इसी तलाश में अपने पिता के चेहरे को देख रहा था।

मोहित के जबड़े कसे हुए थे।

सख्त लहजे में अंगद से बोले—"क्यों गया वहां? वो मिल भी गई थी तो क्यों मिला उससे? मैंने कहा था न, वो हमारे लिए...

"वो सचमुच मर गई हैं पापा।" अंगद ने उसकी बात काटकर कहा—"दीदी अब सचमुच इस दुनिया में नहीं हैं।"

"क-क्या कहा? सचमुच मर गई वो!" मोहित बनर्जी को जैसे अपनी जिंदगी का सबसे गहरा आघात लगा। सारा शरीर कांप गया उनका। चेहरा बिगड़ गया। आंसू उमड़ आए और मुंह से रोते हुए शब्द निकल पड़े—"सचमुच इस दुनिया में नहीं रही मेरी बेटी?"

"हां पापा, वो हम सबको छोड़कर चली गईं।"

"कैसे? कैसे एक बाप की बद्दुआ लग गई उसे!" कहने के साथ वे वहीं बैठ गए जहां खड़े थे और फूट-फूटकर रोने लगे।

"पापा...पापा।" रोते हुए अंगद ने उन्हें अपनी बांहों में भर लिया मगर सुकन्या की उस आत्मा को कोई नहीं देख सका

था जो उन सबसे बुरी तरह रो रही थी और अपने पापा की आंखों से आंसू पोंछने की कोशिश कर रही थी।

"बेटियों को बाप की दुआएं तो लगती हैं मगर बद्दुआएं नहीं लगतीं। फिर मेरी बेटी को मेरी बद्दुआ कैसे लग गई?" रो-रोकर कहने के साथ वे बार-बार अपना सिर दीवार पर मारने लगे। अंगद और सुकन्या की आत्मा उन्हें रोकने की कोशिश कर रहे थे। आत्मा तो बेचारी कामयाब न हो सकी लेकिन रोते हुए अंगद ने जरूर उन्हें कसकर अपनी बांहों में भर लिया था।

गायत्री भी बुरी तरह रो रही थी।
महकार, तरूणा और नंदिनी की आंखों में भी आंसू थे।

बस रिम्पी थी जिसके चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे समझ न पा रही हो कि वे सब क्यों रो रहे थे। वह गंगोत्री के करीब पहुंचकर बोली—"तुम रो क्यों रही हो नानी?"

और...गंगोत्री ने उसे अपनी भुजाओं में भरकर कलेजे में भींच लिया। जबकि रिम्पी बोली—"जब मैंने मम्मी से पूछा था कि आप, नानू और मामा मुझसे कभी मिलते क्यों नहीं तो मम्मी ने कहा था कि आप सब उनसे नाराज हैं। आप नाराज क्यों थीं नानी?"

"हम उससे नहीं बल्कि हमारी किस्मत हमसे नाराज थी बेटा।" गंगोत्री फफक पड़ी—"हमारी किस्मत हमसे नाराज थी।"

"पर रिम्पी।" महकार बोला—"तूने यहां आते ही इन्हें पहचान कैसे लिया? तुझे पता कैसे लगा कि ये तेरे नानू और नानी हैं?"

"मम्मी ने मुझे एक फोटो दिखाया था। उसमें नानू, नानी, मम्मी और छोटे से मामा थे। उन्होंने बताया था मामा का नाम सुजान है।"

महकार समझ गया कि सुकन्या ने रिम्पी को वह फोटो दिखाया होगा जिसे उस रात घर से अपने साथ लेकर आई थी।

गंगोत्री पागलों की तरह रिम्पी को चूमे चली जा रही थी और रोए चली जा रही थी। उस दृश्य को देखकर सुकन्या की आत्मा को बहुत राहत मिली थी। उसके आंसू सूखते चले गए।

रिम्पी की जिम्मेदारी उन सब पर छोड़कर अंगद चंडिकामृत के आश्रम में आ गया था। चंडिकामृत ने बगैर देर किए सबसे पहले उसे परकाया प्रवेश के बारे में बताया।

महाराज चंडिकामृत के परकाया प्रवेश को देखकर अंगद की आंखों में आश्चर्य का सागर उमड़ आया था।

वह वैसा ही परकाया प्रवेश था जैसा कुछ दिन पहले चंडिकामृत के पंचामृत जैसे शिष्यों ने देखा था।

अर्थात् उसने चंडिकामृत के असली जिस्म को लाश की मानिंद लुढ़कते और उस महिला के जिस्म को उठकर बैठते देखा था जो कुछ ही क्षण पहले एक लाश से ज्यादा कुछ भी नहीं थी।

जिस आवाज को कुछ देर पहले वह महाराज चंडिकामृत के मुंह से निकलते देख और सुन रहा था, वही आवाज अब उस महिला के मुंह से निकल रही थी परंतु जो आंखों ने देखा, उस पर उसे विश्वास आकर नहीं दे रहा था। इसीलिए बोला—"यह कैसे संभव है?"

"सबसे पहले अपने दिमाग में इस बात को अच्छी तरह बैठा लो कि यह कोई चमत्कार नहीं है।" महिला के मुंह से चंडिकामृत की धीर-गंभीर आवाज निकली—"कपाली जैसे दुष्ट लोग इसे चमत्कार बताकर भोले-भाले लोगों को ठगते ही

नहीं हैं बल्कि इसका दुरुपयोग भी करते हैं परंतु वास्तव में यह एक विशुद्ध वैज्ञानिक प्रक्रिया है जो मानव जाति के कल्याण हेतु बनाई गई है।"

"वैज्ञानिक प्रक्रिया?"
"साईंस तुमने जरूर पढ़ी होगी।"
मंत्र-मुग्ध अंगद कह उठा–"पढ़ी है।"

"वैज्ञानिकों ने अनेक इलैक्ट्रानिक उपकरण बनाए हैं, तुम भी इस सिद्धांत को मानते होगे कि कोई भी इलैक्ट्रानिक उपकरण एक विशेष पावर सर्किट के बगैर काम नहीं कर सकता, मानते हो न?"

"यह शास्वत सत्य है।"
"तो इस शास्वत सत्य को वैज्ञानिक लोग अपने शरीर पर लागू करना क्यों भूल गए?"
"मैं समझा नहीं महाराज।"
"बगैर पावर सर्किट के शरीर ही कैसे काम कर सकता है?"
"मतलब?"
"जो हम बताने जा रहे हैं, वह सब ऋग्वेद में लिखा है।"
"ऋग्वेद में?"

"साइंस से भरा पड़ा है ये ग्रंथ।"
"दुर्भाग्य से मैंने नहीं पढ़ा।"

"सचमुच, ये हमारा दुर्भाग्य ही है कि हम अपनी नई पीढ़ी को वे ग्रंथ नहीं पढ़ा रहे जिन्हें ज्ञान का भंडार कहा जाए तो जरा भी गलत न होगा। इंसीलिए यह पीढ़ी अज्ञानी है।"

"ऋग्वेद क्या कहता है महाराज?"

"दरअसल ऋग्वेद में वर्णित विज्ञान के मुताबिक शरीर भी एक इलैक्ट्रानिक उपकरण है और यह भी एक विशेष पावर सर्किट के अभाव में काम नहीं कर सकता। हमारे प्राचीन विज्ञान में शरीर के पावर सर्किट का विस्तृत ब्यौरा मिलता है। हमारे पास एक नहीं बल्कि दो शरीर हैं। पहला वह, जो आंखों से नजर आता है। उसे स्थूल शरीर कहते हैं। दूसरा वह, जो नजर नहीं आता। उसे सूक्ष्म शरीर कहते हैं। जिस पावर सर्किट के कारण स्थूल शरीर क्रियाशील है, वास्तव में वह हमारे सूक्ष्म शरीर में सक्रिय है। सूक्ष्म शरीर में जो ऊर्जा बह रही है उसका स्रोत, पावर स्टेशन अथवा ट्रांसफारमर हमारी भृकुटियों के बीच में स्थित है। जिस क्षण ये पावर स्टेशन या ट्रांसफारमर सूक्ष्म शरीर में ऊर्जा प्रवाहित करनी बंद कर देगा उस क्षण ठीक उसी तरह हमारे शरीर के अंदर भी अंधेरा छा जाएगा जैसे ट्रांसफारमर में गड़बड़ी होने पर लाईट गुल हो जाती है। इस घटना को आम बोलचाल की भाषा में 'मृत्यु होना' कहा जाता है। हमारे पास बिजली के ट्रांसफारमर को सुधारने वाले इंजीनियर्स हैं लेकिन शरीर के ट्रांसफारमर को सुधारने का ज्ञान रखने वाले नहीं हैं। जिस दिन ऐसे इंजीनियर्स पैदा हो गए, जो प्राचीन विज्ञान के ज्ञान से ही हो सकते हैं, उस दिन के बाद कोई जीव मरेगा नहीं। उधर उसकी भृकुटियों के बीच रखे टन्रांसफारमर में खराबी आई इधर इंजीनियर ने दुरुस्त की और प्राणी पुनः इस तरह उठ खड़ा होगा जैसे विद्युत के अभाव में रुक चुका पंखा, विद्युत आने पर चल पड़ा हो।"

"अ-आप कमाल की थ्योरी प्रस्तुत कर रहे हैं महाराज।"

"तड़ित चालक का नाम सुना है?"

"तड़ित चालक!" अंगद ने कहा----"जी हां, वही न जो बड़ी बड़ी इमारतों के शीर्ष पर लगा रहता है?"

"हां वही, लोहे की राड जैसा।" चंडिकामृत ने पूछा----"क्या तुम बता सकते हो वह क्यों लगा रहता है, काम क्या है उसका?"

"जिस इमारत पर वह लगा हो, वादलीय विजली उसे कभी कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकती।"

"क्यों?"

"क्योंकि वह बादलों से टूटकर गिरी विजली को खींचकर जमीन के अंदर पहुंचा देता है।"

"ठीक इसी तरह, भृकुटियों के बीच केंद्रित ट्रांसफारमर ब्रह्मांड से ऊर्जा खींचकर अपने पावर सर्किट में प्रवाहित करता है और सभी सर्किटों से गुजरती यह ऊर्जा पैरों के रास्ते धरती में समा जाती है। ऊर्जा का मुख्य मार्ग रीढ़ क्री हड्डी होता है यानी रीढ़ की हड्डी के अंदर ऊर्जा ऊपर से नीचे की तरफ सतत प्रवाहित रहती है और रीढ़ की हड्डी का निचला प्वाइंट इस ऊर्जा को विकरित करता है।"

"लेकिन इस संरचना का उस क्रिया से क्या संवंध महाराज जो अभी-अभी अपने दिखाई?"

"तुमने जरूर देखा होगा, जब हम एक शरीर से निकलने के लिए समाधिलीन होते हैं तो रीढ़ की हड्डी पर बैठे नजर आते हैं। सबसे पहले हम अपने चित्त को एकाग्र करके रीढ़ की हड्डी के निचले प्वाइंट पर केंद्रित करते हैं। उसके बाद वलपूर्वक सोचते हैं कि हमारी रीढ़ की हड्डी के अंदर ऊर्जा प्रवाहन ऊपर से नीचे की तरफ नहीं वल्कि नीचे से ऊपर की तरफ हो रहा है। धीरे-धीरे यह प्रवाहन सचमुच हमारी सोच से प्रभावित होकर विपरीत दिशा में होने लगता है। यानी नीचे से ऊपर की तरफ।"

हैरान अंगद ने पूछा----"केवल सोचने मात्र से ऐसा कैसे हो सकता है महाराज?"

"कभी-कभी तुमने देखा होगा कि जो तुमने सोचा, वो ही गया। इससे संकेत मिलता है कि सोच में शक्ति होती है मगर हम उसका सदुपयोग करना नहीं जानते। यह हकीकत है अंगद कि हमारी सोच हम पर सबसे बड़ा ऊर्जा केंद्र है।"

"वात समझ में नहीं आई महाराज।"

"यकीन रखो अंगद, हमेशा और हर हाल में वही होगा जो तुम एकाग्रचित्त होकर सोचोगे और चाहोगे। उसके विपरीत कुछ हो ही नहीं सकता, जरूरत अपनी सोच की शक्ति को जागृत करने की है। पहले सोच की शक्ति को जागृत करो फिर उसे विकसित करो...और विकसित करो–जितनी विकसित करोगे उतने ही ऐसे कार्य करने में सफल होगे जिन्हें साधारण लोग चमत्कार कहते हैं।"

"सोच की शक्ति को जागृत करने और उसे विकसित करने की प्रक्रिया क्या है महाराज?"

"केवल धैर्य के धनी ही उसे कर पाते हैं।"

"आप बताइए।" अंगद के लहजे में अजीब-सा जुनून था–"मैं अपनी भांजी को बचाने और वहन की मौत का बदला लेने के लिए सब कुछ कर सकता हूं।"

"सबसे पहले तो वह जुनून ही चाहिए जो हम तुम्हारे अंदर देख रहे हैं। इसलिए सुनो।" महिला के मुंह से महाराज चंडिकामृत कहते चले गए–"मैं परकाया प्रवेश की क्रिया तक पहुंचने का मार्ग बताता हूं–जो तुम्हें आज चमत्कारी और असंभव लग रहा है, चाहो तो वही कार्य एक दिन तुम खुद कर सकते हो क्योंकि न तो यह कोई सिद्धि है और न ही कोई मंत्र जपना पड़ता है। यह विशुद्ध रूप से वैज्ञानिक प्रक्रिया है। सोच में शक्ति भरने के लिए सबसे पहले मन को एकाग्र करने का अभ्यास करना होगा।"

"कैसे?"

"पद्मासन की मुद्रा में बैठो–अपने सामने वाली दीवार पर एक 'बिंदी' चिपका लो और ध्यान को हर तरफ से हटाकर केवल बिंदी पर केंद्रित कर लो–यह काम उतना आसान नहीं है जितना हमारे बताने से लग रहा है, मन बार-बार ध्यान को बिंदी से भटका कर अन्यत्र ले जाएगा मगर तुम्हें उसे पुनः बिंदी पर लाना है–यूं समझो कि अपने मन से युद्ध लड़ना है तुम्हें और अपने मन को परास्त कर डालना इस दुनिया का सबसे कठिन कार्य है। वह तुम्हें परास्त करने का पूरा प्रयत्न करेगा और तुम्हें उसे परास्त करने के लिए संपूर्ण आत्मिक शक्ति का प्रयोग करना है। शुरु में दिक्कतें आएंगी लेकिन अगर तुमने वास्तव में ध्यान लगाना चाहा है तो एक दिन निश्चय ही विजय होगी अर्थात् ध्यान को चारों तरफ से हटाकर जितनी देर तक चाहो बिंदी पर केंद्रित कर सकोगे।"

"उसके बाद?"

"मजबूती के साथ यह सोचना शुरु करो कि तुम्हें उस बिंदी के अलावा कुछ दिखाई नहीं दे रहा–रोज अभ्यास करो, तब तक करते रहो जब तक सचमुच बिंदी और केवल बिंदी ही नजर न आने लगे। यह आर्ट अर्जुन के पास थी। तभी तो उसे मछली भी नहीं बल्कि सिर्फ और सिर्फ उसकी आंख नजर आ रही थी। यकीन रखो, निश्चय ही एक दिन ऐसा आएगा जब तुम्हें बिंदी के अलावा कुछ नजर न आ रहा होगा–इस क्रिया में पारंगत होने के बाद दीवार से बिंदी हटा लो–अब उसी मुद्रा में बैठकर अपनी नाक की नोंक को देखो–ऐसा करने पर मस्तक के त्राटक बिंदु पर जोर पड़ेगा–आंखें स्वतः बंद होती चली जाएंगी–ध्यान को भृकुटियों के बीच केंद्रित रखो, बंद आंखों के समक्ष अंधकार हो जाएगा–अब यह सोचो कि उस अंधेरे में तुम्हें रोशनी का एक हल्का-सा बिंदु नजर आ रहा है। शुरु में केवल सोचकर रह जाओगे बिंदु नजर नहीं आएगा परंतु उचित अभ्यास के उपरान्त निश्चय ही तुम्हारा सोचा हुआ बिंदु प्रकट होगा मगर वह स्थिर नहीं होगा। कभी अंधेरे पर्दे के दाएं नजर आएगा कभी बाएं, कभी ऊपर तो कभी नीचे। कभी चमकने लगेगा, कभी गायब हो जाएगा–तुम्हें निरंतर अभ्यास से उसे स्थिर करना है। जब स्थिर हो जाए तो उसके बड़े होने की कल्पना करो----सतत अभ्यास से वह बड़ा होता चला जाएगा और एक दिन पाओगे कि संपूर्ण अंधेरा पर्दा रोशनी के पर्दे में बदल गया है। इतने अभ्यास के बाद सामान्य अवस्था में भी जब तुम आंखें बंद करोगे तो अंधेरे के स्थान पर रोशनी नजर आएगी। दिव्य रोशनी। संसार में अब तक तुमने जितनी रोशनी देखी हैं उन सबसे ज्यादा चमकदार रोशनी। यह रोशनी तुम्हारे अंर्तमन को बहुत सुकून पहुंचाएगी।"

"क्या ऐसा सचमुच होगा महाराज?"

"दृढ़ इच्छा-शक्ति के साथ धैर्यपूर्वक यह सब करके देखो, निःसंदेह होगा।" महिला रूपी चंडिकामृत कहते चले गए–"अब रोशनी के पर्दे पर उससे ज्यादा रोशनी वाले बिंदु को तलाशने की इच्छा करो। कुछ दिन बाद वह भी साफ नजर आने लगेगा, उसे भी स्थिर करने के बाद बड़ा करते चले जाओ, जब वह पूरे पर्दे पर फैल जाए तो उससे तेज रोशनी वाले बिंदु की कल्पना करो----इस तरह, रोशनी के सातवें पर्दे तक पहुंचो।"

"बड़ी लंबी प्रक्रिया है महाराज?"

"तो क्या तुम यह सोच रहे थे कि बटन दबाते ही शरीर बदल डालने का चमत्कार किया जा सकता है!"

"मेरे सामने एक घटना ऐसी भी है महाराज जिसमें ऐसे किसी भी प्रयत्न के बगैर पलक झपकते ही शरीर बदल गया।"

"तुम काले खां की बात कर रहे हो!"
"अ-आपको कैसे पता?" अंगद को आश्चर्य हुआ था।
महिला के गुलाबी होठों पर मुस्कान दौड़ी–"तुम्हें उसके बारे में नंदिनी ने बताया मगर हमें हवाओं ने बता दिया।"
"ह-हवाओं ने?"

"वेशक। हवाएं हमसे वातें करती हैं मगर उस सवके वारे में वताने लगे तो भटक जाएंगे इसलिए इस वक्त सिर्फ इतना सुनो कि काले खां की आत्मा उसके अपने प्रयत्न से आनंद के जिस्म में नहीं पहुंची वल्कि ऐसा कपाली ने किया है।"

"उसने ऐसा क्यों किया?"

"वड़ी जिद्दी और अहंकारी है वो। काले खां सुपर नैचुरल पावर्स को स्वीकार करने के लिए तैयार ही नहीं था। वह भी जिद पर अड़ गई कि उसे अपनी ताकत का एहसास कराकर ही दम लेगी। इसीलिए उसने उसकी आत्मा को उसके शरीर से निकालकर आनंद के शरीर में डाल दिया मगर आत्मा के इस तरह किसी दूसरे शरीर में पहुंचने और परकाया प्रवेश में जमीन आसमान का अंतर है। जो शक्तियां तुम परकाया प्रवेश के माध्यम से प्राप्त करोगे, वे शक्तियां काले खां को कभी नहीं मिल सकतीं। वो तो दया का पात्र है जवकि तुम एक खास शक्ति के प्रतीक होगे। इसमें शक नहीं कि प्रक्रिया लंवी और जटिल है परंतु एकाग्रता पूर्वक की जाए तो सफलता अर्जित करने में अधिक समय नहीं लगता। जितनी मेहनत करोगे, उतना जल्दी फल पाओगे।"

"खैर...उसके वाद।"

"अव तुम ध्यान को केंद्रित करने की विद्या में पारंगत हो गए हो अतः पद्मासन की मुद्रा में बैठकर उसे सूक्ष्म शरीर पर केंद्रित करो। विश्वास रखो, तुम्हारे स्थूल शरीर के भीतर एक सूक्ष्म शरीर है। निरंतर अभ्यास से तुम्हें सूक्ष्म शरीर की अनुभूति होनी शुरु हो जाएगी-धीरे-धीरे उसे स्पष्ट देखने लगोगे, साथ ही नजर आएगा सूक्ष्म शरीर में फैला ऊर्जा का वह पॉवर सर्किट जिसका जिक्र हमने शुरु में किया था, अव तुम्हें उस विंदु को तलाश करना है जहां पावर सर्किट आत्मा से जुड़ा है। अपने संपूर्ण आत्म-वल को इकट्ठा और संचित रखो, सूक्ष्म शरीर को मानसिक आदेश देना शुरु करो। आत्मिक वल के वल पर सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर से अलग होने का आदेश दो, ध्यान आत्मा से जुड़े प्वाइंट पर केंद्रित करो, मानसिक श्रम के जरिए सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर से वाहर निकालने का प्रयास करो। इस प्रयास में तुम आसानी से कामयाव नहीं होगे। पर जुटे रहो, धैर्य और आत्म-विश्वास को मत डिगने दो-सफलता मिलने का विश्वास रखने पर, सफलता जरूर मिलती है-जव रीढ़ की हड्डी के अंदर प्रवाहित ऊर्जा सर्किट को नीचे से ऊपर यानी विपरीत दिशा में मोड़ने में सफल हो जाओगे तो सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर से वाहर निकालने में भी कामयावी मिल जाएगी और सूक्ष्म शरीर के साथ तुम खुद भी स्थूल शरीर से वाहर आ जाओगे। उस वक्त तुम्हारा शरीर हरेक की नजर में केवल एक लाश होगा।"

"लेकिन।" हैरत में डूवे अंगद ने पूछा----"दूसरे शरीर में कैसे प्रविष्ट हुआ जा सकता है?"

"सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर से अलग कर लेने की विद्या में पारंगत होने के दरम्यान तुम्हें शरीर के संपूर्ण पावर सर्किट का ज्ञान हो जाएगा।" चंडिकामृत कहते चले गए-"तुम्हें मालूम होगा कि सूक्ष्म शरीर को किस तरह और किस मार्ग से वाहर निकालना और उसमें प्रवेश कराना है, शुरु में इस प्रक्रिया का अभ्यास अपने स्थूल शरीर पर करो यानी वार-वार अपने सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर से वाहर निकालो और प्रवेश कराओ। सिद्ध-हस्त होने के वाद किसी भी निर्जीव परंतु स्वस्थ शरीर में प्रवेश किया जा सकता है।"

"काफी लंवी साधना के वाद संभव है ये।" अंगद कह उठा।
"पर असंभव नहीं है।" वे मुस्कराए----"यह तो मान गए न?"
"जिस ढंग से आपने समझाया, उसके वाद न मानने का प्रश्न ही नहीं उठता मगर...
"मगर?"

"क्या कोई तांत्रिक अपने स्थान पर वैठा, मीलों दूर मौजूद किसी अन्य शख्स को मार सकता है?" पूछते वक्त अंगद के जेहन में अखिल की मृत्यु थी।

चंडिकामृत ने एक ही शब्द कहा-"यकीनन।"

"ऐसा कैसे संभव है?"

"विस्तार में गए तो बात पुनः गूढ़ और लंबी हो जाएगी, संक्षेप में यूं समझो कि तुमने विज्ञान नहीं पढ़ा। न ही टीवी नामक किसी वस्तु को जानते हो और यह कहा जाए कि तुम घर बैठे मीलों दूर की न केवल आवाज सुन सकते हो बल्कि वहां के दृश्यों को भी देख सकते हो तो यकीन कर लोगे या ऊंचे दर्जे की गप्प मानोगे?"

"गप्प।"
"मगर तुम्हें मालूम है कि ऐसा हो सकता है क्योंकि तुमने विज्ञान पढ़ा है, टीवी देखा है।"
"बात तो ठीक है।"

"यही फर्क है।" चंडिकामृत ने कहा----"विज्ञान तुमने पढ़ा है, उसके आधार पर बनाई गई चीजों को देख और भोग रहे हो इसलिए न वे असंभव लगती हैं, न चमत्कारी परंतु प्राचीन विज्ञान की तुम्हें शिक्षा नहीं दी गई इसलिये उसके जरिए जो किया जा सकता है, वह असंभव और चमत्कारी लगता है। जबकि हकीकत ये है कि जो विज्ञान तुमने पढ़ा है वह प्राचीन विज्ञान से बहुत पीछे है। उदाहरण के लिए परकाया प्रवेश वाली विधि काफी है। विज्ञान के मुताबिक अभी यह संभव नहीं है। जहां तक तुम्हारे सवाल के जवाब का प्रश्न है, तो फिलहाल इतना ही कह सकते हैं कि प्राचीन विज्ञान में अनेक अनुष्ठानों का विस्तृत ब्यौरा है। 'मारण अनुष्ठान' तक उपलब्ध है अर्थात् जिसके जरिए यहीं बैठे-बैठे मीलों दूर मौजूद व्यक्ति को मारा जा सके। कपाली और कपालतंत्र जैसे लोग इन्हीं कामों को तांत्रिक क्रियाओं से करते हैं। उनके इरादे और तरीके वीभत्स होते हैं।"

"अगर बुरा न मानें महाराज तो एक बात कहूं?"
"आज अपनी सारी शंकाओं का समाधान कर लो।"
"ये कैसा विज्ञान है जो एक आदमी को दूसरे आदमी की हत्या करने का ज्ञान देता है?"
"रिवाल्वर, गोली, तोप और बम किसने दिए?" चंडिकामृत कह उठे–"तुम्हारे विज्ञान ही ने न?"
"जी।"
"और इनसे होता क्या है, दूसरे आदमी का संहार ही न?"
अंगद लाजवाब हो गया।

"यानी हर ज्ञान-विज्ञान संहार की शिक्षा देता है। वास्तव में ज्ञान सद्-पुरुषों की रक्षा और दुर्जनों का संहार करने के लिए बना है लेकिन जब वही ज्ञान कपाली और कपालतंत्र जैसे दुर्जनों के हाथ लग जाता है तो उससे सद्-पुरुषों को नुकसान पहुंचने लगते हैं।"

"क्या मैं परकाया प्रवेश के लाभ जान सकता हूं?"

"सबसे पहला लाभ–तुम्हारा स्थूल यानी भौतिक शरीर यहीं बैठा रहेगा जबकि सूक्ष्म शरीर को बगैर किसी अन्य शरीर में प्रवेश कराए, पलक झपकते ही, ठीक इस तरह हजारों किलोमीटर दूर पहुंचा सकोगे जैसे टीवी पर चित्र घर-घर में पहुंच जाते हैं। उस सूक्ष्म शरीर को न तलवार से काटा जा सकता है न गोली से उड़ाया जा सकता है। न पानी से भिगोया जा सकता है, न आग से जलाया जा सकता है और न ही हवा से उड़ाया जा सकता है जबकि तुम उससे वह हर काम ले सकते हो जो भौतिक शरीर से लेते हो बल्कि उससे बहुत-बहुत ज्यादा और आश्चर्यजनक। जब तुम चाहोगे, तुम्हारा शरीर सामने वाले को चमकेगा, जब नहीं चाहोगे तो नहीं चमकेगा यानी तुममें अदृश्य होने की शक्ति आ जाएगी। ऐसी अद्भुत शक्तियों के बगैर कपाली जैसी राक्षसी से पार नहीं पाया जा सकता क्योंकि वो स्वयं भी ऐसी शक्तियों की मालकिन है।"

"तो मुझे जल्द से जल्द इस विद्या में पारंगत कीजिए महाराज।" अंगद के जबड़े इस कल्पना मात्र से भिंच गए थे कि उसे अपनी दीदी की मौत का बदला लेना है।

चंडिकामृत की आवाज में औरत ने कहा—"उसमें हमें कुछ नहीं करना है। करना सब कुछ तुम्हें ही है। हमने तो केवल रास्ता वता दिया है। जितनी लग्न से करोगे उतनी जल्दी पारंगत हो जाओगे। हां, हम तुम्हें एक चीजें और देना चाहेंगे।"

"वो क्या महाराज?"

"ये लो।" कहने के साथ उसने मुट्ठी बंद करके उसी तरह हाथ उसकी तरफ बढ़ाया जैसे महामृत्युन्जय देते वक्त बढ़ाया था।

अंगद ने हाथ आगे किया।

महिला की मुट्ठी खुली। एक कागज अंगद के हाथ पर गिर गया। अंगद ने खोला। उस पर लिखा था—

काले खां और राजपाल को नंदिनी के ही नहीं, महकार के फ्लैट पर भी ताला लटका मिला था।

उन्होंने पड़ोसियों और सिक्योरिटी गार्ड से पूछताछ की मगर कोई न बता सका कि वे कहां गए हैं।

नंदिनी का मोबाइल नंबर भी ट्राई किया मगर, वह स्वीच ऑफ आ रहा था। अंगद या महकार का नंबर उनके पास नहीं था।

काले खां ने गार्ड को अपना नंबर दिया और कहा कि जब वे आ जाएं तो उसे फोन कर दे। गार्ड ने तो फोन नहीं किया बल्कि काले खां ही बार-बार फोन करके पूछता रहा कि वे लोग आए या नहीं और जब अगले दिन तक भी न लौटे तो काले खां ही नहीं राजपाल भी यह सोचने पर मजबूर हो गया कि आखिर मामला क्या है?

राजपाल ने कहा—"हमें अंगद के घर चलना चाहिए सर।"
"वहां क्यों?" काले खां ने पूछा।

"अंगद को ताजा-ताजा पता लगा है कि रिम्पी उसकी भांजी है। हो सकता है उसे और महकार को अपने पेरेंट्स से मिलाने ले गया हो और फिर उन्होंने उन्हें वहीं रोक लिया हो!"

"ओह, यह बात तो मेरे जेहन में ही नहीं आई।" काले खां की आंखें चमक उठी थीं—"लेकिन नंदिनी कहां गई? उसका तो उनके साथ से कोई मतलब नहीं और हमें नंदिनी की ही जरूरत है।"

"चलते हैं सर, संभव है वहीं से नंदिनी का भी पता लग जाए। बहरहाल, अंगद की नजर में अब वह उसकी पूर्वजन्म की पत्नी है।"

"चल।" काले खां ने कहा।
और फिर, वे अंगद के फ्लैट पर पहुंच गए।
दरवाजा खोलने वाली नंदिनी थी। वे चौंके। वह भी चौंकी। मुंह से निकला—"आप लोग यहां?"

"हम तो खैर पुलिस वाले हैं, जहां रवि और कवि भी नहीं पहुंच पाते वहां हम पहुंच जाते हैं मगर तुम यहां क्या कर रही हो?"

"तुम लोग जरूर मेरा पीछा करते हुए यहां आए हो।" नंदिनी के चेहरे पर नागवारी के भाव उभरे थे।

काले खां ने कोई टेढ़ा जवाब देने के लिए मुंह खोला ही था कि राजपाल ने उसकी कलाई पर 'च्यूंटकर' याद दिलाया कि उसके साथ डिप्लोमेसी से पेश आना है। तुरंत ही राजपाल के 'च्यूंटने' का अर्थ समझते हुए काले खां ने अपने होठों

पर सौम्य मुस्कान बिखेर डाली और बोला—"हालांकि हमें आपसे भी मिलना था मगर हमें क्या पता कि आप यहां मिलेंगी! तात्पर्य यह कि हम आपका पीछा करते हुए यहां नहीं आए हैं।"

"तो फिर क्यों आए हो?" वह उखड़ी हुई थी।
राजपाल बोला—"रिम्पी की मिजाजपुर्सी के लिए आए हैं।"
"रिम्पी की मिजाजपुर्सी?"
"पता लगा—उसकी तबियत ठीक नहीं है।" काले खां ने कहा था—"बड़ी अजीब बीमारी है उ...

"शी...ऽ...ऽ...ऽ।" नंदिनी ने होठों पर उंगली रखकर उन्हें चुप रहने का संकेत दिया और फुसफुसाते-से लहजे में बोली—"धीरे बोलो। रिम्पी को अपनी बीमारी के बारे में नहीं पता है।"

सस्पेंस में फंसे अभी वे मामले को समझने की कोशिश कर ही रहे थे कि नंदिनी के पीछे से आवाज उभरी—"कौन है नंदिनी बेटी?"

नंदिनी ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि राजपाल ड्राइंगरूम में दाखिल होता बोला—"हम हैं बनर्जी साहब।"

"ओह! दरोगा जी।" मोहित बनर्जी के मुंह से निकला।

गंगोत्री, महकार और तरूणा भी नजर आए।

बनर्जी ने शिष्टाचार वश कहा—"बैठिए।"

वे सोफे पर बैठ गए।

"ये कौन हैं?" बनर्जी ने काले खां की तरफ इशारा किया। राजपाल ने संक्षिप्त जवाब दिया—"इंस्पेक्टर साहब।"

"पिछली बार तो किन्हीं दूसरे इंस्पेक्टर साहब के साथ आए थे न तुम! क्या नाम था उनका! शायद काले खां।"

"इनका दावा है अंकल कि ये वही हैं।" नंदिनी बोल पड़ी।

"क-क्या?" मोहित बनर्जी चौंके—"ऐसा कैसे हो...

और फिर, काले खां ने बहुत ही कम शब्दों में सब कुछ बता दिया। जो कुछ उसने बताया उसे सुनकर मोहित बनर्जी और गंगोत्री की आंखें हैरत से फैल गई थीं जबकि महकार और तरूणा उसे ऐसी नजरों से देख रहे थे जैसे संसार के सबसे बड़े आश्चर्य को देख रहे हों। उसके जिस्म परिवर्तन के बारे में नंदिनी ने अंगद को और अंगद ने उन दोनों को बता दिया था। सुनकर, उस वक्त उन्हें भी हैरानी हुई थी लेकिन उस चमत्कार को देख वे पहली बार ही रहे थे। गंगोत्री के मुंह से निकला—"ऐसा भला कैसे हो सकता है?"

"जैसे भी हुआ आंटी, लेकिन हो गया है।" काले खां ने एक ठंडी सांस लेने के साथ कहा—"अंगद नजर नहीं आ रहा!"

"कहीं गया है।" बनर्जी ने कहा।

"रिम्पी?"

"वह अंदर वाले बेडरूम में सो रही है।" महकार ने कहा—"मगर तुम उनके बारे में क्यों पूछ रहे हो?"

काले खां ने कहा—"पिछली बार जब मैं यहां आया था तो इस बात पर जरा भी यकीन नहीं किया था कि अंगद को

चमकने वाले सपने सच्चे हो सकते हैं लेकिन इस बार जब आया हूं तो...कितनी अजीब बात है! कपाली नाम की डायन द्वारा दी जाने वाली बलियों को सुकन्या की आत्मा अपनी आंखों से देखती थी और उसकी आंखों से गुजरकर वही घटना अंगद का सपना बन जाती थी।"

"आपको यह सब कहां से पता लगा?"
"डाक्टर कजारिया से, उसे अंगद ने बताया।"
बनर्जी के मुंह से निकला—"अंगद वहां क्यों गया था?"

"वह खुद नहीं गया था।" नंदिनी की तरफ तीखी नजरों से देखती तरूणा ने तपाक् से कहा—"कोई ले गया था उसे।"

"कौन?"
"मैं।" किसी से भी पहले नंदिनी बोली।
महकार ने पूछा—"क्यों?"
नंदिनी ने बेहिचक बता दिया।

यह भी कि कजारिया की मशीन बता चुकी है कि अंगद पिछले जन्म में बलबीर था और वह उसकी पत्नी कजरी।

सुनने के बाद मोहित बनर्जी, गंगोत्री और महकार के आश्चर्य का ठिकाना न रहा था जबकि मौका मिलते ही तरूणा ने नंदिनी पर तंज कसा—"और इस बेस पर इसका दावा है कि इस जन्म में भी अंगद की शादी इसी से होगी।"

नंदिनी मुस्कराई। बोली—"दावा इस बेस पर नहीं है।"
"फिर किस बेस पर है?"
"ज्योतिषी की भविष्यवाणी के बेस पर।"

"कितनी ढीट लड़की हो तुम!" तरूणा ने ईर्ष्या उगली—"अंगद तुमसे साफ-साफ कह चुका है कि वह मुझसे मुहब्बत करता है और मुझी से शादी करेगा। उसके बाद भी उसी से चिपकी हुई हो!"

"बानक चाहे जैसे बने मगर उसकी शादी मुझ ही से होगी।"

"इस खुशफहमी को खुरच-खुरचकर अपने दिमाग से निकाल दो, ऐसे कोई बानक बनने वाले नहीं हैं।"

"देखा जाएगा।"
"जानती हूं, अभी तक इसी उम्मीद में हमसे चिपकी हुई हो।"
"यहां मैं अंगद की या तुम्हारी वजह से नहीं हूं।" नंदिनी पहली बार थोड़ी तल्ख हुई—"रिम्पी की जिद के कारण हूं।"

"पता नहीं क्या जादू कर दिया है तुमने उस पर!" तरूणा को अपनी भड़ास निकालने का मौका मिल गया था—"तुम वाकई कोई जादूगरनी हो। मुझे तो लगता है, वो पिछले-विछले जन्म की कहानी भी सब झूठ है। जरूर तुमने डाक्टर कजारिया पर भी कोई जादू कर दिया होगा जिसकी वजह से उसने अपनी मशीन के नाम पर...

"ऐसा नहीं हो सकता तरूणा जी।" उसकी बात काटकर काले खां ने कहा—"कजारिया की मशीन झूठ नहीं बोल सकती।"

"आप ऐसा कैसे कह सकते हैं?"

"वह आज से नहीं, वर्षों से प्रेक्टिस कर रहा है और अपनी उसी मशीन के जरिए न जाने कितने लोगों की ऐसी बीमारियों का इलाज कर चुका है, सामान्य डाक्टरों की समझ में जिनका कारण तक नहीं आ रहा था।" यह सब कहने

के पीछे काले खां का मकसद नंदिनी को खुश करना था–"भविष्य भले ही चाहे जो हो, आप कजारिया की मशीन पर उंगली नहीं उठा सकतीं।"

"मुझे ऐसी किसी मशीन पर यकीन नहीं है।"
"आप खुद उसका परीक्षण क्यों नहीं कर लेतीं?"
"मैं परीक्षण कर लूं?"

"आप अंगद को खुद ले जाइए वहां और जान लीजिए कि वह पिछले जन्म में बलवीर था या नहीं।"

राजपाल बोला–"अंगद तो एक बार मशीन के परीक्षण से गुजर चुका है सर, क्यों न तरूणा जी नंदिनी जी को ही वहां ले जाएं और यह जान लें कि पिछले जन्म में ये ही कजरी थीं या नहीं!"

नंदिनी ने उसे घूरते हुए तल्ख लहजे में कहा था–"मैं समझ गई कि तुम मुझे कजारिया की मशीन पर क्यों लिटाना चाहते हो!"

"क-क्या समझ गईं?" राजपाल बौखलाया।

"तुम्हें अब भी शक है कि मैं शालू हूं और उस मशीन के जरिए तुम मेरा अतीत जानना चाहते हो ताकि...

"गलत! एकदम गलत!" काले खां ने उसकी बात काटते हुए कहा–"यह बात इसलिए गलत है नंदिनी जी क्योंकि आपके बारे में मुझे जितनी भी गलतफहमियां थीं, वे दूर हो चुकी हैं।"

नंदिनी ने उसे बहुत गौर से देखा और फिर व्यंगात्मक लहजे में बोली–"कैसे हुआ यह चमत्कार?"

"क्योंकि शालू पकड़ी जा चुकी है।"
वह बुरी तरह चौंकी थी–"पकड़ी जा चुकी है?"

"यह सच है नंदिनी जी।" राजपाल ने तान मिलाई–"वह मेरठ में पकड़ी गई है। वहीं की पुलिस ने पकड़ा है।"

"थैंक्स गॉड।" नंदिनी कह उठी–"अब कम से कम आप मेरा पीछा तो छोड़ देंगे।"

"इसीलिए ढूंढ रहे थे आपको।" काले खां ने उसके पेट में घुसने की पूरी तैयारी कर ली थी–"खासतौर से मैं आपसे माफी मांगना चाहता था। कहना चाहता था कि मुझे आपके साथ वैसा व्यवहार नहीं करना चाहिए था, जैसा किया। इसके लिए आपका मोबाइल भी मिलाया लेकिन स्वीच ऑफ आ रहा था।"

"आप सोच भी नहीं सकते इंस्पेक्टर साहब कि आपके ये शब्द सुनकर मुझे कितनी राहत मिली है। क्या उसने कबूल कर लिया कि अंकुर को उसी ने किडनेप किया था?"

"मुंबई की पुलिस उसे मेरठ से लेने गई है। यहां लाकर पूछताछ होगी तो सच्चाई सामने आएगी।"

"जब वो आ जाए तो मुझसे जरूर मिलाइएगा, देखना चाहूंगी कि उसकी शक्ल मुझसे कितनी मिलती है।"

"जरूर मिलाएंगे लेकिन...
"लेकिन?"

"इस वक्त बात कुछ और चल रही थी।" काले खां विषय को घुमा-फिराकर फिर वहीं ले आया–"उस मशीन पर लेटकर आप तरूणा जी को बड़ी आसानी से यकीन दिला सकती हैं कि...

तरूणा ने भन्नाकर कहा—"मुझे जरूरत नहीं है।"

"आप ही को जरूरत नहीं है तो फिर भला हम क्यों जिद किए चले जा रहे हैं...छोड़िए, क्यों राजपाल?"

राजपाल के कुछ कहने से पहले ही महकार ने पूछा—"ये शालू का क्या चक्कर है?"

काले खां तपाक् से बोला—"उस चक्कर को जब हम ही ने छोड़ दिया तो आप क्यों चक्कर में पड़ते हैं महकार भाई! इस वक्त मुद्दे की बात रिम्पी की बीमारी है। हम उसी के लिए आए हैं।"

"आप उसमें क्या कर सकते हैं?"

"अभी ये तो नहीं पता कि क्या कर सकते हैं और...कुछ कर भी सकते हैं या नहीं मगर इतना जरूर मालूम है कि आप लोगों की और हमारी मंजिल एक ही है।"

"मंजिल है! मतलब?"

"डॉक्टर कजारिया ने जो कुछ हमें बताया, उसके मुताबिक उस बला का नाम कपाली है जो पहले सुकन्या के सिर पर छिपकली बन कर सवार हुई थी और इस वक्त रिम्पी के सिर पर सवार है और मुझे इस जिस्म में भेजने वाली भी कपाली ही है।"

"तुम्हें इस जिस्म में भेजने वाली कपाली है! कैसे?"

"उस बात को छोड़िए और इस बात पर गौर कीजिए कि इस लिहाज से आपका मिशन भी कपाली से निपटना है और मेरा भी।" काले खां कहता चला गया—"मैंने कसम खाई है कि मैं उससे अपना ऑरिजनल जिस्म वापस लेकर रहूंगा।"

"ऑरिजनल जिस्म वापस लेकर रहेंगे!" महकार के लहजे में हैरत उभर आई थी—"वह ऐसा कैसे कर सकती है?"

"जैसे मेरी आत्मा को इस जिस्म में डालकर किया है।" उसने बहुत ही खास नजरों से नंदिनी की तरफ देखते हुए कहा था—"क्यों नंदिनी जी, मैंने कुछ गलत तो नहीं कहा?"

"मैं इस बारे में क्या कह सकती हूं?"

"जबकि कहना चाहिए क्योंकि आप अघोरियों और काला जादू करने वालों पर रिसर्च कर रही हैं। जानती हैं कि वे किस तरह एक आत्मा को दूसरे जिस्म में पहुंचाते हैं।"

नंदिनी चुप रह गई जबकि महकार ने कहा—"अगर कजारिया ने आपको रिम्पी के बारे में बताया है तो यह भी बताया होगा कि अब उसे कोई प्रॉब्लम नहीं है। उसका इलाज हो चुका है।"

"बताया है...और यह भी बताया है कि वो इलाज अस्थाई है।"
"मतलब?"

"स्थाई इलाज महामृत्युन्जय नहीं बल्कि कपाली का खात्मा है। अंगद उसी की तैयारी के लिए चंडिकामृत के आश्रम में गया है।"

"ओह! आपको ये भी पता है!"
"मुझे वो हर बात पता है जो अंगद ने कजारिया को बताई।"
"तो हमसे क्या चाहते हैं आप?"

"मुझे दुख है महकार भाई कि आप अभी तक नहीं समझे। सीधी सी बात है, मंजिल एक है तो क्यों न मिलकर काम करें!"

महकार सोच में पड़ गया जबकि नंदिनी ने कहा–"इस बात का फैसला हममें से कोई नहीं कर सकता। सिर्फ अंगद ही यह फैसला कर सकता है कि उसे तुम्हारे साथ आगे बढ़ना है या अकेले।"

"तब तो मजबूरी है।" कहने के साथ काले खां खड़ा हो गया था–"उसके आने पर उसी से बात करेंगे।"

कागज पर लिखे मंत्रें को अंगद ने ध्यान से पढ़ा, लिखा था–

त्रहि मां देवी दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भय वर्धिनि।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता।।
दक्षिणेऽवतु वाराही नै-र्त्यां खड्गधरिणी।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी।।
उदीच्यां पातु कौमारी ऐश्यान्यां शूलधारिणी।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा।।
एवं दश दिशो रक्षेचचामुण्डा शवाहना।
जया पे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः।।
अजिता वामपार्श्वे तु दिक्षणे चापराजिता।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता।।
मालाधारी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके।।
शडिख्नी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वावासिनी।
कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमले तु शांकरी।।
नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका।
अधरे चमृतकला जिव्हायां च सरस्वती।।
दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका।
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके।।
कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं पे सर्वमंगला।
गीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी।।
नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी।
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी।।
हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च।
नखाच्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी।।
स्तनौ रक्षेन्माहादेवी मनः शेकविनाशिनी।
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी।।
नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी।।
कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यावासिनी।
जडेघ महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी।।
गुल्फयोर्नारसिंही च पदपृष्ठे तु तैजसी।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी।।
नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी।
रोमकूपेषु कौबरी त्वचं वागीश्वरी तथा।।

**रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी।।
पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसंधिषु।।
शुक्रं ब्रह्माणि म रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा।
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी।।
प्राणापनौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना।।
रसे रूपे च गंधे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नाराणी सदा।।
आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी।
यशः कीर्तिं च लक्षमीं च धनं विद्यां च चक्रिणी।।
गोत्रमिन्द्राणि म रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी।।
पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षमेकरी तथा।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता।।
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु।
तत्सर्वं रक्ष म देवि जयन्ती पापनाशिनी।।**

वड़ी मुश्किल से उन मंत्रों को पढ़ने के बाद अंगद ने चेहरा ऊपर उठाते हुए कहा—"ये क्या है महाराज?"

"देवी कवच।"
"मैं कुछ समझा नहीं।"
"तुम्हें तीन संध्याओं के समय इसका पाठ करना है।"

"आप पाठ की वात कर रहे हैं महाराज! पहले तो मेरे लिए इसे पढ़ना ही असंभव है। ऐसे-ऐसे कठिन शब्द हैं कि न समझ में आ रहे हैं, न ही जुवान से निकल पा रहे हैं और आप इन मंत्रों का पाठ करने की आज्ञा दे रहे हैं।"

महिला रूपी चंडिकामृत के गुलावी होठों पर ऐसी मुस्कान उभरी जैसे वे पहले से जानते हों कि अंगद यह सब कहेगा। वे बहुत ही सौम्य स्वर में वोले—"इसी कागज के दूसरी तरफ संस्कृत के इन्हीं श्लोकों का हिंदी भावार्थ लिखा है। तुम उसका पाठ भी कर सकते हो। उसका भी उतना ही लाभ मिलेगा।"

"पर वो लाभ है क्या महाराज?"
"पहले उसे पढ़ो, तव वताते हैं।"
अंगद ने कागज को पलटकर पढ़ना शुरु किया, लिखा था—

'पूर्व दिशा में वह ऐंद्री देवी मेरी रक्षा करे जिसके पास इंद्रशक्ति है। अग्निकोण में अग्नि शक्ति, दक्षिण दिशा में वाराही तथा नै–त्य कोण में खड्ग धारणी देवी मेरी रक्षा करे। पश्चिम दिशा में वारुणी और वायव्य कोण में मृग पर सवारी करने वाली देवी मेरी रक्षा करे।

उत्तर दिशा में कौमारी और ईशान कोण में शूलधारणी देवी रक्षा करे। ब्रह्माणि, तुम ऊपर की ओर से मेरी रक्षा करो और वैष्णवी देवी नीचे की ओर से रक्षा करे। इसी प्रकार शव को अपना वाहन बनाने वाली चामुणा देवी दसों दिशाओं में मेरी रक्षा करें।

जया आगे से और विजया पीछे की ओर से मेरी रक्षा करे। वाम भाग में अजिता और दक्षिणी भाग में अपराजिता तथा

करे। ललाट में मालाधारी रक्षा करे और यशस्विनी देवी मेरी भौंहों का संरक्षण करे। भौंहों के मध्य भाग में त्रिनेत्रा और नथुनों की यमघण्टा देवी रक्षा करे। दोनों नेत्रों के मध्य भाग में शंखिनी और कानों में द्वार वासिनी रक्षा करे। कालिका देवी कपोलों की तथा भगवती शांकरी कानों के मूल भाग की रक्षा करे। नासिका में सुगंधा और ऊपर के होंठ में चर्चिका देवी रक्षा करे। निचले होंठ में अमृतकला तथा जीभ में सरस्वती देवी रक्षा करे।

कौमारी दांतों की तथा चंडिका कंठ प्रदेश की रक्षा करे। चित्रघंटा गले की घांटी की और महामाया तालु में रहकर रक्षा करे। कामाक्षी ठोढ़ी की और सर्वमंगला मेरी वाणी की रक्षा करे। भद्रकाली ग्रीवा में और धनुर्धरी मेरुदंड में रहकर रक्षा करे। कंठ के बाहरी भाग में नीलग्रीवा और कंठ की नली में नलकूबरी रक्षा करे। दोनों कंधों में खड्गनी और मेरी दोनों भुजाओं की वज्र धारिणी रक्षा करे। दोनों हाथों में दंडिनी और उंगलियों में अम्बिका रक्षा करे। शूलेश्वरी नखों की रक्षा करे। कुलेश्वरी पेट में रहकर रक्षा करे।

महादेवी दोनों स्तनों की और शोक विनाशनी देवी मन की रक्षा करे। ललिता देवी हृदय में और शूलधारिणी उदर में रहकर रक्षा करे। नाभि में कामिनी और गुह्य भाग की गुहेश्वरी देवी रक्षा करे। पूतना और कामिका लिंग की और महिषा वाहिनी गुदा की रक्षा करे।

भगवती कटि भाग में और विंध्य वासिनी घुटनों की रक्षा करे। संपूर्ण कामनाओं को देने वाली महाबला देवी दोनों पिंडलियों की रक्षा करे। नरसिंही देवी दोनों घुट्टियों की और तैजसी देवी दोनों चरणों के पृष्ठ भाग की रक्षा करे। श्रीदेवी पैरों की उंगलियों में और तल वासिनी पैरों के तलवों में रहकर रक्षा करे। अपनी दाढ़ों के कारण भयंकर दिखाई देने वाली दंष्ट्राकराली देवी नखों की और उर्ध्वकेशिनी केशों की रक्षा करे। रोमावलियों के छिद्रों में कौवेरी और त्वचा की वगीश्वरी देवी रक्षा करे। पार्वती देवी रक्त, मज्जा, वसा, मांस, हड्डी और मेद की रक्षा करे। आंतों की कालरात्रि और पित्त की मुकुटेश्वरी रक्षा करे। मूलाधार आदि कमल केशों में पद्मावती देवी और कफ में चूडामणि देवी स्थित होकर रक्षा करे। नख के तेज की ज्वालामुखी रक्षा करे। जिसका किसी भी अस्त्र से भेदन नहीं हो सकता वह अभेद्या देवी शरीर की समस्त संधियों में रहकर रक्षा करे।

ब्रह्माणि! आप मेरे वीर्य की रक्षा करें। छत्रेश्वरी छाया की तथा धमधारिणी देवी मेरे अंहकार, मन और बुद्धि की रक्षा करे।

हाथों में वज्र धारण करने वाली वज्रहस्ता देवी मेरे प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान वायु की रक्षा करे। कल्याण से शोभित होने वाली भगवती कल्याण शोभना देवी मेरी प्राण रक्षा करे।

रस, रूप, गंध, शब्द और स्पर्श, इन विषयों का अनुभव करते समय योगिनी देवी रक्षा करे तथा सत्त्वगुण, रजोगुण और तपोगुण की रक्षा सदा नारायणी देवी करे।

वारही आयु की रक्षा करे। वैष्णवी धर्म की रक्षा करे तथा चक्र धारण करने वाली देवी यश, कीर्ति, लक्ष्मी, धन तथा विद्या की रक्षा करे। इंद्राणी, आप मेरे गोत्र की रक्षा करें। चण्डिके, तुम मेरे पशुओं की रक्षा करो। महालक्ष्मी पुत्रों की रक्षा करे और भैरवी पत्नी की रक्षा करे। मेरे पथ की सुपथा तथा मार्ग की क्षेमकारी देवी रक्षा करे। राजा के दरबार में महालक्ष्मी रक्षा करे तथा सब ओर व्याप्त रहने वाली विजया देवी संपूर्ण भयों से मेरी रक्षा करे।

देवि! जो स्थान कवच में नहीं कहा गया है, अतः रक्षा रहित है, वह सब तुम्हारे द्वारा सुरक्षित हो, क्योंकि तुम विजयशालिनी और पापनाशिनी हो।'

पूरा कागज पढ़ने के बाद अंगद ने कहा–"हां महाराज, अब बात कुछ समझ में आई। इन मंत्रों के जरिए, देवी से अपने संपूर्ण शरीर की रक्षा करने की प्रार्थना की गई है।"

"इसीलिए इसे 'देवी कवच' कहते हैं।" महाराज चंडिकामृत महिला के मुंह से कहते चले गए–"जो व्यक्ति प्रतिदिन

नियमपूर्वक तीनों संध्याओं के समय श्रद्धा के साथ इसका पाठ करता है, उसे दैवी कला प्राप्त हो जाती है। वह तीनों लोकों में कहीं भी पराजित नहीं हो सकता। हम तुम्हें इस कवच का पाठ करने के लिए इसलिए कह रहे हैं क्योंकि कपाली की काली शक्तियों से सुरक्षित रहने के लिए तुम्हारे शरीर का देवी कवच के अंदर सुरक्षित हो जाना जरूरी है। विश्वास रखो, उसकी सारी शक्तियां और काले जादू इस कवच से टकराकर नष्ट-भ्रष्ट हो जाएंगे। इस कवच से संपूर्ण कामनाओं की सिद्धी करने वाली विजय की प्राप्ति होती है। इस कवच से सुसज्जित व्यक्ति जिस-जिस अभीष्ट वस्तु का चिंतन करता है, उस-उसको निश्चय ही प्राप्त कर लेता है। मारण-मोहक आदि जितने भी अभिचारिक मंत्र होते हैं, कपाली उन सभी से लैस है जबकि इस कवच पर वे सभी निष्प्रभावी हो जाते हैं। भूत, प्रेत, पिशाच, डायनें, चुड़ैलें, शाकिनी, अंतरिक्ष में विचरण करने वाली अत्यंत बलवती भयानक डाकिनियां, राक्षस, ब्रह्मराक्षस, बेताल, कूष्मांड और भैरव आदि वे सभी व्याधियां इस कवच को धारण करने वाले शख्स को देखते ही भाग खड़ी होती हैं, जिन्हें कपाली ने अपने वश में कर रखा है और जिनके बूते पर वह समझती है कि कोई ताकत उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती।"

"तब तो मैं इसका पाठ जरूर करूंगा महाराज।"

"दोनों दीक्षाएं साथ-साथ चलेंगी। परकाया प्रवेश की विधी में पारंगत होना तथा स्वयं को देवी कवच के अंदर सुरक्षित करना।" इतना कहने के बाद अपने शरीर में लौटने हेतु महाराज चंडिकामृत नेत्र मूंदकर पदमासन की मुद्रा में अपनी रीढ़ की हड्डी पर बैठ गए।

कुछ घटनाएं ऐसी होती हैं जिनका कारण इंसान की समझ में उस वक्त नहीं आता जब वे घट रही होती हैं और जब समझ में आता है तो वक्त हाथ से निकल चुका होता है।

ऐसी ही एक घटना नंदिनी के सिर में होने वाला दर्द था।
वह दर्द जिसे उसने एक सुबह सोकर उठते ही महसूस किया।

यूं...सिर में दर्द होना कोई खास घटना न है। आमतौर पर लोगों को हो जाता है लेकिन नंदिनी के लिए वह घटना इसलिए खास थी क्योंकि कम से कम उसकी याद में उसके सिर में कभी दर्द नहीं हुआ था बल्कि यदि ये कहा जाए तो ज्यादा उपयुक्त होगा कि उसे मालूम ही नहीं था कि सिरदर्द क्या होता है।

इसलिए, उसे उस सुबह आश्चर्य हुआ था परंतु सिरदर्द का कारण नहीं समझ पाई और...दर्द भी इतना भयंकर कि ऐसा लग रहा था जैसे अब सिर फटा कि तब फटा।

जी चाह रहा था—सिर को दीवारों पर दे-देकर मारे।

अनायास ही दोनों हाथ सिर को दबाने लगे और उसी पोजीशन में बैडरूम से निकलकर लॉबी में आ गई।

महकार सोफे पर बैठा अखबार पढ़ रहा था। नंदिनी के आने की आहट सुनकर उसने चेहरा उठाया और उसके चेहरे पर पीड़ा की लकीरें देखकर पूछा—"क्या हुआ?"

"पता नहीं।" नंदिनी बोली—"मेरे सिर में कभी दर्द नहीं हुआ लेकिन आज ऐसा हो रहा कि सिर फटा जा रहा है।"

"मैं तुम्हारे लिए चाय बनाता हूं।" कहने के साथ महकार उठा ही था कि नंदिनी ने पूछा—"आंटी कहां हैं?"

"आज मंडे है न।" वह किचन की तरफ बढ़ा—"मां और पिताजी सुबह के वक्त शिव मंदिर जाते हैं। वहीं गए हैं।"

"तरूणा?"
"उनकी ड्राइवर बनकर गई है।" वह हंसा—"मैंने काफी कहा, मैं चला जाता हूं मगर मानी ही नहीं।"
"तो ठहरो, मैं खुद चाय...

सेंटेंस अधूरा रह गया। उस कमरे के अंदर से बड़ी अजीब-सी आवाज आने लगी थी जिसमें रिम्पी सोती थी।

ये शब्द नंदिनी के मुंह से स्वतः निकले—"रिम्पी कहां है?"
"रूम में, अभी सोकर नहीं उठी।"
"यह आवाज कैसी है?"

"पता नहीं।" महकार भी रिम्पी के रूम के बंद दरवाजे की ओर देखने लगा था। आवाज ऐसी थी जैसे कोई जंगली जानवर जोर-जोर से सांसें ले रहा हो। दोनों की आंखें मिलीं। चारों आंखों में एक ही भाव था—कैसी आवाज है ये? कौन है कमरे में?

नंदिनी सिर का दर्द भूल गई थी।
तावीज के बावजूद रिम्पी के प्रति वे चिंतित तो रहते ही थे।

सो, दोनों एक साथ दरवाजे पर झपटे। और फिर...'भड़ाक्' की जोरदार आवाज के साथ दरवाजा खोला।

अंदर का दृश्य देखते ही उनके रोंगटे खड़े हो गए क्योंकि रिम्पी बेड पर नहीं थी। वह घुटने मोड़े कमरे के एक कोने में बैठी लंबी-लंबी सांसें ले रही थी और सांसों की वह तेज आवाज उसी के मुंह से निकल रही थी। बाल बिखरे हुए थे उसके। आंखें फटी-फटी-सी, अंगारों की मानिंद सुर्ख और गोल। चेहरा इतना ज्यादा वीभत्स कि महकार और नंदिनी के जिस्मों में खौफ की लहर दौड़ गई।

दोनों के मुंह से चीख-सी निकली थी—"क्या हुआ रिम्पी?"

उनकी तरफ देखती हुई जब वह 'ही-ही'—'ही-ही' की डरावनी आवाज के साथ हंसी तो दोनों के होश उड़ गए। दिमागों में एक ही बात कौंधी थी—शायद कपाली फिर उसके सिर पर सवार हो गई है। दोनों की नजर उसके गले पर गईं।

तावीज यथास्थान मौजूद था।
फिर कपाली उसके सिर पर कैसे सवार हो सकती है?

"रिम्पी!" जोर से चीखने वाले महकार की आवाज में खौफ का कंपन था—"क्या हुआ तुम्हें? होश में आओ।"

उसके मुंह से घरघराहटदार, बहुत ही डरावनी आवाज निकली थी—"रिम्पी को ले जाने से रोकोगे मुझे! सोचते हो मैं इस तावीज से रुक जाऊंगी! वहम है तुम्हारा। चंडिकामृत की तो बिसात क्या है! कपाली को तीनों ब्रह्मांडों की कोई ताकत नहीं रोक सकती।"

दोनों की जीभें उनके तालुओं से जा चिपकी थीं।

रिम्पी उठकर खड़ी हो गई और उसी आवाज में बोली—"लो, देखो! मैं तुम्हारे सामने रिम्पी को ले जा रही हूं। पूर्णिमा नजदीक है न! इसकी बलि मिलते ही मेरा महबूब जिंदा हो जाएगा।"

"नहीं।" महकार चीखा—"तुम रिम्पी को नहीं ले जा सकतीं।"

"हा...हा...हा।" वह छत की तरफ चेहरा उठाकर चुड़ैल की तरह हंसी और बोली—"कौन रोकेगा मुझे?...तू!"

"मैं रोकूंगी तुझे।" नंदिनी के जबड़े भिंच गए थे।

"कैसे भला?" वह खिल्ली उड़ाने वाले अंदाज में हंसी और फिर डरावनी आंखों से उसकी तरफ देखने लगी।

उस वक्त नंदिनी को ऐसा लगा जैसे उसे रिम्पी की नहीं, उसकी आंखों के अंदर से किसी और की आंखें झांककर देख रही हैं और उससे भी हैरत की बात यह थी कि उस क्षण नंदिनी को ऐसा महसूस हुआ जैसे वे आंखें उसकी जानी-पहचानी हैं।

कुछ और ज्यादा डर गई वह मगर हिम्मत करके बोली—"मुझे एक तांत्रिक का बताया हुआ मंत्र याद है। उसने कहा था कि इस मंत्र के सामने कोई बुरी आत्मा नहीं ठहर सकती।"

"लेकिन मैं आत्मा नहीं, जिंदा औरत हूं। यकीन नहीं आता तो आजमा ले...आजमा ले अपने तांत्रिक के मंत्र को।"

हालांकि दहशत की ज्यादती के कारण नंदिनी का सारा जिस्म बुरी तरह कांप रहा था परंतु वह आंखें बंद करके कोई मंत्र बुदबुदाने लगी और...उस क्षण, महकार ने ऐसा दृश्य देखा था जिसे देखकर उसकी रूह फना हो गई, हलक से चीख निकल गई थी।

रिम्पी ने अपने दोनों हाथ और घुटने जमीन पर टिका दिए थे और अब वह बिल्ली जैसी लग रही थी। वैसी ही आवाज में गुर्राई। हवा में उछली और आंखें बंद करके मंत्रोच्चारण कर रही नंदिनी के जिस्म से जा टकराई।

नंदिनी चीख के साथ फर्श पर गिर गई थी।

महकार बेड की दराज पर झपटा। उससे एक रिवाल्वर निकाली और रिम्पी पर तानता हुआ गर्जा—"मैं तुझे गोली मार दूंगा।"

"गोली मारेगा! मार! मार गोली! देखती हूं मैं मरती हूं या तेरी रिम्पी!" कहती हुई वह पुनः फर्श पर सीधी खड़ी हो गई और फिर यह देखकर महकार और नंदिनी की आंखें आश्चर्य से फट पड़ीं कि रिम्पी ठुमके लगा-लगाकर नाचने लगी थी।

साथ ही, वह कोई लोक गीत भी गाने लगी थी।

महकार का रिवाल्वर वाला हाथ ही नहीं बल्कि मुकम्मल जिस्म बुरी तरह कांप रहा था। उसकी कांपती कलाई को नीचे करती हुई नंदिनी चीखी—"क्या कर रहे हो भैया! गोली चलाओगे तो वह उसे नहीं हमारी रिम्पी को लगेगी।"

रिवाल्वर फर्श पर गिर गया।

फटी-फटी आंखों से महकार ठुमक-ठुमककर नाच रही तथा घरघराती-सी डरावनी आवाज में लोक गीत गा रही रिम्पी को देखता रह गया था। यही हाल नंदिनी का था। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि इन हालात में क्या किया जाए?

फिर अचानक उसके नाचते हुए जिस्म में एक धक्का-सा लगा, जैसे किसी ने जोर से धकेला हो। वह लड़खड़ा गई थी लेकिन तुरंत ही संभलती हुई बोली—"ओह, तू भी आ गई यहां?"

यह बात उसने शून्य को घूरते हुए कही थी।

कमरे में हवा का एक गोला-सा घूमता महसूस हुआ और फिर, वह गोला रिम्पी के जिस्म से टकराया।

रिम्पी पुनः लड़खड़ाई।

इस बार संभलने के बाद बोली—"आ...आ। दे धक्का अपनी रिम्पी को और फिर देख तमाशा।"

फिरकनी की मानिंद घूमती हुई हवा फिर रिम्पी के जिस्म से टकराई और इस बार रिम्पी का जिस्म हवा में उड़ा तथा

बहुत जोर से सिर का अगला भाग दीवार से टकराया।

रिम्पी चीखी।

इस बार उसके मुंह से उसकी ऑरिजनल आवाज निकली थी। उस आवाज के साथ वह फर्श पर गिरी मगर आश्चर्य!

इतनी चोट लगने के बावजूद वह तुरंत ही उछलकर खड़ी हो गई और बोली—"नहीं मम्मी, मुझे मत मारो। बहुत चोट लगती है।"

हवा का गोला अब भी कमरे में घूमता प्रतीत हो रहा था।

सिर के अगले हिस्से से बहता खून रिम्पी के चेहरे पर फैलने लगा था। वीभत्स चेहरा और ज्यादा डरावना हो उठा।

अब वह पुनः घरघराती-सी आवाज में खिलखिलाकर हंस रही थी, साथ ही बोली—"और दे...और धक्का दे मुझे।"

अब हवा का गोला कमरे में नाचता भले ही घूम रहा हो मगर रिम्पी के जिस्म से नहीं टकराया था।

रिम्पी ने छत की तरफ चेहरा उठाया और बुक्का फाड़कर हंसी। वह हंसी इतनी भयंकर थी कि महकार और नंदिनी की रीढ़ की हड्डियों में सिहरन दौड़ती चली गई। दिल खोलकर हंसने के बाद उसने हवा के झोंके से कहा—"तूने मुझे रोकने की कोशिश की। इसका खामियाजा तेरे पति को भुगतना होगा। देख...देख अब मैं क्या करती हूं।" कहने के साथ उसकी सुलगती हुई आंखें महकार पर स्थिर हो गईं और फिर उसने महकार की तरफ फूंक मारी।

पलक झपकते ही नंदिनी के करीब खड़ा महकार हवा में उछला और 'धाड़' की जोरदार आवाज के साथ उसका सिर सीधा छत से जाकर टकराया। हलक से चीख निकालता हुआ वह वापस फर्श पर आ गिरा। अब वह खून से लथपथ हुआ फर्श पर पड़ा तड़प रहा था।

हलक से चीखें निकल रही थीं।

उस मंजर को देख रही नंदिनी सूखे पत्ते की मानिंद कांप रही थी। उसने महसूस किया कि हवा का गोला ठीक महकार के जख्मी जिस्म के ऊपर चक्कर काट रहा था।

"ओह! बचाना चाहती है अपने पति को! देखती हूं कैसे बचाती है। ले बचा...बचा।" कहने के साथ उसने महकार की तरफ एक और फूंक मारी, परिणाम स्वरूप महकार का जिस्म ठीक किसी तिनके की मानिंद हवा में उड़ा और इस बार उसका चेहरा छत से जा टकराया और फिर नीचे आ गिरा।

अब...नंदिनी अपने मुंह से निकलने वाली चीखों को न रोक पाई क्योंकि महकार का चेहरा ऐसा नजर आ रहा था जैसे उसे ट्रक के पहिए के नीचे कुचल दिया गया हो।

लहूलुहान अवस्था में वह मर्मांतक तरीके से चीख रहा था।

हवा के गोले को उसने अब भी महकार के आसपास चकराते महसूस किया था। खौफ के कारण उसका बुरा हाल था लेकिन फिर भी लड़खड़ाती-सी महकार और रिम्पी के बीच जा खड़ी हुई और बोली—"तू महकार भैया को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकती।"

"तू हट जा उसके सामने से।" रिम्पी गुर्राई—"उसकी बीवी ने मुझसे पंगा लिया है। उसे मरना ही होगा।"
खौफ की मारी नंदिनी चिल्लाई—"नहीं हटूंगी।"

रिम्पी ने चेतावनी-सी दी–"मेरी इस मजबूरी का फायदा मत उठा कि मैं तुझे नहीं मार सकती।"
"क्यों नहीं मार सकती?"
"जानेगी तो पछताएगी।"
"प्लीज कपाली।" नंदिनी रो पड़ी–"रिम्पी को बख्श दे।"

"इसे बख्श दूंगी तो मेरा दिलवर कैसे जिंदा होगा!" उसने बड़े ही डरावने अंदाज में आंखें मटकाई थीं–"कैसे प्रेमक्रीड़ा करूंगी मैं!"

"मैं तेरे हाथ जोड़ती हूं।"

"ऐसे नहीं मानेगी तू।" कहने के बाद उसने आंखें बंद कीं और मुश्किल से दो पल बाद जब खोलीं तो...जाने क्या हुआ? नंदिनी की समझ में कुछ नहीं आया कि क्या हुआ था–बस ऐसा महसूस हुआ जैसे किसी अदृश्य ताकत ने उसे महकार के सामने से उठाकर कमरे के एक कोने में खड़ी कर दिया हो।

अब उसकी अवस्था मूर्ति जैसी थी। न हिल पा रही थी, न बोल पा रही थी। पर देख और समझ सब कुछ रही थी।

देखा उसने यह कि रिम्पी ने एक और फूंक मारी।
महकार का उड़ता हुआ जिस्म एक दीवार से टकराया।
और...उसके बाद तो जैसे यह सिलसिला ही चल निकला।

कमरे में सिर्फ और सिर्फ दर्द से तड़पते महकार की चीखें और रिम्पी के हलक से निकलते डरावने कहकहे गूंजते रहे और वे कहकहे तब बंद हुए जब महकार के मुंह से चीखें निकलनी बंद हो गईं।

वह मर चुका था।

नंदिनी दहाड़ें मार-मारकर रोना चाहती थी मगर न रो सकी। दौड़कर महकार की लाश से लिपट जाना चाहती थी, ऐसा भी न कर सकी जबकि उसके बाद आंखों ने जो मंजर देखा वह इतना वीभत्स था जिसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता।

रिम्पी एक बार फिर अपने दोनों हाथों और घुटनों को फर्श पर टिकाकर बिल्ली की मानिंद चलने लगी थी। महकार की लाश की तरफ देखते हुए उसने जब अपनी जीभ होंठों पर फिराई तो नंदिनी को वह जरूरत से कुछ ज्यादा ही लंबी लगी। फिर, रिम्पी ने उसकी तरफ देखते हुए कहा–"मुझे प्यास लगी है।"

नंदिनी कुछ समझ न सकी।

रिम्पी बिल्ली की मानिंद चलती महकार की लाश के करीब पहुंची और जब अपनी जीभ से 'चप्प-चप्प' की आवाज करते हुए उसका खून चाटने लगी तो घिन्न और दहशत के कारण नंदिनी का बुरा हाल हो गया मगर न वह हिल सकती थी, न चीख सकती थी।

हवा का गोला अब भी वहीं घूम रहा था।

खून का एक-एक कतरा चाटने के बाद रिम्पी ने अपने दांतों से महकार के होंठ पकड़े। अपना दायां हाथ उसकी छाती पर रखा और ठीक इस तरह जोर से चेहरे को झटका दिया जैसे बिल्ली चूहे के जिस्म से गोश्त नोंचने के लिए देती है।

अगले पल गोश्त का लोथड़ा उसके मुंह के बाहर लटका नजर आया। नंदिनी ने अपनी आंखें बंद करनी चाहीं मगर वैसा भी न कर सकी। महसूस किया कि उसकी पलकें तक नहीं झपक रही हैं।

अव वह देख रही थी कि रिम्पी महकार के गाल के गोश्त को ठीक इस तरह कुतर-कुतर के खा रही थी जैसे विल्ली चूहे के गोश्त को खाती है। कमरे में 'कच्च-कच्च' की आवाज गूंज रही थी।

कुछ देर वाद ऐसा लगा जैसे रिम्पी का पेट भर गया हो।

वह सीधी खड़ी हो गई और कमरे के दरवाजे की तरफ वढ़ते वक्त उसकी तरफ वॉय-वॉय करने वाले अंदाज में हाथ हिलाया और वाहर निकल गई। उसका वाहर निकलना था कि अदृश्य ताकत ने नंदिनी को आजाद कर दिया।

मुंह से चीख निकली।
फर्श पर जा गिरी वह और वेहोश हो गई।

समाधिलीन चंडिकामृत के माथे पर किसी ने दस्तक दी। उनके नेत्र खुले तो सामने सुकन्या की आकृति थी। हवा पर पानी से बनी वह पारदर्शी आकृति जो इस वक्त एक जगह स्थिर नहीं थी वल्कि जवरदस्त वेचैनी के कारण हवा में नाचती-सी घूम रही थी।

"क्या वात है?" चंडिकामृत ने पूछने के वाद कहा—"सुकन्या, तुम्हारा यूं...हमारी समाधि में घुस आना हमें पसंद नहीं है।"

"नहीं वैठने दूंगी।" वह दुख और रोष से संयुक्त आवाज में वोली थी—"तुम्हें क्या, किसी को भी चैन से नहीं वैठने दूंगी। तुम्हारी ये समाधि ढोंग है और तुम्हारी वे सारी शक्तियां वेकार हैं महाराज चंडिकामृत, जिन पर तुम गर्व करते हो।"

"क्या हुआ वालिके, इस वक्त तो कुछ ज्यादा ही क्रोध में नजर आ रही हो।" उन्होंने सौम्य मुस्कान के साथ पूछा।

"क्या हुआ! आप पूछ रहे हैं क्या हुआ?" हवा में छटपटाते-से अंदाज में भटकती आकृति के मुंह से निकला—"इसका मतलव आपने कुछ देखा ही नहीं। व्यर्थ ही त्रिकालदर्शी होने का दावा करते हो। कपाली ने अनर्थ कर दिया और आपने कुछ देखा ही नहीं।"

"उसने हमारी आंखों के सामने अपने कुमंत्रों का अंधकार फैला रखा है। जव भी उसे दूर करने की चेष्टा करते हैं, तुम समाधि में घुस आती हो। अव वताओ...उसने क्या किया है?"

"सुहाग उजाड़ डाला मेरा।" पहले एक पतिव्रता स्त्री ने विलाप किया, फिर एक ममतामयी मां चीख पड़ी—"मेरी रिम्पी को ले गई वो। आपका तावीज कुछ न कर सका। वह उसके गले में ही पड़ा रहा और वो उसके सिर पर सवार हो गई।"

चंडिकामृत के मुंह से अविश्वसनीय शब्द निकले—"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। हमने अभिमंत्रित महामृत्युन्जय मंत्र और यंत्र दिए थे। कपाली और उसकी काली शक्तियों की तो विसात क्या है, उनके आसपास तो खुद शैतान भी नहीं फटक सकता।"

"मैंने अपनी आंखों से देखा है चंडिकामृत, अपनी आंखों से देखा है मैंने। तावीज उसके गले में ही पड़ा था और वो मेरी रिम्पी के सिर पर ही नहीं, मुकम्मल अस्तित्व पर सवार थी। उसी के जिस्म की सवारी करते-करते उसने मेरा सुहाग उजाड़ डाला और मैं कुछ न कर सकी। अपनी शक्ति का इस्तेमाल भी करती तो किस पर! वो राक्षसी तो सामने थी नहीं। वो तो मेरी वेटी के अंदर थी। सामने तो रिम्पी थी। एकाध वार कोशिश भी की लेकिन चोट मेरी रिम्पी को लगी। मैं मजवूर हो गई थी चंडिकामृत, अपनी आंखों से अपना सवकुछ उजड़ता देखने के अलावा कुछ कर ही नहीं सकती थी।"

"घोर आश्चर्य की बात है।" चंडिकामृत सुकन्या की आत्मा से नहीं कह रहे थे बल्कि बड़बड़ाकर खुद से बात कर रहे थे-"हमारे ज्ञान के मुताबिक उसकी कुविद्याओं में महामृत्युन्जय मंत्र और यंत्र की कोई काट नहीं है। फिर वह ऐसा कैसे कर सकी?"

"मेरे भाई को जाने कौनसी क्रियाओं में व्यस्त कर दिया है आपने, वो वहां होता तो वह सब नहीं हो सकता था।"

"इस भुलावे में न रहो सुकन्या, जैसा कि तुम कह रही हो लेकिन हमें अब भी विश्वास नहीं आ रहा, अगर कपाली ने रिम्पी के गले में तावीज के रहते वह सब किया है तो तीनों लोकों में ऐसी कोई ताकत नहीं है जो उसे रोक पाती। जब स्वयं शिव ही...

"तुम झूठे हो चंडिकामृत। पाखंडी हो तुम।" एक दुखियारी मां और आहत पत्नि चिल्ला उठी-"तुम्हारे पास कोई ज्ञान नहीं है, कोई शक्ति नहीं है। तुम लोगों को मूर्ख बनाते हो। तुम नहीं बचा सकते मेरी रिम्पी को। अब मुझे ही कुछ करना होगा।"

"तुम!" चंडिकामृत ने खिल्ली उड़ाने वाले भाव से कहा-"तुम हो ही क्या! हवा मात्र। तुम क्या कर सकती हो?"

भन्नाई हुई आकृति मां काली की मूर्ति की तरफ घूमी और जोर से चिल्लाई-"मैं क्या नहीं कर सकती! ये चाहे तो मैं क्या नहीं कर सकती! है...है चंडिकामृत। इस दुनिया में तुम्हारे शिव से बड़ी भी एक शक्ति है। अरे इसका तो नाम ही शक्ति है। तुम्हारे शिव तो इसका अंश मात्र हैं। ये सारे देवी-देवताओं के अंश से मिलकर बनी है। मेरी माता है ये। सबकी माता है ये। दुर्गा माता है ये। अब यही मेरी बेटी की रक्षा करेगी और कोई रिम्पी को नहीं बचा सकता।"

चंडिकामृत के होठों पर रहस्यात्मक मुस्कान उभरी।

वे चुप रहे जबकि भावनाओं के वेग में बहती आकृति काली की मूर्ति की तरफ देखती चीखती चली गई-"पर तू भी तो शांत खड़ी है मां! वो डायन मेरी बेटी को ले गई और तू शांत खड़ी है! धिक्कार है तुझ पर। अगर तू मेरी बेटी को नहीं बचा सकती तो मैं नहीं मानती कि तूने कभी महिषासुर का वध किया था। अगर तू मेरे सुहाग की रक्षा नहीं कर सकी तो मैं नहीं मानती कि तूने कभी रक्त बीज का संहार किया था। किस काम की मां है तू! किस काम का है ये खड्ग? किस काम का है ये त्रिशूल? और किस काम की है तेरी दुधारी तलवार? ला...मुझे दे दे ये सब कुछ। उस कपाली का सिर तेरे कदमों में लाकर न डाल दूं तो मेरा नाम सुकन्या नहीं।"

चंडिकामृत की मुस्कान गहरी होती चली गई।

आकृति कुछ देर तक अपने चेहरे पर जजबातों की आंधियां लिए महाकाली की मूर्ति को देखती रही और फिर चीखी-"नहीं बोलेगी! तू ऐसे नहीं बोलेगी! नहीं सौंपेगी मुझे अपनी ढाल और कृपाण। तू तो खून की बलियों से खुश होती है न! मगर मेरे जिस्म में खून नहीं है। होता...तो तुझे उसी से नहला देती। मगर मैं मानूंगी नहीं माता। मेरे पास जिस्म नहीं है। ये आत्मा है। इस आत्मा की बलि दे दूंगी मैं तेरे चरणों में। ले...ले...ले।" कहती हुई वह बार-बार अपना सिर महाकाली के चरणों में पटकने लगी।

"ऐसे नहीं मानती माता।" अपने होठों पर रहस्यमयी मुस्कान सजाए चंडिकामृत ने कहा-"इसकी सिद्धी करनी पड़ती है।"

"सिद्धी भी करूंगी। ये लो...बैठ गई।" भन्नाई हुई आकृति मां के चरणों में बैठ गई-"मुझे नहीं पता सिद्धी कैसे होती है मगर मैं तब तक यहां से नहीं उठूंगी जब तक ये मुझे अपनी शक्तियां नहीं देगी। मेरी बेटी की जान खतरे में है, मैं उसे नहीं मरने दूंगी।"

चंडिकामृत के होंठों की रहस्यमयी मुस्कान विजयी मुस्कान में तब्दील हो गई। उन्होंने हाथ जोड़कर महाकाली से कहा–"इसे कहते हैं हठयोगी और माते, त्रियाहठ से तो तुमसे ज्यादा और कौन परिचित होगा! हमने एक मां को तुझसे भिड़ा दिया है। अब देखते हैं जगदम्बा कि तुम कब तक इसे अपनी शक्तियां नहीं सौंपतीं! तुम्हें झुकना ही होगा महिषासुर मर्दिनी, वो शक्तियां तुम्हें एक मां की इस रोती-बिलखती आत्मा को सौंपनी ही होंगी जो उन दुष्टात्माओं को जलाकर भस्म कर सके जिन्हें पानी भिगो नहीं सकता और इस दुनिया की अग्नि जला नहीं सकती। कपाली के जिस्म को अगर मिटा भी दिया गया तो उसकी आत्मा इस संसार में तहलका मचाए रखेगी। यह सृष्टि तभी उसके कहर से मुक्त हो सकती है जब उसकी आत्मा को तेरे तीसरे नेत्र से निकलने वाली दिव्य अग्नि में जला दिया जाए और वो अग्नि तुझे सुकन्या को देनी ही होगी। हे माते, इस भक्त का दावा है कि तू एक मां से नहीं जीत सकती।"

दादर की 'जलपरी' नामक जिस बिल्डिंग में अंगद का फ्लैट था, उसके ठीक सामने फुटपाथ पर एक झोंपड़ी बनी हुई थी और उसके बाहर एक भिखारी बैठा हुआ था।

अभी सुबह के सात बजे थे और सड़क पर लोगों की आवा जाही ठीक से शुरु भी नहीं हुई थी मगर भिखारी जमा हुआ था, जैसे सुबह-सुबह कारून का खजाना हाथ लगने की उम्मीद हो।

उस वक्त वह बुरी तरह चौंका जब रिम्पी 'जलपरी' के प्रांगण से बाहर निकलती नजर आई। वह तेजी से खड़ा हुआ और झोंपड़ी के अंदर दाखिल होता बोला—"सर...सर, वो बाहर आ गई।"

"कौन?" टूटे-फूटे फोल्डिंग पर सोया पड़ा शख्स हड़बड़ाकर उठता हुआ बोला—"कौन बाहर आ गई?"

"वही, जिसके लिए हम एक हफ्ते से भिखारी बने बैठे हैं।"

"रिम्पी?"

"हां सर।"

उसने तुरंत झोंपड़ी के बाहर की तरफ जम्प लगाई जो काले खां के अलावा और कोई नहीं था।

आप समझ ही गए होंगे कि पीछे लपकने वाला राजपाल था।

दोनों ने देखा—रिम्पी सड़क के बीचों-बीच चली जा रही थी।

हल्के मेकअप में बूढ़ा भिखारी नजर आ रहा काले खां गौर से उस दृश्य को देखता बोला—"ये अकेली कहां जा रही है?"

"करीब आधे घंटे पहले गाड़ी में मोहित बनर्जी, गंगोत्री और तरूणा निकले थे। गाड़ी तरूणा चला रही थी।" लंगड़ा भिखारी बना राजपाल कहता चला गया—"तब मैंने आपको जगाना इसलिए मुनासिब न समझा कि सुबह के चार बजे तक अपनी ड्यूटी बजाकर सोए हैं, जगाऊंगा तो गर्म होंगे लेकिन अब, जब यही बाहर निकल आई तो जगाना जरूरी समझा।"

"गोली मार उन्हें।" काले खां बोला—"ये बहुत बड़ा सवाल है कि इतनी सुबह-सुबह रिम्पी अकेली कहां जा रही है।"

"मुझे तो वो नींद में लग रही है सर।"

"नींद में! पागल है क्या? भला नींद में भी कोई चलता होगा?"

"चलते हैं सर, लोग नींद में भी चलते हैं। आपने 'नील कमल' पिक्चर में वहीदा रहमान को चलते नहीं देखा!"

"हां, देखी तो है और...वह ठीक उसी तरह चल रही है। उसे इस बात की परवाह ही नहीं है कि सड़क पर कौन आ-जा रहा है।"

अचानक राजपाल की आवाज कांपी—"मुझे तो कोई दूसरा ही चक्कर लगता है सर।"

"दूसरा कौनसा चक्कर?"
"उस पर कोई रूह सवार है।"
"बकवास न कर, तुझे हमेशा रूहें ही नजर आती रहती हैं।"
"मुसीबत ही ये है सर कि रूहें किसी को नजर नहीं आतीं।"

काले खां ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि सामने की तरफ से लाल रंग की एक होंडा सिटी आती नजर आई।

उसकी रफ्तार मुश्किल से चालीस थी।

वह उस तरफ से सड़क के बीचों बीच चली आ रही थी, इधर से रिम्पी पैदल चली जा रही थी।

कार वाले ने हॉर्न दिया।
मगर वह चलती रही।
यूं...जैसे कार की मौजूदगी का एहसास ही न हो।

कार वाले ने जोर-जोर से हॉर्न बजाया लेकिन जब वह तब भी न रुकी तो उसने कार रोकी जो करीब तीस वर्षीय युवक था।

युवक भन्नाता हुआ-सा गाड़ी से बाहर निकला।

लपकता हुआ रिम्पी के करीब पहुंचा और बोला—"ए लड़की, पागल है क्या? तुझे इतनी बड़ी कार दिखाई नहीं दे रही?"

रिम्पी ने बगैर कुछ कहे दाएं पैर की ठोकर इतनी जोर से उसके पेट में मारी कि एक चीख के साथ वह हवा में उड़ता-सा फुटपाथ के पार एक बिल्डिंग की चारदीवारी से जाकर टकराया।

उस दृश्य को देखकर काले खां और राजपाल के होश उड़ गए थे। उधर, हैरान युवक कराहता-कलपता जमीन से उठा इधर, रिम्पी न केवल दरवाजा खोलकर ड्राइविंग सीट पर बैठ गई थी बल्कि गाड़ी को स्टार्ट करके आगे भी बढ़ा दिया था।

चिल्लाता हुआ युवक अपनी गाड़ी के पीछे भागता-दौड़ता रह गया जबकि काले खां ने बिजली की-सी गति से झोंपड़ी के पीछे जम्प लगाई। वहां छुपी बुलेट निकाली और जोर से किक मारता हुआ बोला—"जल्दी बैठ राजपाल वरना वो गायब हो जाएगी।"

राजपाल लपककर पिछली सीट पर जम गया।
अब बुलेट होंडा सिटी के पीछे थी।
"हद्द हो गई सर।" वह बोला—"दस साल की इस लड़की ने भला गाड़ी चलानी कब सीखी होगी?"

"तू ठीक कहता है। वह कोई रूह है। शायद कपाली ही। उस युवक की हालत देखी! कोई भी किसी को एक ठोकर में इस तरह हवा में नहीं उछाल सकता।"

"लेकिन वो जा कहां रही है?"

"यही जानने के लिए तो हम उसका पीछा कर रहे हैं गधे।"

राजपाल चुप रह गया।

दो-तीन मोड़ पार हो चुके थे। उस वक्त लाल रंग की होंडा सिटी चौथे मोड़ पर मुड़कर उनकी आंखों से ओझल हुई थी, वे मोड़ से थोड़ा इधर ही थे कि मोड़ के उस पार से बहुत ही जोरदार आवाज आई। ऐसी–जैसे दो गाड़ियां आपस में टकराई हों।

और...मोड़ पार करते ही उन्होंने पाया कि यह बात सच थी।

लाल रंग की होंडा सिटी और सामने की तरफ से आने वाली स्कार्पियो में सड़क के बीचों बीच आमने-सामने की टक्कर हुई थी।

दोनों गाड़ियां एक-दूसरी में धंसी हुई थीं।

धुवां निकल रहा था।

स्कार्पियो का ड्राइवर सीट और स्टेयरिंग के बीच फंसा हुआ था। उसके सिर से खून निकल रहा था।

आसपास के लोग एक्सीडेंट की आवाज सुनकर उस तरफ लपक रहे थे। उसी समय, होंडा सिटी का गेट खुला।

पूरी तरह सुरक्षित रिम्पी बाहर निकली।

किसी ने जोर से कहा–"अरे, इतनी छोटी लड़की गाड़ी चला रही थी। एक्सीडेंट तो होना ही था।"

लोग उसकी तरफ लपके लेकिन उनके करीब पहुंचने से पहले ही रिम्पी बड़ी तेजी से गोल-गोल घूमने लगी।

ठीक इस तरह–जैसे किसी ने फिरकनी को घुमा दिया हो।

सब हैरान रह गए।

जो जहां था, वहीं जाम होकर रह गया था।

भंवर की मानिंद गोल-गोल घूमती हुई रिम्पी ने सड़क छोड़ी और किसी राकेट की तरह आकाश की तरफ उठती चली गई।

हैरान-परेशान लोग उसे देखते रह गए। तब तक देखते रहे जब तक नजर आती रही। देखते ही देखते वह इतनी ऊंचाई पर चली गई थी कि पहले बिंदु में तब्दील हुई फिर नजर आनी बंद हो गई।

इंसानी आंखों की क्षमताओं से बाहर निकल गई थी वह।

काले खां और राजपाल की हालत भी उस दृश्य को देखने वालों से अलग नहीं थी। उन्होंने एक-दूसरे की तरफ देखा और बस देखते रह गए। जैसे दोनों में से कोई बोलने काबिल न रहा हो।

अंगद दसवीं बार अपने जिस्म से बाहर आया था।

बाहर आते ही उसने नौ बार की तरह खुद को हल्का-फुल्का पाया। यह कहा जाए तो ज्यादा मुनासिब होगा कि वह खुद, खुद को हवा का ही एक हिस्सा महसूस कर रहा था।

एक बहुत बड़े भवन के बीचों बीच बिछे चंदन के आसन पर आंखें बंद किए, पद्मासन की मुद्रा में बैठे अपने जिस्म को देखा।

खुश हुआ और हवा में उड़ते हुए भवन के चक्कर लगाने लगा। पिछली बार उसने पचास चक्कर लगाए थे, इस बार साठ लगाने का इरादा था और...इस काम में उसे ज्यादा वक्त भी नहीं लगता था। पलक झपकने जितने समय में भवन के चाहे जितने चक्कर लगा सकता था। उड़ता हुआ भवन की चालीस फुट ऊंची गुंबदाकार छत पर पहुंचा फिर, जाने क्या शरारत सूझी कि वहां लटक रहे फानूस पर बैठ गया। उसका वजूद इतना हल्का था कि फानूस उसके बैठने पर बस इतना हिला था जैसे हवा के हल्के-से झोंके से गुजरा हो।

साठ चक्कर लगाने के बाद पद्मासन में बैठे अपने शरीर के करीब पहुंचा और हवा के झोंके की तरह दाएं नथुने से होता हुआ शरीर के अंदर पहुंच गया।

उसे ऐसा लग रहा था जैसे अपने घर में आ गया हो।
सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर से जोड़ा।
जिस्म में स्पंदन पैदा किया। आंखें खोलीं। पलकें झपकीं।
गर्दन घुमाकर दाएं-बाएं के दृश्य को देखा।

अब उसे इस क्रिया में आनंद आ रहा था। ऐसा आनंद जैसा पहले कभी किसी चीज की प्राप्ति पर नहीं आया था।

सब कुछ खेल-सा लग रहा था उसे।
ध्यान पुनः अपनी भृकुटियों पर केंद्रित किया।
आंखें बंद होती चली गईं।
जिस्म में भरी हुई सारी हवा बाहर निकाली।
पेट कमर से जा चिपका।

ध्यान शरीर के सर्किट के उस स्थान पर पहुंचा जहां स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर का ज्वाइंट था। मन में सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर से अलग करने की इच्छा की और वह काम तुरंत ही हो गया जिसे पहली बार करने में एक हफ्ता लग गया था।

एक बार फिर वह अपने सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर से बाहर ले आया। एक बार फिर वह सारे भवन में हवा का हिस्सा बनकर परवाज करता हुआ स्थूल शरीर को देख रहा था।

तभी, बारांडे की तरफ से खड़ाऊं बजने की आवाज आई।

वह समझ गया—महाराज चंडिकामृत आ रहे हैं। जानता था कि वर्तमान अवस्था को देखकर वे खुश हो जाएंगे।

वह यूं ही हवा में उड़ता रहा।

महाराज चंडिकामृत भवन के द्वार पर नजर आए।

अंगद पलक झपकते ही उनके करीब पहुंचा और चरणस्पर्श करने के साथ बोला—"आशीर्वाद दीजिए महाराज।"

महाराज चंडिकामृत ने उसके स्थूल शरीर की तरफ देखते हुए कहा—"हमने कहा था न, ईश्वर ने तुम्हें वह अद्भुत शक्ति दी है जिसके कारण उन क्रियाओं में, जिनमें साधारण लोग सालों साल में भी पारंगत नहीं हो पाते, तुम चंद दिनों में दक्ष हो जाओगे।"

"यह सब आपके आशीर्वाद से हुआ है।"
"देवी कवच?"
"कंठस्थ कर लिया है।"

"बहुत सुंदर, तुम्हारी ट्रेनिंग पूरी हुई।"

"अभी कहां महाराज!" उसने हाथ जोड़कर कहा–"अभी तो मैं सिर्फ अपने जिस्म से निकलना और उसमें वापस लौटना सीखा हूं। आपने कहा था कि इसके बाद मुझे किसी दूसरे के शरीर में जाने और आने का अभ्यास करना है।"

"उसकी जरूरत नहीं रही, सबसे पहले अपने घर जाओ।"
"घर?" अंगद चौंका–"बात क्या है महाराज?"
"वहां पहुंचोगे तो पता लगेगा।"
"इसका मतलब वहां कुछ हुआ है।" अचानक अंगद बेचैन हो उठा–"क्या हुआ है! मुझे बताइए महाराज।"
"एक शर्त पर।"
"शर्त?"
"यह कि जो हुआ है तुम उसके बारे में सुनकर बेचैन नहीं होगे।
उत्तेजित नहीं होगे क्योंकि उत्तेजित होने से परिणाम विपरीत निकल सकते हैं। धैर्य से काम लेना होगा।"
बुरी तरह अधीर हो चुके अंगद ने पूछा–"बताइए तो सही।"

"पहले वादा करो।"
"करता हूं।"
"कपाली रिम्पी को अपने साथ ले गई है।"
"रिम्पी को कपाली ले गई!" अंगद पर मानो वज्र गिरा–"कैसे?"
"यह हम भी नहीं समझ पा रहे कि रिम्पी के गले में तावीज होने के बावजूद उसने उसे अपना माध्यम कैसे बना लिया और...

"और?"
"एक बार फिर कहते हैं, धैर्य बनाए रखना।"
"आखिर क्या हुआ है?"
"कपाली को रोकने के लिए महकार ने उससे संघर्ष किया और उस संघर्ष में वह शहीद हो गया।"

"न...नहीं...नहीं महाराज। ऐसा नहीं हो सकता।" अंगद के हलक से चीख निकली थी–"सुकन्या के बाद वह मेरे बहनोई को, नहीं...ऐसा नहीं हो सकता।" कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगा था। महाराज चंडिकामृत ने आगे बढ़कर उसके सूक्ष्म शरीर को अपनी भुजाओं में भरा, ऐसा वे इसलिए कर सके क्योंकि इस वक्त स्वयं भी अपने स्थूल शरीर में नहीं थे। उनका भी सूक्ष्म शरीर ही अंगद के सामने था। बोले–"संभालो अंगद, संभालो खुद को। जैसा कि तुम वादा कर चुके हो, धैर्य से काम लो।"

"कैसे महाराज...कैसे? वो एक-एक करके...।" अंगद पुनः सेंटेंस पूरा न कर सका और रोने लगा।

"हमने पहले ही कहा था, कपाली भी अपनी चाल चले बगैर बाज नहीं आएगी। वही हुआ। हमारे चारों तरफ अंधेरा फैलाकर उसने आक्रमण कर दिया।"

"तब तो वह रिम्पी को भी...

"नहीं अंगद।" चंडिकामृत उसकी बात पूरी होने से पहले ही बोले–"इसीलिए धैर्य से काम लेने के लिए कहा था और चतुराई से भी। विश्वास रखो, पूर्णिमा से पहले वह रिम्पी का बाल भी बांका नहीं होने देगी क्योंकि अभिजीत उसी की बलि से जिंदा होगा और उसे जिंदा करना ही कपाली का मकसद है।"

"मैं ऐसा नहीं होने दूंगा।" अंगद के जबड़े भिंच गए–"उससे पहले ही मैं कपाली का नामोनिशान मिटा दूंगा।"

"तुम्हें ठीक इसी मिशन के लिए तैयार किया गया है।"
"मिशन?"

"रिम्पी को बचाने और कपाली को नेस्तनाबूद करने का तुम्हारा ये मिशन उसी जगह से शुरु होगा जहां की कपाली रहने वाली है और जोरावर सिंह के किले पर जाकर खत्म होगा।"

"जोरावर सिंह का किला?"

"वही किला जिसमें दी जाने वाली बलियों के तुम्हें सपने आते थे और जहां से कपाली सुकन्या के पीछे पड़ी।"

"वो किला कहां है महाराज?"

"तुम्हारे गांव के पास एक दूसरा गांव है—बेलापुर। कपाली वहीं की रहने वाली है और वहीं वह किला तथा वह कब्रिस्तान है जिसमें कपाली ने अभिजीत की हड्डियां छुपा रखी हैं। उसे खत्म करने तुम्हें वहीं जाना होगा।"

"मैं जाऊंगा महाराज।" जबड़े कसे हुए थे—"मैं जा रहा हूं।"
"जाने से पहले कुछ जरूरी हिदायतें सुनो।"
"जी?"

"सबसे पहले घर जाना। वहां मौजूद लोगों को सांत्वना देना। समझ सकते हो कि इस वक्त तुम्हारे माता-पिता, तरूणा और नंदिनी किस हालत में होंगे। उसके बाद अपने मिशन पर रवाना होना और मिशन में तुम्हारे साथ नंदिनी जरूर होनी चाहिए।"

"न-नंदिनी?" अंगद बुरी तरह चौंका—"वो क्यों महाराज?"

चंडिकामृत हौले से मुस्कराए, बड़ी ही रहस्यमय मुस्कान थी वह। बोले—"तुम्हें याद होगा, हमने कहा था कि—'तुम्हारे साथ एक ऐसी रहस्यमय शक्ति है जिसके कारण कपाली तुम्हारी जान नहीं ले सकती।'...वह शक्ति नंदिनी के अलावा और कोई नहीं है। याद रखना, कपाली की शक्तियां नंदिनी को तुमसे दूर करने की चेष्टा करेंगी। उसे तुम्हारे शक के दायरे में फंसाना चाहेंगी मगर तुम्हें उनकी साजिश में नहीं फंसना है।'"

"मैं कुछ समझा नहीं महाराज, ये क्या कह रहे हैं आप?"

"जितना समझाया है, उससे ज्यादा समझने का वक्त अभी नहीं आया है। जब वक्त आएगा तो सारी बातें खुद-ब-खुद तुम्हारी समझ में आ जाएंगी। यह भी कि—होता सिर्फ वही है जो विधि ने अपनी कलम से लिख दिया होता है और...ये कोई भी नहीं जान सकता कि उसने क्या लिख रखा है। हम भी नहीं।"

"आप फिर रहस्यमय बातें करने लगे।"
"तुम उनमें मत उलझो और अंतिम हिदायत सुनो।"
"अंतिम हिदायत?"

"मिशन पर तुम्हारा ये शरीर नहीं जाएगा जो इस वक्त हमारे सामने खड़ा है। वो।" चंडिकामृत ने उसके स्थूल शरीर की तरफ इशारा करने के साथ कहा—"मिशन पर वो शरीर जाएगा और...

"और?"

"किसी को समय से पहले पता न लग पाए कि तुम अपने स्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर को अलग कर सकते हो।"

"किसी से मतलब?"

"किसी से मतलब सबसे है। नंदिनी को भी पता न लग पाए और कपाली को तो बिल्कुल नहीं। तुम बेवजह अपने दोनों शरीरों को अलग नहीं करोगे। हालांकि तुम अभी, पलक झपकते ही अपने स्थूल शरीर को यहां छोड़कर हवा का हिस्सा बनकर जोरावर सिंह के किले में पहुंच सकते हो परंतु भूलकर भी ऐसी भूल न करना। तुम्हें शरीर वाला साधारण अंगद बनकर ही वहां पहुंचना है। सारे काम सशरीर वाले अंगद की तरह करने हैं। किसी को कोई चमत्कार न दिखाना। ऐसा किया तो फायदे की जगह नुकसान होगा।"

"तो फिर इस कला का लाभ?"

"हमारे कथन के मतलब को समझो अंगद, हम यह कहना चाहते हैं कि जो क्षमताएं तुमने इन दस दिनों में अर्जित की हैं उनका इस्तेमाल केवल जरूरत पड़ने पर करना है और बहुत सावधानी से करना है। इस तरह करना है कि किसी को समय से पहले पता न लग पाए कि तुममें ये क्षमताएं हैं क्योंकि...

"क्योंकि?"

"स्थूल शरीर के साथ तुम्हारे हर अंग को सुरक्षित रखने वाला देवी कवच चलेगा। नंदिनी के रूप में एक ऐसी रहस्यमय शक्ति तुम्हारे साथ होगी जिसकी वजह से कपाली तुम्हें मार नहीं सकती लेकिन फिर भी, अपने आपको अजेय मत समझना क्योंकि कपाली के पास ऐसी एक नहीं, अनेक रहस्यमयी शक्तियां हैं जो इन सबके बावजूद तुम्हारा संहार कर सकती हैं। इसलिए बार-बार चेता रहे हैं—उसे समय से पहले इल्म तक न हो पाए कि तुममें अपने स्थूल शरीर से बाहर निकलने की क्षमता है। उसे पता लग गया तो हो सकता है वह तुम्हारी इस क्षमता को ही जाम कर दे अथवा अगर गलती से तुमने समय से पहले उसके सामने अपने सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर से अलग कर लिया तो तुम्हें कभी स्थूल शरीर तक नहीं पहुंचने दे। उस अवस्था में तुम जीते-जी मर जाओगे।"

"मैंने आपकी हिदायतों की गांठ अपने पल्ले में बांध ली है।"
"तो जाओ।"
अंगद ने पुनः चरणस्पर्श किए। वे बोले—"विजयी भवः।"

अंगद का सूक्ष्म शरीर उड़ा और स्थूल शरीर के अंदर समा गया। कुछ देर बाद वह आसन से उठकर खड़ा हो गया था।

जब तक अंगद अपने फ्लैट पर पहुंचा, तब तक न सिर्फ मोहित बनर्जी, गंगोत्री और तरूणा वहां पहुंच चुके थे बल्कि नंदिनी को भी होश में लाया जा चुका था।

वे सभी महकार की वीभत्स लाश के पास बैठे रो रहे थे और फ्लैट के बाहर पड़ोसियों की भीड़ लगी थी।

वह ऐसी एक्टिंग करता हुआ अंदर दाखिल हुआ जैसे वहां के वातावरण को देखकर चौंका हो।

उसे देखते ही रुदन तेज हो गया था।

और...महकार की लाश पर नजर पड़ते ही उसे किसी किस्म की एक्टिंग करने की जरूरत न रही। लाश की हालत ही ऐसी थी कि उसकी मुट्ठियां भिंच गईं। जबड़े कस गए। चेहरा सुर्ख हो गया और उसकी एक-एक नस बुरी तरह तनकर चमकने लगी।

हलक से गुर्राहट फूटी—"किसने किया ये सब?"
"क-कपाली ने।" नंदिनी की कांपती आवाज।
"वो यहां कैसे आ गई?"

और फिर, नंदिनी सब कुछ बताती चली गई। बताते-बताते भी उसके चेहरे पर दहशत का नंगा नाच चल रहा था और सुनते-सुनते अंगद आग का गोला नजर आने लगा क्योंकि चंडिकामृत ने घटना की वह डिटेल नहीं बताई थी जो नंदिनी के मुंह से पता लगी।

नंदिनी के चुप होते ही बुरी तरह बिलखती अंगद की मां उससे आ लिपटी और बोली—"रिम्पी की चिंता कर बेटा, वो डायन रिम्पी को अपने साथ ले गई है। जाने उसका क्या करेगी।"

अंगद अपनी आंखों में उमड़ने वाले आंसुओं को न रोक सका। मां को जोर से भींचता हुआ बोला—"चिंता मत कर मां, अब मैं आ गया हूं। वह हमारी रिम्पी का बाल भी बांका न कर सकेगी।"

कुछ देर वही माहौल रहा।

फिर अंतिम क्रिया की तैयारियां होने लगीं और शाम होते-होते महकार का अंतिम संस्कार कर दिया गया।

उस वक्त ड्राइंगरूम में केवल अंगद, तरूणा और नंदिनी थे। वह नंदिनी जो सबसे ज्यादा सदमे में थी। शायद इसलिए क्योंकि जो हुआ था, उसे उसने अपनी आंखों से देखा था।

तरूणा बार-बार कह रही थी—"मेरी समझ में नहीं आ रहा कि रिम्पी के गले में तावीज के रहते यह सब कैसे हो गया?"

"इसका जवाब हम दे सकते हैं।" यह आवाज काले खां की थी जो अभी-अभी फ्लैट का मुख्य द्वार पार करके अंदर दाखिल हुआ था। राजपाल उसके पीछे-पीछे था।

"तुम?" अंगद चौंका—"तुम कौन हो?"
"काले खां।" नंदिनी ने बताया।

"ओह! तो इस शरीर में हो तुम! जो कुछ तुम्हारे साथ हुआ, वह सब नंदिनी ने बताया। बड़ी हैरतअंगेज बात है।"

"वो बात पुरानी हो गई अंगद।" काले खां ने कहा—"अब तो मेरे पास नई-नई और उससे भी ज्यादा हैरतअंगेज जानकारियां हैं।"

"हां, तुमने कहा कि तुम यह बता सकते हो कि तावीज के रहते कपाली ने यह सब कैसे किया।"

"क्योंकि तावीज उसके गले में था ही नहीं।"

अंगद बुरी तरह चौंका। चौंककर नंदिनी की तरफ देखा और पुनः काले खां की तरफ देखता बोला—"लेकिन नंदिनी का कहना है कि तावीज उसके गले में था।"

"मैं सच कह रही हूं।" नंदिनी बोली—"मैंने अपनी आंखों से देखा था और...महकार भैया ने भी।"

तरूणा ने मौका लगते ही कहा—"जो कि इस बात की पुष्टि करने के लिए अब इस दुनिया में नहीं हैं।"

"मेरा यकीन करो अंगद।" नंदिनी की आंखें भर आईं।
"तुम झूठ बोल रही हो।" काले खां ने कहा।
नंदिनी बौखलाकर चिल्लाई—"मैं झूठ क्यों बोलूंगी?"

"ये तो तुम जानो लेकिन अगर तावीज उसके गले में था तो ये क्या है?" कहने के साथ काले खां ने जेब से तावीज निकालकर उन सबके सामने लहरा दिया। नंदिनी आंखें फाड़े तावीज को देखती रह गई थी जबकि अंगद ने उसे काले

खां के हाथ से झपटा। खोला और उसमें मौजूद कागजों को देखता बोला—"ये वही है।"

"मैं शुरु से कहती आ रही हूं अंगू।" तरूणा जहरीली नजरों से नंदिनी की तरफ देखती बोली—"और फिर कहती हूं, यह जादूगरनी है जो हमारे साथ कोई खेल, खेल रही है।"

काले खां ने कहा—"एक बात तो मैं भी कहना चाहूंगा।"
"क्या?" अंगद ने पूछा।
"मिस नंदिनी कजारिया की मशीन पर लेटने के लिए तैयार नहीं हैं। मुझे नहीं मालूम क्यों?"
"सीधी बात है।" राजपाल ने तान मिलाई—"ये हमसे अपना अतीत छुपाना चाहती हैं।"
"ऐसा नहीं है।" नंदिनी चिल्लाई।
काले खां तुरंत बोला—"तो कतरा क्यों रही हो?"

"तुम मुझे जलील करना चाहते हो जो कि मैं नहीं होऊंगी।" उसने गुर्राकर काले खां से कहा और फिर अंगद की तरफ पलटकर बोली—"ये शुरु से मेरे पीछे पड़े हुए हैं। पहले शालू सावित करना चाहते थे जो कि नहीं कर सके क्योंकि मैं वो हूं ही नहीं। इन्हें तब तसल्ली हुई जब शालू मेरठ में पकड़ी गई।"

"यह झूठ है।"
"मतलब?"

"तुम्हें कुछ देर के लिए भ्रमित करने हेतु हमने झूठ बोला था। मेरठ में कोई शालू नहीं पकड़ी गई है। हमारा ख्याल अब भी यही है कि तुम वही हो। धनपत को अपने प्रेमजाल में फंसाकर अंकुर को किडनेप किया और अब वही काम अंगद के साथ कर गुजरी हो।"

"ये झूठ है। ये झूठ है अंगद।" नंदिनी की चीख में उसके रोने की आवाज मिक्स हो गई थी—"काश महकार भैया जिंदा होते! वे बताते कि इसे हमने रिम्पी के गले में देखा था और यह भी कि रिम्पी को कपाली से बचाने के लिए मैंने क्या-क्या प्रयत्न किए थे।"

तरूणा ने पुनः जहर उगला—"तो महकार भैया की तरह उसने तुम्हें भी मार क्यों नहीं डाला?"

"काश मार ही डालती। मार डालती तो इस वक्त मैं तुम लोगों के सामने जलील न हो रही होती। मैंने तो खुद ही बताया कि वह मुझे मारने से कतरा रही थी।"

"क्यों?"
"नहीं जानती।"

"हम बताते हैं।" पुनः काले खां बोला—"तुम्हारी सुनाई हुई कहानी झूठी है। असल में तुम ही...

"ये झूठ है अंगद...ये सब झूठ है।" आंखों में आंसू लिए वह सीधी अंगद की तरफ देखती हुई गिड़गिड़ाई थी—"मैंने एक-एक लफ्ज वही बताया है जो हुआ था।"

"दो बातें हैं नंदिनी, जिनका तुम्हें जवाब देना चाहिए।" अंगद गंभीर स्वर में बोला—"पहली, इस ताबीज का चमत्कार मैं अपनी आंखों से देख चुका हूं। जिस वक्त तक ये मेरे गले में था उस वक्त तक कपाली के प्रेत और पिशाचनी मुझे छू तक नहीं पाए थे। इसे मेरे गले से निकालने के लिए उन्होंने एक लड़के का इस्तेमाल किया था। इसलिए मुझे पूरा विश्वास है कि ये तावीज रिम्पी के गले में होता तो कपाली के उस पर सवार होने की तो बात ही दूर, उसे स्पर्श तक नहीं कर सकती थी। दूसरी बात, अगर ये रिम्पी के गले में था तो काले खां के पास कहां से आ गया?"

"मेरे पास तुम्हारे किसी सवाल का जवाब नहीं है अंगद।" उसने करूणा भरी नजरों से अंगद की तरफ देखते हुए कहा था–"मुझे मालूम है कि तुम मुझसे प्यार नहीं करते पर तुम्हें ये भी मालूम है कि मैं तुमसे प्यार करती हूं और...शायद तुम्हें ये भी मालूम होगा अंगद कि प्यार करने वाले मर तो सकते हैं लेकिन अपने दिलबर की झूठी कसम नहीं खा सकते। विश्वास कर सकते हो तो करो, नहीं कर सकते तो मेरा दुर्भाग्य! लेकिन मैं तुम्हारी कसम खाकर कह रही हूं कि उस वक्त रिम्पी के गले में तावीज था।"

नंदिनी के शब्दों में ऐसी वेदना थी जिसने अंगद को हिलाकर रख दिया। एक भी लफ्ज न फूटा उसके मुंह से। बस देखता रहा उसकी तरफ जबकि तरूणा ने कहा था–"सावधान अंगू, यह तुम्हें अपने झूठे जजबातों के जाल में फंसाने की कोशिश कर रही है।"

अंगद ने तरूणा के शब्द भी सुने और वे भी जो चंडिकामृत ने कहे थे–'याद रखना, कपाली की शक्तियां नंदिनी को तुमसे दूर करने की चेष्टा करेंगी। उसे तुम्हारे शक के दायरे में फंसाना चाहेंगी मगर तुम्हें उनकी साजिश में नहीं फंसना है।'

अंगद ने सोचा–'तो क्या ये वही सब कुछ हो रहा है?'

फिलहाल उसके लिए चंडिकामृत से ज्यादा विश्वसनीय कोई नहीं था। अतः काले खां से सवाल किया–"ये तुम्हें कहां मिला?"

"सर्विस लेन में ठीक तुम्हारे इस फ्लैट की बल्कि उस कमरे की खिड़की के नीचे जिसमें वारदात हुई है।"

"तुम वहां कैसे पहुंच गए?"

"कहानी लंबी है लेकिन शॉर्ट में सुनाता हूं।" काले खां चालू हो गया–"मुझे शक है कि मेरा जिस्म परिवर्तन भी कपाली ने ही किया है और मैंने कसम खाई है कि खुद को पुनः अपने ऑरिजनल जिस्म में पहुंचाने के लिए उसे विवश कर दूंगा। इसीलिए मैं और राजपाल यह प्रस्ताव लेकर यहां आए थे कि जब हमारी मंजिल एक है तो मिलकर काम क्यों न करें! इन्होंने कहा तुम चंडिकामृत के आश्रम में गए हो और लौटने पर तुम ही इस बात का फैसला कर सकते हो। हालात पर नजर रखने के लिए हमने इस बिल्डिंग के सामने झोंपड़ी डाल ली और भिखारी बनकर बैठ गए। उसके बाद, जो दृश्य हमने आज सुबह देखा, उसे अपनी आंखों से देखने के बाद भी यकीन नहीं कर पा रहे हैं कि हमने वह सब देखा है।"

"क्या देखा तुमने?"

काले खां ने बता दिया और...सुनने के बाद उन सभी की आंखें हैरत से फैल गई थीं मगर कहने के लिए किसी को कुछ न सूझा।

कुछ देर बाद अंगद ने सवाल किया–"मैंने यह पूछा था कि तुम लोगों को सर्विस लेन में जाने की क्या जरूरत पड़ी थी?"

"पुलिस वाले हैं। किसी भी घटना की खोजबीन करना खून में शामिल हो गया है। रिम्पी के उड़ने वाला सीन देखने के बाद जब यह पता लगा कि महकार का मर्डर हो गया है तो पुलिसिया जेहन सक्रिय हो उठा। इस उम्मीद में सर्विस लेन में घुसे कि शायद कुछ हाथ लग जाए और अंततः ये तावीज हाथ लग ही गया।"

"हो सकता है किसी ने इसे घटना के बाद रिम्पी के गले से निकालकर वहां फैंक दिया हो!"
"उस वक्त किसकी हिम्मत थी जो ऐसा कर सकता?"

"रिम्पी पर सवार कपाली की हिम्मत तो थी! मुमकिन है यह काम उसने खुद किया हो!"
"पर तुम्हारे मुताविक तो वह इसे हाथ नहीं लगा सकती थी!"

अंगद को चंडिकामृत के ये शब्द याद आए कि कपाली पर वहुत ज्यादा शक्तियां हैं मगर इस बारे में वह उनसे बात नहीं कर सकता था। अतः वोला—"उसके द्वारा भेजे गए प्रेत और पिशाचनी की बात अलग है। खुद कपाली की अलग। हो सकता है अपनी विशेष शक्तियों के बल पर वह ऐसा कर सकती हो।"

"अंगू।" तरूणा उसे तीखी नजरों से देखती हुई वोली—"तुम नाजायज तरीके से नंदिनी को सेफ करने की कोशिश कर रहे हो!"

हालांकि खुद उसे भी ऐसा लग रहा था लेकिन चंडिकामृत की बातों से बंधा वोला—"नहीं तरूणा, ऐसा नहीं है।"

"ऐसा क्यों कर रहे हो तुम?" तरूणा ने चकित नजरों से उसकी तरफ देखा—"इस जादूगरनी के लिए ये सॉफ्ट कार्नर क्यों है?"

"न मैं इस बारे में वात करना चाहता हूं और न ही मेरे पास इस किस्म की वातों में सिर खपाने का टाइम है।" अंगद ने निर्णायक अंदाज में कहा था—"मुझे तुरंत रिम्पी को उसके चंगुल से निकालने के मिशन पर रवाना होना है।"

"इस मिशन में हम भी साथ हैं।" काले खां ने कहा।

अंगद ने आधे मिनट तक कुछ सोचा। उस बीच वह काले खां के नए चेहरे की तरफ देखता रहा था। बोला—"ओके। मुझे कोई आपत्ति नहीं है।" इतना कहने के बाद वह नंदिनी से मुखातिब हुआ था—"तुम्हें भी मेरे साथ चलना है नंदिनी।"
"क्यों?" तरूणा को जैसे बिच्छू ने काटा—"ये क्यों?"
उसने सख्ती से कहा—"सवाल नहीं तरू।"
"तो मैं भी चलूंगी।"
"नहीं, तुम्हें यहां मां और पिताजी का ख्याल रखना होगा।"
"वो ये रख लेगी, तुम्हारे साथ जाने का हक मेरा है।"
"वात को समझने की कोशिश करो तरू, इसका...
"हरगिज...हरगिज नहीं।" उसने उसकी बात पूरी होने से पहले ही अड़ियल अंदाज में कहा—"मैं तुम्हें अकेला नहीं छोड़ूंगी।"
"या नंदिनी के साथ अकेला नहीं छोड़ोगी?"
"ऐसा भी कह सकते हो।"
"तरू।" अंगद ने उसकी आंखों में झांका था—"इसका मतलब तो तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है?"

"सच सुनना चाहते हो तो वो ये है कि—हां, अभी-अभी तुमने जो फैसले लिए हैं उनके बाद विश्वास नहीं रहा और तुम्हें याद होगा, मैंने कहा था—मैं हार मानने वाली नहीं हूं।"

त्रिया हठ के समक्ष तो भगवान शिव को भी झुकना पड़ा था फिर अंगद वेचारे की क्या बिसात थी!

अंगद सहित हर चेहरे पर खौफ की लकीरें खिंची हुई थीं।
जिस्म कांप रहे थे और गाड़ी का पॉवरफुल एसी चल रहा होने के वावजूद वे पसीने-पसीने थे।
तरूणा, नंदिनी, काले खां और राजपाल के चेहरे इस कदर पीले पड़े हुए थे जैसे पीलिया के मरीज हों।
वहशत में डूबी आंखें उस स्थान पर गड़े बोर्ड को देख रही थीं जहां से एक रास्ता दाईं ओर को चला गया था, दूसरा वाईं ओर को।

बोर्ड बहुत पुराना और जंग खाया हुआ था।
उस पर किसी कम पढ़े-लिखे शख्स ने हाथ से 'बेलापुर' और 'चमनगढ़' लिखा था। बेलापुर के लिए दाईं तरफ तीर का निशान बनाया गया था, चमनगढ़ के लिए बाईं तरफ।

हालांकि प्रत्यक्ष में वे उस बोर्ड से डरे हुए नजर आ रहे थे लेकिन वास्तव में बोर्ड से डरे हुए नहीं थे क्योंकि बोर्ड में ऐसी कोई बात ही नहीं थी जिससे डरा जाता।

डर का कारण केवल दस मिनट पहले हुई एक ऐसी हौलनाक और चमत्कारिक घटना थी जिसका संबंध उस बोर्ड से था।

वे एक एक्स यूवी फाइव हंडरेड में थे।

अंगद ड्राइविंग कर रहा था। बगल वाली सीट पर तरूणा। पीछे नंदिनी और काले खां। सबसे पीछे राजपाल।

गाड़ी के बाहर का टेंपरेचर चालीस के आसपास था जबकि एसी चल रहा होने के कारण अंदर का पच्चीस के करीब।

सूरज आग बरसा रहा था।

हवा हड़ताल पर थी, इस बात का अंदाजा उन्हें इसलिए हो पा रहा था क्योंकि सड़क के दोनों तरफ और दूर-दूर तक खड़े नजर आ रहे लंबे-लंबे पेड़ों के पत्ते तक नहीं हिल रहे थे।

जिस सड़क पर इस वक्त वे थे, वह मुश्किल से दस फुट चौड़ी थी यानी एक बार में एक ही वाहन गुजर सकता था।

यदि सामने से दूसरा चार पहिया वाहन आ जाता तो एक-दूसरे की बगल से गुजरने के लिए दोनों को आधा-आधा कच्चे में उतरना पड़ता परंतु पिछले करीब आधे घंटे से किसी वाहन की तो बात ही दूर, दूर-दूर तक कोई व्यक्ति भी नजर नहीं आया था।

दस फुट चौड़ी उस सड़क को अगर सड़क का अवशेष मात्र कहा जाए तो ज्यादा मुनासिब होगा क्योंकि वह जगह-जगह से टूटी हुई थी और गाड़ी बहुत ही कम रफ्तार से, गहरे-गहरे गड्ढों के कारण उछलती-कूदती आगे बढ़ रही थी।

"कहां फंस गए यार!" अंततः काले खां कह ही उठा—"यहां तो न ये अंदाजा हो रहा है कि बेलापुर किधर और कितनी दूर है और न ही कोई ऐसा आदमी नजर आ रहा है जिससे पूछा जा सके।"

"आप एसी में बैठे हैं सर।" राजपाल बोला—"बाहर निकलकर देखिए कैसी आग बरस रही है। किसका दिमाग खराब हुआ है कि अपनी खाल को झुलसाने के लिए बाहर निकलेगा!"

"ऐसा भी तो हो सकता है कि हम गलत रास्ते पर जा रहे हों। इधर बेलापुर हो ही नहीं। मील का पत्थर भी तो लगा हुआ नहीं है।"

राजपाल को भी जैसे काले खां की हर बात का जवाब देने की बीमारी थी। बोला—"ये शहर नहीं है सर जहां मील के पत्थर लगे होते हैं। यहां तो बस चलते जाओ, पहुंच ही जाओगे मंजिल पर।"

राजपाल का सेंटेंस खत्म होते-होते एक्स यूवी ने एक मोड़ा पार किया और ऐसा करते ही अंगद को एक भैंसा-बुग्गी नजर आई।

सड़क के बीचों बीच चलती वह सामने की तरफ से इधर ही आ रही थी। बुग्गी के अगले सिरे पर बैठा एक अधेड़

शख्स भैंसे को हांक रहा था। उसके जिस्म पर खादी का कुर्ता और धोती थी। सिर पर मटमैले रंग की पगड़ी बांधे हुए था। उसे देखकर अंगद के मुंह से स्वतः ही ये शब्द निकल गए–"लो, नजर तो आया कोई।"

"बड़ी हिम्मत है इस आदमी की।" राजपाल बड़बड़ाया।
अंगद ने हॉर्न दिया।

एक-दूसरे को रास्ता देने हेतु भैंसा-बुग्गी और एक्स यूवी को अपने-अपने पहिए कच्चे में उतारने पड़े थे।

करीब आते-आते अंगद ने गाड़ी के अंदर से ही हाथ से अधेड़ को रुकने का इशारा किया।

अधेड़ ने भैंसे की लगाम खींचकर बुग्गी रोक दी। अंगद ने भी उसके करीब लाकर एक्स यूवी रोकी और,जैसे ही ड्राइविंग डोर का कांच नीचे गिराया, बाहर बरस रही आग का एहसास हुआ।

उसने पूछा–"बेलापुर कितनी दूर है ताऊ?"

"समझ ले पंहुच ही गया।" अधेड़ ने पगड़ी के सिरे से अपने झुर्रियोंदार चेहरे पर छाए पसीने को पौंछते हुए पूछा–"बेलापुर में किसके घर जाना है?"

"जोरावर सिंह के किले पर।"

"जोरावर सिंह के किले पर!" ऐसा कहकर वह इतने विचित्र और डरावने अंदाज में हंसा कि एक्स यूवी फाइव हंडरेड में बैठे हर शख्स के जिस्म में झुरझुरी-सी दौड़ गई। अंगद ने हिम्मत करके पूछा था–"तुम इस तरह क्यों हंसे ताऊ?"

"तो कपाली से मिलना है तुम्हें?" वह फिर उसी अंदाज में हंसा। हैरान अंगद के मुंह से निकला–"ह-हां।"

"मिलो-मिलो। बड़े प्यार से मिलेगी वो तुमसे।"

अंगद ने पुनः हिम्मत करके पूछा–"क्या तुम उसे जानते हो?"

"कैसी बात करता है बेटा! बेलापुर की बात तो छोड़ ही दे। बेलापुर के चारों तरफ के दस-दस गांवों तक में ऐसा कौन है जो कपाली माता को न जानता हो।"

"कपाली माता!" अंगद के मुंह से हैरानी में डूबे शब्द निकले थे–"तुम उसके बारे में क्या जानते हो ताऊ?"

"जो ये जानता है, तू भी जान जाएगा।" यह सेंटेंस अधेड़ ने नहीं बल्कि बुग्गी में जुते भैंसे ने बोला था–"बस थोड़ा-सा आगे चला जा। वहां से ये सड़क दो हिस्सों में बंट जाएगी। एक रास्ता बेलापुर को जाता है, दूसरा चमनगढ़ को। वहां बोर्ड लगा है।"

सबने महसूस किया कि इस बार भैंसा बोला था मगर किसी को यकीन नहीं आया। सन्न रह गए थे वे। बौखलाए-से अंगद ने अधेड़ से कहा–"हमें ऐसा क्यों लगा ताऊ कि भैंसा बोला है।"

वह फिर हंसा। वही डरावना अंदाज। बोला–"वही बोला है।"

"व-वही बोला है!" अकेले अंगद की नहीं बल्कि एक्स यूवी में बैठे हर शख्स की घिग्घी बंध गई थी–"ये भैंसा भी बोलता है?"

पुनः भैंसा ही बोला–"तुझे शक है तो फिर बोल देता हूं।"

मारे खौफ के, उनकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई।

अगर यह लिखा जाए तो जरा भी गलत न होगा कि जबरदस्त कोशिश के बावजूद अंगद के मुंह से कोई शब्द न निकल सका।

"अच्छा, चलता हूं।" जुगाली सी करते भैंसे ने ही कहा–"तूने मेरे दो कीमती मिनट खराब कर दिए।"

और...अगले पल, यह देखकर उनकी आंखें विस्फारित अंदाज में फैल गईं कि उनके आसपास न भैंसा था, न बुग्गी थी और न ही अधेड़ था। दूर-दूर तक कुछ भी तो नहीं था कहीं।

बस चारों तरफ आग बरसाती धूप नजर आ रही थी।

सड़क के किनारे एक्स यूवी अकेली खड़ी थी और उसमें बैठे हर शख्स के चेहरे पर खौफ और सिर्फ खौफ कत्थक कर रहा था।

आंखों में वहशत।
जिस्म पसीने से तर-बतर हो चुके थे।

करीब दो मिनट तक किसी के मुंह से आवाज तक न निकली। फिर, अंगद के मुंह से ऐसी आवाज निकली थी जैसे किसी बहुत ही गहरे कुवें के अंदर से बोला हो–"य-ये क्या था?"

"भ-भूत!" राजपाल की आवाज ही नहीं पूरा जिस्म कांप रहा था–"व-वो भूत था। भ-भैंसा भी कहीं बोलता है?"

"अंगद।" तरूणा बोली–"हमें आगे नहीं जाना चाहिए।"

काले खां ने कहा–"यकीनन वह कोई छलावा टाइप की चीज थी मगर उससे डरकर हम अपना मिशन तो नहीं छोड़ सकते।"

"वह छलावा नहीं, काला जादू था।" नंदिनी बोली–"जादू मतलब...जो हमारी आंखों ने देखा, वह था ही नहीं। आंखों को धोखा देकर सिर्फ दिखाया गया। मेरी अब तक की रिसर्च के मुताबिक काले जादू के माहिर ऐसा कर सकते हैं।"

"मैं फिर कहती हूं अंगद।" तरूणा बोली–"यहीं से लौट चलो, ये जादूगरनी जाने हमें कहां ले जाकर फंसा देगी।"

"रिम्पी को लिए बगैर लौटने का तो कोई सवाल ही नहीं तरू।" कहने के साथ अंगद के जबड़े भिंच गए। खिड़की का कांच वापस चढ़ाया और गाड़ी आगे बढ़ा दी।

उसके बाद, गाड़ी वहीं रुकी थी।
ठीक बोर्ड के सामने।

तब से अब तक, बल्कि अब भी किसी के मुंह से बोल न फूट रहा था। सबके दिल 'धाड़-धाड़' की आवाज पैदा करते हुए पसलियों पर सिर पटक रहे थे। फिर, दांतों पर दांत जमाए अंगद ने एक्स यूवी बेलापुर की तरफ बढ़ा दी।

राजपाल आगे की तरफ होता हुआ काले खां के कान में बोला था–"मुझे बहुत डर लग रहा है सर।"

"गाड़ी रुकवा देता हूं, यहीं उतर जा।" काले खां झल्लाया।

"डर मुझे अपने लिए नहीं, आपके लिए लग रहा है सर। इस बार यदि उसने आपकी आत्मा इस जिस्म से निकालकर

किसी भैंसे के जिस्म में डाल दी तो क्या होगा?"

"वो भी बोलने लगेगा।" अंगद ने हंसते हुए कहा।

सबके होठों पर सहमी-सहमी-सी मुस्कान रेंग गई थी।

एक्स यूवी फाइव हंडरेड ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती जा रही थी, त्यों-त्यों मनहूसियत का एहसास बढ़ता जा रहा था।

उसमें सवार यात्रियों को लग रहा था कि चारों तरफ अजीब सा, चुभने वाला सन्नाटा पसरा हुआ है।

उस वक्त, दिलों में छाई दहशत बढ़ने लगी जब हवा ने अपनी हड़ताल तोड़ दी यानी लंबे-लंबे वृक्ष झूमते हुए नजर आने लगे और देखते ही देखते हवा ने आंधी का रूप धारण कर लिया।

हर तरफ धूल उड़ने लगी।

इस कदर कि—अंगद को ड्राइविंग करने में प्रॉब्लम होने लगी थी। सारे कांच बंद होने के बावजूद वे 'सांय-सांय' करती हवा की आवाज को सुन सकते थे। धीरे-धीरे हवा इतनी तेज हो गई कि उन्हें लगा—वह उनकी भारी-भरकम गाड़ी को उड़ा ले जाएगी।

राजपाल ने पूछा—"नंदिनी जी, यह सब वास्तव में हो रहा है या हमारी आंखें काले जादू की शिकार हैं?"

नंदिनी कुछ नहीं बोली।

बल्कि कोई भी कुछ नहीं बोला जबकि सभी के दिल यह सोच सोचकर कांप रहे थे कि जाने किस पल क्या हो जाए।

करीब पांच मिनट बाद चौंकते हुए अंगद ने कहा—"वो...वो रहा वह किला जो मुझे सपने में नजर आता था।"

सबकी निगाहें उधर उठ गईं।

कभी वह इमारत उड़ती हुई धूल से ढक जाती थी, कभी क्षण, दो क्षण के लिए चमक जाती थी जिसे किसी पुराने किले का खंडहर कहा जा सकता था। देखने से लगता था कि कभी वह तीन मंजिला रही होगी। चार ऊंची-ऊंची मीनारें थीं जिनमें से दो बीच में से टूट चुकी थीं, एक का पच्चीस परसेंट हिस्सा बचा था लेकिन एक पूरी शानो-शौकत के साथ सिर उठाए खड़ी थी।

मीनारों के बीच किले का गुंबद था, जो पूरी तरह सुरक्षित नजर आ रहा था। खिड़की और दरवाजों में कहीं किवाड़ थे, कहीं नहीं थे। जो थे, वे इस वक्त तेज हवा के कारण बार-बार खुल और बंद हो रहे थे। चारदीवारी कहीं से पूरी टूटी पड़ी थी, कहीं से अधूरी, उसका गेट कहीं नजर नहीं आ रहा था।

तरूणा के मुंह से शब्द फिसले—"बड़ा डरावना किला है।"

"इसके आसपास ही, उस साइड में वह कब्रिस्तान होना चाहिए जिसमें अभिजीत की कब्र है।" बाईं तरफ इशारा करते हुए अंगद की आवाज में अजीब-सी उत्तेजना थी—"जिसमें से निकालकर कपाली अभिजीत की हड्डियों को किले में ले जाती है।"

"एक बात शुरु से मेरी समझ में नहीं आ रही अंगद।" काले खां किले की तरफ ही देखता बोला—"कहो तो पूछ लूं।"

"पूछो।"

"हिंदू होते हुए अभिजीत कब्रिस्तान में क्यों दफन है?"

"मुझे नहीं मालूम।"

उस वक्त नंदिनी कुछ कह रही थी जब अंगद उसकी बात काट कर कह उठा–"वो रहा...वो रहा कब्रिस्तान।"

सबने उस तरफ देखा।

उड़ती हुई धूल के बीच दूर तक फैला हुआ कब्रों का सिलसिला नजर आया। चिलचिलाती धूप और तेज हवा के बावजूद उन्हें वहां वीरानी-सी फैली नजर आई थी।

कब्रिस्तान की कोई चार दीवारी नहीं थी।

अंगद ने एक्स यूवी सड़क के किनारे पर वहां रोक दी जहां के बाद थोड़ी ही दूर से कब्रों का सिलसिला शुरु होता था।

"गाड़ी यहां क्यों रोक दी?" राजपाल ने पूछा।

"मुझे वो कब्र देखनी है जहां अभिजीत की हड्डियां दफन हैं।"

"उ-उसे देखकर क्या करोगे अंगद भाई?"

अंगद उसके सवाल का जवाब दिए बगैर दरवाजा खोलकर बाहर निकल गया था। बाहर निकलते ही धूलयुक्त गर्म हवा के तेज झक्कड़ उसके जिस्म से टकराए।

जिस्म पर मौजूद कपड़े फड़फड़ाकर आवाज पैदा करने लगे।

धूल इतनी ज्यादा थी कि आंखें खुली रखने में दिक्कत हुई।

हाथ लंबा करके उसने डैशबोर्ड पर रखे अपने गोगल्स उठाए और आंखों पर चढ़ा लिए।

उसे उतरता देखते ही तरूणा ने भी अपने गोगल्स आंखों पर चढ़ाए और अपनी तरफ वाला दरवाजा खोलकर बाहर निकल गई।

उसके बाद, सबने वैसा ही किया।

पल भर पहले तक जो जिस्म एसी की ठंडी हवा से सराबोर थे, इस वक्त वे गर्म थपेड़े झेल रहे थे।

दूर तक फैले कब्रिस्तान और उसके पीछे नजर आ रहे किले की तरफ देखता अंगद यह अनुमान लगाने की कोशिश कर रहा था कि अभिजीत की कब्र किधर है।

कोई न जान सका कि वह अनुमान लगा सका या नहीं, सबने बस यह देखा कि वह कब्रिस्तान में दाखिल हो गया और कब्रों के बीच से गुजरता हुआ किले की तरफ बढ़ने लगा।

वे सब भी उसके पीछे लपके।

अंगद बीच-बीच में रुककर गौर से कब्रों को देखने लगता था।

कब्रिस्तान के बाईं तरफ एक खाई थी। खाई कितनी गहरी थी, यह कब्रिस्तान के उस सिरे पर जाए बगैर नहीं जाना जा सकता था मगर उसमें अंगद की कोई दिलचस्पी नहीं थी।

फिर।

"ये रही...ये रही।" अचानक एक कच्ची कब्र की तरफ इशारा करता वह ऐसी उत्तेजक आवाज में चीखा जैसे कारून का खजाना मिल गया हो–"यही है वो कब्र जिसमें अभिजीत की हड्डियां दफन हैं। देखो, ये कच्ची है। बड़ी आसानी से खोदी जा सकती है।"

कोई कुछ नहीं बोला।
कुछ देर अंगद कब्र की तरफ देखता रहा।
फिर जाने क्या सूझा कि एक्स यूवी की तरफ दौड़ लगा दी।

सब उसकी तरफ देख रहे थे। कोई कुछ न समझ सका, जबकि वह कब्रों के बीच से छलांगें लगाता हुआ एक्स यूवी के करीब पहुंचा और फुर्ती से उसका पिछला दरवाजा खोला।

उस वक्त लगभग सभी को उसके इरादे की भनक लग गई थी जब उड़ती धूल के बीच अंगद को पिछली सीट के पीछे से एक फावड़ा निकालते देखा। बगैर समय गंवाए वह फावड़ा हाथ में लिए कब्रों के बीच से दौड़ता हुआ उनके नजदीक आया।

वह हांफ रहा था।
काले खां ने पूछा–"क्या करना चाहते हो?"

"मैं अभिजीत की हड्डियां निकालकर अपने कब्जे में ले लूंगा। फिर किसे बलि देगी वो? कैसे जिंदा करेगी अभिजीत को।" कहने के बाद उसने किसी की भी प्रतिक्रिया जाने बगैर बहुत जोर से फावड़े का वार कब्र की कच्ची मिट्टी पर किया ही था कि–

"ऐ...।" धूल भरी गर्म हवा पर तैरती हुई एक कड़क आवाज सबके कानों में घुसी–"जान की खैरियत चाहता है तो ठहर जा।"

अंगद का हाथ जहां का तहां रुक गया।

सबने आवाज की दिशा में देखा तो देखते ही रह गए क्योंकि उन्होंने पहले ही से खुदी हुई एक कच्ची कब्र के अंदर से बहुत ही डरावने वजूद को खड़े होते देखा था।

था तो वह आदमी ही, लेकिन उन्हें आदमी जैसा लगा नहीं।

करीब साढ़े पांच फुटा, बहुत ही पतला-दुबला शख्स था वह। इतना ज्यादा काला कि यदि कोई रात में देख ले तो चीखकर बेहोश हो जाए। जिस्म पर केवल लाल रंग का एक लंगोट था।

सिर घुटा हुआ था उसका।

पसलियां ही नहीं, चेहरे की हर हड्डी बाहर को निकली हुई साफ नजर आ रही थीं। जैसे कंकाल पर जबरदस्ती खींच-तानकर काली खाल चढ़ा दी गई हो। गाल धंसे हुए थे। बाहर को उबली हुई सी आंखें इतनी सुर्ख कि दहकता अंगारा याद आ जाए।

काले मस्तक पर खिंची हुई तीन सफेद रेखाएं।

उन रेखाओं के बीच, लंबी नाक के ठीक ऊपर लाल रंग से बना मानव कंकाल का चेहरा बड़ा भयानक लग रहा था।

वातावरण में उड़ रही बेशुमार धूल के बावजूद वह खुदी हुई कब्र में खड़ा अपनी सुर्ख आंखों से लगातार उन्हीं को घूर रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे धूल का उसकी आंखों पर कोई असर ही न हो।

खौफनाक चेहरे पर हर तरफ गुस्सा ही गुस्सा।

"कौन हो तुम?" उसके मुंह से निकली वही कड़कती आवाज हवा पर परवाज करती उनके कानों तक पहुंची—"और क्यों इस भरी दोपहर में मेरी नींद खराब की?"

भले ही अंगद अंदर से डरा हुआ हो मगर प्रत्यक्ष में सख्त लहजे में बोला—"तुम कौन हो?"

"मुझसे पूछता है!" उसने अजीब खतरनाक ढंग से अपनी पतली गर्दन पर टिकी चौड़ी और गोल खोपड़ी हिलाई तथा उनकी तरफ बढ़ता हुआ बोला—"मुझसे पूछता है कि मैं कौन हूं! आज से पहले तो यह पूछने वाला यहां कोई आया नहीं।"

"आज आ गया है।" अंगद के जबड़े भिंच गए थे।
वो बोला—"आ ही गया है तो जाएगा नहीं।"
"तू कौन है मुझे रोकने वाला?"

"अभिजीत की कब्र का रखवाला।" इन शब्दों के साथ वह लहराता हुआ-सा उनके काफी करीब आ गया था।

इतना ज्यादा कि नंदिनी की आंखें सुकड़ीं। मुंह से आश्चर्यजनक लहजा निकला—"बुंदू तांत्रिक!"

वह ठिठका।
गौर से नंदिनी को देखा।

सुलगती आंखों को घेरे पलकें सुकड़ती चली गईं। फिर उसके मुंह से भी नंदिनी जैसा ही हैरतअंगेज लहजा फूटा—"नंदिनी!"

अंगद, तरूणा, काले खां और राजपाल ने हैरत से नंदिनी की तरफ देखा था और सुर्ख आंखों में उतनी ही हैरत लिए वह भी नंदिनी को देख रहा था। बोला—"तू यहां कैसे?"

"तू बता घिनौने तांत्रिक।" नंदिनी के चेहरे पर उसके लिए घृणा ही घृणा नजर आ रही थी—"तू यहां क्या कर रहा है?"

"तूने कहा था कि मेरे जैसे तांत्रिकों की कभी तरक्की नहीं हो सकती।" बुंदू तांत्रिक का लहजा अब ऐसा हो गया था जैसे नंदिनी को चुनौती दे रहा हो—"लेकिन देख...मैं कहां पहुंच गया! आज मैं माताओं की माता...माता कपाली का दास हूं।"

"ऐसी ही नीच पद्‌वी पा सकता था तू।"

"नीच बोलती है! माता कपाली के दास को नीच बोलती है!" उसकी सुर्ख आंखें मानो आग उगलने लगीं—"उस रात तो छोड़ दिया था लेकिन आज नहीं छोड़ूंगा तुझे।"

"नंदिनी।" अंगद ने पूछा—"कौन है ये?"

नंदिनी ने बताने के लिए मुंह खोला ही था कि हवा के झोंकों पर गन्ने की तरह लहराता हुआ बुंदू तांत्रिक उनकी तरफ लपका।

अंगद तुरंत ही फावड़ा तानता गर्जा—"काटकर फेंक दूंगा।"
"फावड़े से?" कहकर बड़े ही डरावने अंदाज में हंसा वह।
"तेरे लिए यही काफी है।"

"तुझे नहीं पता मूर्ख कि मेरे लिए कुछ भी काफी नहीं है। चल, नदिनी को बाद में भुगत लूंगा। पहले तू बता—यहां क्यों आया है?"

"अगर तू अभिजीत की कब्र का रखवाला है तो कपाली को जरूर जानता होगा।"

"कपाली माता बोल निर्बुद्धि...कपाली माता।"

"कहां मिलेगी वो?"

"हर जगह। बेलापुर के कण-कण में। जर्रे-जर्रे में। यहां की हवा में, धूप में, वारिश में, कब्रों में, पेड़ों में, कहां नहीं है कपाली माता!"

"मैं उसका ठिकाना पूछ रहा हूं।"
"ठिकाना ही बताया है गधे, फिर भी—क्या करेगा जानकर?"
"मैं उसका काल बनकर यहां आया हूं।"

"काल? महाकाली का काल?" वह इस तरह हंसा जैसे अंगद ने संसार का सबसे जोरदार लतीफा सुनाया हो। तेज गर्म हवाओं पर सवार होकर जिस्मों में झुरझुरी पैदा कर देने वाली उसकी हंसी दूर-दूर तक गूंजती चली गई थी—"काल तो तेरा खींच लाया है तुझे यहां। जो कपाली माता को जानता है उसके मुंह से ऐसे लफ्ज नहीं निकल सकते। अरे तू क्या मारेगा उन्हें! कपाली तो तब नहीं मरी जब सारे गांव ने मारना चाहा था।"

"मेरी समझ में नहीं आ रहा कि तू क्या बक रहा है।"

"समझ मत बच्चे। बस देख। कपाली माता के इस तुच्छ सेवक का कमाल देख।" कहने के साथ उसने अपनी लंबी-लंबी उंगलियां मोड़ीं। उन्हें मुंह में ले गया और फिर, वातावरण में बहुत ही कर्कश सीटी की आवाज गूंजी।

साथ ही गूंजने लगी थीं—अजीब-सी 'कांव-कांव' की आवाजें और खाई की तरफ से आकाश की तरफ उड़ता गिद्धों का झुंड।

तेज हवा पर तैरते, अपने बड़े-बड़े पंखों से भयानक नाद पैदा करते वे करीब बीस गिद्ध थे जो उनकी तरफ लपके।

एक गिद्ध ने सबसे पहले अपनी नोकीली चोंच काले खां के कंधे पर मारी थी। चोंच ही नहीं मारी थी बल्कि उसके कंधे से गोश्त का एक लोथड़ा नोंचकर ले गया था।

काले खां के हलक से चीख निकली।

तब तक दूसरा गिद्ध तरूणा के सिर पर चोंच मार चुका था।

इधर उनकी चीखें गूंज रही थीं उधर बुंदू तांत्रिक के ऐसे ठहाके जैसे शैतान जबड़ा फाड़कर हंस रहा हो।

अंगद हाथ में मौजूद फावड़े को अपने जिस्म के चारों तरफ लाठी की मानिंद घुमा रहा था। उस पर झपटे एकाध गिद्ध को वह लगा भी मगर गिद्धों की संख्या इतनी ज्यादा थी कि उससे कुछ होने वाला नहीं था। वैसे भी, किसी और के

हाथ में कोई हथियार न था।

काले खां ने जरूर अपनी जेब से रिवाल्वर निकालकर उनमें से एकाध को निशाना बनाया मगर...क्या होना था!

नंदिनी चिल्लाई—"ये आदमखोर गिद्ध हैं। हमें खा जाएंगे। सब लोग गाड़ी की तरफ दौड़ो।"

जो नंदिनी ने कहा, उसके अलावा कोई चारा भी नहीं था अतः जान बचाने के लिए सभी कब्रों के बीच दौड़े मगर गिद्ध थे कि पीछा छोड़ने को ही तैयार न थे। उनका झुंड लगातार न सिर्फ उनके सिरों पर मंडरा रहा था बल्कि रह-रहकर जिस्मों में चोंच मारकर गोश्त के टुकड़े भी ले जा रहा था।

गाड़ी तक पहुंचने की आपाधापी में उनमें से कई कब्रों से टकरा कर जमीन पर भी गिरे लेकिन तुरंत ही उठकर फिर दौड़ने लगे क्योंकि समझ जो चुके थे कि यदि एक बार भी कोई चार-पांच गिद्धों के बीच फंस गया तो बच नहीं सकेगा।

गाड़ी तक पहुंचते-पहुंचते पांचों ही जख्मी हो चुके थे।
कोई कम, कोई ज्यादा।

कुछ गिद्धों ने जख्मी किया था, कुछ जमीन पर गिरकर हो गए थे। गाड़ी में सबसे पहले पहुंचने वाला राजपाल था। उसके बाद नंदिनी, फिर काले खां और अंगद लेकिन तरूणा बाहर रह गई थी।

हालांकि वह गाड़ी से केवल दस फुट दूर थी लेकिन अब आगे नहीं बढ़ पा रही थी क्योंकि करीब दस गिद्ध रह-रहकर उसी पर झपट रहे थे। वातावरण में उसकी चीखें गूंज रही थीं।

अंगद ने जब उसे उस अवस्था में देखा तो फावड़ा संभाले वापस लपका और उसके नजदीक पहुंचकर अपने और उसके सिर के ऊपर फावड़ा घुमाता चिल्लाया—"गाड़ी की तरफ दौड़ो तरू।"

काले खां ने भी रिवाल्वर वाला हाथ विंडो से बाहर निकालकर उनके सिरों पर मंडराते गिद्धों को निशाना बनाना शुरु कर दिया था।

कुछ गोलियां खाली गईं, कुछ गिद्धों को लगीं।
तरूणा को किसी तरह धकेलता-धकालता अंगद गाड़ी तक ले ही आया। दरवाजा खोलकर उसे अंदर धकेला।
अब गिद्ध उस पर झपट रहे थे।

अपने जिस्म के चारों तरफ फावड़ा घुमाता ड्राइविंग डोर की तरफ लपका और फिर उसे जल्दी से खोलकर अंदर बैठने के साथ ही वापस बंद कर लिया क्योंकि समझ चुका था—एक भी गिद्ध अंदर घुस गया तो उन सबका गोश्त नोच-नोचकर मार डालेगा।

गिद्धों का झुंड अब भी गाड़ी के चारों तरफ पंख फड़फड़ाता घूम रहा था। उनमें से कई विंड स्क्रीन और साइड के कांचों पर चोंचें मार रहे थे। डरे हुए तो सभी थे लेकिन तरूणा चिल्ला रही थी—"जल्दी करो अंगद। चलो यहां से। भाग निकलो, वरना ये हमें मार डालेंगे। बड़े खतरनाक गिद्ध हैं। उई...आह...देखो ये आया।" उसने उस गिद्ध को देखकर अपना जिस्म पीछे की तरफ हटाया जिसने अभी अभी उसकी साइड के कांच पर चोंच मारी थी।

अंगद ने गाड़ी स्टार्ट की और एक झटके से आगे बढ़ा दी।
मगर गिद्धों का झुंड पीछा छोड़ने को तैयार न था।

गाड़ी में राजपाल की कांपती आवाज गूंजी—"ये तो गाड़ी के साथ-साथ उड़ रहे हैं सर, हमें कब्रिस्तान में ही ले जाकर मानेंगे क्या!"

"चुप कर साले।" काले खां ने उसे डांटा—"भूतों से भी डरता है और गिद्धों से भी।"

"नहीं, आप नहीं डरते।" वह बोला—"आप यहां भागकर थोड़ी आए हैं! मैंने आपको राणा सांगा की तरह उनसे लड़ते देखा था।"

"मैंने एकाध को रिवाल्वर से निशाना तो बनाया, रिवाल्वर तो तेरे पास भी था। तूने तो उसे निकाला तक नहीं।"

"अरे हां सर, इन गिद्धों ने मुझे याद ही नहीं आने दिया कि मेरे पास भी रिवाल्वर है।"

तरूणा क्योंकि अब भी बार-बार चीख रही थी इसलिए अंगद थोड़ा झल्ला गया—"चीखना बंद करो तरूणा, अब वे हमें कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकते।"

"पर ये हमारा पीछा क्यों नहीं छोड़ रहे!"

गाड़ी कब्रिस्तान से करीब आधा किलोमीटर दूर निकली होगी कि वातावरण में वैसी ही सीटी की आवाज गूंजी जैसी बुंदू तांत्रिक ने मुंह में उंगलियां डालकर निकाली थी और...उस आवाज को सुनते ही गिद्धों का झुंड वापस कब्रिस्तान की तरफ उड़ चला।

सबने राहत की सांस ली।

सभी जख्मी हो चुके थे। सबका ध्यान पहली बार अपने जख्मों की तरफ गया। नंदिनी बोली—"ये कम करिश्मे की बात नहीं है कि हम सभी सुरक्षित हैं। बड़े खतरनाक गिद्ध थे।"

"पीछे फर्स्ट एड किट पड़ी है।" अंगद ने कहा—"उसे उठा लो और जल्दी से जल्दी मरहम पट्टी करो।"

रात का वक्त।

हर तरफ सन्नाटा। हवा रुक चुकी थी। आकाश पर बादल छा गए थे इसलिए चंद्रमा की रोशनी धरती तक नहीं पहुंच पा रही थी।

वेलापुर गांव के बाहर की तरफ उन्होंने एक बंजर जमीन पर वह टेंट लगा लिया था जिसे गाड़ी में साथ लाए थे।

अंदर एक पेट्रोमेक्स का प्रकाश बिखरा हुआ था।

टेंट लगाने की जरूरत इसलिए पड़ी क्योंकि गांव के किसी भी आदमी ने उन्हें पनाह नहीं दी थी। पनाह देना तो दूर, किसी ने ठीक से बात तक न की थी। सबने उनसे दूर-दूर रहना ही मुनासिब समझा था बल्कि कई देहातियों ने तो इतनी कड़ी नजरों से घूरा था जैसे उन्हें कच्चा चबा जाना चाहते हों।

गांव का माहौल उन्हें बड़ा रहस्यमय-सा लगा था। ठीक-ठाक आबादी के बावजूद हर तरफ अजीब-सी मनहूसियत छाई हुई थी।

अंगद ने देहातियों से कपाली के बारे में बात करनी चाही, यह जानना चाहा कि—'क्या उन्होंने किसी छोटी बच्ची को देखा है?'

किसी ने मुंह से एक लफ्ज भी न निकाला।

ज्यादातर देहातियों के चेहरों पर उन्होंने खौफ और गुस्से के भाव देखे थे। एक देहाती, जो थोड़ा पागल-सा लगता था, ने

कहा था–"मरने के लिए तुम्हें कोई और जगह नहीं मिली जो यहां चले आए! जिंदा रहने की जरा भी ख्वाहिश है तो चले जाओ यहां से।"

उनकी समझ में इससे ज्यादा और कुछ नहीं आया कि सारा गांव कपाली से डरा हुआ था और...डरे हुए तो तरूणा और राजपाल भी थे। वे बार-बार वापस चलने की बात कर रहे थे।

राजपाल ने कहा था–"हमने यहां आने में जल्दवाजी की है। बगैर तैयारियों के नहीं आना चाहिए था। हम इंसान भला भूत, प्रेत, चुड़ैल, डायनों और जिन्नों से कैसे जीत सकते हैं! हमें अपने साथ ओझा और बंगाली तांत्रिक को लाना चाहिए था। ऐसी रहस्यमयी शक्तियों से तो वे ही निपट सकते हैं।"

अंगद ने थोड़े नाराजगी भरे अंदाज में खासतौर पर तरूणा की तरफ देखते हुए कहा था–"मैंने कुछ लोगों' को, साथ आने से मना किया था। वे अब भी चाहें तो लौट सकते हैं क्योंकि इसमें कोई शक नहीं कि यहां कदम-कदम पर जान को खतरा है।"

तरूणा ने भी तुरंत काऊंटर किया–"जब तुम किसी जादूगरनी के जाल में फंसोगे तो खतरा तो होगा ही।"

अंगद की नाराजगी बढ़ गई। वैसे भी, बुंदू तांत्रिक वाली घटना के बाद उसे लगने लगा था कि चंडिकामृत की इस बात में बहुत दम था कि नंदिनी का साथ तुम्हारे लिए जरूरी है। बोला–"तरू, अपने हर सेंटेंस में नंदिनी पर जहर उगलना बंद करो।"

तरूणा ने फिर तंज कसा–"क्या मुझे इससे यह पूछने का हक भी नहीं है कि ये उस गंदे और खतरनाक आदमी को कैसे जानती है जिसने हमारी जान लेने की कोशिश की?"

अंगद सहित सबने नंदिनी की तरफ देखा।

जैसे सभी इस सवाल का जवाब जानना चाहते हों। नंदिनी ने उनका मंतव्य समझा और बोली–"मैं उसे दरभंगा से जानती हूं।"

"कैसे?"

"करीब पांच साल पुरानी बात है। चांदनी रात थी। मैं अपनी रिसर्च की खातिर कब्रिस्तान में, किसी तांत्रिक या अघोरी की तलाश में भटक रही थी कि एक खुदी हुई कब्र के अंदर से कुछ रहस्यमयी आवाजें सुनकर ठिठक गई। आवाजें एक स्त्री और पुरुष की थीं, जैसे सिसकारियां ले रहे हों। मैं बहुत डर गई थी। इतनी ज्यादा कि एक बार को तो वहां से भाग जाने की इच्छा हुई लेकिन अपनी रिसर्च के प्रति मेरे जुनून ने ऐसा नहीं करने दिया और यह जानने के लिए दबे पांव कब्र की ओर बढ़ी कि वहां क्या हो रहा है। करीब पहुंचकर मैंने एक आदमी का पीठ की तरफ से बिल्कुल नग्न शरीर देखा और देखा–उसके नीचे कोई औरत दबी हुई थी। उन दोनों के जिस्मों में जबरदस्त हलचल थी। मुंहों से सिसकारियां निकल रही थीं। मुझे समझते देर नहीं लगी कि उनके बीच क्या हो रहा था। मेरा मन मस्तिष्क घृणा से भर गया और जाने किस ताकत के वशीभूत होकर चिल्ला पड़ी–'क्या हो रहा है ये'?"

दोनों बुरी तरह चौंके।

मशीनी अंदाज में न केवल दोनों की हरकतें रुक गई थीं बल्कि उछलकर कब्र में खड़े हो गए थे। मैं और ज्यादा डर गई बल्कि अगर यूं कहूं कि मेरी घिग्घी बंध गई थी तो गलत न होगा क्योंकि वे दोनों ही जन्मजात नंगे थे। चांदनी रात के कारण हम तीनों एक दूसरे को भलीभांति देख सकते थे। उस क्षण मैंने वहां से भाग जाना चाहा था परंतु खौफ की ज्यादती के कारण पैर जमीन से चिपककर रह गए थे। मैं थरथर कांप रही थी जब बुंदू तांत्रिक ने अपनी कड़क आवाज

में पूछा–'कौन है तू और यहां कैसे आई'?"

अंगद ने पूछा–"मतलब वह यही बुंदू तांत्रिक था?"
"हां।" नंदिनी ने बताया।
"और वो औरत?"

"मैं बताना नहीं चाहती थी लेकिन हालात ऐसे बन गए हैं कि बताए बगैर काम नहीं चलेगा मगर...।" अपनी बात अधूरी छोड़कर उसने काले खां तथा राजपाल की तरफ देखा और बोली–"इससे आगे बताने से पहले इन दोनों से आश्वासन चाहूंगी कि एक औरत की लाज की खातिर ये किसी से इस बात का जिक्र नहीं करेंगे।"

काले खां बोला–"हमसे इस कहानी का क्या मतलब?"
"है...तभी तो आश्वासन चाहती हूं।"

"ठीक है, हम आश्वासन देते हैं।" काले खां आगे जानने के लिए इतना बेचैन था कि उसने जरा भी हुज्जत नहीं की–"बताओ तो सही कि उसके बाद क्या हुआ?"

"मैंने हिम्मत करके उसके सवाल का जवाब दिया–'मेरा नाम नंदिनी दास है और मैं तुम जैसे लोगों पर रिसर्च कर रही हूं मगर सोच भी नहीं सकती थी कि जिस कब्र में लोगों को दफनाया जाता है उस कब्र में तुम इतना घिनौना काम भी करते होगे।' उसने कुछ नहीं कहा। बस अपनी लाल आंखों से मुझे इस तरह घूरता रहा कि मेरे होश फाख्ता हुए जा रहे थे। तभी, मुझसे भी ज्यादा डरी हुई औरत ने कहा–'मैं हाथ जोड़कर विनती करती हूं कि तुमने जो देखा उसके बारे में कभी किसी से जिक्र न करना। मैं बहुत मजबूर थी। हालांकि पहले ही से मेरा एक बेटा है मगर एक बेटी और चाहती थी जबकि पांच साल गुजर जाने के बावजूद मेरे पति वो नहीं दे पा रहे थे। मैं तंत्र-मंत्र से संतान प्राप्ति के लिए बुंदू तांत्रिक के पास आई थी। जब इसने कहा कि इसके अलावा कोई रास्ता नहीं है तो...

उसने खुद ही अपना वाक्य अधूरा छोड़ दिया था।

'तो ये होता है तुम्हारा तंत्र मंत्र!' जाने किस शक्ति से प्रेरित होकर मैं बुरी तरह डरी होने के बावजूद बुंदू से यह कह सकी–"मैं सोच भी नहीं सकती थी कि जिसे तुम लोग विद्या कहते हो उसकी आड़ में इतना घिनौना काम करते होगे। तेरे जैसे तांत्रिक की कभी तरक्की नहीं हो सकती। संतान प्राप्ति के लिए तरस रही औरत को इस तरह ठगते हो...थू...थू है तुम पर।'

'अभी बताता हूं तुझे।' बुंदू तांत्रिक बड़े ही खतरनाक तरीके से मेरी तरफ बढ़ता गुर्राया था–'तू यहां से जिंदा नहीं जा सकेगी।'

'नहीं बुंदू, तुम इसे कुछ नहीं कहोगे।' ऐसा कहती हुई वह मेरे और बुंदू के बीच अड़ गई और फिर मेरे हाथ जोडकर गिड़गिड़ाती बोली–'तुम यहां से चली जाओ बहन वरना ये सचमुच तुम्हें मार डालेगा। इसके पास बहुत सारी काली शक्तियां हैं।'

इसमें शक नहीं कि बुंदू मुझे उसी समय मार डालना चाहता था मगर उस औरत की वजह से ऐसा न कर सका। मेरा तो पहले ही खौफ की ज्यादती के कारण बुरा हाल हुआ जा रहा था इसलिए जैसे-तैसे जान बचाकर भागी। मैंने उसका जिक्र किसी से नहीं किया। अपने मां-बाप से भी नहीं परंतु अपनी रिसर्च के कागजों में जरूर लिखा है कि तंत्र-मंत्र के नाम पर ऐसे घिनौने काम भी होते हैं। उसके बाद मैंने उस औरत को उस दिन हास्पिटल में ही देखा था जिस दिन काले खां उससे मेरी शिनाख्त कराने ले गया था।"

"ओह! तो वो औरत सरिता थी!" काले खां के मुंह से बुरी तरह चौंका हुआ लहजा निकला था–"इसलिए वह तुम्हें और

तुम उसे देखकर चौंकी थीं और इसीलिए तुम्हें देखकर उसके चेहरे पर खौफ के भाव भी उभरे थे। शायद वह यह सोचकर डर गई थी कि कहीं तुम मेरे सामने उस रात का जिक्र न कर दो।"

"जबकि तुम्हें लगा कि मैंने उसे अपनी आंखों से डरा दिया है इसलिए वह मेरे शालू होने के बावजूद मुझे शालू नहीं कह रही है।" वह कहती चली गई–"मैंने उसे अपने पहले ही सेंटेंस से उसे संदेश दे दिया था कि वह डरे नहीं, मैं उस रात के बारे में कुछ भी कहने वाली नहीं हूं। जब अस्पताल का स्टाफ तुम्हें पकड़कर ले गया तब उसने मेरा बहुत आभार व्यक्त किया था और कहा था कि एक लड़की की चाह में वह भटक गई थी लेकिन उस रात के बाद कभी बुंदू तांत्रिक से नहीं मिली बल्कि दरभंगा ही नहीं गई।"

"दरभंगा से सरिता का क्या कनेक्शन है?"
"वहां उसका मायका है।"
"और तुम भी बुंदू से फिर कभी नहीं मिलीं?"

"बहुत कोशिश की क्योंकि अपने बहुत से सवालों के जवाब चाहती थी। कई बार उस कब्रिस्तान में गई लेकिन वह नहीं मिला। फिर एक दिन वहां के नए रखवाले ने बताया कि जाने क्यों बुंदू तांत्रिक किसी को भी कुछ बताए बगैर गायब हो गया है। कोई नहीं जानता कि वह कहां चला गया।"

"तब तो तुम्हें यह भी पता नहीं होगा कि वह यहां कैसे पहुंच गया?" यह सवाल अंगद ने किया था।

"मुझे नहीं मालूम।"

अंगद कुछ और भी पूछना चाहता था मगर उससे पहले ही टेंट के बाहर की तरफ से कुछ आवाजें सुनाई दीं।

वे ऐसी आवाजें थीं जैसे कुछ लोग टेंट के करीब आ रहे हों।

आवाजें सभी ने सुनीं और सभी के दिमागों में कारण जानने की जिज्ञासा उभरी। किसी ने कुछ नहीं कहा। आंखों ही आंखों में बातें हुईं और फिर एक साथ टेंट से बाहर निकले।

वहां का नजारा देखते ही हक्के-वक्के रह गए क्योंकि गांव के लगभग सभी मर्द टेंट की तरफ बढ़े चले आ रहे थे। उनमें से कुछ के हाथों में जलती हुई मशालें थीं, बाकियों के हाथों में लाठी, डंडे, हर्बे, तलवारें और फरसे जैसे हथियार।

कई के हाथों में बंदूकें भी नजर आ रही थीं।
वे उग्र अवस्था में थे।
काले खां के मुंह से बड़बड़ाहट निकली—"ये क्या मामला है?"

इससे पहले कि कोई कुछ जवाब देता, उग्र भीड़ उनके सामने आकर खड़ी हो गई और...उस वक्त तो सभी के जिस्मों में मौत की लहर दौड़ती चली गई जब भीड़ में सबसे आगे खड़े शख्स पर नजर पड़ी। वह वही अधेड़ शख्स था जो उन्हें रास्ते में बुग्गी हांकता हुआ मिला था। जिससे उन्होंने बेलापुर का रास्ता पूछा था और जो बुग्गी और भैंसे सहित अचानक अदृश्य हो गया था।

उसके हाथ में एक मशाल थी और उसी ने चुभती हुई आवाज में कहा था—"फौरन टेंट उखाड़ो और यहां से दफा हो जाओ।"

"क्यों?" अंगद ने पूछा।

"सवाल करोगे तो मारे जाओगे। सारे गांव की एक ही आवाज है, फौरन बेलापुर से बाहर चले जाओ वरना अच्छा नहीं होगा।"

"तुम लोग हम पर इतना गुस्सा क्यों हो रहे हो?" काले खां ने पूछा—"हम तुम्हें किसी किस्म का नुकसान पहुंचाने थोड़ी आए हैं!"

"सरपंच चाचा की बात पर शायद तुमने ध्यान नहीं दिया।" एक लट्ठधारी युवक ने कहा था—"सवाल-जवाब मत करो, बगैर देर किए गांव से बाहर निकल जाओ वरना...

"वरना?"

"हम तुम्हें मार डालेंगे।" उसने इतने खतरनाक लहजे में कहा था कि काले खां, राजपाल, तरूणा और नंदिनी की रूहें तक कांप कर रह गईं जबकि अंगद ने दृढ़तापूर्वक कहा था—"तुम लोगों से हमारी कोई दुश्मनी नहीं है लेकिन कपाली मेरी भांजी को उठा लाई है। पता लगा है कि वह इसी गांव के आसपास रहती है। मैं अपनी भांजी को लिए बगैर नहीं जाऊंगा।"

"पहली बात, कपाली नहीं...कपाली माता बोल मूर्ख लड़के।" एक अन्य अधेड़ ने कहा था—"दूसरी बात, अगर वह तेरी भांजी को उठा लाई है तो भूल जा अपनी भांजी को। जिसे माता एक बार अपने लिए चुन लेती है उसे कोई नहीं बचा सकता। हां, ऐसी बेवकूफाना कोशिश करते हुए अपनी जान जरूर गंवा सकता है।"

"मुझे अपनी जान की परवाह नहीं है।"

"तो ठीक है।" रास्ते में मिला अधेड़ बोला और फिर किसी के भी कुछ समझने से पहले गांव वालों को हुक्म दिया—"गांव से बाहर खदेड़ दो सालों को।"

हथियारबंद देहाती उन पर झपटे। अंगद समय से पहले खतरे को भांप चुका था। उधर देहाती झपटे इधर वह टेंट के पीछे की ओर खड़ी गाड़ी की तरफ दौड़ता चीखा—"बचो।"

चारों उसके पीछे दौड़े थे।
उनके पीछे शोर मचाते हुए हथियारबंद ग्रामीण।

सभी को इस बात का एहसास हो गया था कि यदि वे जरा भी चूके तो गांव वाले उन्हें मार डालेंगे इसलिए, जिसमें जितनी ताकत थी, उसे पूरी की पूरी इस्तेमाल करके गाड़ी की तरफ दौड़ा।

मशालों और हथियारों से लैस हिंसक देहातियों का समूह शोर मचाता उनकी तरफ दौड़ता चला आ रहा था।

समय रहते वे सब गाड़ी में समा गए और अंगद ने गाड़ी स्टार्ट करके आगे बढ़ा भी दी मगर उसकी बॉडी पर लाठी-डंडों से हमला किया जाने लगा। विंड स्क्रीन और हैडलाइट्स सहित सारे कांच तोड़ डाले गए। गाड़ी के अंदर चीखो-पुकार मची हुई थी मगर अंगद ने उसे बेलापुर से विपरीत दिशा में दौड़ाना जारी रखा।

जबरदस्त कोशिश करके वह गाड़ी को भीड़ के बीच से निकाल लाया था लेकिन हिंसक देहाती अब भी गाड़ी के पीछे दौड़ रहे थे।

जैसे-तैसे ऐसी स्थिति आई कि गाड़ी के पीछे दौड़ते ग्रामीण नजर आने बंद हुए और अब तो उनकी आवाजें भी काफी पीछे रह गई थीं। केवल कुछ मशालें चमक रही थीं लेकिन वे स्थिर थीं।

फिर, एक मोड़ के बाद वे भी नजर आनी बंद हो गईं।
"जान बची तो लाखों पाए, लौट के बुद्धू घर को आए।" अब भी पीछे देखता हुआ राजपाल बड़बड़ाया।
"बात तो ठीक है।" काले खां बोला—"फौरन ही भाग न लिए होते तो वे हमें मार डालते।"
"पर क्यों?" तरूणा बोली—"हमने उनका क्या बिगाड़ा था?"

"मेरे ख्याल से इस सबको कपाली अंजाम दे रही है।" नंदिनी बोली—"वह हमारे दिमागों में यह खौफ बैठाना चाहती है कि इस इलाके में उसके अलावा और किसी की नहीं चल सकती।"

क्योंकि हैडलाइट्स टूट चुकी थीं, सामने अंधेरे के अलावा और कुछ नहीं था अतः अंगद अंधेरे में आंखें गड़ाए ड्राइविंग करता रहा।

"कारण कुछ भी हो।" राजपाल बोला—"लेकिन ऐसी जगह हम सांस भी कैसे ले सकते हैं जहां सभी कपाली माता के दास हों?"

राजपाल का सेंटेंस पूरा हुआ ही था कि गाड़ी अजीब तरीके से झटके लेने लगी और फिर दो-तीन हिचकोले खाने के बाद बंद हो गई। कुछ देर सभी डरे और हकबकाए हुए-से जहां के तहां बैठे रहे। राजपाल ने नंदिनी की तरफ देखते हुए पूछा था—"ये भी कोई रूहानी चक्कर है या गाड़ी में कोई खराबी आ गई है?"

नंदिनी के जवाब देने से पहले ही गाड़ी ने एक और झटका खाया और आगे बढ़ गई। राजपाल के मुंह से ये शब्द स्वतः निकले—"शुक्र है ठीक हो गई। यहां अटक जाते तो...

"इसे मैं नहीं चला रहा।" अंगद के हैरत में डूबे लहजे ने उसकी बात काटी—"इंजन ही स्टार्ट नहीं है तो चलाऊंगा

कैसे?"

"तो फिर कैसे चल रही है?" काले खां ने पूछा।

"मुझे नहीं पता।" अंगद की आवाज–"ऐसा लग रहा है जैसे कोई चीज इसे खेंचकर लिए चली जा रही हो।" कहने के साथ उसने टूटी हुई विंड स्क्रीन के पार अंधेरे में आंखें गड़ाने की कोशिश की थी मगर कहीं कुछ भी नजर नहीं आया।

"ओ माई गॉड।" नंदिनी की आवाज कांप रही थी–"ये तो वाकई कोई रूहानी चक्कर लग रहा है।"

तरूणा बोली–"हमें गाड़ी से कूद जाना चाहिए।"

तभी, गाड़ी के अंदर जाने किसके मुंह से निकलने वाली बड़ी ही रहस्यमय आवाज गूंजी–"अगर भूलकर भी किसी ने ऐसी गलती कर दी तो वो कपाली के पंजे में जा फंसेगा। बचना चाहते हो तो जो जहां है, वहीं बैठा रहे।"

सभी के जिस्मों में दौड़ता रक्त जैसे अचानक जम गया। किसी की समझ में नहीं आया कि उपरोक्त शब्द किसने बोले थे।

किसी के मुंह से चूं-चां तक की आवाज न निकल सकी थी।

गाड़ी अब रफ्तार पकड़ चुकी थी बल्कि अगर यह लिखा जाए तो जरा भी गलत न होगा कि ठीक इस तरह चल रही थी जैसे उसे इंजन चला रहा हो जबकि वास्तव में इंजन बिल्कुल शांत था। वह अंगद ही था जिसने सवाल करने की हिम्मत की–"कौन हो तुम?"

फुसफुसाकर कहा गया–"फिलहाल तुम्हारे लिए केवल इतना जान लेना काफी होगा कि मैं तुम्हारा मददगार हूं।"

"हमारा मददगार...और यहां?"

"तुम्हारे मददगार से ज्यादा मैं कपाली के खात्मे का तलबगार हूं और तुम्हारे दिल में भी यही तमन्ना है। दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है। बस उसी नाते मददगार हूं मैं तुम्हारा।"

"तुम्हारी कपाली से क्या दुश्मनी है?"
"सारे सवालों के जवाब तुरंत पाने की उम्मीद छोड़ दो।"

अंगद खामोश हो गया था जबकि राजपाल बड़बड़ाया–"कोई तो कपाली माता के खिलाफ मिला इस धरती पर।"

"खिलाफ तो उसके सभी हैं।" रहस्यमयी आवाज पुनः सुनाई दी–"सभी चाहते हैं कि वो नेस्तनाबूद हो जाए मगर ऐसा प्रयास करने की तो बात ही बहुत दूर, किसी में अपनी भावनाओं को व्यक्त करने तक की हिम्मत नहीं है। यहां के लोग इस बारे में एक-दूसरे से बात तक नहीं कर सकते क्योंकि सभी डरे हुए हैं। उनके डरों की पराकाष्ठा तुम देख चुके हो। गांव वालों ने तुम्हें वहां सिर्फ इसलिए नहीं रहने दिया क्योंकि उनके दिमागों पर यह खौफ सवार है कि यदि उन्होंने तुम्हें वहां रहने दिया तो कपाली के कोप का शिकार होंगे।"

"तुम नहीं डरते?" अंगद ने पूछा।
"बहुत डरता हूं...उतना ही जितने बेलापुर के लोग डरते हैं।"
"फिर हमारी मदद क्यों कर रहे हो?"

"दो कारण हैं। पहला, इस धरती पर तुम्हारे रूप में पहली बार ऐसे लोगों ने कदम रखा है जिनके दिमागों में कपाली को

खत्म करने का विचार ही नहीं है वल्कि उसे व्यक्त भी किया है। दूसरा, कम से कम अभी तक मुझे पूरा विश्वास है कि इस वात की खवर कपाली को नहीं लगेगी कि मैं तुम्हारी मदद करने की कोशिश कर रहा हूं। यदि मुझे जरा भी इल्म होता कि वह मेरी वर्तमान हरकतों को देख सकती है तो किसी हालत में ऐसी हिमाकत नहीं कर सकता था।"

"हमने तो सुना है कि वह यहां के कण-कण में है। हजारों हजार आंखें हैं उसकी। वेलापुर की धरती के आसपास ऐसा कुछ हो ही नहीं सकता जिसे वह देख न सकती हो!"

"एक इसी काम में तो महारथ हासिल की है मैंने कि मैं एक ऐसा तंत्र चक्र वना सकता हूं जिसके अंदर उसकी आंखें नहीं झांक सकतीं। भले ही यह चक्र छोटा है...मगर है।"

"हम तुम्हारी वात का मतलव नहीं समझे।"

"जिन्हें उन विद्याओं का ज्ञान नहीं जिनसे आंशिक रूप से ही सही, लेकिन कपाली को चकमा दिया जा सकता है, उनकी समझ में मेरी वातें आएंगी भी नहीं इसलिए समझने की कोशिश न करो।"

अंगद ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि गाड़ी झटके से रुक गई। यही क्षण था जव काले खां के मुंह से बुरी तरह कांपती हुई आवाज निकली थी—"य...ये तो हम किले पर आ गए।"

सवने देखा—सचमुच गाड़ी किले के वाहर, मुख्यद्वार के करीव खड़ी थी। जिस्मों में मौत की झुरझुरी दौड़ती चली गई।

चेहरे पीले पड़ गए थे।

एक तरफ धरती पर दैत्य की मानिंद खड़े किले के अवशेष थे, दूसरी तरफ दूर तक फैला कव्रिस्तान। वही कव्रिस्तान जहां से उन्हें वुंदू तांत्रिक के गिद्धों ने भगाया था।

मौत की थरथराहट उस वक्त भी उनके जिस्मों में गर्दिश कर रही थी जव वही रहस्यमय आवाज कानों में पड़ी—"उतरो।"

"न...नहीं। विल्कुल मत उतरना अंगद।" राजपाल की कांपती आवाज में रोने का मिश्रण था—"मुझे लगता है कि ये सव कपाली की ही लीला है। हमें यहां वही लेकर आई है।"

"डरो मत।" उसी आवाज ने कहा—"क्योंकि वैसा नहीं है।"

अंगद ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि वादलों की दिल दहला देने वाली घनगरज ने सवके दिल कंपकंपा दिए।

इंद्रदेव शायद वारिश की तैयारी कर रहे थे।

अंगद ने हिम्मत करके कहा—"तुम हमें वहां ले आए हो जहां कपाली रहती है और कहते हो कि हमारे मददगार हो!"

"तुमसे किसने कहा कि कपाली यहां रहती है?"

"मुझे तो यह भी मालूम है कि इस किले में एक ऐसा डवल हाइट हॉल है जहां वह वच्चों की वलि देती है।"

"यह सच है कि वह अभिजीत को जिंदा करने के लिए यहां वलि देती है लेकिन यह झूठ है कि यहां रहती है। वह किले में सिर्फ पूर्णिमा की रात को वलि देने आती है।"

"तो रहती कहां है?"
"कोई नहीं जानता।"
"हम तुम्हारी बातों पर कैसे यकीन कर लें?"
"मुझे नहीं पता तुम कैसे यकीन करोगे?"
"कम से कम सामने तो आओ, अभी तो हमने तुम्हें देखा तक नहीं है।" अंगद ने कहा–"पता तो लगे कि तुम कौन हो?"

तभी जबरदस्त गड़गड़ाहट के साथ आकाशीय बिजली किसी चमकदार सर्प की मानिंद दूर तक बादलों को चीरती चली गई थी और साथ ही, पल भर के लिए धरा को भी चमका दिया था।

उस क्षण, उन सबकी नजर गाड़ी के ठीक सामने खड़े शख्स पर पड़ी थी और अगर यह लिखा जाए तो ज़रा भी गलत न होगा कि पांचों में से एक भी ऐसा न था जिसके हलक से चीख न निकल गई हो क्योंकि...सामने बुंदू तांत्रिक खड़ा था।

अपने पूरे घृणित वजूद के साथ।
जिस्म पर वही–सिर्फ लाल रंग की लंगोटी।

बिजली की घनगरज के साथ वह बस पल भर के लिए चमका था। उसके बाद फिर उसका वजूद अंधेरे का हिस्सा बन गया। उस अंधेरे का हिस्सा जिससे फूटकर वही आवाज फिर उनके कानों तक पहुंची थी–"देख लिया मुझे! और डर भी गए। शायद यह सोचकर कि दिन में जिस शख्स ने यह कहा था कि मैं कपाली माता का दास हूं, वह कपाली का दुश्मन कैसे हो सकता है? दोनों बातें सच हैं। कपाली माता का दास और उसके पति की कब्र का सच्चा रखवाला बनकर ही मैं कपाली के कोप से बचा हुआ हूं जबकि दिल में वही है जो तुम्हारे दिल में है। बस एक ही आरजू–कपाली का खात्मा।"

"तुम उसका खात्मा क्यों चाहते हो?"

"क्योंकि उसने मेरे वालिद का खात्मा किया है और अगर सिर्फ खात्मा ही किया होता, तब भी शायद मैं उसके खात्मे का तलबगार न होता मगर उसने मेरी आंखों के सामने मेरे वालिद के जिस्म की एक-एक बोटी को चबा-चबाकर खाया है। उनके जिस्म की एक एक बूंद को लुत्फ ले-लेकर पिया है। मेरी आंखों में आज भी वह खौफनाक मंजर बसा है।"

"कपाली ने ऐसा क्यों किया?"

"उनका गुनाह केवल यह था कि उन्होंने कपाली को कब्रिस्तान में अभिजीत की हड्डियां छुपाते देख लिया था और कब्रिस्तान का रखवाला होने के नाते उससे ऐसा न करने के लिए कहा था।"

"उस वक्त तुम कहां थे?"
"खौफ का मारा वालिद के पीछे छुपा खड़ा था।"
"दरभंगा से यहां कब और क्यों आए?"

"समझ सकता हूं कि नंदिनी ने तुम्हें सब कुछ बता दिया होगा, यकीन कर सकते हो तो कर लो, नहीं भी करोगे तो मेरी सेहत पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा मगर...हकीकत ये है कि उस रात की घिनौनी घटना ने मुझे हिलाकर रख दिया था। यह कहूं तो जरा भी गलत न होगा कि सरिता की खूबसूरती ने मेरा ईमान भंग कर दिया था, उसी वजह से वह वारदात हुई। बाद में, जब नंदिनी चली गई तो सरिता ने भी मुझे बहुत धिक्कारा और मेरे अपने दिल ने भी। उसने भी मुझसे यही कहा कि–तंत्र-मंत्र के नाम पर ये जो तूने किया है बुंदू ये वाकई तुझे आगे नहीं बढ़ने देगा। मैंने उसी लम्हे तौबा की और सुबह होते ही दरभंगा से यहां के लिए रवाना हो गया। वालिद के पास आ गया। उन्हें सब कुछ बता भी दिया। तब वालिद ने कहा, गुनाह तो तूने बहुत बड़ा किया है लेकिन सच्चे दिल से प्रायश्चित किया जाए तो खुदा बड़े

से बड़े गुनाह को भी माफ कर देता है। उस दिन के बाद से मैं अब्बा के साथ कब्रिस्तान में ही रहकर तांत्रिक सिद्धियों को हासिल करने की तालीम लेने लगा क्योंकि मैंने बचपन से ही एक बहुत बड़ा तांत्रिक बनने के सपने देखे थे। फिर आई वह मनहूस रात जिस रात कपाली मेरे अब्बा के टुकड़े करके उन्हें खा गई और उनका सारा खून पी गई। वह तो मुझे भी मार डालना चाहती थी मगर मैं उसके कदमों में गिर गया और माफी की भीख मांगने लगा। उसे अपने कदमों में नाक रगड़ते इंसान बहुत पसंद हैं और शायद उसने यह भी सोचा था कि मैं उसका क्या बिगाड़ सकता हूं! इन दो कारणों से उसने मुझे माफ कर दिया और इस वादे के साथ अभिजीत की कब्र का रखवाला बना दिया कि मैं कभी किसी को किसी भी हालत में उसके आसपास नहीं फटकने दूंगा।"

"अभिजीत तो हिंदू था और कपाली खुद भी हिंदू है, फिर उसे उसने कब्रिस्तान में क्यों दफनाया?"

"अभिजीत को उस कब्र में दफनाया नहीं गया है बल्कि उसने वहां सिर्फ उसकी हड्डियां छुपाकर रखी हैं।"

"कब्रिस्तान में ही क्यों?"

"क्योंकि उसके ख्याल से कभी कोई यह सोच तक नहीं सकता कि एक हिंदू की हड्डियां कब्रिस्तान में छुपाई गई होंगी।"

"हम कपाली के बारे में जानना चाहते हैं।" अंगद को उससे बातें करने में अब जरा भी डर नहीं लग रहा था—"अभिजीत की मृत्यु कैसे हुई? कपाली ऐसी क्यों बनी और...

"तंत्र चक्र के बावजूद यह स्थान सुरक्षित नहीं है।" बुंदू तांत्रिक ने उसकी बात काटकर कहा—"बाकी बातें किले के अंदर पहुंचकर करें तो बेहतर होगा।"

"नहीं, ऐसा बिल्कुल मत करना अंगद।" काले खां अपना मुंह उसके कान के नजदीक ले जाकर फुसफुसाया था—"ये आदमी अब भी यकीन के काबिल नहीं है।"

अंगद ने उसकी फुसफुसाहट सुनी जरूर पर कोई खास ध्यान नहीं दिया। उसने बुंदू से पूछा था—"मैं तुम्हारे तंत्र चक्र का मतलब नहीं समझा। हमें तो कोई चक्र नजर नहीं आ रहा।"

"चक्र यदि नजर आने लगे तो उसका फायदा ही क्या! चक्र का तो मतलब ही ये है कि उसके अंदर जो भी होगा वह किसी को नजर नहीं आएगा और...ऐसा चक्र तैयार करने की सिद्धि प्राप्त करने में मुझे कई साल लग गए जिसे कपाली की बेशुमार आंखें न बेंध सकें। मेरे चक्र में आने के बाद ही तुम्हारी गाड़ी का इंजन ठप्प हो गया और तब से मैं और तुम्हारी गाड़ी उसी तंत्र चक्र में हैं।"

नंदिनी ने पूछा—"इसे खींचकर यहां कौन लाया?"

"कपाली की सेना में तो सैंकड़ों भूत, प्रेत, पिशाच, जिन्न और चुड़ैलें हैं। तांत्रिक विद्याओं से उसने उन सबको अपना गुलाम बना रखा है मगर दो जिन्न, चार पिशाच, पांच भूतों और छः प्रेतों को मैंने भी अपने मंत्रों से बांध रखा है। वे मेरे हुक्म का पालन करते हैं। मेरे हुक्म पर वे ही तुम्हारी गाड़ी को यहां लाए हैं।"

"हम उन्हें देखना चाहते हैं।"

"ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि तुम्हें दिखाऊंगा तो यहां के कण कण में मौजूद कपाली की आंखें भी उन्हें देख लेंगी। अगर एक बार उसे यह भनक लग गई कि मैं क्या कर रहा हूं तो तुम्हें बाद में सजा मिलेगी, मेरे वालिद की तरह मेरी बोटियों को पहले चबा जाएगी।"

"कण-कण में मौजूद कपाली की आंखों वाली बात समझ में नहीं आई।" अंगद ने पूछा—"ऐसा कैसे हो सकता है?"

"उसके भूत, प्रेत, पिशाच और जिन्न आदि हमेशा वेलापुर के आसपास की हवाओं में परवाज करते रहते हैं। वे ही उसकी आंखें हैं। उनकी आंखों से वह सब कुछ देखती है।"

"तो क्या वह हमें गाड़ी से निकलते ही नहीं देख लेगी?"
"मेरा तंत्र चक्र तुम्हारे साथ-साथ चलेगा।"
"ठीक है।" कहने के साथ अंगद ने मानो फैसला कर लिया और बाहर निकलने के लिए दरवाजा खोला।

हजारों शंकाओं से घिरे सबके दिल कांप रहे थे मगर जब अंगद ही बाहर निकल गया तो उनके गाड़ी में बैठे रहने का कोई प्रश्न ही नहीं था। जैसे ही वे गाड़ी से निकले, बिजली की जोरदार गड़गड़ाहट के साथ झमाझम बारिश पड़ने लगी।

मूसलाधार बारिश शुरु हो चुकी थी। बादल गरज रहे थे और रह-रहकर बिजली कड़क रही थी। साथ ही—हवा के झक्कड़ इतने तेज हो चुके थे कि किले के अंदर, जहां इस वक्त वे थे, वहां भी तेज हवाएं कोहराम मचाए हुए थीं।

बहुत से घंटे बजने की आवाज आ रही थी।
ऐसे घंटों की आवाज जैसे मंदिरों में लगे रहते हैं।

बुंदू तांत्रिक आगे-आगे चल रहा था। काले खां, राजपाल, नंदिनी और तरुणा के दिल अभी-भी बुरी तरह कांप रहे थे जबकि अंगद उस किले में दाखिल होकर अजीब-सा रोमांच महसूस कर रहा था जिसे सपने में देखा करता था।

सपने में किले का सीमित हिस्सा नजर आता था। सिर्फ वह, जहां से कपाली गुजरा करती थी या जहां बलि दिया करती थी परंतु इस वक्त किले की हर दरो-दीवार उसकी आंखों के सामने थी मगर अंधेरा इतना था कि ठीक से अब भी कुछ नजर नहीं आ रहा था।

जिस क्षण बिजली चमकती, बस उसी क्षण जो नजर आ जाता, सो आ जाता। घंटों की आवाज को सुनकर उसने पूछा था—"क्या इस किले में कोई मंदिर भी है?"

"जोरावर सिंह की पत्नी दुर्गा माता को बहुत मानती थी।" बुंदू ने बताया—"जोरावर ने उसकी पूजा के लिए लॉबी के एक तरफ देवी की बहुत बड़ी मूर्ति स्थापित कराई थी जो आज भी महफूज है। घंटों की यह आवाज वहीं से आ रही है।"

वे लॉबी में पहुंचे।

इंसानी चहल-पहल का ही परिणाम था कि वहां चमगादड़ और उल्लूओं की आवाजें गूंजने लगीं। साथ ही, वे अपने विशाल पंखों पर सवार होकर इधर-उधर उड़ते नजर आने लगे थे।

उन्होंने जमीन पर दौड़ते चूहों और छछुंदरों की आवाजें भी सुनीं। अंगद को याद आया—पिछले सपने में कपाली के पैर के नीचे एक छछुंदर दब गया था। वह संभल-संभलकर अंधेरे में पैर रखने लगा।

फिर बुंदू तांत्रिक ने आतिशदान पर रखी एक मोमबत्ती जलाई। हॉल में उसका पीला प्रकाश बिखर गया।

उस स्थान को देखकर अंगद का दिलो दिमाग घृणा से भर गया जहां इस वक्त भी रंगोली बनी हुई थी। इसी रंगोली पर तो कपाली अभिजीत की हड्डियों को सजाकर कंकाल का रूप देती है और फिर उन्हें मासूम बच्चों का खून पिलाती है।

अंगद की आंखें स्वतः ऊपर उठ गईं।

गुंवद से बंधी एक रस्सी लटक रही थी। वही रस्सी, जिसके निचले सिरे पर उसे उल्टे लटके बच्चे नजर आते थे।

हॉल के बाईं तरफ एक बहुत बड़ा दरवाजा था। सिच्वेशन बता रही थी कि वहां किसी समय स्लाइडिंग डोर होगा जो बंद होने पर उस स्थान को लॉवी से अलग कर देता होगा और खुलने पर लॉवी का हिस्सा बना देता होगा परंतु इस वक्त तो उसे लॉवी का हिस्सा ही कहा जा सकता था क्योंकि स्लाइडिंग डोर टूट चुका था।

वे लॉवी के उस हिस्से में दाखिल हुए जहां माता दुर्गा की मूर्ति स्थापित थी। मोमवत्ती की कांपती हुई भयावह पीली रोशनी में उन्होंने उस भव्य मूर्ति को भी देखा और छत से लटके पीतल के उन घंटों को भी जो तेज हवा से हिलने के कारण जोर-जोर से वज रहे थे। सिंह पर सवार उस मूर्ति के आठ हाथ थे। एक हाथ आशीर्वाद के रूप में उठा हुआ था, दूसरे में कमल का फूल था और वाकी छः हाथों में शंख, गदा, धनुष, तलवार, त्रिशूल और ढाल थी।

गर्द जमी होने के वावजूद मूर्ति बड़ी जीवंत लग रही थी।

बुंदू तांत्रिक ने उन्हें मूर्ति के ठीक सामने वने उस चवूतरे पर वैठाया जिस पर कभी हवन हुआ करता होगा। वोला—"मुझे मालूम है कि तुम लोग अभी-भी मुझ पर विश्वास नहीं कर पा रहे हो, फिर भी कपाली की पूरी कहानी सुनाता हूं।"

वे शांत रहे।
उसी ने कहा—"कपाली का असली नाम रूपवती था।"

"र-रूपवती?" नंदिनी इस तरह चौंकी थी जैसे उसे विच्छू ने डंक मारा हो। चेहरे पर जलजले के-से भाव उभरे थे और स्मृति में उभरी थीं वे आंखें जिन्हें उस वक्त रिम्पी की आंखों के पीछे से झांकते देखा था जब कपाली रिम्पी के आस्तित्व पर सवार थी।

उस दृश्य को याद करके उसके समूचे जिस्म में झुरझुरी-सी दौड़ गई। मुंह से बोल न फूट पा रहा था जवकि बुंदू तांत्रिक सहित सभी की चौंकी हुई नजरें उसके चेहरे पर अटकी हुई थीं। अंततः अंगद ने पूछा—"क्या हुआ नंदिनी? तुम इस नाम को सुनकर चौंकीं क्यों?"

नंदिनी ने उसके सवाल का जवाव देने की जगह बुंदू तांत्रिक से सवाल किया—"क्या तुम यह भी जानते हो कि वह कहां की रहने वाली थी। मेरा मतलव, पीहर कहां था उसका?"

"गांव गेसूपुर।"

"ओह! ओह!!" वह चकित भी हो उठी और रोमांचित भी, नेत्र शून्य में स्थिर हो गए थे। होंठ बड़बड़ा उठे—"य...ये तो वही है। यह वात मेरे दिमाग से विल्कुल उतर ही गई थी कि उस गांव का नाम बेलापुर था जिसमें रूपवती की शादी हुई थी। ओ माई गॉड, ऐसा कैसे हो गया! बेलापुर का नाम आते ही मुझे रूपवती की याद क्यों नहीं आई? अव मैं समझी कि रिम्पी की आंखों के अंदर से झांकती आंखें मुझे जानी पहचानी क्यों लगी थीं! क्यों उसने मुझे नहीं मारा!"

"क्यों? क्यों नंदिनी?" जिज्ञासा से पागल हुए जा रहे अंगद ने उसके दोनों कंधे पकड़कर झंझोड़ते हुए कहा—"ये सब तुम क्या कह रही हो? क्या तुम उसे जानती हो?"

"वो मेरी वहन है।"

"व-वहन?" सवके हलक से चीख जैसी आवाज निकली थी। बुंदू और अंगद सहित सभी उसे ऐसी नजरों से देखने लगे थे जैसे वह इस दुनिया की सवसे आश्चर्यजनक वस्तु हो।

"हां।" नंदिनी पागलों की तरह बड़बड़ा उठी—"अगर वह वही है, अगर वह गेसूपुर गांव से ब्याहकर आई थी, अगर

उसका नाम रूपवती है तो वह वही है। मेरी मौसी की लड़की। मगर सगी बहन से भी ज्यादा प्यारी। हमारा बचपन गेसूपुर में एक साथ गुजरा था। बचपन की ऐसी कौनसी शरारत थी जो हमने साथ-साथ नहीं की। पेड़ों की डालियां पर पड़े वो झूलों के लंबे-लंबे झोटे, वो इमलियों के पेड़ पर चढ़कर इमलियां तोड़ना, बूढ़े और बूढ़ियों को चिढ़ाने वाले खेल खेलना, गुल्ली-डंडा, कंचे, इक्कल-दुक्कल खेलना। क्या नहीं किया था हमने! हम एक-दूसरे के लिए जान देने को तैयार रहते थे। छुट्टियां खत्म होते ही पढ़ाई के कारण मैं दरभंगा आ जाती थी। वह गेसूपुर में ही रह जाती लेकिन हमारे बीच इतनी मुहब्बत पनप चुकी थी कि दिल एक-दूसरे के पास ही रह जाते। छुट्टियां शुरु होते ही फिर गेसूपुर। फिर वही शरारतें और खेल-कूद। मैं उन दिनों दरभंगा में थी। पीलिया हो गया था, जब सुना कि–रूपमती की शादी बेलापुर में तय हो गई है। मैं शादी में जाने के लिए रोने लगी, चीखने चिल्लाने लगी लेकिन किसी ने एक न सुनी। पीलिया बिगड़ जो गया था। मुझे अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा था। कहते हैं कि उस बीमारी में मैं मरते-मरते बची थी। पता लगा–मेरी मौजूदगी के बगैर रूपवती भी शादी कराने के लिए तैयार न थी। उसने खूब विरोध किया लेकिन बड़े लोगों के सामने एक न चली। शादी हो गई। उन दिनों मेरी जिद पर मुझे उससे मिलाने के लिए ले जाने की तैयारी चल रही थी जब खबर आई कि उसके पति की मृत्यु हो गई है और उसी की चिता के साथ रूपवती भी सती हो गई। मैं खूब रोई। जार-जार रोई मगर मेरे रोने से अब होना क्या! वापस तो आ नहीं सकती थी मेरी रूपवती लेकिन...तुम कहते हो कि वह जिंदा है! नाम बदल गया है उसका। अब लोग उसे कपाली कहते हैं।"

"हां, यह सच है।" बुंदू तांत्रिक ने कहा–"कपाली कल की रूपवती का ही नाम है।"

"मुझे सुनाओ बुंदू।" वह दीवानगी के आलम में बोली–"मुझे उसकी पूरी कहानी सुनाओ, मेरी रूपवती कपाली कैसे बन गई?"

"अगर तुम उसकी बहन हो तो यह तो जानती ही होगी कि वह बहुत खूबसूरत थी। तुमसे भी ज्यादा खूबसूरत।" बुंदू कहता चला गया–"अभिजीत और वो एक-दूसरे से बेइंतहा मोहब्बत करते थे। इतनी ज्यादा कि सारे गांव के मुंह पर उनकी मुहब्बत के चर्चे थे। एक मनहूस दिन जोरावर सिंह की नजर रूपवती पर पड़ी और वहीं जमी रह गई। जोरावर सिंह एय्याश किस्म का शख्स था और उन दिनों बेलापुर में ही नहीं, आसपास के गांवों में भी उसका इतना दबदबा था कि कोई उससे आंख तक नहीं मिला सकता था। उसकी नजर जिसकी बहन-बेटी पर पड़ जाती, उसके आदमी उसे उठाकर इस किले में ले आते और उसके बाद वह जोरावर सिंह की हवस का शिकार होने के बाद ही किले से बाहर निकलती। विरोध करने की हिम्मत किसी में नहीं थी। जिस रात उसके आदमियों ने रूपवती को उठाया, उस दिन अभिजीत किसी काम से शहर गया हुआ था। रात को जब लौटा और पता लगा कि रूपवती को जोरावर सिंह के आदमी उठा ले गए हैं तो वह उसे बचाने चीखता-चिल्लाता इस किले में आ घुसा। इस किले में जिसकी ड्योढ़ी पर कदम रखने की किसी गांव वाले की हिम्मत नहीं थी, अभिजीत की हिमाकत ने जोरावर सिंह को जैसे पागल कर दिया। उसने उसकी आंखों के सामने ही रूपवती के साथ रेप किया और फिर रूपवती के सामने ही अभिजीत को इतना मारा गया कि उसकी मौत हो गई। अगले दिन सुबह गांव वालों को नदी किनारे से अभिजीत की लाश और बेहोश अवस्था में रूपवती मिली। होश में आने पर रूपवती दहाड़ें मार-मारकर रोने लगी, गांव वालों को जोरावर सिंह से बदला लेने के लिए उकसाने लगी, उन्हें हीजड़े और नामर्द कहने लगी मगर गांव वाले इस कदर डरे हुए थे कि उनके कानों पर जूं तक न रेंगी।"

नंदिनी के खूबसूरत चेहरे पर नफरत फैल गई थी। वह कह उठी–"सचमुच ऐसे लोग हीजड़े और नामर्द ही होते हैं।"

बुंदू धारा-प्रवाह कहता चला जा रहा था–"गांव वाले तो गांव वाले, रूपवती के ससुरालियों तक ने कुछ नहीं किया। जिनका बेटा गया था, वे भी रूपवती को शांत हो जाने और जोरावर सिंह से बदला लेने की बात दिमाग से निकाल देने के लिए समझाने लगे तो रूपवती जैसे पागल हो गई। उधर, जोरावर सिंह ने यह सोचा था कि रूपवती भी अंततः गांव वालों की तरह यह सोचकर शांत बैठ जाएगी कि जो हो गया, सो हो गया लेकिन जब उसे पता लगा कि रूपवती पर उससे बदला लेने का भूत सवार है और वह गांव वालों को भी उकसाने की कोशिश कर रही है तो उसने गांव के मुखिया से कहा कि रूपवती को भी अभिजीत की चिता के साथ ही सती होने की बात चलाए। उसके जरिए यह बात

उठी और सारा गांव इसी के फेवर में हो गया। रूपवती खूब रोई, चीखी और चिल्लाई मगर उसे जवरदस्ती दुल्हन बनाकर अभिजीत की चिता पर बैठा दिया गया। आग लगा दी गई। चिता के चारों तरफ गांव वाले लट्ठ लिए खड़े थे ताकि रूपवती भाग न सके लेकिन जो रूपवती पहले ही सती होने को तैयार न थी, जब आग उसके शरीर को जलाने लगी तो वह विचलित हो गई। उस वक्त तक उसके कपड़ों और चेहरे का काफी हिस्सा जल चुका था जब वह चिता से कूदी और चीखती चिल्लाती एक तरफ को भाग ली। उस वक्त उसके कपड़ों में आग लगी हुई थी और गांव वाले उसका पीछा कर रहे थे। उनके नजदीक पहुंचने से पहले ही वह नदी में कूद गई और पानी में ऐसी गुम हुई कि किसी के हाथ न आई।"

"उसके बाद?" सांस रोके सुन रही नंदिनी ने पूछा।

"कहते हैं कि अधजली हालत में वह रात के तीन बजे नदी से निकली। किनारे पर सुलग रही अभिजीत की चिता के करीब पहुंची, उस वक्त वहां दूर-दूर तक कोई नहीं था। उसने नदी के पानी से अभिजीत की चिता ठंडी की। उसकी वे सारी हड्डियां समेटीं जो तब तक पूरी तरह नहीं जली थीं। उन्हें अपनी अधजली साड़ी में लपेटा और पोटली बनाकर नदी के उस पार चली गई।"

"वहां कहां रही वह?"

"देखा तो मैंने भी कुछ नहीं और शायद गांव वालों ने भी कुछ नहीं देखा लेकिन उन्हीं से सुना है–नदी पार के पहाड़ी जंगलों में कपालतंत्र नाम का एक पहुंचा हुआ तांत्रिक रहता था। अभिजीत की हड्डियों को लिए वह उसी की शरण में पहुंच गई। उसके कदमों में गिर पड़ी और कहा–'अब मेरे दो ही लक्ष्य हैं। पहला, अपने अभिजीत को जिंदा करना। दूसरा, जोरावर सिंह और गांव वालों से बदला लेना क्योंकि अभिजीत की मौत के वे भी उतने ही गुनहगार हैं जितना जोरावर सिंह।' कपालतंत्र ने उसे अपनी शिष्या बना लिया, उसी ने उसे कपाली नाम दिया और कहा कि तंत्र विद्या से वह अपने अभिजीत को जिंदा कर सकती है। इसके अलावा और उसे चाहिए ही क्या था! वह वही करने और सीखने लगी जो कपालतंत्र कहता और सिखाता था। सालों-साल तक घनघोर तपस्याएं करके उसने तंत्र-मंत्र, जादू-टोने, रूप बदलने और भूत-प्रेतों आदि को अपने वश में करने की विद्याएं सीखीं। धीरे-धीरे ब्रह्मांड में विचरण करने वाली बहुत-सी रहस्यमय शक्तियां उसकी गुलाम हो गईं जिनमें जिन्न और ब्रह्मराक्षस तक शामिल हैं। वह किसी भी शख्स के दिलो दिमाग में झांक सकती है। उसके अस्तित्व पर कब्जा कर सकती है। रूप बदल सकती है और भविष्य तक को देख सकती है। अपनी इन्हीं शक्तियों के बूते पर उसने जोरावर सिंह के पूरे खानदान को मौत के घाट उतार दिया। यहां तक कि उसकी पत्नी तक को भी नहीं छोड़ा जो माता दुर्गा की बहुत बड़ी भक्त थी और जिसने कभी अपने पति के कुकर्मों में उसका साथ नहीं दिया। उसके जेहन पर सिर्फ एक ही बात सवार थी–बदला...बदला...और बदला। जिसके पास असीमित शक्तियां हों और वह बदला लेने पर आमादा हो जाए तो फिर उसे सारी सृष्टि का संहार करने से कौन रोक सकता है! उसने गांव वालों से बदला लेना शुरु किया। अभिजीत के मां-बाप तक को मौत के घाट उतार दिया। गांव के हर घर में मौत का तांडव मचने लगा और फिर एक दिन...सभी गांव वाले उसके कदमों में गिर गए और जिंदगी की भीख मांगने लगे। उसने उन सबको बख्शने के लिए एक शर्त रखी।"

इस बार अंगद ने पूछा–"कैसी शर्त?"

"उसने कहा–वह उन्हें तभी बख्श सकती है जब वे वादा करें कि भविष्य में किसी बहू-बेटी को सती होने के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा। गांव वाले तुरंत तैयार हो गए। उसके बाद उसने गांव वालों की हत्याएं करनी बंद कर दीं। अब केवल उसका एक ही लक्ष्य रह गया था–अभिजीत को जिंदा करना। उसे पूरा विश्वास है कि सात बलि पूरी होते ही उसका अभिजीत जिंदा हो जाएगा। वह उसी लक्ष्य की तरफ बढ़ रही है जबकि...

"जबकि?"

"सुना है–कपालतंत्र ने अपनी पूरी विरासत कपाली को सौंपने के बाद इच्छामृत्यु को चुना और अब वह इस संसार में

नहीं है।"

बुंदू के चुप होने पर उनके बीच बहुत देर तक खामोशी छाई रही क्योंकि किसी के भी मुंह से कोई आवाज न निकली थी। अगर यूं कहा जाए तब गलत न होगा कि कहने के लिए किसी को कुछ सूझा ही नहीं। रूपवती या कपाली की कहानी इतनी सनसनीखेज थी कि बहुत देर तक दिमागों पर सन्नाटा-सा छाया रहा। अंततः नंदिनी ने कहा—"मेरी बहन के साथ जो हुआ, बहुत बुरा हुआ।"

"लेकिन वो तो उससे भी ज्यादा बुरा कर रही है नंदिनी।" अंगद बोला—"अपने पति को जिंदा करने की धुन में मासूम बच्चों की बलि देना तो जोरावर द्वारा लड़कियों से रेप करने से भी घिनौना काम है।"

"मानती हूं लेकिन...
"लेकिन?"

"अब वह ऐसा नहीं करेगी। मुझे पूरा विश्वास है कि वह मेरी बात नहीं टाल सकेगी। जब वह मेरे सामने आएगी तो मैं उससे रिम्पी को बख्शने के लिए कहूंगी और वह रिम्पी की बलि नहीं...

"माफी चाहूंगा नंदिनी।" बुंदू ने कहा—"लेकिन मैं ये कहने के लिए मजबूर हूं कि तुम बहुत बड़े भ्रम में हो। इस भ्रम में शायद तुम इसलिए हो क्योंकि तुम अब भी उसे अपनी बचपन की सहेली और बहन समझ रही हो जबकि आज उसका रूपवती वाले रूप से दूर दूर तक कोई ताल्लुक नहीं है। आज वह कपाली है—सिर्फ कपाली। जिसका एक ही लक्ष्य है—अभिजीत को जिंदा करना और वह तभी जिंदा होगा जब रिम्पी की बलि दी जाएगी। उसके सोचने का अंदाज हरगिज भी रूपवती वाला नहीं हो सकता। आज वह बुरी आत्माओं से घिरी एक घिनौनी औरत है। कपाली और रूपवती की सोचों में जमीन-आसमान का अंतर है। तुम उसके बारे में...

"ऐसा होता तो जब उसने महकार भैया को मारा था तो मुझे भी मार डालती। मुझे नहीं मारा उसने।"

"वो बात अलग है और तुम्हारे कहने पर रिम्पी को बख्श देने की बात अलग है। इस बात को नहीं मानेगी वह क्योंकि इसके बगैर तो अभिजीत जिंदा ही नहीं होगा।"

नंदिनी उलझ गई थी क्योंकि उसे लगा कि बुंदू किसी हद तक ठीक कह रहा है जबकि अंगद के जबड़े भिंच गए थे। वह कहता चला गया—"सवाल सिर्फ रिम्पी का नहीं है नंदिनी, सवाल ये है कि वह अब तक क्या-क्या कर चुकी है और अगर उसे रोका न गया तो भविष्य में क्या-क्या कर सकती है। उसने मेरी बहन के सिर पर सवार होकर उसे बहुत ही दर्दनाक मौत दी है। उसने मेरे बहनोई को चीर-चीरकर मारा है। वह धनपत और अखिल की ही नहीं, अनेक गांव वालों की हत्यारी है। उसने अभिजीत को जिंदा कर लिया तो महाराज चंडिकामृत के मुताबिक सोई हुई सभी शैतानी ताकतें जाग जाएंगी और धरती पर सद्पुरुषों का रहना नामुमकिन हो जाएगा।"

नंदिनी कांपकर रह गई थी—"क-क्या कहना चाहते हो?"

"सिर्फ इसलिए कि वह तुम्हारी बहन है, तुम्हारे दिल में उसके लिए जो सॉफ्ट कार्नर बना है, उससे बाहर आओ। अपने दिल को बड़ा करो और ये सोचो कि आज वह तुम्हारी बहन रूपवती नहीं बल्कि एक शैतानी ताकत है। ऐसी शैतानी ताकत, इंसानियत की भलाई के लिए जिसका खात्मा हमें करना ही होगा।"

"अरे!" नंदिनी के कुछ कहने से पहले बुंदू की चौंकी हुई आवाज उभरी—"काले खां कहां गया?"

सबने चौंककर अपने आसपास देखा—सचमुच काले खां वहां न था। बुंदू के द्वारा सुनाई गई कपाली की कहानी में वे इस कदर खो गए थे कि किसी को पता ही न लगा कि वह कब कहां चला गया।

"अब वह नहीं बचेगा।" वुंदू के चेहरे पर आतंक छा गया।
अंगद ने पूछा–"क्यों?"

"मेरे तंत्र चक्र से बाहर जो चला गया है गधा। अब उसे कपाली की नजरों में आने से कोई नहीं रोक सकता और उसकी नजरों में आने का मतलब है–सत्यानाश। मैंने कितना कहा था कि किसी को भी इस तंत्र चक्र से बाहर नहीं निकलना है। इसमें रहते वह या उसका कोई भी भूत-प्रेत न सिर्फ हमें देख नहीं सकता बल्कि हमारी आवाजें भी नहीं सुन सकता।"

"लेकिन काले खां गया कहां होगा?" अंगद बोला।
डरते हुए-से राजपाल ने कहा–"मुझे पता है।"
"क्या पता है तुम्हें?"

"वे मुझे भी ले जाना चाहते थे लेकिन मैं नहीं गया। उन्होंने मेरे कान में कहा था–'अगर मैं अभिजीत की हड्डियां अपने कब्जे में कर लूं तो कपाली मुझे मेरे ऑरिजनल जिस्म में वापस भेजने के लिए मजबूर हो जाएगी, आ मेरे साथ।' मगर मैं डर के मारे नहीं गया। तब, उन्होंने अपने होठों पर उंगली रखकर मुझे चुप रहने का इशारा किया और अकेले ही चले गए।"

"उफ्फ्! ये क्या किया उस नासमझ आदमी ने?" इन शब्दों के साथ बुरी तरह झल्लाया हुआ वुंदू तांत्रिक एक झटके से खड़ा होता हुआ बोला–"तुम लोग भी याद रखना, भूलकर भी वैसी भूल न करना जैसी काले खां ने की है। तुम लोग बस यहीं, मेरे तंत्र चक्र में महफूज हो। इससे निकले तो कपाली के काल रूपी मुंह में समा जाओगे। चाहे जो होता रहे, चक्र से बाहर मत निकलना। ये चक्र वैसा ही है जैसा लक्ष्मण ने सीता के चारों तरफ खींचा था, जो आज तक लक्ष्मण-रेखा के नाम से जाना जाता है। सीता ने उसे लांघा और किडनेप हो गईं। तुम्हें इसी के अंदर रहकर कपाली के यहां आने की प्रतीक्षा करनी है। कल पूर्णिमा है। वो बलि देने यहां जरूर आएगी क्योंकि ये आखरी बलि भी वहीं देनी जरूरी है जहां बाकी बलियां दी गई हैं। तुम समझ सकते हो कि उस वक्त उसके पास रिम्पी भी होगी। हमें जो भी कुछ करना है, तभी करना है। मैं बार-बार समझा रहा हूं–भले ही उससे पहले चाहे जो हो जाए, किसी को इस तंत्र चक्र से बाहर नहीं आना है।" कहने के बाद वह तेजी से लॉबी के बाहरी हिस्से की तरफ लपका था।

अंगद ने पूछा–"तुम कहां जा रहे हो?"

"काले खां की गलती को सुधारने।" उसने बाहर निकलते हुए कहा–"हालांकि उम्मीद नहीं है कि अब ऐसा हो सकेगा बल्कि मुझे तो अपनी जान का खतरा भी है। अगर उसे इल्म हो गया कि मैंने तुम लोगों की मदद की है तो वह मुझे नहीं छोड़ेगी।"

वैसे तो वह कब्र ही कच्ची थी, ऊपर से बारिश यानी...मिट्टी एकदम फोकी हो गई थी बल्कि उसे मिट्टी की जगह कीचड़ कहा जाए तो ज्यादा बेहतर होगा।

उस पर, काले खां के जेहन पर सवार जुनून। वह जुनून जो जल्दी से जल्दी अभिजीत की हड्डियों को हासिल कर लेना चाहता था।

कुछ मिलाकर हालात ऐसे थे कि कब्र उससे बहुत कम मेहनत में खुदती चली गई जितनी मेहनत की दरकार सामान्य अवस्था में होती। काले खां के वे हाथ बिजली की-सी गति से चल रहे थे जिनमें वह फावड़ा था जिसे उसने एक्स यूवी से निकाला था।

इस सबके बावजूद कब्र खोदने के प्रयास में उसके जिस्म ने ढेर सारा पसीना उगला था परंतु कोई नहीं बता सकता था कि कौनसी बूंद उसके पसीने की है और कौनसी बारिश की।

बादलों के बीच रह-रहकर कड़कड़ा रही बिजली इस वक्त उसकी बहुत मदद कर रही थी। उसके अलावा उसके पास यह देखने का कोई साधन न था कि कब्र कितनी खुद गई है और वह अभिजीत की हड्डियों तक पहुंचा है या नहीं।

और फिर, जब इस बार की बिजली की कड़क ने उसे बताया कि वह हड्डियों तक पहुंच चुका है तो खुशी की ज्यादती के कारण उसके मुंह से किल्ली-सी निकल गई।

फावड़ा एक तरफ फेंका।

जिस्म से गीली कमीज उतारकर कीचड़ की शक्ल ले चुकी मिट्टी पर बिछाई और कब्र में कूद गया। फिर इस तरह हड्डियों को चुन-चुनकर कमीज पर डालने लगा जैसे वे अशर्फियां हों।

बार-बार कड़क रही बिजली पुनः उसकी मददगार थी।

वह बुरी तरह मिट्टी से सन चुका था लेकिन कब्र से एक-एक हड्डी निकालकर कमीज पर डाल दी और उस वक्त कमीज को पोटली की शक्ल देकर कंधे पर लाद चुका था जब एक बार फिर बिजली कड़की और मुश्किल से दस फुट दूर खड़ी औरत नजर आई।

उसने सफेद साड़ी पहन रखी थी।

चेहरा इसलिए नजर नहीं आया क्योंकि वह लंबे-लंबे, काले, घने और भीगे हुए बालों के पीछे छुपा हुआ था।

यह विचार जेहन में आते ही काले खां के रोंगटे खड़े हो गए कि उसके सामने कपाली खड़ी है क्योंकि अंगद ने उसे सपने में देखा जाने वाला कपाली का यही हुलिया बताया था मगर अगले ही पल उसने अपने हौसले को समेटा और दबंग लहजे में बोला—"आना ही पड़ा कपाली, तुझे मेरे सामने आना ही पड़ा। हा...हा...हा! आती क्यों नहीं! मैंने तेरे अभिजीत की हड्डियां अपने कब्जे में जो ले ली हैं! अब ये तुझे तभी मिलेंगी जब तू मुझे मेरे ऑरिजनल जिस्म में पहुंचा देगी। मैंने कसम खाई थी कि तुझे इसके लिए मजबूर कर दूंगा।"

वातावरण में आग तक को पिघला देने वाला सर्द लहजा गूंजा था—"और तुझे यकीन है कि मैं मजबूर हो चुकी हूं?"

काले खां यह सोचकर थोड़ा सकपकाया कि उसका मुकाबला कैसे करेगा लेकिन फिर तुरंत ही संभलकर बोला—"हो सकता है कि तू मुझे मार डाले लेकिन मेरा दावा है कि अगर तूने ऐसी कोशिश की तो अपने मरने से पहले मैं इन हड्डियों को चूर-चूर कर दूंगा और फिर तू इनमें अभिजीत की आत्मा को नहीं बुला सकेगी।"

"कर।" वही सर्द आवाज—"चूर-चूर कर इन्हें।"

काले खां एक बार फिर बौखला गया। सूझा ही नहीं कि क्या करे लेकिन तुरंत ही मरता क्या न करता वाली स्थिति में आकर पोटली अपने कंधे से उतारी। दोनों हाथों में उसके सिरे पकड़े और बार-बार इस तरह जमीन मारता हुआ चीखा जैसे धोबी कपड़े धोते वक्त उन्हें पत्थर पर पटकता है—"ले...ले...ले! देख मैं तेरे अभिजीत की हड्डियों का चूरा बनाता हूं।"

वह मुश्किल से तीन या चार बार पोटली को जमीन पर पटक पाया था कि अचानक हलक से चीख निकली और उस चीख के साथ ही पोटली हाथों से निकलकर नीचे गिर गई।

वह हवा में ऊपर की तरफ खिंचता चला गया था।

ऐसा महसूस किया था उसने जैसे दोनों टखने किसी के दो मजबूत हाथों में हों और उन्होंने उसे हवा में उल्टा लटका

रखा हो।

कपाली का सर्द लहजा पुनः हवाओं में गूंजा–"इस बेवकूफ को बताओ कि हड्डियों का चूरा कैसे किया जाता है।"

उधर उसका सेंटेंस खत्म हुआ इधर काले खां के हलक से चीखें निकलनी शुरु हो गई थीं क्योंकि उसके टखने जिसके हाथों में थे, उसने उसे हवा में गोल-गोल घुमाना शुरु कर दिया था, ठीक इस तरह जैसे धोबी कपड़े को धोते वक्त पत्थर पर मारने से पहले दो तीन बार हवा में घुमाता है और उस वक्त तो हलक से बहुत ही मर्मांतक चीख उबली जब कपड़े की तरह घुमाकर उसके कंधे के ऊपर हिस्से को जमीन पर पटका गया।

पलक झपकते ही उसका चेहरा और सिर फट गया था। उससे खून की धार ही नहीं बल्कि गोश्त के लोथड़े तक बाहर आ गए थे।

और फिर, जाने वो कौनसी ताकत थी जो उसे बार-बार हवा में घुमा-घुमाकर कपड़े की तरह जमीन पर पटकती रही।

इस बीच कई बार बिजली कड़कड़ाई थी।

दृश्य ऐसा था कि अगर रात के उस वक्त कब्रिस्तान में उसे कोई देख लेता तो हार्ट फेल हो जाने के कारण मर जाता क्योंकि खून और गोश्त के लोथड़े बारिश की बूंदों की मानिंद हवा में उड़ते फिर रहे थे। एक अवस्था ऐसी आ गई कि काले खां के हलक से चीखें निकलनी भी बंद हो गईं।

होतीं भी क्यों नहीं!

वह मर चुका था और...नज़र न आने वाली अज्ञात हस्ती अब उसकी लाश को हवा में घुमा-घुमाकर जमीन पर पटक रही थी।

कपाली ने अपना एक हाथ हवा में उठाया।
अदृश्य शक्ति जैसे समझ गई कि वह क्या चाहती है।

काले खां की लाश हवा में चकराई और उस कब्र में जा गिरी जहां से उसने अभिजीत की हड्डियां निकाली थीं।

कुछ देर वहां हौलनाक सन्नाटा छाया रहा। केवल बारिश की और बीच-बीच में कड़क रही बिजली की आवाज उसे भंग कर रही थी। फिर, मुकम्मल कब्रिस्तान में बिजली की कड़क से भी ज्यादा कड़क आवाज गूंजी–"बुंदूऽ...ऽ...ऽ!"

"यहीं हूं कपाली माता।" माहौल में बुंदू तांत्रिक की बुरी तरह कांपती आवाज गूंजी–"मैं यहीं हूं।"
कपाली फिरकनी की मानिंद उसकी तरफ घूमी।
ऐसा होते ही बुंदू तांत्रिक घुटनों के बल जमीन पर नहीं बैठा बल्कि दंडवत् लेटता हुआ बोला–"मैं यहीं हूं।"
"अब तक कहां था?" उसने कड़क आवाज में पूछा।
वह उसी पोजीशन में बोला–"यहीं था माता।"
"सामने क्यों नहीं आया?"

"हिम्मत ही नहीं पड़ी। डर ही इतना गया था। मैंने इससे पहले किसी इंसान की इतनी वीभत्स मौत नहीं देखी। शायद वह आपका कोई दास है जिसने इसे इस तरह पटक-पटककर मारा।"

जहर में डूबा लहजा–"बहुत होशियार हो गया है बुंदू!"
"मैं कुछ समझा नहीं माता।"

"अचानक उनकी गाड़ी मेरे भूत, प्रेत, जिन्न और पिशाचों को नजर आनी बंद हो गई।" वह बड़े ही रहस्यमय स्वर में कह रही थी–"ये तो चमत्कार हुआ, पर कैसे? कैसे हुआ ये चमत्कार?"

"मैं निर्बुद्धि कैसे समझ सकता हूं माता?"

"ऐसा तो तभी हो सकता है जब किसी तांत्रिक ने तंत्र चक्र बनाया हो। ऐसा तंत्र चक्र जिसे मेरे दासों की आंखें तो क्या खुद मेरी आंखें भी नहीं बेंध पाईं बल्कि...नहीं बेंध पा रही हैं।"

"ऐसा तंत्र चक्र कौन बना सकता है माता?"

"मेरे अलावा इस इलाके में दूर-दूर तक केवल एक ही तांत्रिक है–बुंदू तांत्रिक। लेकिन...मैं सोच भी नहीं सकती थी कि उसने इतनी शक्तियां हासिल कर ली होंगी कि मेरी आंखों को धोखा दे सके। बुंदू, तूने इतनी शक्तियां कब और कैसे हासिल कीं?"

"नहीं माता, मैंने कभी कोई ऐसी शक्ति हासिल नहीं की। ऐसी शक्ति हासिल करने की भला मेरी बिसात ही कहां है! अगर ऐसा हुआ है तो जरूर किसी और ने किया होगा।"

"पहले खड़ा हो...तब बात करते हैं।"

हुक्म होते ही बुंदू खड़ा हो गया लेकिन बड़ी मुश्किल से खुद को खड़ा रख पा रहा था। उसकी टांगें ही नहीं बल्कि मुकम्मल जिस्म यूं कांप रहा था जैसे टहनी से जुदा होने को तैयार सूखा पत्ता।

कपाली ने पूछा–"तू जानता है न कि मुझे लोगों के दिमागों में घुसना आता है, उसे पढ़ना आता है!"

"जानता हूं माता।" उसने हाथ जोड़ दिए थे।

"और इसीलिए तूने अपने दिमाग को सपाट स्लेट बना लिया है। कोई विचार ही नहीं है उसमें। ऐसा तूने इसलिए किया है ताकि मैं कोशिश के बावजूद कुछ न पढ़ सकूं। मान गई बुंदू, मान गई कि तूने चुपके-चुपके बहुत सारी सिद्धियां प्राप्त कर ली हैं। इसे मैं अपनी लापरवाही ही कहूंगी कि तुझ पर कड़ी नजर नहीं रखी और तू इतना आगे निकल गया। खैर, अब बता कि वे लोग कहां हैं?"

"क-कौन लोग?"
"क्या मरने का तुझे जरा भी खौफ नहीं रहा?"

"कैसी बात कर रही हो माता!" वह गिड़गिड़ाया–"मरने का खौफ भला किसे नहीं होता!"

"तो बता अंगद, तरूणा, नंदिनी और राजपाल कहां हैं। तोड़ अपने तंत्र चक्र को। बस इसी शर्त पर जिंदा रह सकता है वरना अपनी मौत के परवाने पर दस्तखत तो तू कर ही चुका है।"

पलक झपकते ही बुंदू की समझ में यह बात आ गई कि अब उसे दुनिया की कोई ताकत मरने से नहीं बचा सकती और...यह बात समझ में आते ही उसके जिस्म का हर कंपन गायब हो गया। सीना तानकर बोला वह–"तू मुझे मार तो सकती है घिनौनी औरत लेकिन उनका पता नहीं उगलवा सकती।"

"ओह! ये तेवर?"

"मुझे नहीं पता कि वे तुझ जैसी काली शै को नेस्तनाबूद करने में कामयाब हो सकेंगे या नहीं लेकिन मैं जो कर सकता

था, किया। एक मौका देकर जा रहा हूं उन्हें। मौत के बाद मेरी रूह भी उनकी कामयाबी की दुआ करेगी ताकि मेरे अब्बा हुजूर की हत्यारी दोजख की आग में जल सके।"

"क्या तू ये समझता है कि अगर तू नहीं बताएगा तो मैं उनका पता नहीं लगा सकूंगी! क्या तू इस खुशफहमी का शिकार है कि मैं कभी-भी तेरे तंत्र चक्र में नहीं झांक सकूंगी?"

उसने पूरी दबंगाई से कहा—"दावा तो मेरा यही है।"

"तूने कहा था कि वैसी वीभत्स मौत पहले कभी नहीं देखी जैसी काले खां के रूप में कुछ देर पहले देखी थी। दिखाती हूं—उससे भी वीभत्स मौत दिखाती हूं तुझे।" बड़े ही क्रूर अंदाज में कहने के बाद उसने हवाओं को कोई इशारा किया और—

बुंदू को लगा—दो हाथों ने उसकी दाईं टांग पकड़ी। दूसरे दो ने बाईं। न चाहते हुए भी उसके हलक से चीख निकली।

पलक झपकते ही उसका जिस्म जमीन पर जा गिरा।

एक टांग बाईं तरफ को खींची गई, दूसरी दाईं तरफ को और उसका धड़ वाला हिस्सा दोनों टांगों के साथ दो हिस्सों में चिरता चला गया। उसकी अंतिम चीख दूर तक गूंज गई।

"कहां हो तुम?" आकाशीय बिजली की मानिंद उस कड़कदार आवाज ने मुकम्मल किले को झकझोरकर रख दिया था जो अंगद, तरूणा, नंदिनी और राजपाल के कानों को बेंधती चली गई–"सामने आओ। किसी भी तंत्र चक्र में छुपे रहकर तुम बच नहीं सकते।"

उसके बाद उनके कानों से पायलों की 'छम-छम' टकराई थी।
चूड़ियों की खनक टकराई थी।

ये समझने में उनमें से किसी को भी देर न लगी कि वह कपाली ही है जो किले के अंदर आ घुसी है और इस एहसास ने उन सभी को थरथराकर रख दिया था कि जाने अगले पल क्या हो!

वे सभी, डरे-सहमे चबूतरे पर बैठे रहे।

कपाली की आवाज ने फिर उनके दिमाग सुन्न किए–"मेरे यह समझने के लिए कि तुम इसी किले में हो, इतना काफी है कि तुम्हारी गाड़ी बाहर खड़ी है। यहां मोमबत्ती जल रही है, कान खोलकर सुनो, जिस बदजात के तंत्र चक्र में इस वक्त तुम छुपे हुए हो मेरे भूतों ने उसके शरीर को चीरकर दो टुकड़े कर दिए हैं। उस काले खां की लाश भी कब्रिस्तान में पड़ी है जिसने मेरे अभिजीत की हड्डियों को अपने नापाक हाथ लगाने की चेष्टा की थी। सामने आ जाओ तो शायद माफ कर दूं। छुपे रहे तो बचोगे तुम भी नहीं। बहुत जल्द मेरी आंखें बुंदू के तंत्र चक्र के अंदर घुसकर तुम्हें देख लेंगी।"

पायलों की 'छम-छम' व कदमों की चाप पर ध्यान देते राजपाल ने कांपते लहजे में कहा–"वह इधर ही आ रही है।"

"आने दो। डरो मत।" अंगद ने उसे सांत्वना देने की कोशिश की–"वो हमें नहीं देख सकती। इसीलिए बौखला रही है।"

नंदिनी उलझी हुई थी।
उसकी समझ में नहीं आ रहा था क्या करे।
तभी, कपाली डबल हाइट हॉल में नजर आई।

अपनी आंखों में दहशत लिए वे उसे साफ देख सकते थे। वह उस रंगोली के नजदीक थी जहां बलि दिया करती थी। गुस्से की ज्यादती के कारण वह पगलाई हुई-सी चारों तरफ घूम-घूमकर, बार-बार उन्हें सामने आने के लिए ललकार रही थी। काले खां की कमीज की पोटली उसके कंधे पर लटकी हुई थी।

वह अंधी के मानिंद चारों तरफ को देखती हुई बोली–"मुझे पहचान नंदिनी, मैं रूपवती हूं। इसीलिए तुझे नहीं मारा। इसीलिए अंगद को नहीं मार सकती क्योंकि तू उससे प्यार करती है। मैं तुम दोनों को नहीं मारूंगी। सामने आ जाओ।"

अंगद थोड़ा स्थिर था, बाकी तीनों थरथर कांप रहे थे।

"अंगद।" कांपती आवाज में नंदिनी बोली–"जाने क्यों, मुझे अब भी लग रहा है कि मैं उसे समझा सकती हूं। मैं कहूंगी तो वह रिम्पी की बलि नहीं देगी।"

"बेवकूफी की बातें मत करो।" अंगद ने दांत भींचकर गुस्से में कहा–"रिम्पी को किसी हालत में नहीं बख्शेगी वो क्योंकि अभिजीत की जिंदगी उसी की मौत से जुड़ी है।"

एकाएक कपाली ने उधर ही देखा जिधर वे थे यानी दुर्गा की मूर्ति के सामने बने चबूतरे की तरफ और उस क्षण...उसके

लंबे, घने, काले और भीगे हुए बाल एक झटके से पीठ पर जा गिरे थे।

अंगद सहित सबके हलकों से चीखें निकल गईं क्योंकि पहली बार उन्होंने उसका चेहरा देखा था।

उफ्फ्! बहुत ही वीभत्स चेहरा था वह। दाईं तरफ का पूरा हिस्सा जला हुआ था। गोश्त के लोथड़े लटक रहे थे। गाल और ठोड़ी की हड्डियां चमक रही थीं और कंचे की मानिंद दाईं आंख बाहर को लटकी हुई थी। जबड़ा एक तरफ को मुड़ा हुआ।

इस वक्त ऐसा नजर आ रहा था जैसे वह उन्हीं को देख रही हो और यह एहसास उनके छक्के छुड़ाए दे रहा था। बहुत ही खूंखार अंदाज में वह अपनी आंखों को स्थिर किए उन्हीं की तरफ देखती रही। तरूणा, नंदिनी और राजपाल के दिलों ने तो जैसे धड़कना ही बंद कर दिया था। उनकी सांसों में सांस तब आई जब वह उनकी तरफ से दृष्टि हटाकर उनकी तलाश में किसी और तरफ देखने लगी। राजपाल बोला—"उसके कंधे पर जो पोटली है, वो इंस्पेक्टर साहब की कमीज की है। मुझे लगता है कि उसमें अभिजीत की हड्डियां होंगी। उन्हें कब्जे में ले लिया जाए तो...

अंगद ने उसकी बात काटकर कहा—"जब तक रिम्पी हमारे सामने नहीं है तब तक उसके सामने आना बेवकूफी होगी।"

राजपाल चुप रह गया।
फिर, अंगद ने एक फैसला लिया।

पद्मासन की मुद्रा में बैठ गया वह। रीढ़ की हड्डी सीधी करता हुआ बोला—"अब मुझे छेड़ना मत और मुझसे बात भी मत करना। मुझे समाधि में जाने दो।"

"स-समाधि में?" तीनों के मुंह से हैरत में डूबे शब्द निकले।

मगर, अंगद आंखें बंद कर चुका था। उन्होंने देखा—उसके पेट में हलचल शुरु हो गई थी। कपाली अब भी उन्हें लॉबी में ढूंढती फिर रही थी। वे समझ चुके थे कि फिलहाल कपाली चाहे जितनी कोशिश कर ले परंतु उन्हें नहीं देख सकेगी इसलिए जेहन उसके खौफ से मुक्त हो गया था मगर अंगद की गतिविधियां उनके दिलों की धड़कनों को अव्यवस्थित किए दे रही थीं।

करीब पांच मिनट बाद उन्होंने उसके पेट को कमर से मिलते देखा और देखा—अंगद के जिस्म से एक और अंगद को निकलते।

उनकी आंखें विस्फारित अंदाज में फैल गईं।

कभी वे पद्मासन की मुद्रा में बैठे अंगद को देख रहे थे, कभी उसके उस पारदर्शी जिस्म को जो हवा में उड़ता फिर रहा था।

हैरत और खौफ की ज्यादती के कारण उनका बुरा हाल हो गया था। बुरी तरह कांपती तरूणा बोली—"हे भगवान, ये क्या हो रहा है! अंगद, तुम कहां हो? जमीन पर बैठे हो या हवा में उड़ रहे हो?"

"डरो मत तरू, ये विद्या मुझे महाराज चंडिकामृत ने सिखाई है। जमीन पर मेरा स्थूल शरीर बैठा है और हवा में सूक्ष्म शरीर उड़ रहा है। मुझे लगता है—इस विद्या का उपयोग करने का समय आ गया है। मेरे सूक्ष्म शरीर को इस वक्त तुम इसलिए देख सकते हो क्योंकि मैं चाहता हूं कि तुम देख सको। जब चाहूंगा अदृश्य हो जाऊंगा यानी तुम सहित कोई मेरे सूक्ष्म शरीर को नहीं देख सकेगा। शायद कपाली भी नहीं। मैं उसके पीछे जा रहा हूं।"

"क-क्यों?" बौखलाई हुई नंदिनी ने पूछा।

"शायद वह वहां जाए जहां उसने रिम्पी को रखा है। शायद मैं उसे इस डायन के पंजे से निकाल लाऊं। निकाल भी न सका तो यह तो पता लग ही जाएगा कि वह कहां और किस हाल में है। याद रहे, किसी को भी इस चक्र से बाहर नहीं निकलना है।" इस आवाज के बाद अंगद का सूक्ष्म शरीर उन्हें नजर आना बंद हो गया था।

वे भौंचक्के-से एक-दूसरे की तरफ देखते रह गए।

गठरी कंधे पर लादे कपाली तेजी से नदी की तरफ बढ़ रही थी और फिर किनारे पर पहुंचकर बेहिचक पानी में उतर गई।

अंगद नदी में नहीं उतरा बल्कि हवा में ही तैरता रहा पर उसकी नजरें हर पल नदी को तैरकर पार कर रही कपाली पर जमी रहीं।

कपाली ने नदी पार की।
तेजी से एक पहाड़ पर चढ़ने लगी।

वह ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रही थी, त्यों-त्यों जंगल घना होता जा रहा था परंतु हवा का हिस्सा बने अंगद को उसका पीछा करने में कोई दिक्कत नहीं हो रही थी।

घने पेड़ों से घिरे एक स्थान पर पहुंचने पर जाने क्या हुआ कि कपाली ठिठकी। उसने सशंकित अंदाज में अपने चारों तरफ देखा। फिर जोर से बोली—"कौन है?"

किसी तरफ से कोई जवाब नहीं।
"कौन है यहां?" उसने फिर सख्त स्वर में पूछा।

उस वक्त अंगद ने अपने सूक्ष्म शरीर को एक पेड़ की टहनी पर टिका रखा था। हालांकि दिमाग में यह विचार उभरा था कि शायद कपाली को उसकी मौजूदगी का एहसास हो गया है और यह बात उसके मिशन को खटाई में डाल सकती थी मगर फिर भी, कपाली की बेचैनी को देखकर होठों पर अनचाही-सी मुस्कान रेंगी।

इस बार कपाली ने शून्य को घूरते हुए पूछा था—"मैं तुमसे पूछ रही हूं चक्रम जिन्न, कौन है हमारे आसपास?"

अंगद कथित चक्रम जिन्न की न आवाज सुन सका, न ही कोई नजर आया। बस मंद-मंद हवा बह रही थी।

"तुम्हें नजर नहीं आ रहा!" कपाली के मुंह से आश्चर्य में डूबे लफ्ज निकले—"इसका मतलब कोई 'पहुंचा हुआ' है। मुझे ही देखना पड़ेगा उसे।" कहने के साथ वह जहां खड़ी थी, वहीं बैठ गई और पलक झपकते ही पद्मासन लगा लिया।

डाली पर बैठे अंगद की मुस्कान गहरी हो गई थी।

परंतु उस वक्त वह सकपका गया जब अचानक कपाली नजर आनी बंद हो गई। उसकी समझ में नहीं आया कि ये क्या हुआ।

उसी समय, ऐसा लगा जैसे किसी ने अपना मुंह उसके कान के नजदीक लाकर कहा हो—"भागो अंगद...भागो।"

अंगद बौखला गया।
वह फौरन पहचान गया।
आवाज चंडिकामृत की थी।

हड़बड़ाकर चारों तरफ देखा मगर चंडिकामृत कहीं नजर नहीं आए। अलबत्ता उनकी उत्तेजक आवाज पुनः कानों में पड़ी–"वो अपनी आंखों में दिव्य ज्योति को आमंत्रित कर रही है अंगद। फौरन बुंदू के तंत्र चक्र में पहुंचो। अगर वह उससे पहले कामयाब हो गई तो तुम्हें देख लेगी और अगर उसने तुम्हें देख लिया तो अनहोनी हो जाएगी। भागो...रिम्पी तक पहुंचने का लालच छोड़कर भागो।"

और फिर, उसने सोचने-समझने में एक पल भी नहीं गंवाया। उस पल के गुजरते-गुजरते वह अपने स्थूल शरीर के पास पहुंच गया था। वहां–जहां अब भी तरूणा, नंदिनी और राजपाल हक्के-बक्के से बैठे उसके स्थूल शरीर को देख रहे थे।

उस वक्त क्योंकि उसने खुद को अदृश्य कर रखा था इसलिए उसके सूक्ष्म शरीर को न देख सके।

अंगद बगैर देर किए अपने स्थूल शरीर के नथुने में घुसा और सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर से ज्वाइंट कर दिया।

तरूणा, नंदिनी और राजपाल ने उसके जिस्म में हरकत देखी तो आश्चर्य में कुछ और इजाफा हो गया और फिर, अंगद ने आंखें खोल दीं। वे हैरत से उसकी तरफ देख रहे थे। वह खड़ा होता हुआ बोला–"मेहनत व्यर्थ गई। मैं उसके ठिकाने तक उसका पीछा न कर सका। जाने कैसे उसे पहले ही मेरी मौजूदगी का एहसास हो गया।"

वे बस उसकी तरफ देखते रहे क्योंकि समझ कुछ नहीं पाए थे।
"महाराज।" अंगद शून्य को घूरता हुआ बोला–"क्या आप अब भी मेरे आसपास हैं?"
कहीं से कोई जवाब नहीं।
वे तीनों सोच रहे थे–कहीं अंगद पागल तो नहीं हो गया है।

पुनः अंगद ने ही कहा–"अब हमारे पास कल का इंतजार करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है क्योंकि कल पूर्णिमा है और उसे रिम्पी को साथ लेकर यहां आना ही पड़ेगा।"

धरती पर मानो चांदी बिखरी पड़ी थी क्योंकि स्वच्छ गगन पर, झिलमिलाते तारों के बीच, चांदी के थाल जैसा चंद्रमा मुस्करा रहा था। पूर्णिमा की वह रात बहुत शांत थी।

मगर अंगद, नंदिनी, तरूणा और राजपाल के दिलो-दिमाग में दूर-दूर तक शांति का अता-पता न था।

उन्हें कपाली का इंतजार था।

दिल इन सवालों के जाल में फंसे, जोर-जोर से धड़क रहे थे कि वह आएगी भी या नहीं और आएगी भी तो उसके साथ रिम्पी होगी या नहीं? तर्क कहते–आना तो उसे पड़ेगा ही। बहरहाल, आज वो रात है जिसका उसे वर्षों से इंतजार था। जिस रात वह रिम्पी के रूप में अंतिम बलि देकर अभिजीत को जिंदा करने वाली है और बुंदू के कहे मुताबिक बलि उसे यहीं देनी है।

पर शंकाएं कहतीं–कहीं ऐसा तो नहीं कि वह इसलिए न आए क्योंकि पिछली रात उसने महसूस कर लिया था कि वे लोग वहां हैं!

फिर तर्क कहते–वह डरने वाली नहीं है, जरूर आएगी।

इसी ऊहा-पोह में रात के बारह बज गए। माता दुर्गा की मूर्ति के पीछे बनी जाली से फूटकर चांदनी अंदर आने लगी।

यही क्षण था जब उन्होंने पायलों की 'छम-छम' और चूड़ियों की खनक सुनी। इस एहसास ने उनके दिलों की धड़कनें कई गुना बढ़ा दीं कि वह आ गई है। फर्श पर चूहे और छछुंदर दौड़ने लगे।

हवा में उल्लू और चमगादड़ फड़फड़ाने लगे।
किले के उस हिस्से में छाई खामोशी भंग हो गई थी।

चांदनी की मदद से डबल हाइट हॉल में एक परछाईं-सी नजर आई। चक्र के अंदर मौजूद अंगद, तरूणा, नंदिनी और राजपाल आंखें फाड़-फाड़कर यह देखने की कोशिश करने लगे कि उसके साथ रिम्पी है या नहीं! और रिम्पी थी, इस बात का एहसास उन्हें तब हुआ जब परछाईं के कंधे पर एक छोटे जिस्म की परछाईं महसूस की।

दूसरे कंधे पर पोटली थी।
एक हाथ में फरसा भी नजर आया।

उन्होंने उसे फरसा रंगोली के नजदीक रखते देखा और फिर, अपने लिबास से निकालकर एक मोमबत्ती आतिशदान पर जमाते।

उसके मोमबत्ती जलाते ही वहां रहस्यमयी पीला प्रकाश फैल गया। वह सारे काम बहुत आराम से कर रही थी। दिमाग में इस बात का कोई भय नजर नहीं आ रहा था कि पिछली रात से उसे पता है कि वे लोग किले में कहीं छुपे हुए हैं।

अंगद को लगा—ऐसा शायद इसलिए है क्योंकि अपनी तरफ से वह पूरी तैयारियों के साथ आई है। किसी भी खतरे से निपटने के लिए जरूर किले की हवाओं में उसके भूत, प्रेत और जिन्न आदि मौजूद होंगे मगर अंगद को भी उनकी परवाह नहीं थी। वह उसकी सभी शक्तियों से टकराने का निश्चय कर चुका था।

वह रंगोली के नजदीक आई।
पोटली नीचे रखी।

अब वे साफ पहचान सकते थे कि जिसे उसने कंधे से उतारा, वह रिम्पी ही थी। रिम्पी बेहोश थी।

अंगद ने पद्मासन लगाया और समाधि में जाने की तैयारी करता बोला—"याद रहे, किसी को भी चक्र से बाहर नहीं जाना है। मैं अकेला ही उसे और उसकी सारी शक्तियों को देख लूंगा।"

किसी के मुंह से बोल न फूटा।

अंगद ने समाधि लगा ली। आंखें बंद कर लीं और अपनी सांसों से खेलने लगा। जिस वक्त वह अपना ध्यान सूक्ष्म शरीर पर लगाने की कोशिश कर रहा था उस वक्त कपाली बेहोश रिम्पी के पैर गुंबद से लटकी रस्सी के निचले सिरे पर बांध रही थी।

उसे देखकर उद्वेलित हुई तरूणा कह उठी—"वह उसे बांध रही है। रिम्पी की बलि देने की तैयारी कर ली है उसने।"

"धैर्य से काम लो तरूणा।" खुद भी बुरी तरह डरी हुई होने के बावजूद नंदिनी ने कहा—"अंगद हमें बता ही चुका है कि महाराज चंडिकामृत ने उसे खासतौर पर इन्हीं हालात से निपटने के लिए पारंगत किया है। वो कपाली को कामयाब नहीं होने देगा।"

"म-मगर, देखो...उसने उसे बांध दिया है। रिम्पी उल्टी लटकी हुई है और अब वह रंगोली पर अभिजीत की हड्डियों को सजा रही है।" वह बुरी तरह बेचैन होकर चीखने लगी—"थोड़ी देर में वह अभिजीत की आत्मा को बुला लेगी और फिर बलि दे देगी।"

"अंगद ऐसा नहीं होने देगा।"

"होने वाला है। अंगद तो अभी समाधि में ही है और उसने आत्मा को बुलाना शुरु कर दिया है। ये अपना सूक्ष्म शरीर बाहर भी नहीं निकाल पाएगा कि...नहीं...नहीं...मैं उसे ऐसा नहीं करने दूंगी।" चीखती हुई तरूणा डबल हाइट हॉल की तरफ दौड़ती चली गई।

नंदिनी और राजपाल हकबकाकर रह गए थे।

बुरी तरह घबराकर उन्होंने अंगद की तरफ देखा लेकिन ऐसा लगा ही नहीं कि अंगद को इस बारे में कुछ पता है।

वह अपने अंदर खोया हुआ था जबकि–

तरूणा के चक्र से बाहर निकलते ही रंगोली के नजदीक बैठी कपोली की गर्दन उसकी तरफ घूमी और अपना भयंकर जबड़ा फाड़ कर बड़े ही खतरनाक ढंग से हंसी। जिस्मों में दौड़ते रक्त को जमा देने वाले लहजे में बोली–"मुझे मालूम था...मुझे मालूम था कि इस सबको देखते ही तुम तंत्र चक्र से बाहर आ जाओगे। इसीलिए तो कर रही थी यह सब। पर तू अकेली कैसे! अभी तो अंगद, नंदिनी और राजपाल भी हैं। आएंगे...वे भी आएंगे।"

"प-प्लीज।" तरूणा हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाई थी–"ऐसा मत करो। रिम्पी की बलि मत दो। उसकी जगह मेरी बलि दे दो।"

"चल। मान लेती हूं तेरी बात।" कहने के साथ वह फरसा हाथ में लिए खड़ी होती हुई बोली–"वैसे भी, बाकी लोग तभी आएंगे न, जब तुझे हलाल होते देखेंगे!"

उस दृश्य को देखकर राजपाल को तो मानो लकवा ही मार गया था। चीखने की लाख कोशिशों के बावजूद उसके मुंह से आवाज न निकल पा रही थी जबकि नंदिनी चीखे चली जा रही थी–"ये क्या किया तरूणा, वापस आ...जल्दी से चक्र में वापस आ। अंगद, देखो· तरूणा ने बेवकूफी कर दी। जल्दी करो...जल्दी।"

उधर तरूणा ने जब फरसा हाथ में लिए कपाली को अपनी ओर बढ़ते देखा तो जोश और जजबातों में की गई गलती का एहसास हुआ। वापस घूमकर चक्र की तरफ दौड़ने की कोशिश की ही थी कि–'खच्च' की आवाज के साथ फरसा उसकी गर्दन से टकराया।

पलक झपकते ही धड़ अलग और गर्दन अलग जा गिरी।

उसके मुंह से तो अंतिम चीख निकलकर रह गई थी जबकि नंदिनी और राजपाल चीखने वाली मशीनों की तरह चीखते चले गए।

कपाली खून से सना फरसा हाथ में लिए पिशाचिनी की तरह ठहाके लगा-लगाकर हंस रही थी और चबूतरे की तरफ देखती हुई कह रही थी–"आओ...तुम भी आओ। चखो मेरे फरसे का स्वाद।"

उसके रौद्र रूप को देखकर नंदिनी और राजपाल की घिग्घी बंध गई थी जबकि ठीक उसी क्षण अंगद का सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर से बाहर आया। चंडिकामृत द्वारा बताई गई विधि से सूक्ष्म शरीर को अदृश्य किया और अगले ही पल उसका मजबूत घूंसा कपाली के चेहरे से टकराया। कपाली चीखती हुई दूर जा गिरी।

फरसा हाथ से निकलकर एक कोने में जा गिरा था।

अंगद उसे संभलने का मौका नहीं देना चाहता था और वैसे भी, उसके सूक्ष्म शरीर की गति कपाली के स्थूल शरीर से हजारों-हजार गुना तेज थी। उसने झपटकर कपाली के शरीर को अपने दोनों हाथों से सिर के ऊपर उठा लिया। कपाली उसी पोजीशन में चिल्लाई–"ये वही है चक्रम जिन्न, जिसने कल मेरा पीछा किया था। यहां आने से पहले मैंने तुझे दिव्य

ज्योति दी थी। उसी से देख इसे और ब्रह्मराक्षस, तू तो इसे बगैर दिव्य ज्योति के भी देख सकता है। मुझे जल्दी से बता कि ये आखिर है कौन?"

गुस्से से पगलाए हुए अंगद ने उसे एक दीवार पर देकर मारने के लिए फेंका मगर आश्चर्य!

वह दीवार तक न पहुंची।
हवा में ही झूलती रह गई।
बड़े ही भयंकर अंदाज में खिलखिलाकर हंस रही थी वह।

अंगद ने पुनः उस पर झपटना चाहा मगर इस बार उस तक न पहुंच सका। उससे पहले ही उसने महसूस किया कि किसी ने उसके सूक्ष्म शरीर को जकड़ लिया है।

वह बौखला गया क्योंकि ऐसी उम्मीद उसे बिल्कुल नहीं थी। उसने तो सोचा था सूक्ष्म शरीर किसी की पकड़ में ही नहीं आएगा लेकिन वैसा होते ही उसे याद आया—चंडिकामृत ने कहा था कि कपाली पर ऐसी-ऐसी शक्तियां हैं जिनकी कल्पना तक नहीं की जा सकती। जिस वक्त वह अदृश्य शक्ति के पंजे से निकलने की कोशिश कर रहा था उस वक्त हवा में झूलती-सी कपाली ने कहा था—"ओह, तो तेरे ख्याल से ये अंगद है! मतलब, ये सारे करतब इसने चंडिकामृत से सीखे हैं! इसे जमीन पर दे मार ब्रह्मराक्षस।"

ब्रह्मराक्षस ने वैसा ही किया।

अंगद का सूक्ष्म शरीर बहुत जोर से जमीन पर टकराया लेकिन कोई चोट नहीं लगी। इसलिए तुरंत ही उठकर खड़ा हो गया।

इस बार महसूस किया कि उसे तीन शक्तियों ने तीन तरफ से दबोच लिया है। अब...कपाली फर्श पर पद्मासन की मुद्रा में बैठती हुई बोली—"चक्रम, ब्रह्मराक्षस और बेताल, इसे तब तक उलझाए रखो जब तक मैं अपनी दिव्य ज्योति को नं जगा लूं और अपने सूक्ष्म शरीर को बाहर न ले आऊं। तब मैं बताऊंगी कि किसी और की ताकत के बूते पर कपाली से टकराने का अंजाम क्या होता है!"

वह समाधि में बैठ गई थी जबकि वे तीन शक्तियां जिन्हें उसने चक्रम, ब्रह्मराक्षस और बेताल कहकर पुकारा था, अंगद को हवा में उठा-उठाकर जमीन पर पटकने लगीं।

अंगद को कोई चोट नहीं लग रही थी लेकिन अदृश्य शक्तियां उसे कपाली की तरफ भी नहीं बढ़ने दे रही थीं।

वह बार-बार इसलिए मॉत खा रहा था क्योंकि शायद उन तीन शक्तियों के पास भी उतनी ही विशेषताएं थीं जितनी उसके सूक्ष्म शरीर में थीं बल्कि...उससे भी ज्यादा, क्योंकि वह महसूस कर रहा था कि वह उन्हें नहीं देख पा रहा है जबकि वे उसे देख सकते हैं।

तंत्र चक्र में कैद नंदिनी और राजपाल को न अंगद का सूक्ष्म शरीर नजर आ रहा था, न उससे भिड़ी तीन शक्तियां। बस कपाली को देख सकते थे वे और उसकी आवाजें सुन सकते थे मगर इतने मात्र से उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि हॉल में हो क्या रहा है?

इस बार जो तीन में से किसी एक शक्ति ने अंगद को जमीन पर पटका तो उसने झपटकर फरसा उठा लिया और किसी के भी कुछ समझने से पहले ठीक उसी तरह, एक ही झटके में कपाली की गर्दन धड़ से अलग कर दी जिस तरह उसने तरूणा की की थी।

धड़ वहीं बैठा रह गया।

गर्दन लुढ़कती हुई दूर चली गई।

उस दृश्य को देखकर शायद वे तीनों शक्तियां भी अपने स्थान पर स्तब्ध खड़ी रह गई थीं क्योंकि अंगद ने किसी को अपने आस पास महसूस नहीं किया। खून से सने फरसे को हवा में लहराते हुए उसने विजयी अट्टहास लगाया और कहा–"मैंने मार डाला। मैंने कपाली नाम की डायन को खत्म कर दिया।"

नंदिनी और राजपाल अंगद के जिस्म को भले ही न देख पा रहे थे मगर उन्होंने हवा में लहराते फरसे को और उसके वार से कटती कपाली की गर्दन को साफ देखा था और फिर सुना था–अंगद का विजयी नाद। उसका अट्टहास और उसके शब्द।

उनके दिल खुशी से उछल पड़े।

खुशी में डूबे वे तंत्र चक्र से बाहर जम्प लगाने ही वाले थे कि कपाली की कर्कश आवाज गूंजी–"कमाल कर दिया अंगद। तूने तो वाकई कमाल कर दिया। पलक झपकते ही कपाली के दो टुकड़े कर डाले। उस कपाली के, जिसे आज तक कोई छू तक नहीं पाया था।"

यह देखकर नंदिनी और राजपाल के छक्के छूट गए कि उपरोक्त शब्द कहते वक्त तरूणा का बगैर सिर और चेहरे वाला धड़ खड़ा हो गया था। बड़ा ही खौफनाक मंजर था वह। तरूणा के धड़ से कपाली की आवाज निकल रही थी–"यकीनन तूने मेरे जिस्म को खत्म कर दिया मगर मेरी आत्मा को कोई खत्म नहीं कर सकता। जिस्म का क्या है! मैं जब चाहूं, चाहे जिसके जिस्म को अपना जिस्म बना सकती हूं। देख, अब मैं यहां हूं।"

भन्नाए हुए अंगद ने एक बार फिर उस पर झपटना चाहा पर इस बार तीन शक्तियों में से किसी ने उसे हवा में उठा लिया था।

उसका फरसे वाला हाथ हवा में ही घूमकर रह गया।

"छोड़ दो बेताल...छोड़ दो उसे।" तरूणा के धड़ से आवाज निकली–"अब मेरे और इसके बीच जंग होने दो और तुम तीनों एक तरफ खड़े होकर तमाशा देखो।"

हुक्म होते ही उसे छोड़ दिया गया।

वह जमीन पर गिरा और बगैर देर किए इस बार उछलकर फरसे का वार तरूणा के सीने पर किया।

उसने बचने की कोई कोशिश नहीं की थी इसलिए फरसे ने सीना चीर दिया। तरूणा कटे वृक्ष-सी जमीन पर जा गिरी।

"हा...हा...हा।" यह कहकहा कपाली के मुंह से निकला था। साथ ही आवाज भी–"अब मैं यहां हूं अंगद।"

अंगद ने बौखलाकर उधर देखा।

कपाली की खौफनाक खोपड़ी फर्श से उछलकर हवा में नाचने लगी थी। उस दृश्य को देखकर जहां नंदिनी और राजपाल की रूहें फना हो गईं वहीं अंगद भी बुरी तरह बौखला गया। कपाली की खोपड़ी ने उसी तरह हवा में नाचते हुए कहा था–"अब सोच बच्चे कि कैसे खत्म करेगा मुझे? तू मेरे जिस्मों को खत्म करता जा, मैं नए-नए जिस्म बदलती जाऊंगी। कितने जिस्मों को खत्म करेगा? चाहे जितने जिस्म खत्म कर दे मगर मैं खत्म नहीं होऊंगी। किसी न किसी जिस्म में जिंदा रहेगी कपाली।"

अंगद को पुनः फरसा चलाने के अलावा और कुछ न सूझा मगर इस बार खोपड़ी उसके फरसे की जद में न आ सकी

बल्कि उस खोपड़ी के मुंह ने उसकी तरफ एक फूंक मारी थी।

पलक झपकते ही अंगद का जिस्म गाढ़े धुवें से घिर गया और जब धुवां छटा तो खुद अंगद ने यह महसूस किया कि अब वह अदृश्य नहीं है बल्कि उसके सूक्ष्म शरीर को देखा जा सकता है।

उसने अदृश्य होने की कोशिश की मगर नाकाम रहा।

कपाली की खोपड़ी बोली—"चंडिकामृत के सिखाए हुए जंतर मंतर के बूते पर काफी उठा-पटक कर चुका तू मगर कपाली की शक्तियों के सामने ये सब खेल तमाशे से ज्यादा नहीं है।"

अंगद ने बोलने की कोशिश की मगर गले से आवाज न निकल सकी। लगा—कपाली उसकी आवाज तक को लॉक कर चुकी है।

"चक्रम।" खोपड़ी ने कहा—"इसे अपने जार में बंद कर दे।"

फिर, अंगद ने महसूस किया कि ऊपर की तरफ से उसके सूक्ष्म शरीर पर कांच का बना कोई बहुत बड़ा जार गिराया जा रहा है।

उसने विरोध करना चाहा परंतु नहीं कर सका क्योंकि वह अपने सूक्ष्म शरीर के किसी भी अंग को स्वेच्छा से नहीं हिला पा रहा था।

वह जार में मूर्ति की मानिंद खड़ा रह गया।

राजपाल अब भी तंत्र चक्र में खड़ा थरथर कांप रहा था जबकि नंदिनी उस सबको देखने के बाद खुद को रोक न सकी और जान की परवाह किए बगैर डबल हाइट हॉल में पहुंच गई।

उसे देखते ही हवा में नाचती कपाली की खोपड़ी बोली—"मुझे पूरी उम्मीद थी नंदिनी, मैं अच्छी तरह जानती थी कि तू तभी सामने आएगी जब अपने अंगद की जान खतरे में पाएगी।"

"उसे माफ कर दे रूपवती।"

"हा...हा...हा।" खोपड़ी के जबड़े से पैशाचिक अट्टहास फूटते चले गए—"आखिर तुझे याद आ ही गया कि मैं रूपवती हूं। कल, उस वक्त यह हकीकत याद नहीं आई जब मैं तुम्हारी तलाश में भटक रही थी। खुद बता रही थी कि मैं रूपवती हूं।"

"मैं तो उस वक्त भी सामने आना चाहती थी लेकिन...
"लेकिन?"
"तुझसे डर गई थी।" नंदिनी ने कहा—"सोच भी नहीं सकती थी कि तू ऐसी हो गई होगी।"
"वक्त की मार इंसान को जाने क्या से क्या बना देती है।"
"मुझे पूरा यकीन है कि तू अंगद को...

"वो...जिसका नाम चंडिकामृत है।" कपाली की खोपड़ी उसकी बात काटकर कहती चली गई—"बहुत चालू है वो। उसने तेरे अंगद को चारों तरफ से सुरक्षित करके मेरे पास, मुझे खत्म करने भेजा है। उसने इसे परकाया प्रवेश की विद्या में पारंगत किया और वह जानता था कि मैं उसे नहीं मार सकती जिससे मेरी बहन मुहब्बत करती है। इसके बाद भी अगर मैंने ऐसी कोशिश की तो उसने इसके जिस्म के हर अंग को देवी कवच में सुरक्षित कर दिया। तभी तो इसने वो कारनामा कर दिखाया जिसे कभी कोई नहीं कर सका। मुझे न सही मगर मेरे जिस्म को जरूर नष्ट कर दिया इसने।

देवी कवच के कारण क्योंकि मैं अपनी किसी विद्या से इसके किसी अंग को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकती थी इसलिए जार में बंद कर दिया है।"

"मैं अभी तक भी यह नहीं समझ पाई हूं कि तू महामृत्युन्जय तावीज के बावजूद रिम्पी पर सवार कैसे हो सकी?"

"उस सुवह हुए अपने सिर का दर्द भूल गई?"
"म-मतलब?"
"तूने ही तो रिम्पी के तावीज को उसके गले से निकालकर सर्विस लेन में फेंका था!"
नंदिनी कांप गई–"म-मैंने?"

"हुक्म मेरा था...और जब मैं किसी को हिप्नोटिज्म करके हुक्म देती हूं तो सामने वाला उसे टाल नहीं सकता।" कपाली की खोपड़ी कहती चली गई–"मैं और मेरी ताकतें तो उस तावीज को हाथ तक नहीं लगा सकती थीं। उसे रिम्पी के गले से दूर करने के लिए मुझे एक इंसान की जरूरत थी और वह इंसान मेरी बहन से बेहतर कौन हो सकता था! मैंने रात ही में तुझे हिप्नोटिज्म करके तेरे हाथों वह तावीज सर्विसलेन में फिंकवा दिया था।"

"ल-लेकिन तावीज तो उस वक्त रिम्पी के गले में था?"

"तावीज वैसा था मगर उसमें महामृत्युन्जय नहीं था। मेरे हुक्म पर तूने असली तावीज उतारा और नकली पहना दिया।"

"ऐसा क्यों किया तूने?"

"चालाक चंडिकामृत की बुद्धि को चकरघिन्नी बनाने के लिए, और वह बनी। बेचारा अभी तक यह सोच-सोचकर पागल हुआ जा रहा है कि महामृत्युन्जय के रहते मैं रिम्पी पर सवार कैसे हो गई!"

"म-मुझे पूरी उम्मीद है कि अब तू रिम्पी की बलि नहीं देगी!"

"बिल्कुल गलत उम्मीद है तुझे।" एकाएक कपाली की खोपड़ी से निकलने वाला लहजा कठोर और खुरदुरा हो गया–"अपनी बहन से नाजायज उम्मीद करते वक्त तुझे शर्म आनी चाहिए।"

"नाजायज उम्मीद?"

"ये नाजायज नहीं तो और क्या है कि तू मुझे वो काम करने से मना कर रही है जिसके परिणाम स्वरूप तेरे जीजाजी को जिंदगी मिलेगी। तेरी बहन का सुहाग वापस आएगा।"

"व-वो सब ठीक है रूपवती लेकिन।" नंदिनी बुरी तरह बौखला गई थी–"इस तरह बच्चों की बलियां देना कहां तक जायज है?"

"तूने सुना होगा, मौहब्बत में सब कुछ जायज है।"
"प-प्लीज रूपवती, रिम्पी को...

"हरगिज नहीं...किसी कीमत पर नहीं।" हवा में परवाज करती खोपड़ी के चेहरे पर दृढ़ता के भाव उभरे तो वह और ज्यादा वीभत्स नजर आने लगा–"मैं तेरी कोई बात नहीं टाल सकती मगर ये बात नहीं मान सकती। किसी भी बारे में बात कर लेकिन इस बारे में न कर। मुझे हर कीमत पर मेरा अभिजीत चाहिए।"

नंदिनी जब, तब भी जिद करने लगी तो उसने उसे भी मूर्ति में तब्दील कर दिया–ऐसी मूर्ति जो सब कुछ देख सकती थी, समझ सकती थी परंतु न हिल सकती थी, न बोल सकती थी।

उसके बाद, हवा में नाचती खोपड़ी रंगोली पर बिछी अभिजीत की उन हड्डियों के करीब पहुंची जिन्हें पहले ही कंकाल का रूप दे चुकी थी। अभिजीत की खोपड़ी को मुकुट भी पहना चुकी थी वह।

लंबे, घने और काले बालों वाली कपाली की खोपड़ी अभिजीत की हड्डियों के पास शांत होकर बैठ गई।

आंखें बंद कर ली थीं उसने।
होंठ कोई मंत्र बुदबुदाने लगे थे।

अंगद और नंदिनी सब कुछ देख सकते थे। महसूस कर सकते थे कि वह क्या करने जा रही है परंतु मूर्ति बने होने के कारण सिर्फ मचल सकते थे, तड़प सकते थे मगर उसे रोक नहीं सकते थे। यहां तक कि कुछ बोल तक नहीं सकते थे। उधर, तंत्र चक्र में मौजूद राजपाल खौफ की ज्यादती के कारण मूर्ति बना खड़ा था।

अभिजीत की हड्डियों में खड़खड़ाहट की आवाज पैदा हुई। वे हिलने लगी थीं। हॉल में ऐसी आवाज पैदा हुई जैसे कोई मर्द कराह रहा हो। कपाली की आंखें खुलीं। उसकी खोपड़ी में हलचल हुई और अगले ही पल अभिजीत की खोपड़ी के ऊपर मंडराती नजर आई। मुंह से फुसफुसाती आवाज निकली—"तुम आ गए अभिजीत?"

"मैं जिंदा होने के लिए तैयार हूं मेरी महबूबा।" अभिजीत की हड्डियों से आवाज निकलने लगी—"मुझे खून चाहिए। मुझे प्यास लगी है मेरी रानी। बहुत प्यासा हूं मैं।"

"अभी लो मेरे दिलबर...अभी लो। होश में तो ले आऊं इसे! क्योंकि बेहोश बलि से तुम्हारी प्यास नहीं बुझेगी।" कहने के साथ कपाली की खोपड़ी हवा में लहराती हुई वहां पहुंची जहां एक छोटी सी शीशी रखी थी। उस शीशी को उसने मुंह में दबाया और फिर ऊपर उठती हुई उल्टी लटकी रिम्पी के चेहरे के करीब पहुंची।

शीशी को वह रिम्पी की नाक के नजदीक ले गई।
रिम्पी को होश आने लगा।

अंगद अच्छी तरह जानता था कि अगले कुछ ही पलों में क्या होने वाला है इसलिए कसमसाने लगा। तड़पने लगा। मगर बेबस इतना था कि उंगली तक नहीं हिला सकता था।

रिम्पी को होश आ गया।
खुद को उल्टी लटकी देखकर वह रोने लगी।
उसका रुदन अंगद और नंदिनी के कानों को फाड़े दे रहा था।

कपाली के मुंह और अभिजीत के मुंड से निकलने वाले डरावने कहकहे मुकम्मल किले में गूंजने लगे। उल्लू और चमगादड़ पंख फड़फड़ाकर उड़ने लगे थे। हवा में तैरती कपाली की खोपड़ी फरसे के करीब पहुंची और यही वक्त था जब अचानक जाने कहां से हवा का एक तेज झोंका मंदिर कक्ष में आ घुसा।

मंदिर में आंधी-सी चलने लगी।

घंटे हवा में झूलने लगे और सारे किले में उनके बजने की आवाज गूंजने लगी। ऐसा लगता था जैसे मंदिर में चक्रवात घुस आया हो।

राजपाल का जिस्म उस चक्रवात में फंसा तिनके की मानिंद उड़ता फिर रहा था। उसके मुंह से चीखें निकल रही थीं मगर हैरत की बात थी कि उस चक्रवात ने समाधिरत अंगद के जिस्म को छुआ तक नहीं था। वह ज्यों का त्यों बैठा रहा।

घंटों का शोर कानों के पर्दों को फाड़े डाल रहा था।
कपाली की खोपड़ी ने चौंककर उस तरफ देखा।
चेहरे पर ऐसे भाव उभरे जैसे समझने की कोशिश कर रही हो कि वह क्या हो रहा है।
फिर, मुकम्मल माहौल एक सिंह की दहाड़ से गूंज उठा।
माता दुर्गा की मूर्ति में कंपन हुआ।

हवा के एक झटके से मूर्ति की तलवार, त्रिशूल और गदा उसके हाथों से निकल गईं मगर वे जमीन पर नहीं गिरीं बल्कि हवा में ही नाच रही थीं। फिर वह हवा उन शस्त्रों को धारण किए डबल हाइट हॉल में घुस आई। हवा बहुत ही तेज और चक्करदार थी मगर हैरत की वात थी कि मोमबत्ती की लौ जरा भी नहीं कांप रही थी।

वह विल्कुल स्थिर थी।
फिर शंख और मृदंग बजने लगे।

हवा में लहराते तलवार, त्रिशूल और गदा ऐसे लग रहे थे जैसे किसी के हाथों में हों। भयंकर शोर मच गया था वहां और फिर ऐसा लगा जैसे किसी ने जोर से गदा कपाली की खोपड़ी में मारी हो।

झन्नाती हुई खोपड़ी जमीन पर जा गिरी मगर अगले ही पल हवा के भयंकर चक्रवात से बचने की कोशिश करती वह बहुत जोर से चीखी थी—"चक्रम, ब्रह्मराक्षस, बेताल...पता लगाओ ये बला कौन है और किले में कहां से घुस आई? सुकन्या की आत्मा पर इतनी शक्तियां नहीं हो सकतीं। ये कोई और बला है।"

जवाब में एक आवाज गूंजी—"तेरे भूत, प्रेत और जिन्न क्या बताएंगे चांडालिनी, मैं बताती हूं—ये बला एक मां है। माता दुर्गा है जो तेरा संहार करने आ पहुंची है।"

इन शब्दों के साथ हवा में नाचती तलवार यूं घूमी थी जैसे किसी ने हाथ से घुमाई हो और...कपाली के चेहरे के दो टुकड़े हो गए।

दोनों टुकड़े जमीन पर जा गिरे।

चक्रवात चलता रहा। शंख और मृदंग बजते रहे लेकिन अगले ही पल कपाली का भयंकर अट्टहास सभी आवाजों को चीरता चला गया और उस अट्टहास के साथ उसका धड़ खड़ा हो गया था।

क्रोध की ज्यादती के कारण कपाली के कांपते धड़ से आवाज निकली—"मुझे बताते क्यों नहीं ये कौन है और इसके सामने मेरी सारी शक्तियां क्षीण क्यों पड़ती जा रही हैं?"

किसी और को तो चक्रम, ब्रह्मराक्षस और वेताल की आवाज पहले ही सुनाई नहीं देती थी। इस बार जब कपाली को भी सुनाई नहीं दी तो गुस्से के कारण वह फुफकारने लगी।

फिर उसने चक्रवात की मानिंद घूमती उस हवा से कहा जिसके हाथों में तलवार, त्रिशूल और गदा नजर आ रहे थे—"अंगद की तरह तू भी सिर्फ मेरा जिस्म नष्ट कर सकती है। रूह को तो छू भी नहीं सकती और जिस्म मैं चाहे जितने बदल सकती हूं।"

हवा के चक्रवात से साफ-साफ आवाज फूटी—"एक समय था जब मैं बोलती थी तो किसी को मेरी आवाज सुनाई नहीं देती थी। पर अब मुझे उसका आशीर्वाद मिला है मासूम बच्चों की हंता, जिसने उस रक्तबीज को भी नहीं छोड़ा था जिसके रक्त की हर बूंद से एक रक्तबीज पैदा होता था। मैं एक मां हूं और मां से शक्तिशाली कोई नहीं होता। मेरी वच्ची को मारेगी कलंकनी! मेरी रिम्पी की वलि देगी तू! तूने मेरा सुहाग उजाड़ा है। अपनी जिस रूह पर तुझे बड़ा गर्व

है उसे तो मैं दोजख तक में नहीं पहुंचने दूंगी। तेरी और तेरे अभिजीत की रूह को भी यहीं जलाकर खाक कर दूंगी।"

"ठहर! मैं तुझे बताती हूं कि कपाली किसे कहते हैं।" कहने के साथ उसका धड़ फरसे की तरफ लपका और अगले ही पल फरसा उसके हाथ में था लेकिन तभी, चक्रवात के बीच से सुलगती हुई नीली आग की एक लकीर निकली और धड़ से जा टकराई।

कपाली के हलक से चीख निकली।

उसका धड़ बहुत ही चमकदार नीली आग में होली की मानिंद जलने लगा। चक्रवात से वैसी ही आग की एक लकीर अभिजीत की हड्डियों की तरफ लपकी और पलक झपकते ही वे भी सुलगने लगीं। अभिजीत की कराहें साफ सुनी जा सकती थीं।

फिर, आग की वैसी ही लकीरें हवा में नजर आने लगीं और जलते हुए अदृश्य वजूद जमीन पर गिरने लगे।

हवा के चक्रवात ने वह रस्सी काटी जिसमें रिम्पी बंधी हुई थी मगर वह जमीन पर नहीं गिरी बल्कि चक्रवात ने उसे अपनी गोद में ले लिया था। आश्चर्यजनक रूप से रिम्पी ने रोना बंद कर दिया था।

कपाली का धड़ और अभिजीत की हड्डियां देखते ही देखते राख के ढेर बन गए। वो जार, जिसमें अंगद कैद था चमत्कारिक तरीके से जाने कहां गुम हो गया! अब वह और नंदिनी न सिर्फ हिल डुल सकते थे बल्कि बोल भी सकते थे।

चक्रवात रुक चुका था लेकिन हवा अभी हॉल में थी।
अंगद ने उसी तरफ देखते हुए पूछा—"कौन हो तुम?"
"तुम्हारी दीदी हूं भैया—सुकन्या।"
"स-सुकन्या!" अंगद बुरी तरह चौंका था—"मेरी दीदी! तुम्हारे पास इतनी शक्तियां कहां से आ गईं?"
कान में चंडिकामृत की आवाज पड़ी—"इस पचड़े में मत पड़ो।"

समाप्त